लोग केवल कथा के बारे में क्या कह रहे हैं ।

'केवल कथा तरीका प्रभावशाली है क्योंकि यह हमारी सहायता कहानी को अनुभव करने में करता है । पाठ जीवित हो जाता है और प्रत्येक खजाना जो आप खोजते हैं ताजा और शक्तिशाली होता है । यह मेरा आनंद रहा है कि इसे कई जगहों पर उपयोग किया और प्रति उत्तर हमेशा बहुत सकारात्मक रहा है ।''

बाबू–गंटा– कम्यूनिकेशन ऑफीसर–बाइबल सोसायटी इन द गल्फ

––

संसार मेरा 30 वर्षों से संबोधन रहा है, हमेशा सेवकाई –गुणन– के लक्ष्य के साथ । गुणन संतुष्टि अनेपक्षित रूप से एक 79 वर्षीय वृद्ध चीनी जो कैनेडा में प्रवासी है से आया । उन्होंने कहा :

मेरी इच्छा है कि मेरे पास एसटीएस 40 वर्ष पूर्व होता । हम मसीहियों के जैसे पालन–पोषण नहीं किए गये कि ठीक से सोचे गये प्रश्नों को बाइबल के प्रति रखें जिसके पश्चात् चर्चा हो । अब, बाइबल मेरे लिए एक नयी पुस्तक के समान है ।

''सेवकाई जिसमें प्रत्येक और हरेक मसीही के लिए परमेश्वर के वचन को अचूकता से हाथ में लेना' के अधिकार की कमी है, केवल एक दोहराने की प्रणाली है । एसटीएस महान आज्ञा को पूरा करने को एक आवश्यक अगुवा है ।

जिम थरबर–सेमीनरी लेक्चरर/मिशन्स ट्रेनर, ग्लोबल

–:–

''केवल कथा'' प्रशिक्षण मेरे जीवन में कुछ वर्षों पूर्व आया, और यह यथाशब्द मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर था । मैंने एक मिश्नरी के रूप में यीशु की सेवकाई कई महाद्वीपों में, विश्व के मुख्य गैर–मसीही धार्मिक समूहों में से तीन के साथ 35 वर्षों तक की है, परंतु मैंने हमेशा मेरे विश्वास को, सामान्य रूप में जो मेरे तरीके में ठीक बैठता है जैसा परमेश्वर ने मुझे होने को बनाया है, को बाँटने में संघर्ष किया है ।

''इस प्रशिक्षण ने शब्दानुसार मेरे जीवन को बदल दिया और सुसमाचार प्रचार व शिष्यता को न केवल मेरे लिए सामान्य बनाया, परंतु आमोद–प्रमोद भी बनाया । यह अब ''स्वतंत्र होना'' और हर्षजनक है कि परमेश्वर के पवित्र आत्मा के साथ काम करूं व निरंतर देखूं उसका वचन लोगों के जीवन के मध्य भाग को गहरा काटता है । मैं अब वास्तव में सेवकाई में आनंद ले रहा हूँ और उस सेवकाई से फलों को देख रहा हूँ, जैसे पहले कभी नहीं हुआ !''

ब्रेयन थाम्पसन– चर्च प्लांटर/मिशनरी/स्टोरी टेलर/पोडकास्टर विथ स्टोरी 4 ऑल यू.के.

——

''यह'' मौखिक अनुमानकारी बाइबल अध्ययन'' को प्रत्येक बाइबल स्कूल और मसीही संस्थाओं में एक आकांक्षित विषय होना चाहिए । केवल कथा एक शक्ति उपकरण है जो किसी भी मसीही को सुसमाचार संचारित करने में अधिक प्रभावशाली बनायेगा ।''

रेजिना मैनली– ओरल कम्यूनिकेशन स्पेशिलिस्ट मिशन एविऐशन फैलोशिप, ग्लोबल

केवल कथा न पहुँचे हुओं तक पहुँचने में हमारे लिए सबसे अच्छा तरीका रहा है जब से हमने हमारा प्रथम प्रशिक्षण पाया । इस हस्तपुस्तिका ने हमें शिष्य को गुणा करने में शक्तिशाली माध्यम दिया है । और परमेश्वर के वचनों का जमा करने के प्रति एक ताजी अभिलाषा की आग को हममें दुबारा लगाई है । हम बाइबल कथाओं को सीखते हैं और उन्हें हमारे हृदय जेब में संग्रहित करते हैं । इस हस्तपुस्तिका को पढ़ें कि एसटीएस को खोजें और सुसज्जित हो कि एक अभ्यासकर्ता हो जाये । परमेश्वर के साथ आपकी आत्मिक यात्रा अलग प्रकार की हो जायेगी ।

रेव्ह. अपौल्लोस डीजिबो– डायरेक्टर फुफल्डे मिनिस्ट्रीज ट्रेनिंग सेंटर, नाईजीरिया

——

''एक महत्वपूर्ण शक्ति जो केवल कथा की है कि यह कहानी को वाचक के निज शब्दों में कहने पर निर्भर है, परंतु बहुत देख–रेख के साथ कि वचन से घटाये न जोड़ें । अन्य कुंजी बिन्दु यह है कि तब कहानी प्रश्नों से सहज की जाती है कि पवित्र आत्मा को अनुमति दे कि विघार्थियों पर कहानी के खजानों को और उनके आत्मिक प्रयुक्तियों को प्रकट करे । यह तरीका विद्यार्थियों को बहुत उत्साहित करने वाला है और उनको प्रत्यक्ष करने देता है कि वे भी परमेश्वर के वचन को दूसरों के साथ अचूकता से बाँट सकते है और एक ऐसे प्रकार से जो परमेश्वर के लिए महिमा लाये ।

''अब उनका मौखिक बाइबल शालाओं का क्रांतिकारी विचार तीव्रता से आवश्यक कलीसिया अगुवों की संख्या को सारे संसार में बढ़ा रहा है ।''

माइक होल्मैन– एमएएफ लर्निंग टेक्नालॉजीस्, ग्लोबल

मैं एक सार्वजनिक समाचार पत्र लेखक के रूप में कार्यरत हूँ मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ विशेष अधिकार के लिए कि टीजीएसपी और एसटीएस दल का भाग हो सका कि सैकड़ों अगुवों को कनार्टक में प्रशिक्षित करूं, एसटीएस तरीके द्वारा परमेश्वर के वचन को सीखने ने मुझे और मेरे परिवार को परमेश्वर का वचन जैसा यह है वैसा ही समझने में मदद की है और कि उसके वचन को हमारे हृदय में रखने में और उसके वचन (कथा) को बांटने में वहाँ–जहाँ में एक सामान्य व्यक्ति के रूप में जाता हूँ ।

एम.कृष्णा, एम.ए. वरिष्ठ संपादक, पाल वॉयस पब्लिशर,

वी.जे. पुर, कनार्टक, भारत

मैं 30 वर्षों से थाई लोगों के मध्य कार्य कर रहा हूँ । जब मैंने एसटीएस को पाया मैंने प्रत्यक्ष किया कि यह वह तरीका था जो सच में इस प्रबल बुद्धिष्ठ देश की मौखिक संस्कृति से लयबद्ध होता है ।

इस देश में बड़ी आवश्यकता कलीसिया रोपण आंदोलन की है, जिसका अर्थ है कि वहाँ अवश्य एक तुरन्त स्थानांतरित होने योग्य तरीका हो कि बाइबल संबंधी सत्यों को संचारित करें एक अचूक फिर भी संस्कृति अनुरूप शैली में । एशिया के विभिन्न देशों में और थाईलैंड के प्रत्येक भाग में एसटीएस सिखाने के पश्चात् मैंने देखा कि यह न केवल ग्रामीण समुदायों में उत्तम मौखिक सीखने वालों के साथ ही नहीं परंतु अधिक शिक्षित नगर केन्द्रों के साथ कैसा अनुरूप है ।

लैरी डिनकिन्स, टीएचएम, पीएचडी–बाइबल टीचर

ओएमएफ–थाईलैंड

हमारे पास 60 अनाथ हैं हरेक दिन इन बच्चों को नियंत्रण करने में हमने कठिनाई पाई है, क्योंकि प्रत्येक विभिन्न संस्कृति एवं विभिन्न स्थानों से आये हैं । एसटीएस तरीके ने उन्हें कार्य ईश्वर सिखाने में सहायता की और अब हमारे बच्चे अध्ययन में बहुत अच्छे हैं तथा आत्मिक रूप से बढ़ रहे हैं व परमेश्वर की कहानियों को अपनी शालाओं में उनके मित्रों के साथ बाँट रहे हैं । ''**रेव्ह. विजयराज– एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर, हैप्पी होम, कर्नाटक,भारत**

एक अफ्रीकी मिशनरी, कलीसिया रोपक और बाइबल शाला शिक्षक के रूप में मेरे देश में, मैं इस छोटी पुस्तक की सिफाशि मसीही सेवकाई में सभी मजदूरों से करता हूँ । यह किसी के लिए भी जो बाइबल को मौखिक रूप से सीखना और किसी भी व्यक्ति को सिखाने के लिए देख रहा है एक विस्तृत उपकरण है । संसार में कहीं पर भी, केवल कथा मेरे लिए घर में प्रारंभ होती है । प्रत्येक रात्रि इससे पूर्व की हम बिस्तर पर जाये, हम एक बाइबल कहानी को इस छोटी पुस्तिका में की तकनीकों को लागू करते हुए सीखते व चर्चा करते है । हमारा परिवार हमेशा के लिए परिवर्तित हो गया है ।

रेव्ह. जेकब ओचियेंग ओकोथ– शावरर्स ऑफ ब्लैसिंगस् चर्च/मिनिस्ट्रीस, फाउंडर, केन्या

''डोरोथी मिल्लर तथा ''केवल कथा'' दल बाइबल कथा सुनाने के आंदोलन में पदचिन्हों को चमकाने वाले हैं । मैंने प्रशिक्षण पाया कि एक एसटीएस अभ्यासकर्ता बनूं और व्यक्तिगत रूप से बाइबल कथाओं को जीवंत होते देखा है जब एसटीएस को पढ़ लिखों तथा अनपढ़ दोनों को प्रस्तुत किया ।''

चार्ल्स सिबेने–सीईओ, मेगावॉइस, ग्लोबल

एसटीएस में मैंने इथोपिया और दूर में सेवकाई के गुम टुकड़ों को पाया । वचन की सच्चाई के प्रति उनके समर्पण ने हमें प्रोत्साहित किया कि इस पारस्परिक तरीके को परिचय कराये कि इथोपिया में बाइबल को बाँट सके । कथा–वाचक लोगों को खीस्त में ला रहे हैं और अधिक महत्वपूर्ण, एसटीएस तरीके कथावाचकों मे जीवनों को रूपांतरित कर रहे हैं जैसा वे स्वयं के लिए परमेश्वर के वचन में खोदते है । जैसा पवित्र आत्मा सभी सत्यों में उन्हें मार्गदर्शन करता है ।

जूली के फील्ड–पैराक्लीट मिशन ग्रुप एसोसिएट, ग्लोबल

मैं हिमालय की जाति के मध्य कार्य करता हूँ और हमारे जाति लोगों के पारंपरिक अभ्यास मौखिक परंपराओं पर निर्भर है चूंकि वहाँ लिखित लेख नहीं है । इसलिए इन जातीय लोगों तक सुसमाचार संचार करने का श्रेष्ठ तरीका कहानी सुनाने द्वारा है । कहानी सुनाना (एसटीएस) हमारे श्रेष्ठ आदर्शों में से एक है कि सुसमाचार को हमारे पर्वतीय राज्य में प्रस्तुत करें ।

रेव्ह.टीनुयंगबा इमचेन– सीनियर पास्टर/बाइबल टीचर,
अरूणाचल प्रदेश, भारत

एसटीएस ने हमारी सहायता की कि परमेश्वर के वचन को समझे जैसा कि यह समझने और पूरी कहानी को स्मरण करने तथा हृदय की जेब में रखने में सरल है । इसने हमें मदद की, कि हमारे स्थानीय कलीसिया के अनपढ़ प्राचीनों को परमेश्वर के वचन को सीखने में प्रशिक्षित करें और कि वे उनके पड़ोसी परिवारों और गाँवों में पहुँच सकें । एसटीएस तरीके ने पूर्व की अपेक्षा अधिक कलीसियाओं को रोपने में हमारी सहायता की है ।

रेव्ह. देवसहायम– सीनियर पास्टर/चर्च प्लांटर एफ.एल.चर्च,
आंध्रप्रदेश, भारत

''मेरा बाइबल संबधी अचूकता से टकराव हुआ जो संभाली गई थी सरलता से कहने में, पुनः कहने में और कहानियों को जांचने में उन अवलोकनों व प्रयुक्तियों के लिए जो उनमें पाई जाती हैं । किसी भी समय कि कोई इस बहुत पारस्पारिक वार्तालाप संबंधी प्रक्रिया में– कुछ आगे लाये जो कि थोड़ा सा भी बाहरी थी, कथावाचक सरलता से कहेगा, क्या हम उसे कहानी में खोज सकते है ? तुरंत समूह वचन में वापस लाया गया और यह सरलता से हल किया गया था ।''

पास्टर माइल्स डीबेनेडिक्टिस– क्रॉस कनेक्शन, यूएसए

मेरे देश में मेरे 24 वर्षों की शिष्यता सेवकाई में, मैंने बिल्कुल अभी यथार्थ किया कि मैंने कभी भी किसी एक व्यक्ति को शिष्य नहीं बनाया जो पढ़ा लिख नहीं सकता था । इस एसटीएस हस्त पुस्तिका ने मेरी सहायता की कि उस स्मारक को प्रारंभ करूँ । मैं प्रत्येक पृष्ठ को सभी लोगों को सिफारिश करता हूँ, विशेषकर मेरे साथी अध्यात्मवादियों को ।''

रेव्ह.लूवाओ–यरुशलेम, न्यू लाइफ पेंटीकॉस्टल चर्च इंटरनेशनल,
डी.आर.कोंगो–अफ्रीका

''मैंने परमेश्वर की कथा परियोजना भारत के विकास को इसके आरंभ से देखा है । हमने बाइबल कहानियों की सरलता और पुनः उत्पादकता की शक्ति द्वारा लोगों के जीवन को परिवर्तित होते देखा है । मैं निश्चित हूँ कि यदि हम इस देश में हमारी पीढ़ी में परमेश्वर के लिए पहुँचना चाहते हैं, हमें आवश्यकता है कि लोगों को उस तरीके से सिखाये, प्रशिक्षित करें और शिष्य बनाये जिसे वे समझ सकें । मैं दृढ़ता से प्रत्येक कलीसिया रोपक को सिफारिश करता हूँ कि इस प्रशिक्षण को हाथ में लें और बाइबल कथाओं का उपयोग हमारे देश को ख्रीस्त का शिष्य बनाने में उपयोग करें ।''

रेव्ह. डॉ. सैम अब्राहम –डायरेक्टर हिमाचल बाइबल कॉलेज,
बेरेका मिनिस्ट्रीज, भारत

:: केवल कथा ::

अनुमानकारी बाइबल अध्ययन, मौखिक शैली

चर्चा द्वारा पवित्र शास्त्र को खोजना

ध्यानपूर्वक सुनना एवं प्रति उत्तर देना

डोरोथी ए. मिल्लर

परमेश्वर की कथा परियोजना

'' केवल कथा'' हस्तपुस्तिका, 5वॉ संस्करण

प्रतिलिप्याधिकार सी 2006,2012 द गॉड्स स्टोरी प्रोजेक्ट द्वारा

द गॉड्स स्टोरी प्रोजेक्ट द्वारा प्रकाशित

पो.ओ.बॉक्स 187,हेमेट,कैलीफोर्निया पो.ऑ.बॉक्स 187,हेमेट,कैलीफोर्निया 92546

(951) 658–1619

Info@simplythestory.org | infoGods-story-org

www.simlpythestory.org | www.Gods-story.org

विभिन्न भाषाओं में कही गई जीवंत कथाओं को सुनें।

India Address: TGSP-India, P.O.Box.3, Sidhartha Nagar (P O), Mysore-570011, India.

बिना प्रकाशक की पूर्व अनुमति के सर्वाधिकार सुरक्षित । इस प्रकाश्न का कोई भग पुनः अत्पादित एक पुनः प्राप्त होने वाले प्रक्रिया में संग्रहीत ना हो ,या किसी भी रूप में न पहुॅचाये जायें या किसी भी माध्यम इलेक्ट्रानिक,मेकैनिकल,फोटोकॉपी, रिकार्डिग या कोई भी अन्य द्वारा सिवाय छपे हुए पुनरावलोकन में संक्षिप्त उद्धाहरणों के।

हमें बतायें यदि आप इस लेख का अनुवाद करना चाहते है। हम आपके साथ,अनुवाद की अनुमति पर और सुनिश्चित करने में कि सभी कार्य टीजीएसपी के दिशानिर्देशों का उपयोग करते हुआ है, में सबसे अधिक प्रसन्न होंगे।

डोरोथी ए.मिल्लर

कार्यकारी निर्देशक द गॉडस् स्टोरी प्रोजेक्ट

इस प्रकाशन में आये सभी पवित्रशास्त्र उद्धाहरणबाइबल के किंग जेम्स वर्जन से लिए गये हैं।

हस्तपुस्तिका में आयें पवित्रशास्त्र उद्धाहरणों को देखने हेतु आप को उत्साहित किया जाता है । यदि विभिन्न बाइबल अनुवाद विषय मं भिन्नतायें दिखाते है जो संभतः कथा क अर्थ को बदल सकते है,स्वयं कथा का अध्ययन करें ओर परमेश्वर की ओर देखें कि निश्चित करें आप कैसे कथा को कहेंगे।

ISBN-978-0-9855206-0-1

विषय

प्रस्तूति अफ्रीका.....09

प्रस्तूति : संयुक्त राज्य.....11

अध्याय 1 : मौखिक रणनीति की आवश्यकता.....13

अध्याय 2 : प्रश्न एवं कथायें –बाइबलसंगत पूर्वदृष्टांत.....19

अध्याय 3 : एक पृष्ठीय ऊपरी अवलोकन.....25

अध्याय 4 : कैसे ''केवल कथा'' तरीके से एक कथा को तैयार करें.....26

कौशल 1 : कैसे चुने ,सीखे और ठीक से एक कथा सुनायें.....26

कौशल 2 : कैसे कथा में खजानों को खोजें.....44

कैसे उन खजानों को खोजें जो''आत्मिक अवलोकन/निरीक्षण'' कहलातें हैं..... 44

कैसे उन खजानों को खोजें जो''आत्मिक प्रयुक्तियॉ''कहलाते हैं.....51

कौशल 3 : कैसे अपने प्रश्नों की रचना करें.....57

कैसे कथा के लिए एक परिचय को बनायें.....62

अध्याय 5 : तैयारी और प्रस्तुति के हमारे कौशलों का अब हम प्रयास करें.....64

तैयारी आत्मिक खजानों को खोजना.....64

प्रस्तुतिकरण भाग एक : कथा को तीन बार सुनाना.....67

प्रस्तुतिकरण भाग दो : आत्मिक अवलोकनों की चर्चा.....75

प्रस्तुतिकरण भाग दो : आत्मिक प्रयुक्तियों की चर्चा.....84

अध्याय 6 : चर्चा की अगुवाई के लिए सामान्य संकेत.....91

अध्याय 7 : अचूक प्रयुक्ति–हाथी की खोज.....104

अध्याय 8 : अशिक्षित एवं मौखिक बाइबल शालायें.....113

अध्याय 9 : साही के कॉटों को निकालना : प्रतिमान सोच में बदलाव.....121

अध्याय 10 : ''केवल–कथा'' कथावाचकों का श्रेणीकरण.....141

अध्याय 11 : उपयोग के स्थान – एसटीएस सीखने और फैलाने के तरीके.....146

परिशिष्ट अ : शिक्षण पुनरावलोकन फार्म.....154

परिशिष्ट ब : नमूना कथा द्वारा यात्रा.....158

परिशिष्ट स : उपयोगकर्त्ता प्रभाव वर्णनलेख–सलाहें एवं गुणन.....185

परिशिष्ट द : एक अगुवे की खोज..... 189

परमेश्वर की कथा : सृष्टि से अनंतकाल तक..... 193

विश्व संपर्क..... 194

प्रस्तुत : अफ्रीका

मैं डोरोथी से खाड़ी देश में कुछ वर्भों पूर्व एक महत्वपूर्ण परामर्श में मिला था । वहाँ उन्होंने मेरी पत्नी व मुझे परमेश्वर की कथा कहने की महिमा से परिचय कराया एक अच्छी रणनीति के जैसे कि लोगों तक पहुँचा जाये, यहाँ तक की प्रतिबंधित क्षेत्रों में भी । हम एक साथ मरियम और मार्था की सरल कथा में गये और यह अद्‌भुत था कि वहाँ कितना खजाना इसमें था ।

इसके बाद, मैंने यह विचार ले लिया, और हमने इसे नाईजीरिया के कुछ कैलवरी सेवकाई (सी.ए.पी.आर.ओ.)क्षेत्रों में परिचित कराया, प्रभाव की आश्चर्यजनक सूचनाओं के साथ । कैलवरी सेवकाई (सी.ए.पी.आर.ओ) एक स्वदेशी मिशन कार्यालय है जो अफ्रीका में 30 देशों में न पहुँचे हुए लोगों के समूहों में कलीसिया रोपण पर केन्द्रित है । हमारा कलीसिया रोपण कार्य 65 यू.पी.जी तथा एम.यू.पी.जी. के मध्य है ।

कोई यह खोज सकता है, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक, परमेश्वर स्वयं को विभिन्न तरीकों से प्रकट करता है । हमारे पास से सबूत उन कथाओं में रखी हुई है जो बाईबल में हैं । उसका खीस्त तथा पवित्र आत्मा में प्रगटीकरण उसके मानवजाति के लिए प्रेम को संक्षिप्त करता है, और इच्छा की मनुभय की सहायता करें इस खजाने को खोजने के लिए ।

केवल कथा (एस.टी.एस.) बाईबल को पद्धतिपूर्ण खोजने का एक माध्यम है । इसके साथ शिक्षित व अशिक्षित दोनों सहायता प्राप्त करते हैं कि परमेश्वर के वचन को अनुमानकारी ढंग से खोदें ।

कथा कहने की अफ्रीकी संस्कृति एक प्रबल मार्ग है कि मूल्यों को मन में बैठाये और जीवन परिवर्तित करने वाले निर्देशों को आगे बढ़ाये । परिणामस्वरूप, यह एक परिचित आधार श्रोताओं को प्रदान करता है, विशेभाकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ, कि बहुसंख्या रहती है और मौखिक परंपरा का आनंद लेती है ।

इस अनुरूपता के आगे, एस.टी.एस. श्रोताओं को स्वतंत्र निभकभाँ तक पहुँचने में सहायता करता है जो उन्हें निर्णयों पर अधिकार देता है जिन पर वे व्यक्तिगत खोज का अनुसरण कर पहुँचते हैं । यह अधिकांश घटित होने में जो सहायता करता है वह कथावाचक की पहुँच और प्रश्नों की श्रृंखला है जो श्रोताओं से पूछ जाते हैं । ये अचूक तरीके से आत्मिक बाईबल संबंधित सत्यों को संस्कृतियों के आरपार संचारित करने में वृद्धि करते हैं ।

आत्मिक अवलोकन तथा आत्मिक प्रयुक्तियों को खोजने के दो तरीके श्रोताओं को खोजने को उत्साह देते हैं । यह तरीका श्रोताओं को कथाओं में निहित बाइबल संबंधी सत्यों को समझने और स्मरण करने में योग्य बनाता है, जो बाईबल का एक महत्वपूर्ण प्रतिशत बनाता है ।

साथ ही, एसटीएस कथावाचकों को कथा सुनाने के समय व्यवहार पर पर्याप्त चेतावनी भी प्रदान करता है । यह कथाओं की पृठभूमि, विजय एवं निहित अर्थ की खोज की आवश्यकता पर विशेभा बल देता है जो वे सुनते हैं ।

संसार भर के एसटीएस प्रशिक्षण से लाभांवितों के आकर्भाक कथनों के अलावा पुस्तक बहुत से संकेतों को प्रश्नों के रूप में प्रदान करती है जो बाईबल कथाओं की व्यक्तिगत खोज में सहायक है ।

एसटीएस प्रशिक्षण की सिफारिश उन सभी के लिए करने में मेरे पास कोई आरक्षण नहीं हैं जिन्होंने सभी देशों के लोगों को शिष्य बनाने की बुलाहट को पाया है, विशेषकर मौखिक समुदायों के मध्य एवं वे जो उनके ईश्वर के साथ संबंध में व्यक्तिगत उद्धार की अभिलाषा रखते हैं ।

आमोस अदेरोनमू – अंतर्राभट्रीय निर्देशक – कैलवरी
मिनिस्ट्रीस (सीएपीआरओ)

.....

प्रस्तुत : संयुक्त राज्य

हमने डोरोथी और टॉम मिल्लर को 40 वर्षों से अधिक जाना है और श्रेष्ठ मित्र रहे हैं । यह अद्‌भुत रहा है कि पहले चलचित्र परमेश्वर की कथा के जन्म और शीघ्र विकास की साक्षी देना और तत्पश्चात् प्रशिक्षण केवल कथा की ।

हम यह देखने में आनंद करते हैं कि कैसे यह सेवकाई उन तरीकों के चेहरों को बदल रही है जिससे मसीही खोये हुओं पर ख्रीस्त को प्रकट कर सकते है, शिष्य बना सकते है और परमेश्वर के वचन द्वारा शिष्यता कर सकते है ।
हम इन तकनीकों को गाँवों और संसार के सारे देशों में पूर्णार्थक होते देख उत्साहित हुए हैं, जो परमेश्वर के वचन के बारे में नयी प्रेरणा तथा उत्तेजना ला रही है । कहानी सुनाने का तरीका प्रत्येक को, प्रत्येक स्थान पर आकर्षित करता है ।

एसटीएस के अनुमानकारी बाइबल अध्ययन तरीके अंतदृष्टि व निर्देशों को भाग लेने वालों से स्वयं खींचता है जो वचन के अधिक धनी और गहरे अनुभव में पणिमित होता है जो सिद्धांत से अधिक है । एसटीएस की धारदार तकनीकें लोगों तक पहुॅचती हैं ।

वास्तविकता में, लोगों की बड़ी संख्या को सुसमाचार के सत्य संदेश के साथ पहुँचना बिना उनकी आयु, जातीयता, धार्मिक पृष्ठभूमि, शिक्षा साक्षरता के स्तर की परवाह बगैर या किसी अन्य विचार विमर्श के बगैर दर्शाता है । कि केवल कथा पूर्णतः अद्वितीय और अलौकिक रूप से प्रभावशाली है ।

यह सेवकाई विशेषतः हमारे हृदयों को छूती है । क्योंकि यह पहुॅचती है । उन तक जो बारंबार परिधि पर अंदर देखते हुए छोड़ दिये जाते है । बिना माध्यमों के बिना कौशलों के बिना प्रतिष्ठा के अंदर पहुॅचने और किसी की भी आत्मा को छूने की चाहे पढ़े लिखे या अनपढ़, धनी या निर्धन विशेषाधिकार प्राप्त या अप्राप्त, शक्तिशाली योग्यता के साथ यह राज्य को बढ़ाने में सबसे प्रभावशाली उपकरण है जे हमने अपने सेवकाई के सारे वर्षों में संपूर्ण संसार में देखा है ।

डॉन और सोंड्रा टिपटन – फांडडर्स एंड डायरेक्टर्स,
फ्रेंडशिपस् अनलिमिटेड

परमेश्वर की ओर से
अति गंभीर सत्य
बाइबल की सरल कथाओं में बसे हुए हैं ।

परमेश्वर का वचन हमें चेताता है कि हमारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए दूर हो सकते है ।
2 कुरंथियों 11:3

स्वीकृतियॉ

बाइबल में, हमारे परमेश्वर ने स्वयं को और उसकी इच्छा को हमारे लिए प्रकट किया है। हम परमेश्वर को उसके वचन के लिए धन्यवाद देते है। परमेश्वर ने हमें बनाया है कि उसकी सेवा करें और उसके वचन को दें । इस विशेष अधिकार के लिए हम धन्यवाद देते है तथा किसी भी सेवकाई की प्रभावशीलता के लिए सारी महिमा उसे देते है।

परमेश्वर ने ''परमेश्वर की कथा'' परियोजना को कई हजार स्वयंसेवक भेजे हैं जिन्होनें ''परमेश्वर की कथा'' के कई सौ भाषा अनुवादों को रचा है। हम परमेश्वर का धन्यवाद वादकों, अनुवादकों, वाचकों, रिकार्डिंग करने वालों, दानदाताओं एवं ''परमेश्वर की कथा'' का उपयोग करने वालों के ले करते है जो मिशनरी देशीय कार्यकर्ताओं और आश्चर्यजनक लोगों के समूह से आते हैं जो यीशु को प्रेम करते हैं।

कार्यालय कार्यकर्ताओं और आयोजकों के लिए जो विभिन्न देशों में हैं, जो बहुत ही विशेष रूप से सेवा करते है, एवं कई बार उन पर ध्यान नहीं होता है केवल परमेश्वर उनको ध्यान में रखता है, हम परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं। हम उन्हें सम्मिलित करते है जिनके कार्य, विचार एवं कथायें हस्तपुस्तिका में हैं। ''केवल कथा'' के बढ़ते हुए निर्देशकों एवं सिखानेवालों के लिए, हम परमेश्वर के भय में खड़े हैं और परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं । हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं विशाल सेना के लिए, जो अब लाखों में है, जो साहसपूर्वक तथा दृढ़तापूर्वक परमेश्वर की कथाओं को संपूर्ण विश्व में सुना रहे हैं।

1994 में, कलाकार नॉर्म मैक्गैरी ने बाइबल संबंधी दस चित्रों की चित्रकारी की । उसने अपने कौशल का उपयोग यीशु का चित्रण ''मैं हूँ'' के रूप में किया इस आशा में कि उसकी वृद्ध मॉ यीशु पर ईश्वर और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा कर सकें । नॉर्म 2012 में यीशु के पास चले गये और अपनी मॉ के साथ वहॉ मिल गये । उनकी कला ''परमेश्वर की कथा'' बन गयी, जिसने ''केवल कथा'' के विकास की और उद्यत किया । हम नॉर्म को उसके सेवक हृद्रय के लिए प्रेम करते हैं । हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं उस तरीके के लिए एक व्यक्ति के यीशु के प्रेम के लिए और अपनी मॉ को उद्धार प्राप्त देखने की अभिलाषा के लिए जो संसार तक सुसमाचार को पहुँचाने में विस्फोट (फैल गई) हुई ।

टौम और डोरोथी मिल्लर
परमेश्वर की कथा परियोजना

अध्याय 1 : मौखिक रणनीति की आवश्यकता

पश्चिमी संसार में लौकिक एवं मसीही वातावरणों में एक बाइबल शिक्षक के रूप में, मेरी अभिलाषा थी कि बाइबल को एक ऐसे रूप में प्रस्तुत किया जाये कि यह समझ में आ सके और जीवनों को परिवर्तित करें ।

मेरे देखने में आया कि कथा खंडो का क्रमानुसार प्रस्तुतिकरण और चर्चा उस अभिलाषा को पूरा करते हैं। विशेषकर जब लोगों को प्रश्नों द्वारा मार्गदर्शित किया जाता है, परंतु फिर भी उन्हें अनुमति है कि स्वयं के लिए खोज करें, उन्होनें समझा और बाइबल से व्यक्तिगत प्रयुक्तियों को बनाया ।

परमेश्वर ने मेरे लिए द्वार खोला कि चलचित्र, '' परमेश्वर की कथा : सृष्टि से अनंतकाल'' की लेखिका हो सकूं । उस चलचित्र ने क्रमानुसार, कथा तरीके का उपयोग विश्व के श्रोताओं/दर्शकों तक बाइबल को प्रस्तुत करने के लिए किया । हमने इस 80 मिनिट कथावाचन के प्रभाव को देखा जैसा कि यह कई सौ भाषाओं में गई । वह चलचित्र और यहॉ तक कि इसके श्रव्य सामग्री की उपयोगिता ने, हमें कथा के केन्द्रीय स्थान में सुसमाचार प्रचार एवं शिष्यता के प्रति गहनता से अवगत कराया ।

बाद में, हम अन्य मिशन अगुवों से जुड़े जिन्होंनें एक ही कथा में रहने के महत्व पर जोर देना प्रारंभ किया था । उन्होंनें यथार्थ किया था उनके वचन के प्रस्तुतिकरण के तरीकों को विस्तार देने की आवश्यकता पर कि उन्हें उसमें सम्मिलित करें जो नहीं पढ़ते या नहीं पढ़ सकते, या पढ़ने द्वारा नहीं सीख सकते है। इन अन्य अगुवों से प्राप्त सूक्ष्म दृष्टि ने हमें अग्रसर किया कि चर्चा–शैली की शिक्षा को एक कथा में एक समय पर रहने को जोड़े । यह जुड़ाव ''केवल–कथा'' (एस टी एस) बन गया ।

एस टी एस एक ही कथा में बना रहता है, और वचन की गहराई में जाता है । लक्ष्यित चर्चा प्रश्नों द्वारा लोग स्वयं के लिए खोज करते हैं । अब हम समझने एवं व्यक्तिगत प्रयुक्ति से अधिक देखते हैं। हम देखते हैं – स्मरण करना ।

वह जो गाड़ी को नगर तक चलाता है
अगली बार उस रास्ते को जानता है।

और उन परिणामों के आगे, हम देखते हैं कि लोग अधिकृत और साहसी हुए हैं कि दूसरों के साथ बॉटें ।

एस टी एस बाइबल जानकारी के प्रस्तुतकर्ताओं को उत्साहित करता है कि कथाओं उपयोग करें जैसा परमेश्वर ने उन्हें दिया है। पूर्ण कथाओं के रूप में । जब हम कहते हैं '' कथायें'' हम बाइबल में कई खंडो को सम्मिलित करते हैं , वे खंड भी जो प्रथम बार में कथा जैसे नहीं लगते । यह हस्तपुस्तिका उस पर जानकारी प्रदान करती है कि कैसे उन कथाओं को रूचिप्रद और अचूकता से कहा जाये और कैसे उन्हें चर्चा के उपयोग से सिखाया जाये । इस

हस्तपुस्तिका एवं अन्य माध्यम संसाधनों के अलावा, एस टी एस कार्यशालाओं में प्रदान व्यक्तिगत सिखाई लोगों को उनके कौशलों को विकसित करने में सहायता करती हैं।

वचनों को सीखने की इस शैली की किसे आवश्यकता है ?

एक व्यक्ति जो संयुक्त राज्य अमेरिका में एक एस टी एस में आया ने वर्णन किया कि वह वहॉ क्यों था :

मेरे पहले वर्ष मेरे पास्तरीय क्षेत्र में, मैंने जाना कि वहॉ एक गंभीर समस्या है। मेरे चार्ल्सटन सदन यूनिवर्सिटी से बाइबल में चार वर्ष की डिग्री थी और मैंने एक स्नातकोत्तर उपाधि उच्चतम मान के साथ गोर्डन–कोनेवल थियोलॉजिकल सेमीनरी से प्राप्त की थी। मैं शिक्षा तथा प्रशिक्षण देने को तैयार था। मैं महान आज्ञा को उस स्थान पर पूरा करना चाहता थी जिसे परमेश्वर ने मुझे सेवा के लिए दिया था । धर्मोपदेश आसन से कहते थे, ''अच्छा संदेश, सुसमाचार प्रचारक।''

कुछ ही महीनों के भीतर, कई नये विश्वासी संडे स्कूल की एक कक्षा में जमा होने लगे जो केवल उन्हीं के लिए विकसित की गई थी। वे विश्वास में आ गये थे परन्तु अब उन्हें बढ़ने के लिए अधिक सीखने की आवश्यकता थी । हमने उन्हें हमारे सम्प्रदाय के प्रकाशन घर से मानक लिखित सामग्री दी ''क्वाटर्ली।'' मैंने उन्हें उत्साहित किया, ''घर जायें और इस सामग्री को पूरा पढ़े। जब आप वापस आयेंगे, हम इसके बारे में बात कर सकते हैं।''

सप्ताह दर सप्ताह में मैं उनसे पूछता, ''जो आपने पढ़ा उससे आपने क्या सीखा? क्या आपके पास कोई प्रश्न है? क्या आपे कुछ रूचिप्रद पाया।'' लगभग हमेशा उत्तर था– चुप्पी।''

यह स्पष्ट हो गया कि वे पाठों को नहीं पढ़ रहे थे । अन्ततः एक सप्ताह, निराशा से भर मैंने कहा कोई पाठ को जोर से पढ़ते हुए हमारी कक्षा प्रारंभ करें । बहुत लंबी और कठिन प्रतीक्षा के पश्चात् एक व्यक्ति ने स्वयं को प्रस्तुत किया । वह कुछ पंक्तियों में बहुत धीरे संघर्ष किया और बहुत से शब्दों का गलत उच्चारण किया । तब मुझे मालूम हुआ। ये लोग पाठों को नहीं पढ़ रहे थे – क्योंकि वे मुश्किल से पढ़ सकते हैं।

जैसा मैंने इसमें आगे देखा, सांख्यिकी ने निश्चितत कर दिया जिसे मैंने देखा। मेरी कलीसिया के आस–पास रहने वाले वयस्कों में से एक तिहाई के पास उच्च माध्यमिक शिक्षा नहीं है । एक युवा पासवान के रूप में मैंने एक कठिन प्रश्न का सामना किया : हम लोग कैसे लोगों को सुसमाचार प्रचार या शिष्यता सिखाये जो पढ़ नहीं सकते या पढ़ने को प्राथमिकता नहीं देते ?

दुर्भाग्य से, मैं इस प्रश्न का उत्तर देने को असज्जित था । यहॉ तक कि दो सुमसाचारीय संस्थानों में सेवकाई के लिए तैयारी में सात वर्षो को व्यतीत करने के बाद भी, मैंने एक बार भी मौखिक सीखने वालों के बारे में कभी नहीं सुना था । मेरे पास कोई विचार नहीं था कि कैसे निम्न साक्षरता सेवकाई में एक चुनौती हो सकती है और मेरे पास कोई साधन नहीं था कि इन मौखिक सीखने वालों के साथ काम करूॅ जिनके लिए परमेश्वर ने मुझे पासवानी हेतु बुलाया। ये है वह कि मैं क्यूं प्रशिक्षित होने के लिए बाया हूॅ।

वह पासबान और अन्य लोग जो एस टी एस कार्यशालाओं में आते तीन सामान्य मूल्यों को बॉटते हैः वे परमेश्वर के वचनों को बटोरते है, वे समझने की इच्छा करते है, स्मरण करते है और वचन को उनके जीवनों में प्रयुक्त करते है, और वे उन वस्तुओं को दूसरों के जीवनों में पालन–पोषण करना चाहते हैं।

मौखिक संचार की आवश्यकता कितनी बड़ी है?

बाइबल कथाओं को उनकी संपूर्णता में प्रस्तुत करने कामूल्य और अधिक महत्व लेता है जब हम '' मौखिक सीखनेवाले'' के वर्गीकरण का अर्थ पहिचानते है और कैसे मौखिक सीखनेवाले जानकारी को प्राप्त करते हैं।

लोग जो नहीं पढ़ सकते वे, त्रुटि के कारण, मौखिक सीखनेवाले हैं। जॉच–पड़ताल पर, कोई एक देखता है कि अधिकांश देश उनकी साक्षरता दर को या तो कृत्रिम रूप से बढ़ाते है या दरों को साक्षरता के कमजोर नाप पर आधारित प्रकाशित करते हैं, जैसे ''यदि आप अपने नाम का हस्ताक्षर कर सकते हैं, आप साक्षर हैं !''

लोग जो पढ़ नहीं सकते है, कमी के कारण, मौखिक रूप से सीखने वाले हैं । जॉंच पर, एक देखता है कि अधिकांश देश या तो उनकी साक्षरता दर को फुलाते/विस्तृत करते हैं या साक्षरता के कमजोर नापतौल पर आधारित दरों को प्रकाशित करते हैं, जैसे किसी एक का स्वयं के नाम का हस्ताक्षर करने की क्षमता ! कई जॉंच एवं शोध, जैसे कि राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा अध्ययन दर्शाता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में 43 प्रतिशत पढ़ने में अक्षम हैं या इतना पर्याप्त पढ़ सकते हैं कि पाठ के एक खंड के अर्थ को समझ पाये । साथ ही, संयुक्त राज्य अमेरिका के 44 प्रतिशत लोग जानकारी का आदान–प्रदान सुनने और चर्चा द्वारा करना पसंद करते हैं । ये विस्मयकारी सांख्यिकी अन्य विकसित देशों के प्रति भी सत्यता रखती है । इसका अर्थ है कि विकसित देशों में 87 प्रतिशत लोग अनपढ़ हैं या मौखिक रूप से सीखने को पसंद करने वाले हैं ।

विकासशील देशों में, साक्षरता दर अधिक नीचे हैं, अतः अनपढ़ या मौखिक सीखने को पसंद करने वाले उनमें उच्च हैं ।

मौखिक सीखने वाले नोट्स/संक्षिप्त लेख नहीं लेते या ले सकते, अतः जिस तरीके से वे जानकारी स्मरण करते हैं वह एक कथा में इसे बुनने के द्वारा है । जब जानकारी एक मौखिक सीखने वाले को अवधारणाओं, नियम, प्रकरण या एक रूपरेखा में प्रस्तुत की जाती है, कथा, लोगों के स्मरण करने का ढंग खो जाता है ।

परमेश्वर ने बाईबल को इस रूप में लिखा : 10 प्रतिशत व्याख्या
15 प्रतिशत कविता तथा
75 प्रतिशत कथा

क्या आपने कभी एक घटना को किसी के साथ बाँटने का प्रयास किया है, परंतु वह व्यक्ति पूरे समय आपको व्यवधान करता रहा, प्रश्न पूछता और टिप्पणी करता रहा ? जब आपने कथा को पूरा किया, इसने इसके प्रभाव को बहुत सारे व्यवधानों के कारण खो दिया। बाईबल कथायें भी उनकी सबसे अधिक शक्ति रखती हैं जब वे प्रस्तुत की जाती हैं जैसा लिखी गई हैं । स्मरण रखें : परमेश्वर ने बाईबल का 75 प्रतिशत हमें कथा रूप में दिया है । हमें अवश्य परमेश्वर को उसकी पूरी कथा सुनाने देना है ?

अधिकांश उपयोग किये जाने वाले वर्तमान तरीकों/पद्धतियों का दीन पतन/गिरना।

कल्पना करें एक मित्र को एक पार्सल भेजते हैं और वह बिना खुले ही वापस आपके पास आये । क्या हमें कल्पना करनी चाहिए कि मित्र ने उस पार्सल की वस्तुओं को नहीं चाहा होगा ? क्या यह हो सकता है कि प्राप्तकर्ता जिसे हमने पार्सल भेजा नहीं जानता था कि उसे कैसे खोला जाये ? जब हम बाईबल के सत्यों को विषयवाचक, अवधारणाओं या मूल्याकंन जैसे पार्सल में बाँधते हैं, वे जो प्राथमिक मौखिक सीखने वाले हैं इसे नहीं खोल पाते है ।

हममें से उनके लिए यह समय है जो बाईबल के सत्यों को बताने की तीव्र इच्छा रखते हैं । ''कथा'' के खो जाने के परिणामों पर विचार करें । लोगों की एक बहुल संख्या जिन्हें सुसमाचार सुनने व शिष्यता की आवश्यकता है वे मौखिक सीखने वाले हैं । जब हम बताने वालों के रुप में कथा में बाहर कदम रखते हैं, एवं जानकारी को पुनः आकार और पुनः आयोजित करते हैं, मौखिक सीखने वाले न केवल उस जानकारी को नहीं स्मरण कर सकते, उनमें से अधिकांश उन सत्यों को जिन्हें हमने प्रस्तुत किया समझ नहीं पाते ।

विषयगत् रूप से जब शिक्षा दी जाती है, प्रस्तुतकर्ता पूर्व चयनित बिन्दुओं को प्रमाणित करने हेतु संपूर्ण बाइबल से भागों को चुनता है । कलीसिया सुनती है व नोट्स ले सकती है । परंतु

इस तरीके से वहाँ कोई कथा नहीं है कि अनुसरण की जाये । वहाँ कुछ नहीं है जो जानकारी को एकत्रित रखें । यह एक बिना हड्डी की देह के समान है ।

साथ ही, अधिकांश श्रोताओं के पास उस प्रकार की विषयगत् जानकारी को उनके लिए ढूंढने का कोई तरीका नहीं होता, इसलिए शिक्षक पर निर्भरता कायम करती है । जानकारी के कौर श्रोताओं को उस समान दिये जाते हैं जैसे एक माता पक्षी भोजन एकत्रित करती है, और तब उसके प्रतीक्षारत् बच्चों के खुले मुँहों में टपकाती है । प्रत्येक सप्ताह ये श्रोतागण उनके अगले भोजन के लिए प्रतीक्षा करते हैं । अत्याधिक विषयगत् शिक्षा एक घोंसले में पचास वर्षीय पक्षियों को निर्मित करती हैं!

विषयगत् शिक्षा के अत्यधिक उपयोग का अन्य पतन यह है : शिक्षक अक्सर एक विषय को सिखाने को चुनते हैं जिसे वह सोचते हैं कि लोगों को सुनने की आवश्यकता है तब वे बाईबल के कई स्थानों से आयतों को चुनते हैं जिन्हें वे पहले से जानते हैं । यह तरीका शिक्षकों को नई जानकारी व अंतर्दृष्टि नहीं देता चूंकि अक्सर शिक्षक उन्हीं भागों का उपयोग करते है। जिनके साथ वे परिचित हैं ।

अधिकांश विश्वासी एक मसीही सम्मेलन में गये होंगे । प्रस्तुत विषय संभवतः इस प्रकार होंगे, सुसमाचार प्रचार न पहुँचे हुए लोगों के समूहों तक पहुँचना, परिवार, आर्थिक व्यवस्था, उपवास, प्रार्थना, परमेश्वर के विशेषण/गुण, चंगाई, कार्य या भविष्यद्वाणी में ईमानदारी, सभी महत्वपूर्ण विषय हैं । रूचिकर रूप से, हम देखते हैं कि ये सभी विषय कथाओं के प्रस्तुतीकरण एवं चर्चा द्वारा भी अंतर्गत किए जाते हैं ।

कथा सुनाने के मौखिक अनुमानकारी प्रकार में शिक्षक, संपूर्ण कथा का उपयोग करता है और कथा की विषय वस्तुओं को अंतर्दृष्टि व पाठों को निश्चित करने देते हैं जिन्हें सिखाना है ।

जब शिक्षक निर्णय करते हैं कि एक वचन के भाग का कौन सा हिस्सा या कौन सी कथा का उपयोग उनके चुने विषय को सिखाने में करेंगे, भाग में की बाकी जानकारी या कथा छूट जाती है । जब एक कथा पूरी रीति से प्रश्नों व चर्चा द्वारा खोजबीन तथा विकसित कर ली जाती है, पवित्र आत्मा पहुँचता है कि उन्हें अपना विषय दे जो शिक्षा देने में सम्मिलित हैं ।

साथ ही, जब शिक्षक एक विषय पर एक सूची बनाते हैं और तब उनकी सूची को प्रमाणित करने हेतु वचनों को लेते हैं, बाईबल की जानकारी श्रोता के पास एक नियम या कानून जैसे आती है । जब कथाओं का उपयोग होता है, संपूर्ण कथा की आत्मा को अनुमति प्रदान की जाती है कि श्रोताओं से बातें करें ।

कई समयों पर शिक्षक सोचते हैं कि वे ''केवल कथा'' की धारणा को उपयोग कर रहें हैं, परंतु वास्तविकता में वे केवल इसे आंशिक रूप से कर रहे हैं । वे यह गलती करते हैं । एक कथा को सुनाया जाता है, और तब शिक्षक कथा को एक विषय कहने को बनाता है जिसे वह कथा वास्तव में नहीं बताती ।

कथा बनी है कि शिक्षक को अनुकूल करे बजाय इसके कि शिक्षक कथा को अनुकूल बनाये ।''केवल कथा'' में जो भी अंतर्दृष्टि आप सिखाते हैं कथा में अवश्य देखी गई हों ।

जब शिक्षक एक कथा का उपयोग मात्र एक मंच के रूप में करता है कि वह सिखाये जो वे पहले ही जानते और विश्वास करते हैं वे उस आशीषित अवसर को गंवा देते हैं कि पवित्र आत्मा द्वारा नई जानकारी को सीख सकें । एक कथा में खजानों को ढूंढना सीखना चुनौती है। साथ ही यह कथावाचक के लिए चुनौती है कि सीखे कैसे श्रोताओं को प्रश्नों के रूप में खजानों को मृदुता से सौंपे ।

अति आवश्यक निर्णय : यदि आपका लक्ष्य है कि विकसित देशों में बाईबल सत्यों को स्पष्टतः बताये, एवं 10/40 खिड़की में खोये हुए और संसार के न बचाये हुए लोगों के समूहों दोनों तक पहुँचने को जो कुछ हम कर सकते हैं वह करें, एक मौलिक परिवर्तन अवश्य होगा उस तरीके में जिसके द्वारा हम जानकारी प्रस्तुत करते हैं । क्या हम प्रति उत्तर देंगे ? (निर्दिष्ट सिद्धांतों के लिए, पुस्तक *''मौखिक सीखने वालों को चेला बनाना''* उतारें www.oralbible.com *अभिलिखित रूप में भी उपलब्ध*)

अध्याय 2 : प्रश्न एवं कथायें –बाइबलसंगत पूर्वदृष्टांत

:: यीशु का आदर्श :: कथा बताये, प्रश्न पूछें

यीशु ने कैसे उपदेश दिए ? 200 समयों पर जब यीशु से प्रश्न पूछे गये, उसने उनमें से केवल तीन बार ही सीधे उत्तर द्वारा प्रति उत्तर दिया । अन्य सभी समयों पर यीशु ने प्रश्न पूछ कर या एक कथा अथवा दृष्टांत सुनाकर उत्तर दिया । साथ ही, क्याा यीशु ने केवल कथा सुनाई और चल दिए ? नहीं । सामान्यतः कथा उपरांत, उसने पूछा और चर्चा की आमंत्रित किया ।

क्या यीशु ने कथाओं का उपयोग इसलिए किया क्योंकि वह ''तोराह विद्यालय'' से स्नातक नहीं था या क्योंकि वह केवल एक बढ़ई था? .....नहीं ! ऐसा वास्तव में नहीं । संभवतः तब,क्योंकि यीशु के समय के लोग अधिक शिक्षित नहीं थे, हो सकता है अधिकतम 11 प्रतिशत, यीशु पर दबाव था कि कथाओं में बोले ताकि अशिक्षित भी समझ पायें? संभवतः ..... परंतु रूकें । यीशु ने फरीसियों से कैसे बातें की ? क्या उसने कभी कथाओं का उपयोग किया ? ..... हॉ उसने किया और उन्होंने संदेश को समझा– और कुछ ने विश्वास भी किया ।

हम स्वयं से अवश्य पूछना चाहिये, क्या यीशु अत्याधिक स्तब्ध करने भाषण सकता था, उस समय की सबसे प्रभावपूर्ण शब्दावली का उपयोग करते हुए? ..... हॉ, वह कर सकता था। परन्तु यीशु ने उन शब्दों को चुना जिन्हें उसके समय के साधारण कामकाजी लोग समझ सकते थे, उन शब्दों को नहीं जिन्हें उसके समय के सबसे अधिक शिक्षित लोगों द्वारा समझा जा सकता था ।

यीशु इसलिए नहीं आया कि हमें इतिहास पढ़ाये ; वह एक आत्मिक संदेश लाये कि सभी जो ''सुने'' समझ सकें। एस टी एस में, उपस्थित सीखते हैं कि कैसे आत्मिक जानकारी (खजानों) को ढूढ़े जो कथाओं में निहित है, और तब कैसे प्रश्नों को निर्मित करें और पूछे एक चर्चा के रूप में जो श्रोताओं को उन खजानों तक ले जाते हैं।

कोई भी जो एस टी एस की मार्गदर्शन का अनुसरण कर रहा है, जैसा इस हस्तपुस्तिका में है या एक एस टी एस कार्यशाला में सीखा हो, एक प्रभावशाली अभ्यासकर्ता बन सकता है। परमेश्वर अपने वचन को आशीषित करे जैसा यह इन अभ्यासकर्ताओं द्वारा निर्गमित होता है।

जोड़ी गई जानकारी, अभ्यास एवं ऊपरी अवलोकन के साथ, अभ्यास कर्ता समयानुरूप प्रशिक्षक बन सकते हैं। समय से, समयानुरूप प्रशिक्षक प्रमाणिक एस टी एस प्रशिक्षक बनने की ओर जा सकते हैं। यह पुस्तक दर्शायेगी कि कैसे यह सब होता है। हमें अगुवों के गुणनको होता देखने में अच्छा लगता है।

बाईबल के खजाने क्या हैं ? मार्ग

एक समय एक व्यक्ति था जो काम करने को अपना गाँव छोड़ शहर गया । कई वर्षों तक वह शहर में था, इस व्यक्ति ने बहुत धन कमाया । अन्ततः वह अपने घर वापस आया जहाँ प्रत्येक ने उसे एक महान मित्र के रूप में अभिवादन किया ।

इस नये धनी व्यक्ति ने चाहा कि वह अपने धन का कुछ भाग वह अपने सच्चे मित्रों को उपहार में देने में उपयोग करें । वह एक दिन को गाँव से चला गया और फिर वापस आया । तब उसने प्रत्येक को इकट्ठा किया जो कह रहे थे, ''मैं तुम्हारा मित्र हूँ,'' और उसने उन सभी से पास के पहाड़ के दूसरी ओर मिलने को कहा ।

धनी व्यक्ति ने उन लोगों को जो आये थे इकट्ठा किया और तब एक घोषणा की। उसने कहा ''मैं उस मार्ग पर कार्य कर रहा था जो नदी की ओर जाता है, यदि तुम उस मार्ग पर चलोगें, तुम्हें कुछ खजाने मिलेंगे । अब जाओ । तुम्हारे लिए मेरे उपहारों को खोजो ।

इसलिए लोग गए और मार्ग पर चलना प्रारंभ किया । कुछ लोग थोड़ी ही दूर चले, ''हुम्म,'' उन्होंने कहा । ''यह एक रूचिकर मार्ग/पथ है । आओ हम इसमें देखें ।'' अतः वे नीचे झुके और मार्ग से कुछ रेत उठाई तथा उसका मूल्याकंन करने को घर ले गये ।

अन्य नदी की ओर जाने वाले मार्ग पर दौड़े । जब वे मार्ग के अंत पर पहुँचे, उन्होंने शिकायत की, ''हम इस मार्ग को भली–भाँति जानते हैं । वहाँ कुछ भी नया नहीं है । हमने कोई भी खजाना नहीं देखा ।

बाकी लोगों ने उस परिचित मार्ग पर निरन्तर चलना जारी रखा । जैसा कि वे एक साथ चले, उन्होंने एक–दूसरे से बातें करना प्रारंभ किया । वे इस प्रकार कहने लगे, इस पुराने गिरे हुए पेड़ को देखो । हमारे मित्र ने इसे मार्ग से हटा दिया ताकि हम इस मार्ग पर सरलता से चल सकें । ''अन्य चलने वालों ने पाया कि कंटीली झाड़ियों को काटा गया है कि मार्ग सुरक्षित हो ।

उपहारों को देखने के लिए मार्ग पर दौड़ने की बजाय, इन लोगों ने मार्ग पर और धीरे चलना प्रारंभ किया । वे उन परिणामों का आनंद चाह रहे थे जो उनके धनी मित्र ने कड़ी मेहनत कर उनके लिए किया था । उन्होंने यह पहिचाना कि स्वयं मार्ग ही उनके मित्र की ओर

से उपहार है । अचानक, एक चलने वाला रूका, और अन्य सभी को देखने को पुकारा । भमार्ग के किनारे यहाँ देखो, इस झाड़ी के नीचे । वहाँ चावल के बोरे हैं ।

तब एक अन्य ने पुकारा, ''यहाँ देखों, मार्ग के किनारे झाड़ियों के नीचे ! मैंने भोजन पकाने के बहुत से बिल्कुल नये बर्तनों को पाया है ।''

बार–बार धीरे चलने वालों ने मार्ग के किनारे छुपे खजानों की खोज जारी रखी । उन्होंने पाया कि ये सभी उपहार उनके लिए उनके धनी मित्र द्वारा रखे गये हैं । इस धनी व्यक्ति को मालूम था कि उसके सच्चे मित्र उस पर भरोसा करेंगे और उसके मार्ग की सराहना करेंगे, अतः वे ही होंगे जो उन उपहारों को खोजेंगे जो उसने इनके लिए रखे हैं ।

वे जो उस मार्ग पर तेजी से दौड़े, जिसे धनी व्यक्ति द्वारा प्रेमपूर्वक तैयार किया गया था, उन्होंने सभी खजानों को खो दिया । वे इतने धीरे नहीं चले कि वह मार्ग की, या मार्ग बनाने वाले की सराहना करते । (जिन्होंने मार्ग की रेत का मूल्याकंन करने का निर्णय किया... वे अभी भी मूल्याकंन ही कर रहे हैं । उन्होंने अभी भी मार्ग की यात्रा नहीं की है !)

बाईबल की प्रत्येक कथा परमेश्वर द्वारा हमारे लिए तैयार किया गया एक मार्ग हैं । वे जो एक बाईबल कथा के मार्ग से धीरे चलेंगे, छुपे खजानों को खोज पायेंगे जो परमेश्वर की ओर से सच्चे उपहार हैं । यही हम ''केवल कथा'' में करते हैं ।

नातान के उदाहरण का अनुसरण

2 शमुएल 12:1–14 में परमेश्वर हमें आत्मिक सत्य को बताने का एक सिद्धांत देता है । राजा दाऊद ने व्यभिचार कर स्पष्ट रूप से पाप किया, और तब अपने सेनाप्रमुख को महिला के पति की हत्या का आदेश दिया । इसके बाद, दाऊद ने इस पाप को छिपाने की कोशिश की ।

तब नातान भविष्यद्वक्ता दाऊद के पास आया और एक कथा सुनाई ।
दो पुरूष थे, एक धनी, एक निर्धन था । अत्यंत धनी व्यक्ति के पास बहुत से चौपायें एवं भेड़ें थी । एक दिन जब इस धनी व्यक्ति के समागम हुआ, उसने उस निर्धन व्यक्ति की एक पालतू भेड़ को चुरा लिया और मारा तथा अपने मेहमानों को भोजन के रूप में दिया ।

जब दाऊद ने नातान की कथा सुनी, दाऊद अत्यंत क्रोधित हुआ । बाइबल कथा में दाऊद नातान से कहता है, यहोवा के जीवन की शपथ, जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया वह प्राण दण्ड के योग्य है, और उसको उस भेड़ की बच्ची का चौगुना भर देना होगा, क्योंकि उसने ऐसा काम किया, और कुछ दया नहीं की ।
तब नातान ने दाऊद से कहा, ''तू ही वह मनुष्य है ।''

नातान की कथा सुनने से पहले, क्या दाऊद जानता था कि उसने पाप किया है ? क्या दाऊद ने पाप का अंगीकार किया ? सही, उसने अपने पाप का सामना नहीं किया था ।

सामान्यतः आप परमेश्वर के एक नबी से व्यभिचार तथा हत्या के विरोध में एक उपदेश के प्रचार की क्या अपेक्षा करते हैं ? नातान ने किस प्रकार के उपदेश का उपयोग किया ? सही, दाऊद का सामना करने की बजाय, नातान ने एक कथा सुनाई ।

ध्यान दें क्या हुआ । दाऊद ने क्या प्रति उत्तर दिया ? हाँ । दाऊद ने धनी व्यक्ति का सही न्याय किया कि वह दोषी है और यहॉ तक कहा कि धनी व्यक्ति को किस प्रकार का बदला देना चाहिए ? और वह किस लायक है ? सही । एक के बदले चार मेम्ने और व्यक्ति को मुत्युदंड !

दाऊद कथा को महसूस कर रहा था, धनी व्यक्ति का पाप देखा और तब एक धार्मिक आत्मिक अवलोकन दिया ।

जब दाऊद ने मौखिक रूप से अंगीकार किया कि सही क्या था, नातान के दाऊद को कथा में ले गया एवं दाऊद पर एक आत्मिक प्रयुक्ति के रूप में लागू किया, ''तू ही वह मनुष्य है, दाऊद ।'' नातान ने कुछ और विवरणों को जोड़ा कि कैसे दाऊद ने परमेश्वर के विरोध में पाप किया।

तब दाऊद ने नातान से कहा, '' मैं ने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है ।'' बाद में हम उस कथा में देखते हैं कि मृत्यु का दण्ड जो दाऊद ने नातान से कहा था कि धनी व्यक्ति पर आयेगा) । इसकी बजाय दाऊद के निज घराने पर आया ।

यह बाईबल कथा ''केवल कथा'' की एक मुख्य विशेषता, इसके केन्द्रीय भाग को दर्शाती है । एक बाईबल कथा को सुनने एवं महसूस करने के बाद लोग सक्षम होते दिखते हैं कि आंतरिक दृष्टि से इस पर चर्चा करे । कथा के अंदर देखने से, वे उनके बारे में आत्मिक सूचना को खोजते और मौखिक अंगीकार करते हैं जो कथा में हैं । हम इन खोजों को ''आत्मिक अवलोकन'' कहते हैं ।

सुनने वाले जब कथा चरित्रों के बारे में जो देखते हैं और तेज आवाज में बाँटते हैं तब, कथा–वाचक उन्हें आमंत्रित करता है कि वे स्वयं को कथा में डाले, इसमें व्यक्तिगत रूप से प्रवेश करें । वे कथा में व्यक्तिगत रूप से प्रवेश करते हैं और विचारते हैं कि कैसे आज लोग

समान चुनौतियों तथा अवसरों का सामना कर सकते है। कथावाचक श्रोताओं को उत्साहित करने के लिए प्रश्नों को पूछता है कि वे उस बारे में विचार करें जो उन्होनें अवलोकन किया है तथा कैसे वे अवलोकन उनके जीवन में आज प्रयुक्त हो सकते हैं।

रूचिकर रूप से, जब सुनने वाले/श्रोता आत्मिक अवलोकनों पर चर्चा कर रहे होते हैं, अक्सर पवित्र आत्मा उनसे बातें करता है । वह पहले से ही लोगों को स्वयं को देखने को उकसाता है । एस.टी.एस. में इन व्यक्तिकृत सत्यों को हम कहते हैं, ''आत्मिक प्रयुक्तियाँ''/''लागू किए जाने वाले आत्मिक कार्य ।''

क्या या कौन इस कार्य को बनाता है ?

कोई बात नहीं कि कितने वर्षों से कोई व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर को जानता है, या कितनी बाईबल शिक्षा, औपचारिक या अनौपचारिक, एक व्यक्ति के पास संभवतः होगी, बाईबल को समझने का केवल एक तरीका है । परमेश्वर से हमारा संबंध आत्मिक है । वचन परमेश्वर के संदेशों को मानव जाति के लिए रखता है, अतः आत्मिक सत्य जो बाईबल रखती है केवल पवित्र आत्मा के शिक्षा देने के द्वारा समझें जो सकते हैं ।

यीशु मसीह में बहुत अधिक विश्वासी दूसरों पर आश्रित हो जाते हैं, कि उन्हें परमश्वेर के वचन से सिखाये । कलीसिया जाने वाले उनके पासबानों की प्रतीक्षा करते हैं कि उन्हें आत्मिक सत्य सुनाये । कुछ अध्ययन उत्सुक सीखने वाले बाईबल पाठशाला में जाते हैं । पासबान बाईबल पाठशाला या सेमीनरी को अध्ययन हेतु जाते हैं, और जारी रहने वाली प्रेरणा के लिए वे टीका पुस्तकों में देखते हैं और नयी जानकारी के लिए सम्मेलनों में उपस्थित होते हैं । सेमीनरी में अध्ययन करने वाले पूर्व के लेखकों का अध्ययन अपनी समझ को बढ़ाने हेतु करते हैं ।

ये सभी स्त्रोतों का बड़ा महत्व है, परंतु परमेश्वर के संदेश को समझने का श्रेष्ठ स्त्रोत अनदेखा किया गया ! यह स्त्रोत परमेश्वर का हमें उपहार है । वह स्त्रोत क्या है? यीशु से व्यक्तिगत शिक्षा की तीन वर्षों से अधिक तक पाने के पश्चात्, शिष्यों ने उससे एक चौंकानेवाला संदेश सुना । यीशु उन्हें छोड़कर जा रहा था । उसने अपने शिष्यों से कहा, ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो, न ही घबराये।''

यीशु के इस कथन द्वारा क्या हम जान सकते हैं कि चेले कौन सा भाव महसूस कर रहे है थे ? हाँ । वे भयभीत थे । उनका अद्भुत, व्यक्तिगत शिक्षक अब उनके साथ नहीं रहेगा । कौन उन्हें सांत्वना देगा ? कौन उन्हें सिखायेगा ? यीशु के शिष्यों के प्रति अंतिम संदेश के एक भाग के रूप में, उसने उन्हें दृढ़ निश्चय किया कि वे अकेले न रहेंगे । यीशु ने एक रहने वाले

शिक्षक की प्रतिज्ञा की । यह शिक्षक प्रत्येक चेले के साथ रहेगा, दिन और रात, सप्ताह के सातों दिन ।

''परंतु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।''यूहन्ना14:26

''परंतु जब वह अर्थात् सत्य को आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परंतु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।'' यूहन्ना 16:13

परमेश्वर अन्य वचन में वर्णित करता है कि कैसे पवित्र आत्मा आत्मिक सत्य सिखाएगा ।

परंतु जैसा लिखा है, जो बातें आँख ने नहीं देखी है और कान ने नहीं सुनी और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं ।'' परंतु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है । मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है ? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर की आत्मा परंतु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परंतु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परंतु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातों आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं। परंतु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है! आत्मिक जन सब कुछ जाँचता है, परंतु वह आप किसी से जाँचा नहीं जाता।''क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है, कि उसे सिखाए ? परंतु हम में मसीह का मन है।''1 कुरिन्थियों 2:9–16

बहुत लंबे समय के लिए पवित्र आत्मा की कक्षा खाली रही है । आइये हम उसकी कक्षा में उपस्थित हों, अपने हाथों को उठाये और प्रश्नों को करें । जैसा हम प्रत्येक कथा को अध्ययन करते हैं हम परमेश्वर से विषय वस्तु को समझने के लिए बुद्धि मांग सकते हैं और विश्वास करें वह हमें उत्तरों को देगा ।

अध्याय 3 : एक पृष्ठीय ऊपरी अवलोकन

तैयारी

एस.टी.एस./"केवल कथा" कौशल में एक बाइबल कथा को सरलतापूर्वक सीखना और उसमें निहित आत्मिक खजानों को खोजना समाहित है । इसके बाद एस.टी.एस. के मार्गदर्शन अनुरूप प्रश्नों को बनाया जाता है ।

प्रस्तुतीकरण

एक दो-भागों वाली शिक्षा स्थान लेती है : प्रथम कथा को बताना, तब द्वितीय खजानों को खोजना ।

भाग एक: कथा को तीन बार प्रस्तुत किया जाता है, ताकि विषयों से पूर्ण रूप से परिचित हो जाये । कथा प्रस्तुतीकरण में कौशल की आवश्यकता है : क्षमता कि कथा को ठीक से सुनाये, भाग लेने वालों को उत्साहित करें एवं कथा सामग्री का पुनः अवलोकन रूचिकर ढंग से करे ।

1. **कहना :** कथा कहने वाला कथा को कहता है।(पहली बार का कहना सुनने वालों को कथा का दृश्य-स्वरूप देता है तथा वे उसके प्रभाव को महसूस करते हैं।)
2. **भाग लेने वाले/स्वयं सेवक :** कथा कहने वाला एक स्वयं-सेवक से कथा को फिर से दोहराने को कहता है या सुनने वालों से एक–दूसरों को सुनाने को कहता है । (सुनने वाले उनके साथियों द्वारा कथा को दोहराये जाने पर ध्यान देते हैं कि देखें यदि वे उसे ''सही'' पाते हैं, जो सुनने वालों के स्मरण में कथा की छाप लगाने में सहायक होता
3. **अगुवाई :** कथा कहने वाला प्रत्येक सुनने वाले को तीसरी बार फिर से कथा को दोहराने के लिए आमंत्रित करता है । इस अंतिम दुहराव में, कथा कहने वाला प्रत्येक की सहायता स्मरण करने में सूचीबद्ध करता है तथा प्रत्येक की अगुवाई कथा द्वारा एक बार और करता है ।

भाग दो: कथा कहने वाला (कथा वाचक) सुनने वालों की अगुवाई कथा में आत्मिक अवलोकन के लिए करता है ।

1. **आत्मिक अवलोकन** : प्रथम, कथा वाचक प्रश्नों के माध्यम से सुनने वालों की अगुवाई आत्मिक अवलोकन के लिए करता है । (जब सुनने वालों को कथा के चरित्रों के क्रियाकलापों पर एक नज़र डालने को आमंत्रित किया जाता है । तब, प्रश्नों के प्रति उत्तर में, सुनने वाले बाँटते है कि उन्होंने कथा में लोगों के जीवन में परमेश्वर कैसे कार्य करता है के बारे में क्या सीखा है । इन्हें हम आत्मिक अवलोकन कहते हैं)

2. **आत्मिक प्रयुक्तियां :** द्वितीय, तब प्रश्नों का उपयोग सुनने वालों की अगुवाई के लिए किया जाता है कि आत्मिक कार्य रूपों प्रयुक्तियों को खोजें एवं बांटे । (ये अवलोकनों पर आधारित आत्मिक सत्य हैं जैसा वे आज के लोगों पर लागू होते हैं । इन्हें हम आत्मिक प्रयुक्तियां कहते हैं)

अध्याय 4 : कैसे ''केवल कथा'' तरीके से एक कथा को तैयार करें

एस.टी.एस. ''केवल–कथा'' शैली के उपयोग की शिक्षा हेतु तीन कौशलों की आवश्यकता है :

1. **कैसे एक कथा को चुने, सीखें और ठीक से बताये ।**
2. **कैसे कथा में खजानों को खोजें ।**
3. **कैसे परिज्ञानपूर्ण प्रश्नों को निर्मित करें व पूछे ।**

कौशल 1. कैसे एक कथा को चुने, सीखें और ठीक से बताये ।

जैसे आप ''केवल कथा'' की प्रक्रियाओं से गुजरते हैं, एक मार्गदर्शन जो सबके ऊपर है, उसका पालन करना है वह है परमेश्वर के वचनों पर भरोसा करें । भरोसा करें कि बाईबल की कथायें उनकी संपूर्णता में ही श्रेष्ठ रूप से कही जाती हैं जैसा परमेश्वर ने उन्हें लिखा है । जब आप एक बाईबल कथा को सुनाते हैं, कोई सूचना ना जोड़ें, कुछ भी ना छोड़े, और जब आप इसे बताते है तब कथा–वस्तु को विस्तृत या प्रचार न करें ।

बाईबल कथाओं का चुनाव

कुछ परिस्थतियों में, अगुवे द्वारा आपको एक विशेष कथा या बाईबल खंड का जिम्मा दिया जा सकता है । यदि, यद्यपि आप अपनी कहानियों का चयन स्वयं कर रहें है, यहाँ कई मार्गदर्शन हैं ।

1. एक विशेष समूह को बाइबल कथायें सुनाने के लिए जब आपके पास केवल एक ¼या कुछ एक) ही अवसर हो, ऐसी कथायें लें जिनकी विषयवस्तु श्रोताओं की आयु के अनुकूल हो एवं कथा की लंबाई की ओर आपका मार्गदर्शन करें जिनमें वे सच्चाईयाँ हैं जिन्हें ''श्रोताओं'' को सुनने की आवश्यता है ।

2. जब परमेश्वर ने हमें बाईबल दी, उसके पास ऐतिहासिक घटनाओं की अंसख्य संख्या थी कि उनमें से चुनें । हालाँकि, परमेश्वर ने अपनी बुद्धि से उन्हीं को चुना जो मनुष्य की आवश्यकता हेतु सिद्ध हैं । चूंकि हमारे परमेश्वर ने सभी लोगों को बनाया है, वह उनकी आवश्यकतायें जानता है । साथ ही, अपने सर्वज्ञान में, परमेश्वर उन सभी संस्कृतियों एवं विश्वासों को जानता है जो लोग विकसित करेंगे ।

बाईबल संस्कृतियों के ऊपर है । क्योंकि, इसके विषय वस्तु सभी संस्कृतियों से ऊपर हैं । हम यह इसलिए कहते हैं कि कथा कहने वालों को सलाह दें कि परमेश्वर के पास प्रत्येक कथा में सभी लोगों के लिए आत्मिक मूल्य हैं ।

एक समूह के लिए ''गलत'' कथा का चुनाव करने पर अत्याधिक चिंता न करें । जैसे आप चयनित कथा को सुनाते हैं, यह जाने कि पवित्र आत्मा अपना संदेश उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचायेगा ।

3. केवल कथा में हम पूर्व ही से कुछ कथाओं का चुनाव सुसमाचार प्रचार या शिक्षा के लिए नहीं करते । स्थिरता से केवल कथा के लागू होने में हम साक्ष्यों को देखते हैं कि पवित्र आत्मा सभी कथाओं के द्वारा लोगों को शिष्यता में लाता है और ला सकता है तथा लोगों को परमेश्वर पर विश्वास में लाता है ।

4. यदि समान श्रोताओं को कथा सुनाने के लिए आपके पास कई अवसर हों, तो बाईबल के प्रारंभ से शुरू करना श्रेष्ठ होगा । अधिकतर बाईबल कथायें उन सूचनाओं पर निर्मित है जो पूर्व कथाओं में हैं, अतः जब संभव हो यह बुद्विमानी होगी कि कथाओं को कालक्रम के अनुसार चुनें व सुनाये ।

5 कथा बताने में, और रिकार्डिंग करने में, यदि आपको अगुवाई महसूस होती है तो आप कुछ कथाओं को छोड़ सकते हैं, परंतु यदि आप ऐसा करते हैं, आप संभवतः अगली कथा का परिचय देना चाहेंगे ताकि जुड़ाव निर्विध्नता से बना रहे । यद्यपि जब आप किसी कथा को नहीं भी छोड़ते हैं, तो समयों पर, यह बुद्धिमत्ता होगी कि अपने श्रोताओं को इस कथा के लिए तैयार करे जिसे आप कहने वाले हैं, उस पूर्व कथा को याद दिलाकर जो आपने बताई थी ।

6. जब एक कथा लंबी हो, संभवतः 15 पदों से ऊपर, आप चाहेंगे कि इसे दो कथाओं में विभक्त करें । यह श्रोताओं को ठीक से सुनने व चर्चा को अनुमति देता है । इसके प्राकृतिक अलगाव द्वारा विभक्त करें, जो संभवतः खंड का ठीक मध्य भाग नहीं होगा ।

उदाहरण के लिए 2 राजा :1–27 में नामान की कथा एक अद्भुत कथा है कि एस टी एस शैली में कहीं जाये–यदि आपके पास चर्चा को पूर्ण करने हेतु 3 घंटे है तो! वास्तव

में, नामान की कथा में चार अलग कथायें है। बड़ी कथा में स्वाभाविक ठहराव इन पदों में है 1–5, 6–14, 15–19 और 20–27

7. कुछ कथाओं में लंबी सूची होती हैं, संभवतः शहरों या नामों की । यदि कथा काफी लंबी है, इसे उस सूची के प्रारंभ से पूर्व विभक्त कर दो कथायें बनाये फिर, अपनी दूसरी कथा के परिचय में, सूची का जिक्र करें । संभवतः कहें, ''14 विभिन्न देशों के नागरिक सभा में आयें ।'' तब सूची के समाप्त होने के ठीक बाद में दूसरी कथा को कहना प्रारंभ करें ।

सूचना को इस प्रकार प्रस्तुत करने से आपने दो बाईबल कथाओं को बताया जो वचन से सटीक हैं । प्रारंभिक कथावाचकों एवं सीखने वालों के लिए, कथाओं को विभक्त करना कथाओं को याद करने को सरल बनाने में सहायता करता है । जैसे कथावाचक उनके कौशलों को बढ़ाते हैं, वे हमेशा वापस जा सकते हैं और दोनों कथाओं को जोड़ सकते हैं या सभी नामों को जोड़ने का निर्णय ले सकते हैं ।

अब आपने एक कथा का चयन कर लिया है, आइये हम इसे बताने के कुछ तरीकों को सीखने की जाँच करें ।

1. कथा को समझने व याद करने, और इसे बिना चूक के उत्साह के साथ बताने की योग्यता के लिए **प्रार्थना करें** ।

2. **कथा को पुनः पढ़े, तेज आवाज के साथ** (या ध्यानपूर्वक सुनें जब सुनाई जाती है या पढी जाती है)। जैसा आप इसे करेंगे, आप संभवतः कुछ शब्दों को बदलना चाहेंगे । अपनी कथा के लिए ऐसे शब्दों को चुनें जिसका उपयोग आपके श्रोता स्वयं को व्यक्त करने हेतु करते हैं । उदाहरण के लिए, ''भयानक'' कहने की जगह, आप ''डरावना'' या ''भयपूर्ण'' कहने का निर्णय कर सकते हैं ।

(यदि आप ऐसे भाग्यशाली लोगों में से एक हैं जो एक से अधिक भाषा पढ़ सकते हैं साथ ही बोल सकते हैं, आपके पास तेज आवाज में पढ़ने एवं सीखने का अद्वितीय साधन है । उस भाषा की बाईबल कथा को जोर से पढ़ें जो उस भाषा में नहीं लिखी गई है जिसमें आप कथा बताने जा रहें है । उदाहरण के लिए, यदि आप हिन्दी पढ़

सकते हैं, और कथा को अंग्रेजी में सुनाना चाहते हैं, हिन्दी में देखें एवं अंग्रेजी में तेज आवाज में कथा बोले । इस तरीके से आप बिल्कुल ठीक शब्दों को बोलने का प्रयास नहीं करेंगे, परंतु आप कथा का एक कथा जैसे याद करने व कहने में अधिक उन्मुख होंगे । साथ ही, आप और अधिकाई से प्राकृतिक रूप से उन शब्दों को चुनेंगे जो बातचीत में हैं ।

3. **अपनी बाईबल को बंद करें तथा स्मरण से कथा को जोर से कहें** । अपनी योग्यतानुसार जितना कथा को बोल सकते हैं केवल उतना ही श्रेष्ठता से करे । जैसा आप बढ़ेंगे, यदि आप गलती करते हैं या भागों को भूल जाते हैं, चिंता न करें, रूक नहीं । बढ़ते जाये । आप उस छूटे हुए भाग को अगले वाक्य में जोड़ सकते हैं यदि वह आपको स्मरण आ जाता है । **यह कथा कहना है, स्मरण या याद करना नहीं है ।**

उदाहरण स्वरूप, यदि पाठ कहता है ''यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को लिया परंतु अचानक आप सभी तीन नामों को भूल जाते हैं, आपको सुनाते जाना है, यह कहते हुए, ''यीशु ने तीन शिष्यों को लिया....'' तब, जैसा आप कथा को निरन्तर कह रहे हैं, यदि आपको नाम याद आ जाते हैं, वे कहने की बजाय आप कहे, पतरस, याकूब और यूहन्ना....'' । कथा सत्य ही ठहरती है । (जब अगली बार आप कथा सुनाते हैं, आपको संभवतः नामों को कहना याद रहेगा जब वे कथा में पहली बार आते हैं !)

4. **कथा को एक बार और जोर से पढ़ें** । जब आप पढ़ते हैं, ध्यान करें कि संभवतः आपने क्या जोड़ा है । या छोड़ दिया है । आपको संभवतः आश्चर्य होगा कि आपने कथा का कितना स्मरण कर लिया है । यदि आपकी कथा लंबी है (12 से 15 पदों से अधिक) आप चाहेंगे कि इसे दो भागों में याद करें । कई कथाओं के कई प्राकृतिक भाग होते हैं । आप संभवतः चाहेंगे कि अपनी कथा को दो दृश्यों या चित्रों में अपने मन में स्मरण करें । आप शब्दों को स्मरण नहीं कर रहे हैं, **आप ठीक–ठीक कथा को अपने मन में चित्रों के अनुसरण से स्मरण कर रहे हैं ।**

5. **पुनः अपनी बाईबल को बंद करें और कथा को जोर से कहें ।** इस समय में, आप पायेंगे कि आप प्रथम बार की अपेक्षा कथा को अधिक सुना सकते हैं । एक बार और,

कथा को खोलें एवं जोर से पढ़ें यह देखने के लिए कि यदि आपने किसी सूचना को/हिस्से को जोड़ा या छोड़ा तो नहीं हैं । छोटे हिस्सों को भी सही होना आवश्यक है । कथा का प्रत्येक भाग, जिस प्रकार से परमेश्वर ने हमें दिया है, महत्वपूर्ण है ।

6. **प्रारंभ व अंत के कथनों को चुनें** अपनी कथा के पथ को स्थापित करें, आपकी कथा का प्रारंभ कहाँ से होगा व आपकी कथा का अंत कैसे होगा । आपकी चुनी हुई कथा संभवतः स्मरण करने में सरल हो, इसका अर्थ है कि यह एक सीधा पथ/रास्ता है, प्रारंभ से अंत ।

7. मानसिक चिन्ह लगाने वाला :

अक्सर आपकी कथा में कठिन स्थान, संगम होंगे कि आप भटकेंगे जब तक कि आप अपने पथ पर एक मानसिक चिन्ह नहीं बनाते।

बारंबार कथा कहने और स्वयं की जाँच कुछ और बार करने पर आप पायेगें कि कुछ एक भाग स्मरण करने में कठिन है । यदि कथा के नाम या अन्य निश्चित भाग कई बार छूट गये हो, तो यह समय है कि आपकी कथा के रास्ते के नक्शे पर कुछ मानसिक चिन्हानियों का उपयोग किया जाये ।

(अ) आपकी कथा के उन नामों, शब्दों या विवरणों के लिए जिन्हें स्मरण करना आपके लिए कठिन हैं, एक चित्र को अपने मन में चित्रित करें (जैरी लूकस, जिन्हें स्मरण शक्ति चिकित्सक जाना जाता है, ने इस तरीके को लोकप्रिय किया है) ।

उदाहरणार्थ योना की कथा को सुनाने में योना के पिता का नाम अमित्तै याद करने में संभवतः आपको परेशानी हो । अपनी भाषा के ऐसे शब्द या शब्दों को सोचें जिनकी उस नाम या शब्द जैसी है जिसे आप याद करने का प्रयास कर रहें है । अंग्रेजी में, एक कथावाचक एक व्यक्ति जो ए–मित–टाई ।

आप पायेंगे कि जितना मतिहीन चित्र आप अपने मन में चित्रित करेंगे, उतना ही कठिन शब्दों को याद करना सरल होगा । जिस भी भाषा में आप बोलते हैं, एक अनुप्रास/तुकबंदी शब्द या आकृति को खोजें जो उस नाम या परिस्थिति को आपके विचारों में लायें ।

(ब) कुछ जो कथा सुनाना सिखाते हैं, वे निश्चित नामों को याद करने पर जोर नहीं देते हैं । हम आपको कथा में नामों को कहने के लिए आपको उत्साहित करते है, यद्यपि वे

कथा के स्मरण में सबसे कठिन भाग होते हैं । परमेश्वर जानता है कि हम नामों को स्मरण करने में संघर्ष करते हैं । परंतु, चूंकि परमेश्वर ने कई घटनाओं में हमें एक कथा में चरित्रों तथा स्थानों के नाम देने को चुना है, हम उन सूचनाओं को सम्मिलित करना चाहते हैं जब हम कथा सुनाते हैं ।

7. **कहें व जाँचे जब तक आप सही से न सुनाये ।** इन सभी क्रमों को बारंबार दोहराये । जब तक आप कथा को ठीक से न जान ले । संपूर्ण कथा को जोर से कहते रहें, और तब पाठ पर नजर डाले यह देखने की आपने सभी सूचनाओं को पूरा किया है या नहीं ।

हमेशा कथा में सत्यों को जोड़ने के विपरीत चौकसी करे, यहाँ तक उन सत्यों के लिए भी जो इस बाइबल कथा के समानांतर पाठों में पाये जाते हैं !

परमेश्वर ने यह निर्णय लिया कि कुछ कथाओं को बाइबल में एक से अधिक बार कहा जाये । प्रत्येक कथन थोड़ा अलग है । यदि परमेश्वर ने कथाओं को अलग रखना चाहा है, तो हम भी करेंगे । समय में, जैसे अधिक कथाएँ सुनाई जाती हैं, प्रत्येक कथा में सत्यों को पाया जाता है और जिस प्रकार वे एक दूसरे से उपयुक्त होते हैं, को खोजा जायेगा ।

अपरिचित में कदम रखना

जैसे कि हम नये कौशलों को सीखने का प्रयास करते हैं, वहाँ एक प्रवृत्ति है कि हम केवल उन्हीं भागों को पद्धति में इकठ्ठा करते हैं जिन्हें हम पहले से ही प्रमाणित पाते हैं ।

मुझे एक उदाहरण देने दें : हमारे कई समर्पित स्वयंसेवक अधिकारीगण एक नये शिक्षण भाग को सुनने को सहमत हुए जिसे मैं केवल–कथा के लिए लिख रही थी । यद्यपि मेरा मंतव्य एक निश्चित भाग की स्पष्टता/शुद्धता को देखना था, परमेश्वर ने इस उपकथा का उपयोग मुझे एक मूल्यवान पाठ सिखाने/दिखाने को किया ।

इस भाग को ठीक तरह से समझने के लिए, उन्हें कथा को जानना था, अतः मैंने इन दो शर्मीले लोगों से पहले कथा को सीखने को कहा । इसमें एक, एक महिला जो चार ''केवल कथा'' कार्यशालाओं में सम्मिलित हुई व संचालन में मदद की थी । दूसरा एक पुरूष जो अपनी आयु के अस्सी के दशक में थे (परंतु वह कार्य ऐसे करते है, जैसे बीस वर्ष के हों !), इस क्षण तक, कथा कहने से सफलतापूर्वक बचते रहे हैं ।

मैंने समझाया, ''यदि आप दिशा निर्देशों का अनुसरण करेंगे,'' आप इस दस पदों की कथा को दस मिनिट में सीख जायेंगे । मैंने उन्हें एक कथा सीखने के ''केवल कथा'' के तरीके का

स्मरण कराया । पूरी कथा को एक बार पढ़े, जोर से । जब आप पढ़ते हैं, कथा को प्राकृतिक, बोलचाल के शब्दों में कहें । उदाहरणार्थ, कथा में, ''निहारो'' की जगह आप ''देखो'' कह सकते हैं । अपने मन की आँखों में देखें कि कथा में क्या हो रहा है । एक बार पढ़ने के तुरन्त बाद, अपनी आँखों को बंद करें, और जितनी आपको कथा याद है उसे जोर से कहें ।

''आपका लक्ष्य कथा को सही–सही याद करना है, सही–सही शब्दों को नहीं । फिर वापस जायें और फिर से इसे जोर से पढ़ें । जिन भागों को आपने छोड़ दिया आपको पता चलेगा । अपनी आँखों को बंद करें और फिर से कथा को जोर से कहें । इसे चार बार करें ।''

इन सहयोगियों, सेवक हृदय लोगों ने निर्देशों को मेरे लिए दोहराया । इसे प्राकृतिक बोलचाल के शब्दों में जोर से बोलें, अपनी बाइबल बंद करें, और कथा सुनायें,''

इस प्रकार उन्होंने प्रारंभ किया । उन्होंने पढ़ा..... शांति से ! न ही तेज आवाज न ध्वनि की । मैंने उनके अध्ययन में व्यवधान किया । आपको इसे कैसे पढ़ना चाहिए था ?

दोनों का उत्तर था, ''तेज आवाज में/जोर से ।''

परंतु मैंने कुछ नहीं सुना, मैंने पूछा
''ठीक है'' पुरूष ने कहा,'' मैं इसे बस अपने लिए पढ़ रहा था ।''

''परंतु आपने पहले ही कहा कि आप जोर से पढ़ना जानते हैं । आप एक सहयोगी व्यक्ति हैं । आपने निर्देशों का पालन क्यूँ नहीं किया ? मैंने पूछा ।

''मैं नहीं जानता,'' वह भम्रयुक्त हुए, ''मैं अनुमान करता हूँ कि मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता ।''

''और आप,'' मैं महिला की ओर मुड़ी, क्या आप जानती हैं कि आपको तेज आवाज में पढ़ना था ?'' ''हाँ ''

''तब मैं नहीं समझ पाई । आपने क्यूँ तेज आवाज में नहीं पढ़ा ?'' सकुचाते हुए उसने बताया, ''मुझे वैसा करना बेवकूफी लगा ।''

हम सभी हंसे, विशेषकर जब हमें पता चला कि वह कथा जक्कई के बारे में थी, एक व्यक्ति जो यीशु को इस कदर देखना चाहता था कि उसने ऐसा कुछ किया जिसे संभवतः बेवकूफी

समझा गया होगा । साथ ही, उनकी कथा में अन्य सत्यों में से एक था कि कैसे जक्कई ने सारे निर्देशों का पूर्ण रूप से पालन किया ।

अंततः थोड़ा बहलाने के बाद, उन्होंने अपने बंधनों को, जो ''मैंने इस प्रकार से कभी नहीं किया'' तथा बेवकूफ दिखने का डर थे, तोड़ दिया । उन्होंने अपनी कथा को जोर से पढ़ा, अपनी आँखों को बंद किया तथा जितना वह कर सकते थे कथा को दोहराया ।

चार बार के पश्चात् मैंने उनसे पूछा, ''आप अब अपनी कथा मुझे सुना सकते हैं? आश्चर्यजनक रूप से केवल दस मिनिट के अध्ययन में उन दोनों ने लगभग सही कथा सुना दी !

''तो'' मैंने अस्सी वर्षीय व्यक्ति के साथ मजाक किया,'' क्या आप हमेशा दस पदों को दस मिनिट में याद कर लेते हैं ? वह बस हँस दिये ।

महिला चिल्ला उठी, ''मैं पहले कभी भी इन बाईबल कथाओं को नहीं सीख सकती थी ! मैं चाहती थी । मैंने प्रयास किए, परंतु मैं ऐसा नहीं कर सकी ।''

मैंने पूछा ।'' क्या आपने कभी सभी निर्देशों का पालन किया था ? ''नहीं'', वह मुस्कुराई, ''इस समय से पहले नहीं ।''

हमने इस घटना को आपको उत्साहित करने के लिए जोड़ा है कि आप केवल कथा के सारे साधनों/भागों का पूर्ण रूप से उपयोग करें । चूंकि अभी आप इन शब्दों को पढ़ रहें हैं, यह स्पष्ट है कि आप पढ़े–लिखे हैं । स्मरण रखें, केवल कथा का सीखना एवं बातचीत शैली मौखिक है, इसलिए आपसे एक अन्य संसार में कदम रखने को कहा जा रहा है ।
विश्वास से, केवल कथा की सारी सीढ़ियों का प्रयास करे जैसा कि वे लेटी हुई हैं । कार्यालय में घटित घटना बहुत ही सामान्य हैं, और यह दर्शाती है कि ''केवल कथा'' निर्देशों के भाग का उपयोग आपको इच्छित परिणाम नहीं दे सकता । ''केवल कथा'' को जब आप एक निर्देश रूप में प्रयास करेंगे, तब परमेश्वर संभवतः कई उपयोगी नई पद्धतियों को दर्शायेगा जो आपके अध्ययन व ''केवल कथा'' के प्रस्तुतीकरण को उन्नत करेगा ।

कथा में गहराई एवं सुनने की रूचि को जोड़ना

1. कथा में गहराई व सुनने की रूचि को जोड़ना कथा के संदर्भ के बारे में विचार करें ।

वचन को पढ़े या सुनें जो आपको आपकी कथा में ले जाता है। अक्सर यह जानना कि आपकी कथा के पहले बाइबल में क्या घटित हुआ (ऐतिहासिक व आत्मिक दोनों) आपको आपकी कथा और अधिक समझ देगा। जब आप अपनी कथा की तैयारी समाप्त कर ले, आपको यह निर्णय करने की आवश्यकता कि अगर आपकी कथा को एक ''परिचय'' या ''भूमिका'' की आवश्यकता है जो आपके श्रोताओं को कथा को बेहतर समझने में सहायता करेगा । बाद में पुस्तक में, हम देखेंगे कि कैसे एक परिचय को तैयार करें ।

2. **सर्वनामों को त्यागें !!!!!!**

यह श्रोताओं को कथा का अनुसरण करने में सहायता करता है जैसा आप इसे बताते हैं, यदि आप कथा में आये लोगों के नामों का उपयोग करेंगे और निश्चित स्थानों या वस्तुओं के नामों का इसके बजाय कि आप ''वह'', ''वे'', ''उसकी'', ''उनकी'' कहें । जब संभव हो इसे करें (और जैसा एक भाषा के अंतर्गत ग्रहण योग्य हो ।)

3. **कथा के समय/काल के बारे में विचार करें ।**

¼इस ''कथा के काल'' और दूसरा बिंदु ''कथा को जीना'' को ध्यान में रखना, दोनों ही कथा समझने के केन्द्र हैं एवं कथा को ठीक से कहने को सक्षम करते हैं)

¼अ) हम एक कथा को यथार्थ समय से अधिक शीघ्रता से पूरी तरह नहीं पढ़ सकते हैं। इसलिए, एक कथा को पूर्णतः समझने के लिए, इसे धीरे से पढ़ें । मार्ग कथा को स्मरण करें? जो धीरे–धीरे गये उन्होंने खजानों को प्राप्त किया ।

¼ब) कथा के प्रत्येक दृश्य के अपने मन में चित्रित कीजिए । कथा में दी गई जानकारी द्वारा, कथा में प्रत्येक चरित्र क्या सोच रहा है और महसूस कर रहा है की कल्पना करें ।

¼स) ध्यान दें यद्यपि बाईबल की कथायें हजारों वर्ष पुरानी हैं, परंतु उन कथाओं में लोग उन घटनाओं को पहली बार जी रहे थे । यद्यपि पढ़ी जा रही कथा से हम शायद पूर्व परिचित हों, इस बात का ध्यान दें कथा में कोई भी घटना को घटित होने से पूर्व में घटना को नहीं जिया था । इसलिए अपने मन में घटनाओं से इस प्रकार से गुजरें जैसा कि कथा के चरित्रों ने उनका अनुभव अवश्य किया होगा ।

¼4½ **कथा को जियें ।** ध्यान दें कि प्रत्येक चरित्र में क्या किया और कहा और उन्होंने कथा के अन्य चरित्रों के प्रति कैसा प्रतिकार/व्यवहार किया ।

दूसरों के कार्य एवं शब्द हमें बहुत कुछ बताते हैं, यदि हम उन्हें ''ध्यानपूर्वक सुनते'' हैं। सावधानीपूर्वक अवलोकन द्वारा, कथा कहने वाले एक कथा को समझने में योग्य होते हैं, उन्हें कथा को सही भावनाओं के साथ सबसे अधिक शुद्धता से कहने को सक्षम करता है ।

स्वयं को याद दिलायें कि बाईबिल में सभी लोगों के बारे में जिन्हें हम पढ़ते हैं, यहाँ तक की अगुवे व परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता केवल लोग हैं । यद्यपि कईयों ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और कठिन परिस्थितियों में विश्वास को दर्शाया, **प्रत्येक घटना में** उनमें से प्रत्येक को विश्वास और भरोसे का चुनाव करना था ।

(5) **अपनी कथा में सभी ग्रंथ उद्धरणों को बोले ।** शब्दों को बोले जैसा लोगों (या कथा चरित्रों) ने अवश्य कहे होंगे । जब आप उद्धरणों को जैसा चरित्रों ने कहा, भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहेंगे तो कथा को आप एक महान जीवन प्रदान करने का अवसर पायेगें) संकेत : यदि कहने वाले के भाव को कथा में सूचीबद्ध किया गया है, या बहुत ही स्पष्ट हो, तब उस भाव का उपयोग कीजिए, क्रोध, दुख, भय निराशा आदि भावों के लिए देखें । जब आप वह कहें जो कथाचरित्र ने कहा तो जितना संभव हो उतना नाटकीय बनें A

यदि आप निश्चित नहीं हो सकते कि कथा में कहने वाला किस भाव को महसूस कर रहा है, उन शब्दों को उस भाव के साथ न कहें जिसे आप सोचते हैं कि कहने वाले का होगा । यह कथा में जोड़ना होगा, जिसे बाईबल में परमेश्वर कभी नहीं करने को चिताता हैं !)

''जितनी बातें की मैं तुमको आज्ञा देता हूँ उनको चौकस होकर माना करना, और न तो कुछ उनमें बढ़ाना और न उनमें से कुछ घटाना ।'' व्यवस्थाविवरण । 12:32

''परमेश्वर का एक–एक वचन ताया हुआ है, वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है । उसके वचनों में कुछ मत बढ़ा, ऐसा न हो कि वह तुझे डाँटे और तू झूठा ठहरे ।'' नीतिवचन 30:5–6

6. **कथा को व्यक्त करें ।** जैसा आप कथा कहने का अभ्यास करते हैं, आपके स्वर को आवश्यकता है कि कथा में आये भाव तथा चित्त को प्रतिबिंबित करे ।

1. जब लोग पहले कथायें कहना प्रारंभ करते हैं, कई बार नाटकीय होने के प्रयास में, कथावाचक कथा को एक उत्तेजित आवाज में कहना प्रारंभ करते हैं, परंतु तब वे उसी उत्तेजित आवाज को पूरी कथा में निरंतर रखते हैं । उत्तेजित आवाज के साथ ऊँचे स्तर में बहुत लंबा बोलना अन्ततः श्रोताओं को थका देता है,इन श्रोताओं की रुचि खो देता है । वास्तविक जीवन में, कोई भी कथा उत्तेजना के साथ पूरे समय सही नहीं सुनाई जा सकती है ।

2. यथार्थ में, कथा के कुछ भाग संभवतः दुख, भय, दयालुता, निराशा या किसी अन्य भाव के होंगे जिन्हें एक उत्तेजित आवाज सही से प्रतिनिधित्व नहीं करेगी । कथा को अपनी आवाज के फैलाव को ऊँचा और नीचा करते हुए व्यक्त करें, तथा

   अपनी आवाज की उत्तेजना का स्तर कथा के अनुरूप करें । साथ ही, कथा के विभिन्न भाव को आपकी आवाज की ध्वनि एवं भाव द्वारा प्रतिबिंबित किया जा सकता है ।

3. प्रत्येक भाषा में, जब लोग वार्तालाप करते हैं, वहाँ ध्वनियाँ है जो वास्तव में शब्द नहीं होते, वे प्राकृतिक रूप से उनकी बातों में फिसल आते हैं । ये ध्वनियाँ प्रत्येक भाषा एक संस्कृति में अद्वितीय होती हैं ।

   यह हो सकता है कि एक दीर्घश्वास/लंबी साँस थकावट को दर्शाती है । या साँस छोड़ना व्यग्रता को संकेत करती है । अधिकांश संस्कृतियों में, जीभ की चटख एक भाव इंगित करती है । एक शीघ्र साँस या वायु के अंदर लेना संभवतः आश्चर्य या भय को दर्शाती है । हँसना या किसी की आवाज में पकड़ एक भाव को देती है जिसे हम महसूस करते हैं । ये सभी ध्वनियाँ एवं कई अलिखित लेकिन बोलचाल में आने वाली

ध्वनियाँ अस्तित्व में हैं । हम इन ध्वनियों को आसपास के लोगों से सीखते हैं जैसे हम बढ़ते जाते हैं ।

बाईबल कथाओं को प्राकृतिक एवं रूचिकर रूप में कहने के अपने कौशल को बढ़ाने के लिए उन ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनना प्रारंभ करें, जब आप दूसरों के साथ बातचीत करते हैं । तब, जैसे आप नयी ध्वनियों को सुनते हैं, अपने मन में उनका संग्रह करें ताकि आप उनका उपयोग उद्देश्यपूर्वक कर सके जब आप बाईबल कथायें कहते हैं ।

4. यहाँ तक एक ठहराव या शब्दों के मध्य एक हिचकिचाहट कथा के सुनाने में एक बड़ा नाटक और सुनने की रुचि को जोड़ सकता है । उदाहरण के लिए , एक कोढ़ी की कथा में वाचक कहता है, ''यीशु ने अपना हाथ बढ़ाया और कोढ़ी को छुआ ।'' यदि कथावाचक इन शब्दों को बिना रुके बोलता है, एक बड़ा अवसर खो दिया गया है ।

यीशु के लिए एक कोढ़ी को वास्तव में स्पर्श करना अद्भुत हैं, यह ऐसा महान दयालुता दिखाता हैं । कथावाचक को आवश्यकता है कि शब्दों को, धीरे से आगे पीछे करते हुए प्रत्येक चेष्टा के मध्य (कथावाचक द्वारा) जो कोढ़ी को स्पर्श करने तक पहुँचाती है, कहे । यीशु व कोढ़ी के मध्य सुन्दर क्षण दिखाई, सुनाई एवं महसूस होता है जब कथावाचक एक बढ़ती हुई धीमी और बढ़ती हुई अधिक आश्चर्य भरी आवाज में कहता है, ''यीशु..... ने अपना हाथ बढ़ाया.....और.....कोढ़ी को.....छुआ ।''

5. कथा में नाटक के क्षणों की तलाश करें । जब एक चंगाई होती है या वहाँ कुछ भी असामान्य है या यहाँ तक कि एक कथा के अंदर एक चरित्र द्वारा एक दृढ़ कथन किया गया है, बोलने में एक रूकावट या ठहराव का उपयोग का निरूपण करे । ऐसा करने से, आप नाटकीय घटना को पर्याप्त समय देते हैं कि वह खुले एवं श्रोताओं द्वारा महसूस की जा सके ।

6. अधिकांश कथाओं में कुछ साधारण कथन होते हैं जो वाचक के शब्दों को जोड़ते हैं । इन भागों को एक सामान्य आवाज में श्रेष्ठ रूप से कहा जा सकता है ।

7. कई बार, यद्यपि यहाँ तक कि वाचक के शब्द की कथा में रूचि ला सकते हैं । वाचक के शब्द एक स्थान परिवर्तन या कथा के अदभुत भाग की ओर ध्यान आकर्षित कर

सकते है । इन शब्दों को रुचि के गहरे भाव के साथ कहा जाता है । यह ऐसा है जैसे यदि वाचक श्रोताओं के साथ कुछ गुप्त उत्तेजनात्मक सूचना को बांट रहा है, तो यह एक उच्च स्वर की फुसफुसाहट में कहा जायेगा ।

इस प्रकार से बोलना लोगों को उन शब्दों की ओर इंगित करता है जिनका अनुसरण निश्चयता से रूचिप्रद होगा । आप साधारण शब्दों को भी कह सकते हैं जैसे– ''इसके बीच में'' , या '' उसी समय'' या ''उनके पहुँचने पर'', परंतु उन्हें एक योजना के तरीके से कहें ।

7. **क्रियाओं का उपयोग करें, कथा को दिखाये ।** ऐसे कार्य जो कथा को सही अनुकूलता दे भय, लोभ, क्रोध, उड़ान, आश्चर्य बहादुरी, निराशा और अन्य भावों को दर्शा सकते हैं ।

भावों को यहाँ तक कि हल्के से हाव–भावों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है । कहाँ आप खड़े होते हैं, देखते हैं या हाव–भाव के द्वारा आप अपनी कथा में आगे लोगों, जनसमूह या स्थानों का स्थान स्थापित कर सकते हैं ।

जब आप एक व्यक्ति के वक्तव्य को बोले, अपने शरीर को हल्के से पुनः उस स्थान में रखे एवं सही दिशा में देखें जो इस समान हो कि वह व्यक्ति कहाँ हैं, क्या देख रहा था या वह व्यक्ति कर रहा था । उदाहरण के लिए चंगे हुए लोग आश्चर्यचकित दिखेंगे, एवं उनके नयी चंगी देह को धीरे से चलायेंगे या वे उत्तेजित हो जायेंगे और आनंद के लिए उछलेंगे । कथन में एवं क्रियाओं में भी रुकावटें कथा कहने में यथार्थता एवं नाटकीयता को जोड़ती है ।

चेतावनी शब्द : यदि आप पाते हैं कि जिन्हें आपने कथा सुनाई, बाद में आपके पास आते हैं व कहते हैं, कि ''आप कितने महान कथावाचक है'' या ''कलाकार हैं'', अपने प्रस्तुतीकरण पर दोबारा विचार करें। कथावाचक रूप नहीं है परमेश्वर का वचन रूप है। एक कथावाचक द्वारा अत्याधिक क्रियाकलाप बोले गये शब्दों से ध्यान हटा सकते हैं, लोग सुनने की बजाय देखने अधिक लगते हैं । यह श्रेष्ठ होगा कि छोटे क्रियाकलापों को बनायें जो केवल आपके बोले गये शब्दों का उदाहरण दें । आपको लोगों से यह सुनने की आवश्यकता हैं, ''उस कथा ने मुझसे बातें की,'' या ''कथा में वह व्यक्ति मैं हूँ।''

8. **कथा कहने के लिए खड़े या बैठे हों ?**कई संस्कृतियों एवं परिस्थितियों में एक कथावाचक के लिये यह अधिक अनुकूल होगा कि वह लोगों के साथ बैठकर कथा को सुनायें ।हम आपको सलाह देते है कि आप खड़े होकर अपनी कथा का अभ्यास करें ।

आप योग्य होंगे कि कथा को पूरे शारीरिक हाव–भाव एवं स्थान स्थापनों के साथ सुना सकेंगे । इस तरीके से, जब आपको एक बड़े समूह को एक कथा सुनाने का अवसर प्राप्त होता है या किसी अन्य स्थान पर जहाँ कथा सुनाने का श्रेष्ठ तरीका खड़े होकर सुनाना हो, आपने सभी शारीरिक हाव–भावों का अभ्यास कर लिया होगा ।

हम श्रोताओं को चाहते हैं कि वे उन कथाओं को समझें व याद रखें जिन्हें हम सुनाते हैं । न केवल हाव–भाव एवं क्रियायें को समझें व याद रखें जिन्हें हम सुनाते हैं । न केवल हाव–भाव एवं क्रियायें कथा में लोगों की रूचि लाती हैं, वे कहानी के विषय को समझने व स्मरण रखने में लोगों की क्षमता को बढ़ाती है । हाँ, एक कथा को कहने के लिए बैठे होना सबसे श्रेष्ठ चुनाव है, सभी माध्यमों से बैठे । परंतु जब आपकी अधिकांश कथावाचन सेवकाई बैठे रहकर पूर्ण हो जाती है, आप फिर भी सक्षम होंगे कि उन क्रियाओं का उपयोग करें जिन्हें आपने अभ्यास किया है ।

9. **कथा का प्रारंभ**– जब आप कथा कहना आरंभ करते हैं, कहें, ''अब यह कथा है'', या ''यह बाइबल की कथा है।'' जैसा आप कथा कहना आरंभ करते हैं, एक खुली बाइबल को पकड़े रहे और इसे एक क्षण को देखे जैसे आप इसे पढ़ रहे हैं। यह श्रोता को संकेत करता है कि जो आप बोल रहें हैं वह बाइबल से है। यदि आपकी कथा का एक परिचय है, अपनी बाइबल को बंद रखें जब आप कथा परिचय देते हैं । एक परिचय आपके शब्द हैं – कथा नहीं ।

कुछ कथाओं को सुनाते समय आप चाहेंगे कि अपने दोनों हाथों का उपयोग अपनी कथा में नाटक जोड़ने को करे । जैसा आप बोल रहें हैं, कोमलता से अपनी खुली हुई बाइबल को पास की टेबल अथवा किसी प्रकार के ऊँचे मंच पर रख दें । जैसा आप इसे रखते है। बात करते रहे, ताकि श्रोता जानें कि आप अभी भी एक कथा को कह रहें है जो बाइबल में पाई जाती हैं । जब आप अपनी कथा को समाप्ति के निकट आते हैं, अपनी कथा को निरंतर कहें जैसा कि आप अपनी खुली हुई बाईबल तक पहुँचते तथा उठाते हैं ।

¼यदि आप एक ऐसे क्षेत्र में कथावाचन कर रहें है जो ख्रीस्त–विरोधी है, आप शायद एक बाइबल को पकड़ना न चाहेंगे या श्रोताओं को नहीं बताना चाहेंगे कि यह बाइबल की एक कथा है । ऐसी घटना में, केवल अपनी कथा सुनाये और श्रोताओं को विषय तथा पश्चात् चर्चाओं द्वारा आत्मिक रूप से स्पर्श होने दें)

10. **प्रत्येक को देखें, कुछ बार !** ''केवल कथा'' में हम उपस्थितों को सिखाते हैं कि प्रत्येक को देखें जब वे उनकी कथा सुनाते हैं । रूचिकर रूप से, एक कार्यशाला में जब एक नयें कथावाचक ने एक समूह में पूरे समय केवल मुझे ही देखा, एक खोज हुई । उसे सही करने से पहले मैंने उससे पूछा कि यदि उसकी संस्कृति में, यह अपेक्षाकृत है कि उसे अपनी सारी जानकारी केवल बुजुर्ग या समूह के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति को बताना है । उसने उत्तर दिया, यह सत्य है ।

ओह नहीं । संस्कृति–विरोध । ''केवल कथा'' में हमारी अभिलाषा है कि प्रत्येक का ध्यान हो एवं सभी उपस्थितों को उत्साहित करें कि प्रश्नों के प्रति उत्तरों में सम्मिलित हों । उस संध्या हमने ''केवल कथा'' के राष्ट्रीय शिक्षकों के साथ काफी समय इस विरोध की चर्चा की ।

हम सहमत हुए कि, यद्यपि प्राचीनों एवं अगुवों के प्रति सम्मान अच्छा है,किसी को भी उपेक्षित नहीं किया जाना चाहिए । निश्चित ही, अगुवों को मान देने से प्रारंभ करें, परंतु जैसे की जितना अधिक संभव हो कथावाचकों को प्रत्येक से बोलने की आवश्यकता है, लोगों के समुदाय में पद श्रेणी के चिंता किए बगैर । समस्तता से, कथावाचक निरंतर सम्मिलित करता है और उच्च श्रेणी के लोगों से बोलता है । परंतु साथ ही, समूह में अन्य लोगों को देखने द्वारा, प्रदर्शन द्वारा, कथावाचक दर्शाता है । (जैसा कि दयालु सामरी के दृष्टांत में है) आज हमारा पड़ोसी कौन है ।

इस संसार के ईश्वर ने सभी मानव संस्कृतियों के मन में यह बुन दिया है कि मजबूत को ऊँचा करो और कमजोर को मूल्यहीन करो । स्पष्ट रूप से पवित्र शास्त्र में प्रत्येक को सम्मिलित करने का एक बाइबल संगत सिद्धांत है । यीशु ने यह किया । अक्सर कि वह उनके साथ समय बिताता है और ध्यान देता है जिनको उसकी संस्कृति छोटे लोग समझती थी, उसकी आलोचना होती थी ।

''केवल कथा'' की कार्यशालाओं में, हम सिखाते हैं कि विश्वासी होने के नाते हमें विशेषतः उन लोगों को सम्मिलित करना है जो जीवन के किनारे पर है, महिलायें, बच्चे, साधारण, जात–बाहर इत्यादि ।

जब एक संस्कृति की कुछ वस्तु पवित्रशास्त्र से विरोध करती है, विश्वासियों को अवश्य एक चुनाव करना चाहिए :

या तो किसी एक की संस्कृति किसी के कार्यों या विश्वासों का मार्गदर्शन करे या परमेश्वर का वचन किसी के कार्यों या विश्वासों को एक उच्च स्तर पर ले जाये, प्रत्येक विश्वासी को निर्णय अवश्य करना है ।

11. **कथा का अंत करें ।** जब आप कथा पूर्ण करें, श्रोताओं से कहें, ''यह कथा का अंत हैं'', एवं अपनी बाइबल बंद करें ।

12. **अपनी चुनी हुई कथा को अक्सर सुनायें ।** किसी को भी जो इसे ध्यानपूर्वक सुने, जब तक कि यह सरलता से बहने लगे । यदि कोई भी लोग उपलब्ध नहीं हैं, इसे पास के जानवर या एक पेड़ को सुनायें ।
    याद रखें कि आप शब्दों का सही–सही स्मरण नहीं कर रहें, परंतु आप एक सही कथा को सुना रहे हैं ।

साहसी हो । विश्वास करने वाले हो । लिखना नहीं हो ।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं यीशु पहाड़ी उपदेश को देने को खड़े हुए हैं एवं पहले अपने संक्षिप्त लेख को अपने सामने एक पढ़ने की मेज पर जमा रहे हैं ? शायद नहीं जब कोई आपसे अपनी गवाही करने को कहता है, या आप कैसे अपने जीवनसाथी से मिले या आपके जीवन का सबसे आनंदमयी अनुभव, क्या आप उत्तर देने के लिए अपने संक्षिप्त लेख की ओर संदर्भित होते हैं ? कुछ प्रकार की जानकारी जो हम कहते हैं, हमें स्मरण होती हैं । हम इसे स्वयं प्राप्त करते हैं । यहाँ तक कि जब हम अपने मित्र से हमारे दिन के बारे में बात करते हैं, हम इसे स्मरण से बताते हैं । हम जानकारी को स्वयं रखते हैं, क्योंकि यह एक कथा है, इसलिए हम इसे सरलतापूर्वक दोहरा सकते हैं ।

हम जानते हैं ''केवल कथा'' को आपकी आवश्यकता है कि आपको नये कौशल प्राप्त हो । पूर्व में यदि आप कभी एक वक्ता या शिक्षक नहीं रहे हो, आपने निःसंदेह अपने प्रस्तुतीकरण को स्मरण के लिए संक्षिप्त लेखों का उपयोग किया होगा । जब आप भाषण देते हैं या सामग्री को सीखते हैं, जो कि एक विषयक विषय सूची में लिपटा है, संक्षिप्त लेखों की आवश्यकता होती है । परंतु कथा के साथ, आपको संदर्भित लेखों की आवश्यकता नहीं हैं ।

यदि आपने घर में निर्मित कुछ चॉकलेट केक का स्वाद लिया है और उसे स्वादिष्ट पाया, आपने संभवतः नुस्खे को पूछा होगा, मसालों के मिश्रण को । यदि आप घर जाकर अपने

लिए एक बनायेगें, क्या यह ठीक होगा कि चॉकलेट के लिए वेनिला को फेंटे और आटे के लिए चावल को ? नहीं, बिल्कुल नहीं । केक की अद्वितीयता उसके नुस्खे पर आधारित है ।

हम सलाह देते हैं कि ''केवल कथा'' के नुस्खे का अनुसरण तथा ''केवल कथा'' के प्रत्येक चरण पर भरोसे का एक उद्देश्य है ।

जब आप ''केवल कथा'' में तैयारी करते हैं कथा और प्रश्न आपके मन में पूर्ण रूप से हो जानी चाहिए, कोई संक्षिप्त लेख नहीं ! उनके लिए जो बहुत पढ़ते हैं, यह संभव नहीं प्रतीत होता है, चूंकि, जैसा हमने कहा, लगभग सभी जो पढ़ते हैं, ने जानकारी को स्मरण करने को लिखित संक्षिप्त लेखों पर आधारित रहना सीखा है । केवल कथा की प्रक्रिया में, हम आपसे कुछ असामान्य करने को कहते हैं । अध्ययन करें तथा एक पाठ को तैयार करे, तथा **कुछ भी नहीं** लिखें ! हाँ हम गंभीर हैं – लिखित संक्षिप्त लेख नहीं ।

हम आपको उत्साहित करते हैं कि ''केवल कथा'' की एक कार्यशाला में उपस्थित हों । वहाँ आप एक दस पदों की बाइबल कथा को दस मिनट में सीखने का अनुभव करेंगे । साथ ही, केवल कथा के शिक्षक व्यक्तिगत मदद सीखने में देंगे कि किस तरह आत्मिक खजाने को खोजें तथा प्रश्नों को तैयार करें । **ये** सभी कुछ आप लिखित संक्षिप्त लेखों के बिना करेंगे ।

कौशल 2 : कैसे कथा में खजाने को खोजें

दूसरा कौशल जिसे आपको प्राप्त करने की आवश्यकता है कि कैसे उस कथा के अंतर्गत जिसे आपने सुनाने की योजना बनाई हैं, में खजाने को खोजें ।

एक बाईबल कथा में खजाना क्या है ? हम उन आत्मिक सच्चाईयों को, जिसे परमेश्वर बाईबल की प्रत्येक कथा में मिश्रित करता हैं, खजाना कहते हैं । ये खजाने आत्मिक अवलोकन तथा आत्मिक प्रयुक्ति का सम्मिलित रूप है ।

आत्मिक अवलोकन है कि कैसे परमेश्वर कथा में लोगों के जीवन में कार्य कर रहा है ।
आत्मिक प्रयुक्ति है कि आत्मिक सच्चाईयाँ जो हमारे वर्तमान जीवन में निरुपित/लागू होती हैं ।

खोजनेवालों की खोज में सहायता : फिलिप्पुस व खोजे की कथा को स्मरण करें ? प्रेरितों के काम में हम एक महत्वपूर्ण व्यक्ति, एक कूशी खोजा के बारे में पढ़ते हैं, जो अपने रथ पर बैठ यशायाह की पुस्तक पढ़ रहा था । परमेश्वर ने फिलिप्पुस को खोजे के पास पवित्र शास्त्र को समझाने भेजा । कथा को सुनना अच्छा है, परंतु लोगों को कथा के विषय में समझाने में सहायता करना जिसे उन्होंने अभी सुना है का एक बाईबल सम्मत पूर्व निर्णय है ।

कैसे ''आत्मिक अवलोकन'' नामक खजाने को खोजें ।

आप कथा की जाँच को केवल एक ऐतिहासिक भाग के रूप में नहीं कर रहे हैं, आप यह भी खोज रहे हैं कि उसमें आत्मिक रूप से क्या घटित हो रहा है । परमेश्वर की हमेशा से प्रत्येक बाईबल कथा में प्रत्येक के लिए एक योजना है । कथा में आये चरित्रों ने क्या सीखा(या नहीं सीखा) द्वारा हम जान सकते हैं कि परमेश्वर हमें क्या सिखाना चाहता है। जैसा पहले बताया गया एक बाइबल कथा को समझने व स्मरण करने के तरीके का एक भाग है कि उस कथा को जीना ।

प्रत्येक कथा चरित्रों ने क्या कहा और किया द्वारा जब आप एक कथा को जीते हैं, ध्यान करें कैसे परमेश्वर कथा में काम करता है । यह ''कथा में जीना'' आपको कथा के कुछ खजानों को प्राप्त करने में सहायता करता है ।

इन आत्मिक खजानों को पाने के लिए, कथा में पूर्ण रूप से जाये और यह देखने के लिए कुछ समय लें कि प्रत्येक व्यक्ति या लोगों के समूह के बारे में कथा में क्या कहा गया है । परमेश्वर कथा में प्रत्येक के साथ कार्य कर रहा होगा कि उन्हें कुछ सिखाये ।

यदि आपके पास छपा हुआ या श्रव्य वचन उपलब्ध है जिसमें वह वचन है जो आपकी कथा के पूर्व का है, इसमें वापस जाइये । उस जानकारी पर विचार करें जो आपकी कथा के ठीक पहले आती है । क्या वह कुछ है जो संभवतः यह समझने में आपकी सहायता करे कि कथा चरित्र कौन हैं, वे क्या जानते हैं, और अनुभव करते हैं ।

आत्मिक अवलोकनों को खोजने पर छोटा ऊपरी दृश्य : बुद्धिमान सलाहकार

कुछ गाँव वालों एक कुएँ एवं जल के अधिकार पर एक लंबे समय से झगड़ रहे थे, अतः वे एक बुद्धिमान सलाहकार के पास सलाह लेने गये । लोगों की कथा सुनने के बाद, सलाहकार ने कई प्रश्न पूछे, चूंकि वह झगड़े को पूर्ण रूप समझना चाहता था, ताकि वह अच्छी सलाह दे सके ।

उसने पहले पूछा, '' क्या तुम मुझे परिस्थिति को बता सकते हो ? कुछ एक शब्द में, तुम्हें क्या कष्ट दे रहा है ?''

गाँव वालों द्वारा झगड़े के छोटे रूप में सुनाये जाने के बाद, उसने बुद्धिमानी से पूछा, क्या इस समस्या के पहले भी कुछ घटित हुआ था जो इसे और बेहतर से समझने में मेरी सहायता कर सके ? जब गाँव वालों ने बताया कि कैसे यह झगड़ा हुआ तत्पश्चात् सलाहकार ने लोगों से पूरी कथा को फिर से दुहराने को कहा, परंतु इस बार इसे धीरे से कहने को कहा ।अतः लोगों ने उनकी कथा को फिर से कहना प्रारंभ किया।

जैसे ही गाँव वालों ने उनकी कथा के पहले भाग को बताया, सलाहकार ने उन्हें रोका और पूछा, अब मुझे बताये, तुम्हारे झगड़े में इस बिंदु तक, क्या तुम में से किसी ने कुछ कहा या संभवतः क्या तुमने कुछ किया था, क्योंकि वह मेरी सहायता करेगा कि मैं बेहतर रीति से समझ पाऊँ कि क्या घटित हुआ था ?'' गाँव वालों के उत्तर देने के बाद, सलाहकार ने यह भी पूछा, उस समय पर, क्या तुमने से किसी ने कोई चुनाव किया ? और यदि एक चुनाव किया, क्या वहाँ अन्य विकल्प भी थे जो आप चुन सकते थे ? जब भी एक विकल्प का जिक्र किया गया, सलाहकार पूछता, और उस चुनाव का परिणाम क्या था ? और कौन सभी उससे प्रभावित होते ?

इस प्रकार से सलाहकार ने जारी रखा । वह गाँव वालों से उनकी कथा के अगले भाग को सुनाने को कहता, तब उन्हें रोकता और कुछ वहीं प्रश्न पूछता कि गाँव वाले संभवतः क्या कहते या करते, चुनाव उन्होंने किया या करते, और परिणाम और उनके चुनावों का दूरगामी प्रभाव ।

अंततः, जब उन्होंने खत्म किया, क्योंकि बुद्धिमान सलाहकार ने गाँव वालों के उत्तरों को ध्यानपूर्वक सावधानी से सुना था, वह सचमुच इस झगड़े को समझ गया था, और उसे मालूम था कि कैसे अच्छी सलाह दे !

''केवल कथा'' में हम चाहते हैं कि प्रत्येक बाइबल कथा में आयी मूल्यवान जानकारियों को हम प्रकट करें । इस खजाने को निर्धारित करने, हम प्रश्नों के पूछते हैं, अधिकांश उस तरह जैसे बुद्धिमान सलाहकार ने पूछ थे । परंतु हम उससे भी गहरे में जाते हैं, जो कथा में घटित हुआ, जो केवल एक इतिहास है । हम देखना चाहते हैं कि हम आत्मिक रूप से क्या सीख सकते हैं ।

उस बुद्धिमान सलाहकार ने गाँव वालों से पहले कहा कि संक्षिप्त में, ''स्थिति का विवरण दें ।'' हम जानते हैं कि बाइबल कथाओं तथा खंडों में भी कुछ प्रकार की समस्या या स्थिति है जो कथा को बनाती है । हम उसे ''परिस्थिति'' कहते हैं। इसके पूर्व कि हम बाइबल कथा में धीरे से जाना प्रारंभ करें और पूछें, हम पहले इसकी परिस्थिति को देखते हैं । क्या वे जो कथा में हैं भूखे हैं या खतरे में हैं? क्या वे डरे हुए हैं या शंका में हैं या संभवतः किसी प्रकार की अयहमति में हैं?

उन परिस्थितियों को जानना कथा में के लोगों को हमारे लिए वास्तविक बनाता है। हम कथा में भावात्मक रूप से डूब जाते है जब हम यथार्थ करतें हैं कि यह अवश्य उस परिस्थिति का अनुभव उन लोगों के लिए कैसा रहा होगा।

साथ ही, इसके पूर्व कि गॉववालों को उनकी कथा सुनाने को कहा गया, उस सलाहकार ने गॉववालों से कहा कि उससेक पूर्व क्या घटित हुआ जब उन्होंने उस समस्या को अनुभव किया । ठीक इसी प्रकार, बाइबल की एक कथा के अंदर जब खजानों को देखते हैं, हम संरचना को देखते हैं, जिसे संदर्भ भी कहते हैं।

परंतु यह ध्यान रखें । हालॉकि एक बाइबल कथा का ऐतिहासिक संदर्भ सहायक है, हम उसके आगे जाते है, उसके आगे जो बुद्धिमान सलाहकार ने किया था । हम आत्मिक संदर्भ के लिए भी देखते हैं । हम उन तरीकों के लिए देखते है जिनसे परमेश्वर संभवतः दन लोगों

के जीवनों में कार्य कर रहा है। हम प्रयास कर सकते है कि पता करें कैसे वे उनकी परिस्थिति में आये, या कितने समय से वे संघर्षरत रहे या वे परमेश्वर की सेवा कर रहे थे । आत्मिक संदर्भ या स्थिति की खोज हमें उस कथा के आत्मिक विष्यवस्तु को बेहतर समझने में मदद करती है जिसे हम खोजबीन कर रहें हैं ।

स्मरण रखें कि कैसे बुद्धिमान सलाहकार ने गाँववालों से धीरे–धीरे बताने को कहा, और प्रत्येक भाग में उसने पूछा कि गाँव वालों ने क्या कहा और किया ? ''केवल कथा'' में हम कथा के प्रारंभ से आरंभ करते हैं तथा धीरे एवं सावधानीपूर्वक प्रत्येक भाग को सुनते हैं जैसे हम इसे हमारे मन में घटित होता देखते हैं जब हम इसे सीखते हैं । हम पूछते हैं, ''बाइबल कथा के इस भाग में प्रत्येक व्यक्ति के शब्दों एवं क्रियाओं से हम क्या सीख सकते हैं ?''

उस भाग में चर्चित प्रत्येक के बारे में हम स्वयं से पूछते हैं, जिसमें यीशु तथा पिता परमेश्वर सम्मिलित हैं । हम पूछते हैं, ''क्या कहा गया व किया गया था, क्या चुनाव किए गये थे, या क्या किये जा सकते थे, एवं प्रत्यक्ष परिणाम क्या थे और कौन सभी प्रभावित हुए थे ? ''उत्तर प्रकट करते हैं जिसे हम कहते हैं ''आत्मिक अवलोकन।''

खजाने के लिए धीरे और सावधानीपूर्वक खोज हमें अनुमति देती है कि देखें, जीवित लोगों ने हमारे जैसे, अपने वास्तविक जीवन का सामना करते हुए क्या कहा व किया और उन्होंने जो चुनाव किए उनके प्रभाव व परिणामों पर विचार करने के लिए ।

एवं इसके अलावा जो बुद्धिमान सलाहकार ने पूछा । बाइबल कथाओं को जब देखते हैं, हम ईश्वर के लिए देखते हैं । यहाँ तक कि जब परमेश्वर का एक बाईबल कथा में नहीं भी आया होता है, हम हमेशा खोजते हैं कि परमेश्वर कैसे उस परिस्थिति में और लोगों के जीवन में कार्य कर रहा था और हम उसके बारे में क्या सीख सकते हैं ।

वास्तविक जीवित लोगों ने बाईबल कथाओं को जिया है ।

जीवित श्वांस ले रहे लोगों के बारे में सोचना प्रारंभ कीजिए जिन्होंने वास्तव में इस स्थिति का अनुभव किया । प्रत्यक्ष करें कि उनके पास भावनायें व चेतना है, जैसा आपके पास है । कल्पना करें कैसे उन लोगों ने उस क्षण ''संभवत'' अनुभव किया । जो कि आवश्यक नहीं है कि उन्हें कैसा महसूस करना चाहिए । तब, कथा के बारे में और अधिक सीखने के लिए इस एक भाग में एक समय पर जैसी घटना हुई है विभिन्न चरित्रों पर नजर डालें ।

कथा के प्रथम भाग को देखे, एवं सावधानीपूर्वक अवलोकन करें व सुनें । स्वयं से पूछे... कि मैं लोगों के बारे में, जैसा मैं उन्हें करना देखता हूँ व उनको सुनता हूँ, क्या सीख सकता हूँ ? क्या वे साहसी या डरे हुए दिख रहे हैं, या दुखी या प्रसन्न हैं, या मैं कोई अन्य भाव देख रहा हूँ ? क्या मैं देख रहा हूँ कि क्या कारण है जो उन्हें ऐसा महसूस करना या कार्य करने को प्रेरित कर रहा है ?

प्रत्येक भाग में चुनावों के लिए देखें । संभवतः व्यक्ति एक अलग चुनाव कर सकता था ? प्रत्यक्ष करें कि बाइबल में प्रत्येक कथा में, प्रत्येक, जिसमें ईश्वर पिता व यीशु सम्मिलित हैं, के पास कई विकल्प थे जिन्हें वे चुन सकते थे ।

जब आप उस कथा के प्रत्येक भाग में सभी विभिन्न चुनावों को देखना प्रारंभ करते हैं जिन्हें किया जा सकता था, आप सत्य को खोजते हैं । स्मरण करें कि ये चुनाव पहले उनके मनों में किये गये, तब उन्होंने उन चुनावों पर क्रिया की ।

विचार करना प्रारंभ करें : कौन से अन्य चुनाव संभवतः किये जा सकते जो अधिक बेहतर या शायद बुद्धिमत्ता के नहीं होते ।

संभवतः चुनाव एक कमजोर चुनाव था, और आप देखते है कि परिणाम नकारात्मक व खराब हैं, क्योंकि वे **चुनाव** किये गये ? संभवतः यह एक अच्छा चुनाव था और कुछ अच्छा घटित हुआ, या कुछ आश्चर्यकारी हुआ, जो संभवतः प्रथम देखने पर आपको बुरा परिणाम प्रतीत हुआ । आपको आश्चर्य करने की आवश्यकता है, कथा के उस भाग में अन्य कौन प्रभावित हो रहा है उस चुनाव के कारण जो किया गया, और वे किस प्रकार प्रभावित हुए।

स्वयं से पूछें : *इस कथा में मैं परमेश्वर को कैसे देखता हूँ ? वह क्या कह रहा है और कर रहा है के द्वारा मैं उसके विषय क्या सीखता हूँ ?*

अतः, यह वह है जो हम आत्मिक अवलोकनों को पाने को करते है। । हम कथा में प्रत्येक भाग में जाते हैं और उन्हीं जैसे ''यदि' प्रश्नों को पूछते हैं,हम शब्दों,क्रियाओं, किए गये चुनाव (या वे जो किए जा सकते थे) को देखते हैं, और अन्य पर उन चुनावों के प्रभावों व परिणाम पर ध्यान देते हैं । और तब हम हमेशा पूछते हैं, *मैं परमेश्वर को उन लोगों के जीवनों में क्या करता या अनुमति देता देख रहा हूँ ?*

आप प्रत्येक कथा को आत्मिक खजानों के लिए खोजें, इस प्रकार पूछ कर :

1: कथा में यह चरित्र क्या कह और कर रहा है ?

2: यह उस व्यक्ति की आत्मिकता के बारे में मुझे क्या बताता है ?

3: क्या मैं कथा द्वारा जान सकता हूँ कि वह व्यक्ति यदि एक, विश्वासी, एक खोजी, एक शंका करने वाला या एक मना करने वाला है?

4: विश्वास या संदेह दर्शाया जा रहा है?

5: किस प्रकार परमेश्वर कथा की परिस्थितियों को चेतावनी, शिक्षा या उत्साहित करने में उपयोग कर रहा है ?

उनके लिए जो विवरणपूर्ण जानकारी पसंद करते हैं, प्रश्नों की एक लंबी सूची है जिसे आप संभवतः आत्मिक खजानों को पाने हेतु उपयोग करना चाहेंगे। ये केवल कुछ सुझाव हैं जो आपको एक विचार देने हेतु है कि कितने विभिन्न तरीकों से आप संभावित खजानों की संपत्ति के लिए देख सकते हैं जो एक कथा में संभवतः पाये जा सकते हैं ।

स्वयं से प्रश्न करें :

1. क्या कथा में कुछ ऐसा है जिसने मुझे अचंभित किया : परमेश्वर के कार्य, या लोग या लोगों के व्यवहार का परिणाम ? जब आप सावधानीपूर्वक उस कथा को ''सुनते'' हैं। जिस तरीके से परमेश्वर बाईबल में हमारे लिए प्रस्तुत करता है, देखें यदि आप उस अचंभित भाग का कारण प्राप्त कर सकते हैं ।
2. इस घटना के पूर्व क्या आया था जो मुझे कुछ अंर्तदृश्य दे सकता है जैसे कुछ चरित्र कौन हैं और वे ऐसा व्यवहार क्यूँ कर रहें हैं ?
3. क्या मैं परमेश्वर के किसी भी गुण को प्रदर्शित देख रहा हूँ जैसे– धीरज, दीर्घकष्ट, क्रोध, ज्ञान, न्याय दयालुता, अनुग्रह, कृपा, चिंता कमजोर के लिए, सभी लोगों के लिए प्रेम या समान आदर ?
4. इन सभी गुणों को परमेश्वर ने किसे दर्शाया और क्या वह मुझे कुछ सिखाता है?
5. क्या मैं कथा द्वारा जान सकता हूँ कि इसमें आये व्यक्ति विश्वासी या अविश्वासी थे ?
6. कथा में आये लोग क्या गंभीर खोजी, बनावटी या परमेश्वर के कठोर तिरस्कार करने वाले है ।
7. क्या कथा में कोई समस्याग्रस्त है ? यदि है, समस्या कितनी बड़ी है ?
8. कैसे समस्याग्रस्त लोगों ने समस्या को सुलझाने का प्रयास किया ?
9. यदि समस्याग्रस्त व्यक्ति परमेश्वर के पास सहायता के लिए जाता, वह व्यक्ति कैसे सहायता मांगता ?
10. क्या व्यक्ति परमेश्वर के पास आदर या उद्दण्डता से गया ?

11. इस प्रकार समीप जाने पर परमेश्वर ने कैसा प्रति उत्तर दिया और वह हमें संभवतः क्या दर्शाता है ?

12. क्या वहाँ कथा में एक अगुवा है जो परमेश्वर का अनुसरण करता है, और यदि ऐसा है तो आज्ञाकारिता के परिणाम क्या हैं ?

13. क्या वहाँ कथा में एक अगुवा है जो परमेश्वर का अनुसरण करता है, और यदि ऐसा है तो आज्ञाकारिता के परिणाम क्या हैं ?

14. क्या वहाँ कथा में कोई विश्वास या व्यवहार को बदला हैं ?

15. क्या चरित्रों में से कोई विश्वास, प्रेम, दया, क्रोध, डर, आशा, पूर्वन्याय, संदेह, लोभ, भम्र, अज्ञानता, बुद्धि, आदर, अनादर, अंधविश्वास या अन्य व्यवहारों का सबूत दिखा रहा है ?

16. किस प्रकार परमेश्वर उन लोगों के विश्वासों, चेतनाओं, शब्दों या कार्यों का प्रति उत्तर दे रहा है एवं परमेश्वर का प्रति उत्तर हमें क्या दिखाता है ?

17. क्या कथा में कुछ चरित्र उनका व्यवहार बदले हैं ?

18. किस बात ने उन्हें सही में बदला है ?

19. क्या होता है जब वे बदल जाते हैं, और वह हमें संभवतः क्या सिखाता है ?

20. क्या वहाँ कथा में कोई आश्चर्यकर्म या अलौकिक घटनायें है और यदि ऐसा है तो वे कैसे कथा में लोगों पर प्रभाव डालते हैं ?

कैसे खजानों को खोजें जो "आत्मिक प्रयुक्ति" (आत्मिक रूप से लागू होने वाले) कहलाते हैं ।

आत्मिक प्रयुक्तियों को खोजना :जब हमने सावधानी पूर्वक एक कथा को देख लिया तत्पश्चात्, हम जानना चाहेंगे कि इस कथा को आज हमारे लिए क्या हो सकता है। यही वह समय है हम "आत्मिक प्रयुक्तियों" के लिए देखते हैं । इसे कथा में जाते हुए करें जिसे आपने अभी सावधानीपूर्वक उनकी आँखों से देखा है जिन्होंने इसे जिया है। कथा के अंदर से आप उन प्रत्येक भागों का एक–एक कर भ्रमण करे उन आत्मिक अवलोकनों को स्मरण करें जिन्हें आपने पाया है ।

"केवल कथा की सफलता की कुंजी" "आत्मिक प्रयुक्तियाँ," आत्मिक अवलोकनों पर आधारित हैं जिन्हें आप एक कथा में खोजते हैं ।

स्वयं से ये तीन प्रश्नों को पूछें ।

1. *आह, वह स्थिति जिसे मैंने कथा में अवलोकित किया.....आज, क्या वैसा आज घटित होता है ?*
2. *यदि होता है, किस प्रकार से कुछ उस घटना के समान है ?*
3. *क्या कैसा कभी मेरे साथ घटित हुआ, या मेरे किसी परिचित के साथ ?*
4. *क्या यह अभी घटित हो रहा है और यदि ऐसा है, कैसे यह घटित हो रहा है और यह कैसे इस कथा में सहायता कर सकता है ?*

उन कुछ प्रश्नों का उपयोग करें जिन्होंने आत्मिक अवलोकनों को ढूंढने में आपकी सहायता की थी कि विशेष व्यक्तिगत प्रयुक्तियों को ढूंढें :

1: *हाँ । यह मेरे साथ पूर्व में घटित हुआ था । मैंने क्या कहा था ? मैंने क्या किया था ?*
2: *क्या मेरे पास कोई विकल्प थे, और मैंने कौन सा विकल्प चुना था ?*
3: *मैं क्या कर सकता था ? मेरे चुनाव का क्या परिणाम था ?*
4: *कौन सभी मेरे चुनाव से प्रभावित हुए, और वे किस प्रकार से प्रभावित हुए थे ?*
5: *यदि मैं अभी कुछ इसी प्रकार से गुजर रहा हूँ मैं कैसे प्रतिक्रिया कर रहा हूँ ? कथा में घटित घटना से मैं क्या सीखता हूँ जो मुझे जानने में मदद करती है कि मुझे मेरी इस परिस्थिति में क्या करना चाहिए ?*

अंत में, कथा में, स्वयं से प्रश्न करें :

1: *मेरी इस परिस्थिति में परमेश्वर को मैं कैसे काम करते हुए देखता हूँ या किसी परिचित के जीवन में, जो इस स्थिति में हैं ?*

2: *मैंने क्या सीखा, या मुझे परमेश्वर के बारे में और उसके चरित्र के बारे में क्या सीखना है ?*

जब आप एक कथा को पूर्णत पढ़ते हैं, इसके विषय कई समय भम्रपूर्ण हो सकते हैं, जब आप जानने का प्रयास करेंगे कि क्यूं परमेश्वर इस प्रकार से कथा में एक व्यक्ति को प्रति उत्तर दिया । साथ ही समयों पर जब आप एक कथा को पढ़ेंगे आप संभवतः यह सोचेंगे । *यह एक अच्छी कथा हैं, परंतु मैं इसमें कुछ भी आत्मिक नहीं पाता । और निश्चित मैं नहीं देखता कि यह कैसे मेरे जीवन से संबद्धता करती है !*

इसके लिए देखें : बाईबल की प्रत्येक कथा आज हमारे लिए कुछ रखती है । देखें यदि आप अग्रलिखित दो वचनों में ढूँढ़ पाते है कि वे हमें परमेश्वर द्वारा बाईबल में रखी गई समस्त जानकारियों की उपयोगिता के बारे बताते हैं । यह अंर्तदृश्य आपको प्रयास करने में सहायता करेगा कि खोजे क्यूं परमेश्वर एक कथा में वैसा कर रहा है और यह जानने में कि वहाँ आत्मिक अवलोकन तथा प्रयुक्ति को प्रत्येक बाइबल कथा में देखा जाना है ।

''संपूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है : ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए ।''**2 तीमूथियुस 3:16–17**

''परंतु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर थी, और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अंतिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं । इसलिए जो समझता है, ''मैं स्थिर हूँ, वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े ? तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है । परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको ।''**1 कुरिन्थियों 10:11–13**

ये पद कहते हैं कि बाइबल के सभी शब्द, जिसमें कथाओं में के शब्द भी सम्मिलित हैं, हमें लिखे गए हैं– एवं हमारे लिए । चूंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर ने केवल पन्नों को बनाने के लिए एक कथा में शब्दों को नहीं डाला, इसलिए हमें आवश्यकता है कि बाईबल कथाओं को सावधानीपूर्वक देखें कि पाये कि एक कथा में सभी जानकारियाँ हमारे लिए क्या अर्थ रखती हैं ।

एक कथावाचक एवं प्रश्नों के रचयिता होने के रूप में, आप उन कदमों को उठायेंगे जो आपके श्रोताओं को वे सच्चाईयाँ स्वयं ढूँढ़ने में मदद करेंगे ।

आप कथा में खजाने की ओर श्रोताओं की अगुवाई नहीं कर सकते जब तक पहले आप उन्हें अपने लिए नहीं ढूँढ़ते !

यदि, एक कथा को तैयार करते समय, आप एक कथावाचक के रूप में आप कथा से आत्मिक रूप से प्रभावित नहीं हैं, यह एक अच्छा समय है कि वापस जायें और परमेश्वर की ओर कथा की सच्चाईयों के लिए देखें । यदि आपने खजाना खोजने के सभी निर्देशों का पालन किया है, और फिर भी आपने अभी तक उस कथा में कोई आत्मिक सच्चाई नहीं पाई हैं, आप अभी तक इसे दूसरों को सुनाने को तैयार नहीं हैं ।

आप एक बार पूर्णतः कथा में जायें और इसके कई पाठों (खजानों) में से कुछ को खोजें, अब आप तैयार हैं कि प्रश्नों की रचना करें जो कोमलता से श्रोताओं की अगुवाई उन खजानों को स्वयं खोजने में करेंगे ।

प्रश्नों को पूछने का महत्व–

यदि आप बाहर चल रहे थे और एक खजाने को खोज लिया, आप रोमांचित होंगे। यदि आप वह खजाने को ले गये और इसे अपने मित्रों में बांटे, वे इसे पाकर बहुत प्रसन्न होंगे ।

परंतु उनकी यह प्रसन्नता जो पाने में हुई उतनी बड़ी नहीं होगी जितनी आपको उसे पाने में हुई । खोजना स्वयं में एक रोमांच है ।

उत्तर देने में सरल, मुख्य प्रश्नों का उपयोग चर्चा शैली की शिक्षा के प्रारंभ के समय करें । **यह "केवल कथा" बाइबल अध्ययन अवधारणा की सफलता हेतु अति आवश्यक है ।**

कई लोग नहीं जानते कि बाईबल में आत्मिक सत्यों की संपत्ति है । अन्य जानते हैं कि बाईबल कथाओं में बहुत से आत्मिक खजाने हैं, परंतु वे यथार्थ नहीं करते कि वे उन

खजानों को खोजने में सक्षम हैं । जब लोग सरल प्रश्नों के उत्तर सही–सही देते हैं, वे और उत्तरों को खोजने के लिए उत्साहित होते हैं ।

अधिकतर विश्वासी एक बाइबल कथा में शब्दों तथा अर्थों को सावधानीपूर्वक देखने में अभ्यस्त नहीं हैं । उद्देश्यपूर्ण प्रश्नों (यहाँ तक की यदि वे हाँ/नहीं प्रश्न हों) का उपयोग लोगों को उनके स्वयं के लिए आत्मिक अवलोकनों को खोजने की ओर करने को किया जाता है ।

''केवल कथा'' में जैसा हम, सीखने वालों के एक नये समूह के साथ कार्य प्रारंभ करते हैं, हम अक्सर उन्हें एक खजाने का अगुवाई करते है और लगभग उनके हाथों में खजाने को दे देते हैं । कुशल शिक्षक अप्रत्यक्ष ढंग से प्रति उत्तर देने वालों की अगुवाई करता है ताकि वे सोचे कि उन्होंने ही अधिकांश खोज की है । जब कक्षा के सदस्य सक्षम हैं कि उनके लिए वे स्वयं खजाने के छोटे भाग को भी खोज सके, वे उत्साहित होते हैं और अधिक खजानों के देखना प्रारंभ करें ।

वे जो उन्नत बाईबल शाला या सेमीनरी शिक्षा लिए हैं, ने संभवतः कथा को कैसे विभाजित या मूल्याकंन करना सीखा होगा, परंतु संभवतः पूर्ण रूप से एक कथा को ध्यानपूर्वक सुनने की कला को विकसित नहीं किया होगा । ''केवल कथा'' बाईबल कथा को एक साथ रखती है तथा इसे ध्यानपूर्वक सुना जाता है और सत्य को अकेले खड़े पात्र के जैसे सुना जाता है ।

गड्डे में कदम रखना। कभी–कभी लोग यह सोचते हुए बाईबल अध्ययन में आते हैं कि वे वह काफी कुछ जानते हैं जो बाईबल के बारे में जाना जा सकता है ! प्रश्नों के वर्ग जो आप उपयोग करते हैं संभवतः एक तकनीक को सम्मिलित करता है जो इन गर्वित लोगों को स्वयं ही एक गड्डे में गिरने को अनुमति देता है । एक ''गड्डा'' एक प्रश्न को संदर्भित करता है जो कि इस प्रकार से पूछा जाता है कि श्रोतागण स्वयं उनके द्वारा पकड़ी हुई गलत धारणाओं या झूठी कल्पनाओं को छोड़ते हैं ।

जैसे चर्चा बढ़ती है और चर्चा के मध्य सही उत्तर प्राप्त होते हैं, ये प्रति उत्तर देने वाले यथार्थ करते हैं कि उन्होंने गलती की है । उनकी गलती मृदुता से यह सत्य प्रकट करती है कि वे उतना नहीं जानते जितना उन्होंने पहले सोचा था । इस चतुर जाल में गिरने का अचंभित अनुभव स्व–संतुष्ट उपस्थितों को सच में ध्यानपूर्वक सुनने व सीखने में और अधिक रूचि लेने को उत्साहित करता है ।

कई समयों पर लोग पाते हैं कि कथा के बारे में जो उन्होंने पूर्व में सुना था (और सोचते थे कि सही था) वह सही नहीं था, और यह कि वे कथा के बारे में बहुत कुछ चूक गये हैं । ये लोग यह भी स्मरण करते हैं कि उन्हें कथा को अवश्य ही ''ध्यानपूर्वक सुनना'' है कि देखें वहाँ वास्तव में सत्य क्या है ।

पवित्र आत्मा, महान शिक्षक

जो बचे नही हैं उनका सामना करने में, क्या हम केवल यूहन्ना 3:16 का उद्धरण देते हैं और तब उस व्यक्ति से बाद के पदों के बारे में नहीं करते हैं ? क्या हम उस वचन पर चर्चा करने से रूक जाते हैं क्योंकि हम सोचते है कि सिखाने का काम केवल पवित्र आत्मा का है ? नहीं ! हमें अक्सर उस पद पर चर्चा करना चाहिए ।

हम जानते हैं कि बाईबल कहती है कि पवित्र आत्मा सभी सत्यों में हमारा मार्गदर्शन करेगा, परंतु दुख है, कि जैसा हम 'केवल कथा' को बांटने विश्व में यात्रा करते हैं, हम निरंतरता से देखते हैं कि अधिकांश विश्वासियों को यह तक पता नहीं है कि बाइबल कथाओं में खजाने हैं, यह जानिए कि ईश्वर उन्हें सीखने में सहायता करेगा!

इसलिए पवित्र आत्मा सिखाने में प्रतीक्षा करता है, एक खाली कक्षा के सामने खड़े होकर।

''केवल कथा'' में जब हम एक कथा को तैयार करते हैं, हम परमेश्वर से मांगते हैं कि कथा में हमें खजानों को दिखायें, और हम उसकी सहायता को देखते हैं कि प्रश्नों को बनाये जो हमें दूसरों को खजानों तक पहुँचाने में मदद करें जिन्हें हमने अभी पाया है। जैसा हम श्रोताओं से प्रश्न करते हैं, हम प्रार्थना करते हैं कि पवित्र आत्मा चर्चा का मार्गदर्शन करें । तब जैसा श्रोताओं द्वारा एक खोज की जाती है, हम स्मरण करते हैं कि पवित्र आत्मा कमरे में प्रत्येक हृदय से बोल रहा है, जिसमें हम भी है ।

कभी–कभी, आपके श्रोताओं से प्रश्न आयेंगे जिनका उत्तर अवश्य ही बाईबल की अन्य कथाओं एवं जानकारियों से दिया जाना है । यदि आप उत्तर जानते हैं और एक बाईबल स्त्रोत दे सकते हैं, आपको आवश्यकता है कि परमेश्वर से बुद्धि मांगे कि या तो एक पूर्ण उत्तर उस समय दें या केवल एक छोटा ऊपरी अवलोकन का प्रति उत्तर दें । आपको संभवतः अगुवाई हो कि केवल कहें, अच्छा प्रश्न है । हम प्रतीक्षा करें जैसा कि वह एक संपूर्ण नई दिशा हैं । परंतु अन्य समय मैं योजना बनाऊंगा कि एक पूरी बाईबल कथा को सुनाऊं जो आपके प्रश्न से व्यवहार करती हैं ।

अभी भी आपको आवश्यकता है कि श्रोताओं के प्रति सचेतन रहें । पवित्र आत्मा या एक व्यक्ति की भूख संभवतः ऐसे कुछ अप्रत्याशित प्रश्नों की ओर अग्रसर कर रहें हैं । कथा के बाहर के प्रश्नों को एक अद्‌भुत अवसरों के रूप में देखें जिसमें सत्यों को खोज सकें । उन अवसरों को न चूकें । उन प्रश्नों के उत्तर दें !

कथावाचक जो एस टी एस चर्चा रूप का उपयोग कर रहे हैं क्रमशः उच्च–स्तर के प्रश्नों को पूछने का कौशल सीखते हैं । जैसे लोग उनके निज खजानों को ढूंढ़ना प्रारंभ करते है, बुद्विमान अगुवे सीखते हैं कि वे संकेतों को देने से पीछे हट सकते हैं और धीरे से उत्तर देनेवालों को अनुमति देते हैं कि खोजने का कार्य अधिक और अधिक करें । परमेश्वर के उपहार की जाग्रति होना कि खोजबीन विचार करते करें को देखना एक सुखद अनुभव है।

प्रेम दर्शाये–

जब हम इस चर्चा रूपी शैली को शिक्षा देने में उपयोग करते हैं, हम सभी को सफलता की उस विशेष कुंजी का उपयोग अवश्य करना चाहिए, जैसे 1 कुरिंथियों 13:1 में देखते हैं हमें प्रेम अवश्य प्रदर्शित करना है । ''यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ और प्रेम न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झाँझ हूँ।''

यह जानें : अधिकांश लोग डरते हैं जब उन्हें एक समूह के सामने खड़े रहना चाहिए और बोलना चाहिए, इसलिए आपको उनके साथ व्यवहार में अवश्य ही बहुत उत्साहित करने वाला होना है ।

कई समयों पर आप संभवतः या पासबानों को सिखायेगें । यद्‌यपि वे निःसंदेह लोगों के सामने खड़े होने में सुखी होंगे, उनमें से अधिकांश को सार्वजनिक रूप से ''सही'' नहीं किए गये हैं (या कम से कम बहुत समय से !)

अतः, जैसा आप चर्चा का उपयोग करते हुए सिखाते हैं, अपने प्रति उत्तर में निश्चितता से चेतन हो उन दोनों के प्रति जो डरे हुए और उन अगुवों के प्रति जो सार्वजनिक सुधार से अभ्यस्त नहीं हैं । जैसा श्रोतागण कथा को पुनः सुनाते हैं, या प्रश्नों के प्रति उत्तर देते हैं या उनके निज अवलोकन को प्रस्तुत करते है, यह याद रखें । कोई बात नहीं, लोग संभवतः कितनी तुच्छता से प्रति उत्तर देते हैं, यह आवश्यक है कि कथावाचक/शिक्षक सुधार को करने में भला एवं स्वीकृत करने वाला हो ।

हमेशा स्मरण रखें कि सौम्य सुधार जो एक मुस्कान के साथ कहे गये हो गंभीर सुधारों की अपेक्षा अधिक सरलता से ग्रहण किये जाते हैं । यह मन में रखें कि आप एक कथावाचक के रूप में समूह का वातावरण जमाते हैं । आपके पास एक विकल्प है । या तो आप श्रोताओं को उत्साहित करने द्वारा जाँच व खोजने की भावना दें कि वे अपने विचारों व अभिप्रायों को आगे रखें या.....या प्रतिभागियों को निराश व तनाव उत्पन्न कर सकते है जिसमें प्रतिभागियों को महसूस हों । जैसे पूरी चर्चा का समय एक परीक्षा है और उन्हें हमेशा आवश्यक है कि ''सही'' उत्तर दें ।

फिर से, जैसा कि आप अपनी कथा को याद करने और अपने प्रश्नों को पूछने हेतु कड़ी मेहनत करते हैं, लोगों का विचार करें जिनकी आप अगुवाई कर रहें है । उनको प्रति उत्तर दीजिए, अपने मन में सबसे ऊपर यह रखते हुए कि यह आपकी कौशल/कला नहीं हैं जो सबसे अधिक महत्व रखती है; यह प्रेम है जो लोगों को दर्शाया जाता है जैसा आप अपनी कलाओं का उपयोग करते हैं !

कौशल 3: कैसे अपने प्रश्नों को निर्मित करें

बाइबल कथाओं को सुनाने के मुख्य लक्ष्य एवं फल, एवं तब उन पर तत्पश्चात् चर्चा करना, ये हैं :

1. परमेश्वर के चरित्र को सीखना एवं
2. सीखना कि वह मनुष्य जाति से तथा मनुष्य जाति के लिए क्या चाहता है,
3. स्वयं के बारे में सत्य को देखना व (भूल) स्वीकार करना ।

केन्या देश में एक ''केवल कथा'' कार्यशाला के पश्चात्, एक कलीसिया रोपक जो उपस्थित रहा, ने एक बुद्धिमान अवलोकन (निरीक्षण) किया । यह व्यक्ति, धर्मविज्ञान प्रशिक्षण में मजबूत, अपने शहरी व्यापार को सेवकाई के लिए छोड़ दिया, परंतु चार वर्षों में उसने अपने दूरस्थ गाँव के कार्य में थोड़े ही फल को देखा ।

इस कार्यशाला में आने के लिए उसने दो दिनों की यात्रा ऊँट द्वारा, एक दिन की ''हवाईबस'' (ट्रक के ऊपर) द्वारा व एक दिन बस द्वारा की ! उसने कार्यशाला में सीखे गये को प्रेम किया, अधिकृत महसूस किया ! उसने कहा, मैं दूसरों द्वारा सिखाये गये को सिखा रहा था, परंतु इस प्रशिक्षण के पूर्व तक मैं नहीं जानता था कि बाईबल से कैसे सीखूं ।

''अब मैं देखता हूँ कि मैं लोगों को एक स्थान पर नहीं ले जा सकता जहाँ मैं नहीं गया हूँ ।''

यह है कि हम क्यूं प्रश्नों का उपयोग करते हैं । पहले कथावाचक परमेश्वर के वचन से स्वयं के लिए नई जानकारियों को सीखते हैं और तब प्रश्नों के माध्यम से कथावाचक दूसरों को उन मूल्यवान सत्यों की ओर अगुवाई करते हैं जो उन्होंने सीखा है।

''रोटी के टुकड़े'' से अगुवाई एक कौशल है जिसे हम केवल कथा कार्यशालाओं में सिखाते हैं । लोग जो केवल कथा को सीखना प्रारंभ करते हैं सामान्यतः लोगों को एक खजाने की अगुवाई के लिए केवल एक ''सिद्धप्रश्न'' पूछने का प्रयास करते हैं । यह कदाचित् ही कार्य करता है । आप पिंजरे के सामने केवल एक रोटी का टुकड़ा डालकर पक्षी से पिंजरा ढूंढने की अपेक्षा नहीं कर सकते । एक पक्षी को एक पिंजरे में फुसलाने के लिए रोटी के टुकड़ों की कतार बिछाईये । इसी प्रकार से, जब आप लोगों की अगुवाई एक आत्मिक खजाने को ढूंढने के लिए प्रश्नों द्वारा करना चाहते हैं, अधिकांश बहुधा आपको छोटे प्रश्नों के एक क्रम को पूछने की आवश्यकता है जो श्रोताओं को सरलतापूर्वक सत्य की ओर अगुवाई करेगा ।

कृपया ध्यान दें । आगे आने वाली एक अभ्यास कथा अब्राम और सारै की है। इसमें, एवं अन्य कई कथाओं में जो बाद में इस हस्तपुस्तिका में आयेंगी, बहुत से आत्मिक अवलोकन, प्रयुक्तियॉ तथा प्रश्न आपके लिए लिखें हैं । परन्तु एस टी एस में हम आपको सिखाते हैं कि अपने प्रश्नों को कभी नहीं लिखे ! आपको आवश्यकता नहीं है और परस्पर संबंध के कार्य में विघ्न डालता हैं । हमने प्रश्नों को लिखित रूप में केवल इस हस्तपुस्तिका में सूचीबद्ध किया है ताकि वे जो शिक्षित हैं, एवं वे जो सम्भवतः सक्षम नहीं हैं कि एस टी एस को एक हैंड्स ऑन कार्यशाला में उपस्थित हो सीख सकें, सक्षम हो सकेंगे कि मानसिक रूप से एस टी एस की तैयारी प्रक्रिया द्वारा चल सकें । ये केवल नमूना प्रश्न हैं । अपने निज अध्ययन तथा दूसरों को पढ़ाने के समय, आप प्रश्नों में विचारने के कौशल को प्राप्त करेंगे ।

जैसा आप, एक कथावाचक, कथाओं से गुजरते है, कुछ अवलोकन व प्रयुक्तियॉ जिन्हें हम सूचीबद्ध किए हैं खोजी तथा प्रस्तुत की जायेंगी उनके द्वारा जिन्हें आप पढ़ाते हैं यहॉ तक कि इसके पहले कि आप उन प्रश्नों तक पहुॅचे जो उन्हें उन खजानों तक पहुॅचाते हैं ! यह खजानों की पहले से ही खोज सीखनेवालों द्वारा इच्छायोग्य है, जैसा कि यह दर्शाती है है कि लोग सीख रहे हैं कि कैसे वचन में गहराई से देखें और स्वयं के लिए खजानों को खोजें।

खजाने की ओर दूसरों को ले चलने के लिए प्रश्नों को विकसित करना

उन प्रश्नों को निर्मित करना जो दूसरों की मदद खजानों को खोज करने में करें जो आप खोज चुके हैं, अब वापस अपनी कथा के प्रारंभ में जाये । अपने मन में इसके अंदर चलें, उन आत्मिक निरीक्षणों के बारे में सोचते हुए जो आपने किये हैं। स्मरण करें कि कैसे बुद्धिमान सलाहकार ने कथा के प्रत्येक भाग में कई प्रश्नों को पूछने का महत्व दर्शाया था ? यह है कि कैसे आपने अपने आत्मिक अवलोकनों को पाया था ।

उसी प्रकार से, आपको संभवतः आवश्यकता है कि अपने श्रोताओं से प्रश्नों का एक क्रम पूछें कि वे ढूंढ़ सकें जैसा आपने किया था ।

उदाहरण के लिए, यदि आप उत्पत्ति 12:10–20 की कथा सुना रहे हैं, आपने कई चीजों का निरीक्षण किया होगा जैसा कि आपने तैयारी की है, यहाँ तक की पहले कुछ पदों में ।

> ''उस देश में अकाल पड़ा : इसलिए अब्राम मिस्र देश को चला गया कि वहाँ परदेशी होकर रहे– क्योंकि देश में भयंकर अकाल पड़ा था । फिर ऐसा हुआ कि मिस्री के निकट पहुँचकर, उसने अपनी पत्नी सारै से कहा,''सुन, मुझे मालूम है कि तू एक सुंदर स्त्री है; और जब मिस्री तुझे देखेंगे तब कहेंगे, ''यह उसकी पत्नी है,' इसलिए वे मुझको तो मार डालेंगे, पर तुझ को जीती रख लेंगे । अतः यह कहना, ''मैं उसकी बहिन हूँ,'' जिससे तेरे कारण मेरा कल्याण हो, और मेरा प्राण तेरे कारण बचे।'' (उत्पत्ति 12:10–20)

संभवतः आपने ध्यान दिया होगा जैसा आपने कथा को सीखा कि प्रारंभ में, अब्राम, जो परमेश्वर पर भरोसा कर सकता था, भय को दर्शाता है । वह प्रतिज्ञा के देश से एक अकाल के कारण भागा, मिस्र को गया, और सारे से उसे बचाने के लिए झूठ बोलने को कहा (कुछ इस निरीक्षण में, कुछ समय बाद जब याकूब और उसका परिवार परमेश्वर द्वारा मिस्र जाने को अगुवाई किए गये, के साथ एक विरोधाभास को संभवतः देखेंगे) परंतु, ''परमेश्वर द्वारा अगुवाई'' शब्द दो स्थितियों में भिन्नता को दिखाते हैं ।)

तब आप वापस गये होंगे और कुछ आत्मिक प्रयुक्तियों को बनाये होंगे जो कि उन निरीक्षणों पर आपने आधारित किये होंगे । आप संभवतः देखेंगे कि परमेश्वर ने सभी लोगों को प्रतिज्ञायें दी हैं और जो वचन की आज्ञाकारिता के स्थान में हमारे जाने और ठहरने पर आधारित हैं । तब आप देंखेगें कि प्रयुक्ति को कि कैसे हम तनाव से समय खराब निर्णयों को कर सकते हैं और मदद के लिए संसार के पास जाते हैं और परमेश्वर से मंत्रणा नहीं करते । साथ ही, आप यथार्थ करेंगे कि व्यतीत समय में कई समय, हम और अधिक पाप करते हैं, जैसे षडयंत्र रचना, झूठ बोलना और उनको हमारे पाप में सम्मिलित करना जो हम पर भरोसा करते हैं !

अब अपने अवलोकनों (निरीक्षणों) को प्रश्नों में बदलें ।

कथा में प्रश्नों को डालें/लंगर करें । जैसा आप प्रश्नों को विकसित करते हैं कि अपने श्रोताओं को उन खजानों को खेजने में अग्रवाई करें जो आप खोज चुके हैं, अपने प्रश्नों को कथा में लंगर करें ।

यहाँ कुछ प्रश्न हैं जो बहुत सी खोजों जो उन आत्मिक निरीक्षणों पर आधारित हैं ।

1. उस कथा से जो हमने पूर्व में एक साथ सीखी व चर्चा की थी, परमेश्वर ने अब्राम को कहाँ जाने को कहा तथा परमेश्वर ने क्या कहा था कि वह अब्राम के लिए वहाँ करेगा ?

2. हमने देखा कि एक अकाल ने अब्राम को प्रतिज्ञात देश को छोड़ने और सहायता के लिए मिस्र जाने को अग्रसर किया । अब्राम जब अनाज कम था तब देश को छोड़ने के अलावा क्या कर सकता था ?

3. इस कथा में किस प्रकार के भावों या भावनाओं ने अब्राम को नियंत्रित किया था? अब्राम ने सारै से मिस्रियों से कहने को जो कहा उसमें आप उस भाव को कैसे देखते हैं ?

4. इस कथा के पूर्व की कथा जिसके बारे में हमने साथ में चर्चा की थी, क्या परमेश्वर ने अब्राम को कोई प्रतिज्ञा दी थी जो अब्राम को साहसी व निडर होने में मदद कर सकती थी ? वे क्या थी ? अब्राम ने अपना भरोसा कहाँ किया ?

5. कौन अब्राम के निकट था जो उसके पाप से आघातित हुआ ? विवरण दें ।

अब आत्मिक निरीक्षणों के आधार पर जिन्हें श्रोताओं ने अभी चर्चा द्वारा खोजा है, आगे के नमूना प्रश्नों को देखें जो आत्मिक प्रयुक्तियों की खोज को खोलेंगे ।

1. परमेश्वर ने आशीष के लिए अब्राम को एक स्थान के लिए निर्देश दिये । क्या किसी अन्य कथा में जिसे हमने साथ में देखा हैं, क्या उनमें से किसी में परमेश्वर द्वारा निर्देश हैं कि हमें आशीषित होने के लिए कहाँ रहने की आवश्यकता है ? संभवतः नहीं ! परंतु क्या हम एक सिद्धांत खोज सकते हैं कि परमेश्वर हमें कैसे रखना चाहता है कि हम आशीषित हों ? जैसे की ?

2. आज, क्या परमेश्वर के अनुयायी कभी जीवन को डराने वाली परिस्थितियों का सामना करते हैं? किस प्रकार के बहुत कठिन परिस्थितियों का सामना वे कर सकते हैं ?आज क्या आपने या आपके किसी परिचित ने, संभवतः एक जीवन खोने के भय की स्थिति का सामना किया है ? अब्राम के चुनावों में हम क्या कुछ देखते हैं जो उस स्थिति में सहायता कर सकते थे ?

3. अब्राम में अपनी भावनाओं को शासन करने दिया और विश्वास की कमी को दर्शाया । क्या आज ऐसा होता हैं ? यह कैसा दिखाई देता हैं ? जब लोगों में विश्वास कम होता हैं, उन्हें किसके पास मदद के लिए दौड़ना चाहिए परमेश्वर के अलावा ? इस कथा में क्या हमें मदद कर सकता है कि संभावित कष्ट के समय में और अधिक सावधानीपूर्वक विचार करें ?

4. जब स्थिति खराब दिखीं, अब्राम ने उस स्थान को छोड़ दिया जिसे परमेश्वर ने जाने की आज्ञा दी थी । क्या कभी कोई ऐसी घटना लोगों के जीवनों में आज धटती है जो उन्हें परीक्षा में लाये कि उस स्थान को छोड़ दें जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है ? क्या ऐसा आपके साथ या आपके किसी परिचित के साथ हुआ हैं ?

5. यदि कठिन परिस्थितियॉ हमारे जीवन में आते हैं, क्या जैसा अब्राम ने किया हमें विचार देगा कि हमें क्या करना और नहीं करना चाहिए ? जैसे कि ?

6. क्या ऐसे कभी समय आज आते हैं, जब हम गलत भावनाओं को हमारे निर्णयों को निश्चित करने देते हैं ? किस प्रकार की भावनायें कभी लोगों पर शासन करती हैं जब कठिनााईयॉ उनके जीवनों में आती हैं ? क्या आपने या आपके परिचित ने, कभी भावनाओं को अपने खराब निर्णयों को करने में आगे किया हैं ? क्या आप उस अनुभव को बॉटने में सक्षम होंगे ?

7. किसी भी बाइबल कथाओं में जिसे हमने एक साथ चर्चा किए हैं, क्या आप किसी भी प्रतिज्ञा को जो परमेश्वर ने की सोच सकते हैं कि आज के लोग उस पर भरोसा कर सकते हैं ?

8. स्मरण करें कैसे आब्राम के विश्वास की कमी ने कई लोगों को प्रभावित किया ? आज, क्या परमेश्वर पर हमारे विश्वास की कमी दूसरों पर असर कर सकती हैं ? वह किस प्रकार होगा ? वह क्या आपके या आपके परिचित के साथ कभी हुआ हैं ?

ये केवल कुछ अवलोकन/निरीक्षण एवं प्रयुक्तियों/लागू होने वाले प्रश्न हैं जिसे आप उत्पत्ति की उस कथा के प्रथम भाग से संभवतः पूछ सकते हैं ।

इसे ध्यान दें : यद्यपि आपने प्रश्नों को तैयार कर लिया जो श्रोताओं को उन खजानों की ओर ले जायेंगे जिन्हें आप पा चुके हैं, आपको अवश्य ही हमेशा प्रश्नों, अवलोकनों तथा आपके

श्रोताओं के उत्तरों के प्रति उत्तरदायी होना है । वे अन्य खजानों को देख सकते हैं या उनके पास कथा के उस भाग के बारे में प्रश्न हैं जिसे आप अन्तर्गत कर रहें हैं । अपने प्रश्नों को पूछिए, परंतु पवित्र आत्मा को अधिकार दें कि वह श्रोताओं से सीधे स्वतंत्रता से बातें करें जैसा वह चाहता है ।

कैसे कथा के लिए एक परिचय को निर्मित करें

कथा में आत्मिक खजानों की खोज को पूर्ण करने के पश्चात्, आप तैयार हैं निर्णय करने को यदि आपकी कथा को एक परिचय की आवश्यकता है। हम परिचयों को तैयार करते हैं जब हम सभी अवलोकनों एवं प्रयुक्तियों को खोज लेते हैं, क्योंकि जब तक हम कथा का अध्ययन समाप्त नहीं करते हमें पता नहीं होता उन सभी कुछ का जिसकी आवश्यकता है कि परिचय में शामिल करें ।

परिचय उस कथा की पृष्ठभूमि और संरचना प्रदान करती है जिसे श्रोता सुनने वाले हैं । यह श्रोताओं को तैयार करता है कि कथा को प्राप्त करें और उस संदर्भ के अंतर्गत समझे जो वचन के पहले आया है।

एक परिचय में क्या होता हैं ?

1. यदि आपको एक परिचय की आवश्यकता हैं, अधिक से अधिक इसे केवल कुछ शब्दों या वाक्यों में होना चाहिए । परिचय प्राकृतिक रूप से अधिकतर लेखविषयक शैली है बजाय एक कथा शैली के, अतः परिचयों को छोटा रखें कि श्रोताओं की रूचि बनी रहे । साथ ही छोटा उत्तम होगा चूंकि लेख–विषयक शैली में प्राप्त जानकारी एक कथा शैली की तुलना में याद रखने में अधिक कठिन है। यहॉ पर तीन कारण हैं जिसे आप परिचय में उपयोग कर सकते हैं :

अ. कथा के स्थापन के लिए एक परिचय का उपयोग करें यदि इसकी आवश्यकता कथा को एक समय या परिस्थितिपूर्ण संदर्भ में रखना है। सुनिश्चित करें आपका परिचय आपकी चुनी कथा के समझने के लिए आवश्यक है।

ब. कभी–कभी कथा में पारिभाषिक शब्द होते हैं जो कि श्रोताओं के लिए नये या भम्रपूर्ण होंगे । आप इन शब्दों को कथा प्रारंभ करने के पूर्व परिचय में परिभाषित कर सकते हैं । शब्द या पारिभाषिक शब्द जिन्हें परिभाषित करने की आवश्यकता होगी वे ये हो सकते हैं जैसे '' सिनागॉग,'' ''मनुष्य का पुत्र,'' या '' भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र'' ।

स. प्रश्न सत्र में, आप संभवतः चाहेंगे कि श्रोतागण कथा में एक खजाने को खोज जो उन पर निर्भर करता है जो पुराने नियम की जानकारी के कुछ भाग को जानते हो । उदाहरण के

लिए, आप संभवतः यूहन्ना के अध्याय एक से कथा बता रहें हैं जहॉ यूहन्ना कहता हैं, ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता हैं।'' अतः, परिचय में आप संभवतः जिक्र करेंगे कि कई समयों पर बाइबल में परमेश्वर ने अपने अनुयायियों को निर्देश दिया कि एक मेम्ना बलिदान के लिए जब उन्होंने पाप किया ।

2. जो भी जानकारी आप महसूस करते हैं कि आपके श्रोताओं को कथा समझने के लिए अवश्य जानना चाहिए, या कथा के बारे में प्रश्नों के प्रतिउत्तर देने के लिए, उन्हें आपके परिचय में सम्मिलित करने की आवश्यकता है।

3. यह मन में रखे कि कई समयों पर किसी परिचय की आवश्यकता नहीं होगी ।

4. एस टी एस में हम केवल उसी जानकारी का उपयोग करते हैं जो बाइबल में पाई जाती है। हम अतिरिक्त बाइबल जानकारी या यूनानी/इब्रानी शब्दों की परिभाषा का उपयोग नहीं करते चूंकि उस प्रकार की जानकारी केवल कुछ ही के पास उपलब्ध है। हम सभी विश्वासियों का उत्साहित और अधिकार संपन्न करना चाहते हैं कि कथाओं द्वारा बॉटे । हमें श्रोताओं को दर्शाने की आवश्यकता है, हमारे उदाहरण द्वारा कैसे गहरे सत्यों को वचन में ढूढ़े–वचन से । उन्हें कथा पर भरोसा करना सिखाये ।

5. परिचय वह बाइबल जानकारी है जिसे आपने संग्रह किया है। जब आप अपने परिचय को कहना समाप्त करें, इसे स्पष्ट करें कि आपका परिचय स्थापन हो गया है, कुछ इस प्रकार से कहते हुएः ''अब कथा यह है'' या ''अब यह बाइबल की कथा है।'' (वहॉ आवश्यकता नहीं है और कुछ कहने की , ''यह कथा इस बारे में है .....'' इसके बजाय, कथा को लोगों को बताने दे कि वह किस बारे में है !)

अध्याय 5 : तैयारी और प्रस्तुति के हमारे कौशलों का अब हम प्रयास करें

इस नमूना कथा को सीखें –

आप शायद चाहेंगे कि वापस आकर कौशल 1 का पुनः अवलोकन करें, और उस जानकारी का उपयोग इस बाईबल कथा को सीखने में करें जो लूका में है ।

''जब वे जा रहे थे तो वह एक गाँव में गया, और मार्था नामक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा । मरियम नामक उसकी एक बहिन थी । वह प्रभु के चरणों में बैठकर उसका वचन सुनती थी । परंतु मार्था सेवा करते करते घबरा गई, और उसके पास आकर रहने लगी, ''हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी चिंता नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिए अकेली ही छोड़ दिया है ? इसलिए उससे कह कि मेरी सहायता करें,

प्रभु ने उसे उत्तर दिया, ''मार्था, हे मार्था; तू बहुत बातों के लिए चिंता करती और घबराती है । परंतु एक बात आवश्यक है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है जो उससे छीना ने जाएगा ।'' लूका 10:38–42

तैयारी : आत्मिक खजानों को खोजना

खजाना खोजना 1. – आत्मिक अवलोकनों/निरीक्षणों को खोजना ।

कथा सीखने के व्यतीत समय के दौरान, आपने संभवतः इन आत्मिक अवलोकनों को किया होगा ।

1. जब मार्था ने स्वयं को सारी सेवा को पूर्ण करने में अक्षम पाया, उसने कुछ कमजोर निर्णय किए । यद्यपि उसने निमंत्रण दिया, मार्था अपनी स्थिति के लिए दूसरों पर दोष लगाती है । वह यीशु पर चिंता न करने का आरोप लगाती है । वह यीशु पर अधिकार जमाती है । वह यीशु से सहायता मांगने में असफल होती है ।
2. मार्था यीशु को प्रभु कहती है, लेकिन वह ऐसा व्यवहार करती है जैसे वही अधिकारी हो ।

3. यीशु मार्था के अनादर का नकारात्मक प्रति उत्तर नहीं देते हैं ।
4. यीशु प्रेमपूर्णता से मार्था का सुधार करते हैं ।
5. मार्था ने सोचा जो वह कर रही है वह आवश्यक है, परंतु यीशु ने कहा मरियम ने वह एक वस्तु चुनी है जो आवश्यक थी ।
6. मार्था के पास एक चुनाव था ।
7. मरियम ने अपनी संस्कृति और उसके प्रति लोगों की अपेक्षा के विपरीत यीशु को चुना
8. यीशु मरियम द्वारा चुने को उससे नहीं लेंगे ।

खजाना खोजना 2. आत्मिक प्रयुक्तियों (लागू होने वाले) को खोजना–

अब, इन आत्मिक अवलोकनों के आधार पर जो आपने अभी ढूँढें हैं, वापस कथा में जायें और आत्मिक प्रयुक्तियों के कुछ खजानों को देखें ।

पहले, आप एक आत्मिक अवलोकन (निरीक्षण) को स्मरण करे जिसे आपने पाया है, और तब आप कुछ कुंजी (मुख्य) प्रश्नों को पूछे, जैसेः आज क्या इस प्रकार होता है ? किस प्रकार से ऐसा हो सकता है ? क्या यह कभी मेरे साथ या मेरे परिचित के साथ हुआ ? और, मैं कथा में क्या देख सकता हूँ कि यदि ऐसा मेरे साथ कभी हो तो मेरी सहायता हो सकें ?

1. इतना अधिक काम करने को न चुनें कि आप ईश्वर के वचनों से सीखने के लिए आवश्यक विशेष समय को खो दें ।
2. यह कितना दुखद है । जब हमारे जीवन में कोई समस्या है, परमेश्वर से कहना, ''क्या तू चिंता नहीं करता ?'' मदद के लिए पूछना अच्छा है, परंतु परमेश्वर को आरोपित करना कि वह चिंता नहीं करता उसका हृदय तोड़ना है ।
3. जब हम चुनाव करते हैं जो हम पूर्ण कर सकते हैं उससे अधिक का, यह कितनी मूर्खता है कि परमेश्वर पर आरोप लगाये कि वह हमारे बोझ की चिंता नहीं करता।
4. क्या हमें ईश्वर को **बताना** चाहिए कि हमारी समस्या कैसे हल करें ?
5. जितना कार्य हम कर सकते हैं यदि उससे अधिक हम ले लेते हैं, तब, या ईश्वर के लिए कार्य कर रहे हों जिसे संभवतः उसने हमें करने के लिए निर्देश भी न दिया हों ?
6. कई समयों पर हम परमेश्वर के हमारे प्रति प्रेम पर प्रश्न करते हैं जब एक स्थिति ऐसी नहीं होती जैसा हम चाहते हैं ।

7. यीशु धैर्यवान और सहनशील था जैसे उसने मार्था का सुधार किया । अक्सर, यद्यपि हम परमेश्वर को अनादरपूर्णता से व्यवहार करते हैं, वह सहनशील है और हमसे कृपापूर्णता से बोलता है।

8. जैसा यीशु की सच्ची चिन्ता और व्यक्तिगत संबंध मार्था के साथ दर्शाया गया जब उसने मार्था का उसके नाम से पुकारा, ठीक वैसे ही परमेश्वर हमें हमारे नाम से जानता और व्यक्तिगत रूप से हमसे बोलता है ।

9. यह नहीं है कि रसोईघर, या सेवा में, या अन्य किसी सेवकाई कार्य में समय व्यतीत करना गलत है, परंतु यदि हमारा काम हमें परमेश्वर के बोले हुए को सुनने से जो उसके वचनों द्वारा है से दूर ले जाता है, हमने अच्छी वस्तु को नहीं चुना है ।

10. मार्था के व्यवहार के बारे में यीशु के अंतिम कथन में, वह कहता है कि मरियम ने वह चुना है जो आवश्यक है । स्पष्ट रूप से, उस तरीके से जिससे मार्था चाहती थी मरियम जो वह कर रही थी रोक कर सेवा में मदद करने आये, मार्था सोच रही थी कि जो वह कर रही है वह आवश्यक है । कई समयों पर हम निर्णय करते हैं कि जो हम कर रहे हैं वह सबसे आवश्यक है, जबकि ऐसा नहीं होता कि जो हम कर रहें है वह सबसे आवश्यक है, जबकि ऐसा नहीं होता कि जो परमेश्वर सोचता है कि वह हमारे लिए करने को आवश्यक है ।

11. कई समयों पर हम स्थितियों को अपने नियंत्रण में करते हैं और रूकते नहीं कि परमेश्वर से पूछे कि वह क्या चाहता है कि हम करें । हम सबसे महत्वपूर्ण व आवश्यक का निर्णय करते हैं, और संभवतः लोगों को उससे दूर खींचने का निर्णय भी कर लेते हैं जो परमेश्वर ने उन्हें करने को बुलाया है !

12. यीशु यह भी कहते हैं कि जो मरियम कर रही है वह अच्छा है और उससे वह कभी नहीं छीना जायेगा । यह कथन इंगित करता है कि जो मार्था कर रही है वह छीना जा सकता है । अंतिम न्याय में, जैसा परमेश्वर उसे देखेगा कि हमने अपने जीवन में क्या किया, यह संभवतः वह हो कि हमने निर्णय किया कि हम परमेश्वर के लिए करेंगे जो अच्छा चुनाव नहीं था । यीशु इस कथा में हम बताते हैं कि उससे सीखना अच्छा चुनाव है ।

13. कई समय हमें हमारी संस्कृति और परिवार के विपरीत अवश्य चुनाव करना है, उसके विपरीत जो लोग हमसे अपेक्षा करते है जब हम आत्मिक विकल्प चुनते हैं।

अब आपने स्वयं के लिए खजानों को खोज लिया है । यह वह समय है कि आप वापस कथा के प्रारंभ में जाये और प्रश्नों को निर्मित करना आरंभ करें जो आपके श्रोताओं को उन खजानों

को उनके लिए खोजने में अगुवाई करेंगे । जो हम आगे करने जा रहे हैं वह एक एस टी एस प्रस्तुतिकरण को देखना है जो कुछ प्रश्नों का उपयोग करेगा जिसे आपने संभवतः निर्मित किए हों ।

अतः आइये अब पुर्नावलोकन करें कि आप वास्तव में क्या करते हैं जब आप एक कथा वास्तविक लोगों को सुनाते हैं .....

प्रस्तुतीकरण भाग एक :

कथा को तीन बार सुनाना

(श्रोतागणों को तीन बार कथा को सुनने देना उन्हें कथा को पर्याप्त जानने में सहायता करता है कि वे प्रश्नों का प्रति उत्तर सही दे सकें)

1. **आप कथा सुनाये ।**
2. **आप एक स्वयंसेवक (श्रोता) से कथा को पुनः सुनाने को कहें ।**
3. **आप कथा के द्वारा अगुवाई करें** (जो वास्तव में आपके द्वारा कथा को पुनः सुनाना है, परंतु आप कक्षा सदस्यों से प्रश्न करते हैं कि आपको सुनाने में मदद हो जब आप इसमें जाते हैं।)

प्रथम बार –आप कथा सुनायें ।

कथा को सही–सही एवं रूचिपूर्ण ढंग से सुनायें जैसा आप कर सकते हैं । बहुत से शारीरिक क्रियाओं व हाव–भावों का उपयोग कथा को बताने में करें जब आप इसे सुनाते हैं ।

दूसरी बार– आप एक स्वयंसेवक (श्रोता) से कथा को पुनः सुनाने को कहें।
(दो विकल्प)

विकल्प 1 : कहें, ''अपने पास के व्यक्ति की ओर मुड़े एवं कथा को एक–दूसरे को फिर से सुनायें ।'' एक स्वयंसेवक द्वारा कथा को पुनः सुनाये जाने का सबसे बड़ा मूल्य है कि लोगों को ऊँची आवाज में बोलने को उत्साहित करना । कई लोग जनता में बोलने को हिचकते हैं ।

यहाँ तक की मसीही समुदाय के अधिकतर शिक्षा भाषण शैली में की जाती है, इसलिए लोगों की उत्साहित करने की आवश्यकता है कि वे बोलें तथा उनके विचारों को स्वर दें । यदि आप एक कथा को एक समूह के लिए प्रथम बार सुना रहे हैं, यह विकल्प जो लोगों से पुनः कथा को उनके बाजू में बैठे हुए किसी को सुनाने का है सामान्यतः बिना भय का है जैसा कि अधिकांश लोग उनके बाजू में बैठते हैं जिनके साथ वे सुखी होते हैं ।

यहॉ एक मदद है ! यदि आप सोचते हैं कि आपने संभवतः कथा का भाग कहना भूल गये हैं, इस पहले विकल्प का उपयोग आपको समय देता है कि अचूकता के लिए आपके कथा कहने को फिर से जॉचे । आप अपनी बाइबल को देख सकते हैं जब लोग एक–दूसरे को कथा सुनाने में व्सरूत हैं – और वे कभी नहीं ध्यान देते कि आप क्या कर रहे हैं जैसा कि वे एक दूसरे के साथ कथा को सुनाने और सुनने में व्यस्त हैं ।

विकल्प 2 : इस विकल्प को उपयोग आप विकल्प 1 का उपयोग करने के बाद करें । लोग अधिक साहसी होंगे स्वयंसेवी के लिए जबकि उन्होंने एक एस टी एस कथा को पहले ही साथ में कर चुके हैं।

पूछें यदि कोई संपूर्ण समूह को कथा को फिर से बताने को प्रस्तुत करें । यदि श्रोतागण शर्माते हैं और आपके निवेदन पर शीघ्र प्रतिउत्तर नहीं देते हैं, करे, ''केवल उतना ही बताये जितना आपको याद है।'' मुस्कुराये और समूह को उत्साहित करते रहे । पीछे हटे और किनारे हो ऐसा हाव–भाव कि एक स्वयंसेवक आकर आपका स्थान ले ।

यदि एक कथा लंबी है या यदि चाहे कुछ भी कारण हो कोई भी उत्तर नहीं दे (निमंत्रण के पश्चात भी और आपने उन्हें विराम भी दिए कि उन्हें साहस मिले और आगे आये) एक तरीका है कि एक स्वयंसेवक को साहस संपन्न करे कि कथा को पुनः बताये । कहें, ''मेरे पास एक योजना है । क्या आप में से कई पुनः कथा को एक साथ बोल सकते हैं ? आप में से एक इसे प्रारंभ कर सकता है, तब दूसरा इसे निरंतर कह सकता है, और दूसरा मदद कर सकता है, तब दूसरा इसे निरंतर कह सकता है, और दूसरा मदद कर सकता है जब तक यह पूरी न हो जाये । और आपको केवल आवश्यकता है उतना बताने की जितनी भी आपको याद हो।''

अनेक लोगों को कथा इस प्रकार से कहने देना साहस उत्पन्न करेगी।

(25 देशों से ऊपर कथा कहने में, एक स्वयंसेवक हमेशा आया है। यदि कभी ऐसा होता है कि कोई स्वयं को प्रस्तुत नहीं करेगा, मेरी योजना है कि ''दोष'' को ले लूँ, और कहूँ, '' आप जानते है, मेरा विचार है कि मुझे आवश्यकता है कि इय कथा में फिर से एक बार कथा में जाये ताकि हम इसके साथ और सुखी हो सकें।'' तब मैं एक बार फिर से पूरी अगुवाई करूंगी।)

जब आपको एक स्वयंसेवक मिले, उत्साहवर्द्धन करें या प्रसन्नतापूर्वक उस व्यक्ति को स्वीकार करें जो स्वयं को प्रयास करने हेतु अंततः प्रस्तुत करता है। पुनः मुस्कुरायें और स्वयंसेवक से कहें, '' आपको केवल कथा सुनाने की आवश्यकता है, परिचय नहीं । चिंता न करें यदि आप

कथा को कुछ भूल जाते हैं; आपने केवल इसे एक ही बार सुना है। बस उस भाग से प्रारंभ करें जो कहता है .....,'' और तब आप कथा की पहली पंक्ति को दुहराये ।

किनारें पर खड़े हों, संभवतः स्वयंसेवक से 10 फीट दूर । यदि आप स्वयंसेवक के बगल में खड़े होंगे, वह व्यक्ति समूह की और नहीं देखेगा और अनुमोदन के लिए आपकी ओर देखता रहेगा । यदि आप बहुत दूर होंगे, स्वयंसेवक अकेला, परित्सक्त महसूस करेगा । यद्यपि जैसा कि आप किनारे पर खड़े है जबकि स्वयंसेवक कथा को पुनः बता रहा है, निश्चित करें कि आपके चेहरे के हावभव और आपकी शारीरिक भाषा रूचि और अनुमोदन दर्शा रही है।

अपना ध्यान स्वयंसेवक पर लगाये । समय के इस भाग का उपयोग किसी और से बात करने में **नहीं** लगाये। उस स्वयंसेवक ने आपमें भरोसा दिखाया है। उस भरोसे को सच्चाई से सुनते हुए और सचेत रहते हुए प्राप्त करें ।

इसके पश्चात्, यदि एक कथा ठीक से कहीं गई, अपने शब्दों तथा हावभाव से उस स्वयंसेवक को जानने दें कि आप उसके सुनाने से कितने प्रभावित हैं । प्रमाणित करें कि आप ध्यानपूर्वक एकाग्रचित्त होकर स्वयंसेवक को सुन रहें थे । उस व्यक्ति ने जो कुछ विशेष किया उसकी प्रशंसा कर आप ऐसा कर सकते हैं, संभवतः उसका एक हावभाव या शब्दों की जो स्पष्ट रूप से कहे गये ।

कभी–कभार, एक दुहरानेवाला कथा को अधिक नहीं स्मरण रखेगा या इसे ठीक से नहीं सुनायेगा। जब यह हो, दूसरे श्रोताओं से सुधार करने को नहीं कहें । यदि समूह, या आप दूसरों के सामने स्वयंसेवक के दुहराव को सुधार करेंगे, यह स्वयंसेवक को शर्मिन्दा कर सकता है।

साथ ही एक कथा को जो बहुत सी गलतियों के साथ सुनाई गई को सुधार करने का प्रयास उनके लिए बहुत भम्रपूर्ण हो जायेगा जो कथा को सीख रहे हैं । यह सबसे अच्छा होगा कि उन स्वयंसेवकों को जिन्होंने कथा ठीक से नहीं दुहरायी उस बात द्वारा उत्साहित करें जो उन्होने बहुत अच्छे से किया । संभवतः ऐसे कहे : ''मैं आपके साहस की सराहना करता हूँ,'' ''वह भाग जो आपने कोढ़ी व्यक्ति के बारे में कहा बहुत ही अच्छे से बताया,'' ''मैंने उस तरीके को पसंद किया जहॉ आपने अंशो का नाटकीयकरण किया, ' या कुछ अन्य विशेष, उत्साहित करने वाले शब्द ।

यदि आपके स्वयंसेवक ने जानकारी जोड़ी है, या कथा को सुशोभित किया है, उस जोड़े गये को जिक्र करने की आवश्यकता है। श्रोतागण जोड़े गये को ध्यान देंगे और प्रतीक्षा करेंगे कि देखे आप उन्हें कैसे बताते हैं । यदि आप सोचते हैं यह अच्छा कार्य है कि सुशोभित को ध्यानप न दें, तो आप जिक्र नहीं करते कि वे जोड़े गये जानकारियॉ '' अनुमोदित'' नहीं हैं (दयालुता के साथ), आपको इसके लिए शीघ्र खेद होगा ।

टालने के परिणाम । आशा है कि बाइबल की भाषा की शुद्वता पर अधिक ध्यान रखने वाले निराश होंगे कि एस टी एस लोगों को परमेश्वर के वचन में जोड़ने की अनुमति देता है (और हम नहीं देते हैं!) साथ ही, अनय सोचेंगे, कि वे जो चाहे जोड़ सकते हैं जब वे कथा सुनाते हैं।

वास्तविकता में, आप इन जोड़ी गई सामग्रियों से भले प्रकार से मुखातिब हो सकते हैं । केवल एक मित्रवत् मुस्कान दें और उत्साहपूर्णता से कहें, '' आप बहुत उत्सुक हैं ! आपने अतिरिक्त जानकारी को भी हमारे साथ बॉट दिया है जो मैं समझता हूॅ कि संभवतः कथा में नहीं है। यह हम सभी के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है कि केवल उतना कहें जितना इस एक बाइबल कथा में है।''

सबसे अधिक महत्वपूर्ण, कोई बात नहीं कि दोहराने वाला कितना अच्छा या कितना खराब करता है, कुछ विशेष को खोजना याद रखे कि उसके द्वारा प्रशंसा करें ।

एक स्वयंसेवक से कथा दोहराने को कहना एस टी एस कथा सुनाने में वह स्थान नहीं है जहॉ लोग कथा को इतना सीख जाये कि इसे सिद्धता से सुनाने में सक्षम हो जाये । कथा को सीखने के एक तरीके जैसे स्वयंसेवकों द्वारा बार–बार कथा को दोहराये जाने की सिफारिश नहीं करते हैं । चूंकि भाग लेने वालों ने कथा को केवल एक बार सुना है, पहला स्वयंसेवक गलतियॉ करेगा । तब जब अन्य स्वयंसेवक कथा सुनायेंगे और अधिक गलतियॉ होगी, और तब लोग केवल गलतियों को ही स्मरण रखेंगे ।

यदि आप एक के बाद एक स्वयंसेवकों द्वारा दोहराये जाने वाले तरीके की कमजोरी को दूर करने का प्रयास लोगों के सामने स्वयंसेवकों के द्वारा की गई गलतियों को सुधारने द्वारा करेंगे, लोगों के भरोसे को बनाने का उद्देश्य खो जायेगा । केवल सबसे साहसी लोग ही प्रयास करेंगे और बाकी लोग पीछे दुबक जायेंगे तथा तेज आवाज में इस भय के कारण उत्तर नहीं देंगे कि लोगों के सामने शर्मिन्दा न हो ।

यद्यपि कथावाचक को सही दोहरा सकता है, हम सिफारिश नहीं करते दूसरों को बइबल कथायें कथावाचक के द्वारा उसी कथा को बोर–बार दोहराने द्वारा सिखाना । यद्यपि यह

कार्य कर सकता है, परन्तु संभवतः यह कथा सीखने का सबसे अच्छा तरीका नहीं हो सकता ! दोहराने से सीखना मजा नहीं है और यह विनोदहीन बन सकता है।

एस टी एस प्रक्रिया में यहॉ हमारा उद्देश्य लोगों को पूरी तरह कथा सिखाना नहीं है, परन्तु, इस बिंदु पर हम, चाहते हैं कि लोग कथा को इतना सीखें कि उसे समझने में सक्षम हो, चर्चा कर सकें, और जो उन्होनें कथा में पाया है उसे व्यक्तिगत प्रयुक्ति बना सकें ।

एस टी एस प्रस्तुतिकरण के सभी पायदानों तथा कथा जब पूरी तरह से चर्चा कर ली जाये तब, वहॉ एक सही समय है कि हम निश्चित करें कि कथा ठीक–ठभ्क जान ली गई है। हम इसें ''सृजनात्मक दृढ़ीकरण '' कहते है। इस पर अधिक विवरण इस अध्याय में आगे है।

एस टी एस प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से एक कथा को सीखने की चुनौती का ज्यादातर हिस्सा प्रस्तुतीकरण की अगली दो पायदानों में हल कर देती है। कथा दुहराव द्वारा अगंवाई जो आगे आती है अक्सर कथा को लोगों के मनों में छाप देती है। और उसके और आगे जब कथावाचक कथा के बारे में बारे अवलोकन/निरीक्षण प्रश्नों को पूछता है, वे अपने प्रश्नों को कथा के प्रत्येक भाग का जिसकी वह जॉच करना चाहते है जिक्र करते हुए लंगर करते हैं। इस प्रकार से श्रोतागण कथा को सुनते है, हिस्सा, क्रमानुसार क्रम में जो पुनः कथा के विषय को दृढ़ीकृत करता है।

अक्सर, जब हम संसार में किसी नये स्थान को एक कार्यशाला की अगुवाई करने जाते हैं, स्थानीय अगुवे हमें कोने में एक ओर ले जाते है, वे हमें अकेले में बताते है, ''हम नहीं चाहतें कि आप निराशा हों क्योंकि ये लोग प्रश्नों का उत्तर नहीं देंगे।'' जब ऐसा होता है, हम अगुवे को धन्यवाद देते और उत्तर देते हैं,'' आपका धन्यवाद, हम देखेंगे कि क्या होता है।''

प्रत्येक घटना में , प्रत्येक स्थान में (स्थानीय अगुवों के लिए आश्चर्य) लोगों ने प्रश्नों के उत्तर दिए गए और अर्थपूर्ण चर्चाओं में भाग लिया । उत्तर देने की उनकी इच्छा एस टी एस प्रक्रिया में केन्द्रित उत्साहवर्द्धन और अवस्था से पैदा होती है।

कुछ लोग तेज आवाज में प्रश्नों का उत्तर देने में पर्याप्त साहस को विकसित करने में दूसरों से अधिक समय लेते है। संभवतः उन्हें सिखाया गया हो गया हो कि मसीही शिक्षा वातावरण में जोर से न बोले, जबकि अन्य संभवतः जनता के मध्य गलती करने से भय खाते हो । कई यह विश्वास नहीं करते कि उनके पास देने के लिए प्रबल आत्मिक विचार हैं । वास्तव में, हमने विभिन्न पूर्व परिस्थितियों में देखा है कि अधिकांश लोग इस प्रकार से स्थिति में किए गये हैं

कि न तो गहराई से सोचें या नये विचारों पर विचार और चर्चा करें । हमें उस स्थिति को नाश होता देखने का प्रेम है।

स्थितियों के नाश होने के उदाहरण

एस टी एस प्रकाशन के उसके पहले दिन की समाप्ति पर, एक शिक्षित व्यक्ति जो उसके 70 के दशक में था ने कहा, ''मुझे इसकी आवश्यकता 40 वर्ष पूर्व थी । हम चीन के लोग केवल चर्चा नहीं करते । हमें बताया गया है कि क्या करना है और क्या विश्वास करना है। यह बहुत महान है। पहली बार हम स्वयं के लिए खोज सकते हैं ।

नेपाल में गॉव के अशिक्षित लोगों ने एक कार्यशाला में प्रश्नों का उत्तर देने में कुछ समय लिया । परन्तु वे उत्साहित होने लगे जैसा उनके उत्तर अनुमोदित होने लगे । अंतः प्रत्येक जीवंत चर्चा में सम्मिलित हो गये । वहॉ एक अशिक्षित ने बॉटा, '' मुझे नहीं पता था कि परमेश्वर ने उन लोगों से बात की जो पढ़ नहीं सकते थे।''

एक थाईलैंड निवासी प्रशिक्षक ने थाईलैंड में एक गॉव में हुई कार्यशाला के पश्चात् सूचित किया, ''पहले स्त्रियॉ कोई भी उत्तर नहीं देंगी । इसमें कई दिन उनको लगे कि उसकी खोज करें जिसके लिए उन्हें बताने को अनुमति दी गई थी, और यह खोजने में कि जो उन्हें प्रत्येक बात का उत्तर देने से नहीं रोक पायें !''

तीसरी बार– कथा द्वारा अगुवाई

प्रथम बार आपने कथा सुनाई । तब एक स्वयंसेवक ने कथा को फिश्र से सुनाया । अब, आपका कथा को तीसरी बार सुनाने के लिए, आप प्रत्येक से कहें कि कथा में आपके साथ जायें ।

यह कथा कहने की वह वह शैली है जिसमें बारंबार चिक/संशय का उपयोग किया जाता है। यह किया जाता है जैसे यदि आप कथावाचक को कथा के एक निश्चित भाग के विवरण को याद करने में सहायता की आवश्यकता है। आप इसे नहीं चाहेंगे कि यह श्रोतागणों की क्षमता कि कथा को स्मरण करें की एक सख्त जॉच की तरह महसूस हो । बजाय इसके आप एक कथावाचक के जैसे श्रोतागणों की ओर अपेक्षा की दृष्टि से देखेंगे, जैसे आप आशा कर रहें हैं कि कोई एक अगले शब्दों या वाक्यों को कहेगा। स्मरण रखें । यह दूसरी बार है कि श्रोतागण को कथा को सही से सुन रहें हैं । चुंकि यह कुछ भागों का एक सामान्य पुनरावलोकन नहीं है, यह आवश्यक है कि आप प्रत्येक को कथा फिर से सुनाने में सहायता करें – विशेषतः अचूकता से ।

कथा का आरंभ करें जैसे आप इसे सुना रहें हैं, सिवाय प्रत्येक वाक्यखंड या वाक्य पर (या संभवतः एक नये विचार पर), आप प्रारंभ करें – तब संशय करें । श्रोतागणों को आमंत्रित करें कि शेष जानकारी को वे भरें ।

उदाहरण हेतु, आप कह सकतें, '' यीशु अमुक शहर को जाने के लिए चला और क्या वह अकेला था या, उम्म.....?'' तब आप हिचके और हावभाव करें जैसे आपको सहायता की आवश्यकता है और अपेक्षा की दृष्टि से देखें, लोगों की प्रतीक्षा करें कि खाली स्थान से भरें । उनके कहने के पश्चात् '' उसके चेले उसके साथ थे, '' आप उत्तर दें ''हॉ!'' या ''ठीक''। तब आप इसी प्रकार से कथा द्वारा अगुवाई जारी रखें ।

सामान्य रूप से लोगों को नामों या मात्राओं/परिणामों को याद रखने में सबसे अधिक कठिनाई होती है। अगुवाई को सरल बनाने के लिए, साधारणतः हम लोगों से नाम याद करने को नहीं कहते हैं ।

कब एक नाम को स्मरण करने को कहने का निर्णय करने में बुद्धिमानी की आवश्यकता है। इस छोटी कथा में मार्था, मरियम और यीशु का जिक्र बार–बार किया गया है, अतः श्रोतागण उनके नामों का सरलता से स्मरण रख सकते हैं व बता सकते हैं । बुद्धि का उपयोग कीजिए । सरल प्रश्नों को पूछें जो श्रोताओं को साहसी बनाने में मदद करेंगे । तब, वे आपके प्रश्नों के उत्तर अधिक स्वतंत्रता से देना प्रारंभ करेंगे ।

पूछें, तो मार्था ने किसे क्या करने को आमंत्रित किया ? जब वे कहें मार्था ने यीशु को अपने घर आने को आमंत्रित किया,'' आप कहें ''ठीक''।

कई समयों पर कथावाचक कथा में रूकेगा और श्रोताओं से कथा का अगला भाग कुछ इस प्रकार कहते हुए कहने को कहेगा ''अब मार्था का एक संबंधी था जिसका जिक्र कथा में किया गया है । वह कौन है और उसके बारे में हमें क्या बताया गया है ?'' जब वे उत्तर दें, ''मरियम मार्था की बहिन हैं और मरियम यीशु के चरणों पर बैठती है और उसकी शिक्षा ध्यानपूर्वक सुनती है,'' कहें, आप सब सही हैं ।

कहें, तो मार्था के पास एक समस्या है, या वह कुछ समस्या को महसूस करती है। वह क्या है ?

अतः कथा द्वारा अगुवाई में श्रोताओं की सहायता के लिए आप हिचक सकते हैं और ऐसा दर्शाते हैं जैसे आपको अगला भाग याद नहीं हैं, खाली–स्थान भरो शैली का उपयोग करें कि समूह को आपके लिए कथा स्मरण में उत्साहित करें ।

यदि यहाँ, (या किसी भी समय), जब आप कथा में खाली स्थान भरने के लिए सकते हैं और श्रोता प्रति उत्तर नहीं देते, धीरे से उत्तर बोलना प्रारंभ करें, यह लोगों को अवसर देगा कि वे कथा को स्मरण करें और वाक्य का बचा हिस्सा पूर्ण करें ।

अपने प्रश्नों में मुख्य शब्दों को प्रदान करने द्वारा, आप लोगों को कथा के अगले भाग का स्मरण करा सकते हैं । यह विशेष है कि आपके प्रश्नों में वे मुख्य शब्द निहित हों, क्योंकि वे शब्द संकेतों की तरह कार्य करेंगे जो श्रोताओं को कथा के अगले भाग का उत्तर देने को अग्रसर करेंगे बिना कोई जानकारी को छोड़े ।

बिना मुख्य (कुंजी) शब्दों के :

उदाहरणार्थ, जैसा आप कथा का पुनरावलोकन करते हैं, यदि आप कहें, और मार्था ने कहा क्या ?'' एक श्रोता संभवतः सही उत्तर देगा, ''मार्था ने कहा, मरियम से कह कि वह मेरी सहायता करे ।'' अब यह सत्य है कि मार्था ने कहा था, इसलिए श्रोता ने सही उत्तर दिया था । परंतु इसके पहले कि मार्था ने कहा, ''मरियम से कह कि वह मेरी सहायता करे,'' मार्था ने पूछा था, ''हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी चिंता नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिए अकेली ही छोड़ दिया है।'' इसलिए, अपने पुनरावलोकन प्रश्न में बहुत ही सामान्य होने द्वारा, आपने श्रोता को अनुमति दिया कि कथा में बहुत आगे छलांग लगाये ।

मुख्य (कुंजी) शब्दों के साथ :

आप जो उत्तर पाना चाहते है उसके लिए श्रोताओं की सहायता के लिए, आप एक प्रश्न कर सकते हैं जो श्रोताओं को कथा विषय वस्तु का स्मरण करायें । एक उदाहरण हो सकता है : ''मार्था ने यीशु से पूछा क्या ?'' ''पूछा'' शब्द का अपने प्रश्न में उपयोग करने द्वारा, आपने भली प्रकार से अपने श्रोताओं को मार्गदर्शन किया कि स्मरण करे मार्था ने यीशु से क्या कहा था ।

अपने श्रोताओं को मदद के लिए कि और अधिक उत्तर खोजें, जो उन्हें अधिक स्वतंत्रता से बोलने में उत्साहित करता है, उत्साहपूर्ण प्रति उत्तर देने का प्रयास करें, यहाँ तक की यदि व्यक्ति का उत्तर पूर्ण रूप से सही नहीं हो तौभी ।

उदाहरणार्थ; इस प्रश्न का प्रयोग करें । ''अब मार्था ने यीशु को क्या कहा, कौन सा पद उसने उपयोग किया ?'' वे कहेंगे ''स्वामी'' या संभवतः ''प्रभु'' । यदि वे उत्तर दें ''प्रभु'' आप कहें यह सही है। यदि वे कहें ''स्वामी'', आप कह सकते हैं, ''सही, मार्था ने यीशु को प्रभु कहा।'' यद्यपि श्रोताओं का उत्तर, स्वामी, पूर्णतः सही नहीं था, उस व्यक्ति का विचार सही था। आप

उत्तरों को उत्साहित कर रहें हैं, परंतु उसी समय भली प्रकार से सही उत्तर देकर कथा को सही रख रहे हैं ।

जैसा आप कथा द्वारा अगुवाई कर रहें है, प्रारंभ से अंत तक, आप इस प्रकार पूछ सकते हैं जैसे, किसने यीशु को घर में आमंत्रित किया ? कथा में मरियम क्या कर रही है ? मार्था क्या कर रही है ? तब एक समस्या होती है समस्या को बतायें । जब मार्था यीशु से बातें करती है, वह उसे क्या कहकर बोलती है ? तब मार्था यीशु से क्या पूछती है ? मार्था समस्या को कैसे सुलझाना चाहती है ? यीशु मार्था से क्या कहते हैं कि वह क्या कर रही है ? तो यीशु कहते हैं कि वह मरियम से मार्था की सहायता करने को कहेंगे, सही ? नहीं आप सही हैं । तो यीशु मरियम व उसके चुनाव के बारे में क्या कहते हैं ?

ध्यान दें कि कथा के बारे में कुछ कहा गया था जो गलत था । यदि मासूमियत के साथ किया जायें, लोग आपकी सहायता करना चाहेंगे और वे कथा को सही/सुधार करेंगे। कुछ गलत कहने की शैली द्वारा लोगों को कथा स्मरण कराना श्रोताओं को आश्चर्य मे डालता है और वे बने रहते हैं, परंतु इसका उपयोग कभी–कभार करें ।

इस तीसरी बार के सुनाने के दौरान, कथा श्रोताओं के मन में जम गई । साथ ही बहुत ही सरल प्रश्न (जो कथा विषयवस्तु का मात्र पुनरावलोकन है) श्रोताओं को उत्साहित करते हैं कि कथावाचक के प्रश्नों के उत्तर जोर से दें । जब लोग इन सरल प्रश्नों के उत्तर देते हैं, और निश्चय के साथ कहते हैं, वे विश्वस्तता अर्जित करते हैं । इसी विश्वास की केवल कथा के अगले दो भागों में आवश्यकता है जो कुछ अधिक चुनौतीपूर्ण हैं । चर्चा द्वारा श्रोताओं को आवश्यकता है कि कथा में खजानों की तलाश करें और अपनी खोजों को ऊँची आवाज में सूचित करें ।

क्या आप तैयार हैं ? आइये हम हमारे कौशलों को प्रस्तुतीकरण में प्रयास करें ।

प्रस्तुतिकरण भाग दो : आत्मिक अवलोकनों/निरीक्षणों की चर्चा

आत्मिक अवलोकन

आपने बहुत से खजानों को पाया जब हमने आत्मिक अवलोकनों और आत्मिक प्रयुक्तियों के लिए देखा ।एक खंड, या पूरा, इन खोजों का प्रस्तुत किया जा सकता है। जब आप इस कथा को सिखाते है। इसमें कोई संदेह नहीं कि और खजाने पाये जायेंगे जैसा पवित्र आत्मा निरंतर हमें परमेश्वर के वचन का धन और गहराई प्रकट करता है।

ये आगे आने वाले प्रश्न कई आत्मिक अवलोकनों में से कुछ एक में अगुवाई करेंगे जिन्हें मार्था/मरियम की कथा में प्राप्त किया गया है उन ''केवल–कथा'' कार्यशालाओं में जो संपूर्ण विश्व में किए गये । एक भाग, या पूरी इन खोजों को प्रस्तुत किया जा सकता है जैसा आप इस कथा को सिखाते हैं । कोई संदेह नहीं, और खजाने प्राप्त हो सकेंगे जैसा पवित्र आत्मा निरंतर परमेश्वर के वचन की सभी गहराई व धन को हम पर प्रकट करता है ।

इन प्रत्येक संख्यित अवलोकनों को जिन्हें रेखांकित किया गया है वे शब्द हैं जिन्हें कथावाचक संभवतः समूह से पूछ सकता है । जो शब्द रेखांकित नहीं हैं वे संभावित उत्तर या खजाना है जिसे समूह खोज व जोर से बोल सकता है ।

1. इस कथा में, यीशु मरियम के व्यवहार की प्रशंसा करते दिखाई दे रहें है, परंतु मार्था की आलोचना करते प्रतीत होते है । क्या मैं सही हूँ? (उत्तर हेतु प्रतीक्षा करें) अब मैं भम्रित हूँ! क्या आवभगत एक अच्छी वस्तु है? (उत्तर हेतु प्रतीक्षा करें) क्या मेहमानों के लिए भोजन बनाना एक अच्छी बात है? (उत्तर हेतु प्रतीक्षा करें)
2. साथ ही, क्या यह सही है, कि अपनी पत्नी से रसोईघर में जाकर अतिथियों के लिए भोजन पकाने को कहें जब यह उन्हें बाईबल अध्ययन से वंचित करें, और तब आप उन्हें बतायें कि यह कथा सिखाती है कि वह कम मूल्यवान काम कर रही हैं ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) तो फिर क्यूं यीशु मरियम से प्रसन्न है और मार्था से नहीं ? हम जानते है कि यीशु हमेशा सत्य कहते हैं, परंतु वह सत्य यथार्थ में क्या है जो वह कह रहा है ? संभवतः हमें पुनः इस कथा को देखना चाहिए ?
3. हम किसे कहते हैं कि यीशु को अपने घर आमंत्रित किया ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) क्या कथा में कुछ है जो हमें दर्शाये कि यदि मार्था जानती थी कि यीशु कोई बहुत विशेष है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) श्रोतागण संभवतः कहेंगे कि मार्था ने यीशु को अपने घर निमंत्रित किया, कि मार्था ने यीशु को ''प्रभु'' कहा, कि मरियम यीशु की शिक्षाओं को सुन रही थी था कि जब मार्था यीशु से भेंट की उसके शिष्य साथ थे, तो वह उसे साधारण से ऊपर करता है । ये सभी प्रमाणित उत्तर हैं ।
4. हम कथा में देखते है कि मार्था की बहिन मरियम यीशु के चरणों में बैठकर उसकी शिक्षा को ध्यानपूर्वक सुनी । यह वर्णन ''उसके चरणों में बैठकर'' आपके लिए क्या अर्थ रखता है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) किसी के चरणों में बैठना एक भक्त छात्र/शिक्षक संबंध को दर्शाने का तरीका है । साथ ही यह समर्पण तथा पहिचान को दर्शाता है ।
5. वह क्या था जिसे मार्था ने यीशु को पुकारा ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ''प्रभु'' का अर्थ क्या है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) वह फिर से हमें क्या दर्शाता है कि मार्था यीशु के बारे में जानती थी ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) अतः वह जानती थी कि यीशु विशेष है ऐसा जिसे उसे अपने से ऊपर के रूप में देखना चाहिए । वह कहती है वह प्रभु है,

परंतु रसोईघर में रहती है और उसकी नहीं सुनती ? आप मार्था के व्यवहार के बारे में क्या सोचते हैं ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) कैसे उसके शब्द और उसका व्यवहार मेल नहीं खाते ?

6. कथा बताती है कि **मार्था** काम के अत्याधिक बोझ में थी और अकेली सेवा कर रही थी । क्या हम कथा से बता सकते हैं कि मार्था कितना भोजन या भोजन का कितना बड़ा रूप तैयार कर रही थी ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) क्या वह एक साधारण भोजन बना रही थी, जैसे अपने अतिथियों को फल या चाय और बिस्कुट देने के लिए या वह एक वृहत भोजन को तैयार कर रही है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) मेरे पास एक प्रश्न है । यदि मार्था सोचती कि यीशु के पास शिक्षा देने को मूल्यवान है, क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि उसने चुनाव किया कि ऐसा वृहत भोजन किन्तु अधिक समय लेने वाला भोजन बनाये ? उसके निर्णय के प्रति आप क्या सोचते है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) हम देखते हैं कि **मार्था** यीशु से शिकायत करती है कि उसके पास करने को बहुत अधिक कार्य है, परंतु वही है जो अपने सारे समय का उपयोग भोजन बनाने में करने का चुनाव करती है ! क्या वह यथोचित विचार कर रही है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

7. यहाँ एक अन्य प्रश्न है । क्या **ठीक–ठीक** मार्था ने यीशु से पूछा ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) वह किससे क्या कहती है ? (''क्या तुझे चिंता नहीं हैं?'') उसके शब्द हमें यीशु के प्रति उसके भरोसे के बारे में क्या दर्शाते हैं ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

8. आप मार्था के उसकी समस्या के हल के बारे में क्या सोचते हैं ? ''यीशु, आप मरियम से मेरी सहायता करने को कहें!'' (उत्तर की प्रतीक्षा करें)। अब मार्था यीशु से कैसा व्यवहार कर रही है ? जैसे यीशु प्रभु है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । आप सही हैं। वह ऐसा व्यवहार कर रही है जैसे वह यीशु की अधिकारी है व वह उसका सेवक हो ! मार्था किस प्रकार की आत्मिक बुद्धिमता को प्रकट कर रही है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें)

9. जैसा हम मार्था द्वारा बोले गए शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं, और तब ध्यान करते हैं कि यीशु उससे क्या बोलते हैं, क्या आप कोई कारण देखते हैं कि क्यूं यीशु मार्था को झिड़कते है और मरियम की प्रशंसा करते हैं ? यीशु केवल एक बात *कहते हैं, वह क्या है ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

10. इस प्रकार, किन दो व्यक्तियों पर मार्था अपने बहुत अधिक कार्य के प्रति दोष लगा रही है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) हाँ मरियम और यीशु ! मार्था कैसे उन पर दोष लगा रही है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) मार्था ने कहा था ''यीशु क्या तुझे कुछ भी चिंता नहीं कि मेरी बहिन मरियम ने मुझे सेवा करने के लिए अकेली ही छोड़ दिया है ?'' साथ ही, ध्यान दें कि मार्था ने इंगित किया कि मरियम ने उसे काम के लिए अकेला छोड़ दिया

है । परंतु स्मरण करें, निमंत्रण किसने दिया था? (उत्तर की प्रतीक्षा करें)। किसने विशाल भोजन बनाने का चुनाव किया ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें)। इस कथा में, किसका नाम नहीं सुझाया गया है कि *वह मार्था की व्याकुल दशा की जिम्मेदार है ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ! *हाँ* , मार्था स्वयं को सूची में सम्मिलित नहीं करती कि व्याकुल दशा के लिए कोई जिम्मेदारी उसकी है ।

11. ध्यान दें न केवल मार्था ने चुनाव किए जिन्होंने उसे यीशु से सीखने को दूर किया, कैसे मार्था का समस्या (जो उसने उत्पन्न की) के हल ने किसी अन्य को प्रभावित किया ? (उत्तर की प्रतीक्षा) । हाँ, मरियम को यीशु की उपस्थिति से दूर होना होगा । मार्था के हल के प्रति आपका क्या विचार है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें)

12. मार्था यीशु के प्रति किस प्रकार का आदर दर्शाती है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) जिस प्रकार से मार्था यीशु से बोलती है कि अनादर दर्शाता है । वह पहले उस पर उसकी चिंता न करने का आरोप लगाती है और तब वह उससे ऐसे बात करती है जैसे वह उसका सेवक हो !

13. यीशु मार्था को अपने प्रति उत्तर में किस प्रकार का भाव दर्शाते हैं ? यीशु उस प्रकार के अनादर से वास्तव में क्रोधित हो सकते थे, परंतु वे नहीं हुए । मार्था से उसके बोलने का वर्णन करें । (उत्तर की प्रतीक्षा करें) वह भले प्रकार से मार्था को बताते हैं कि मरियम का चुनाव बेहतर है ।

14. *और किस प्रकार से मार्था ने अनादर दर्शाया ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) यीशु एक आदरणीय शिक्षक थे । ध्यान दें कि मार्था ने केवल यीशु की आलोचना कर रही थी, उसने यीशु की आलोचना तब की जब यीशु ने अनुयायी उपस्थित थे ! यह करने के द्वारा, मार्था ने फिर से यीशु के प्रति कोई भी आदर नहीं दिखाया । क्या यीशु ने मार्था को प्रति उत्तर में गर्व या दीनता प्रदर्शित किया ? अपने उत्तर को विस्तृत रूप से दें । (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

15. यीशु के मार्था को बुलाने द्वारा, क्या हम बता सकते है। कि वह उसे जानता था या नहीं ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । हाँ, यीशु अपनी सच्ची रूचि मार्था में दर्शाता है उसके नाम का उपयोग कर जब उसने मार्था से बात की । यीशु उसके नाम का उपयोग करता है, एक बार नहीं दो बार ।

16. क्या कथा में हमारे पास कोई जानकारी है जो हमें दर्शाये कि जिस प्रकार से मार्था थी ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) यीशु ने उसे बताया कि वह बहुत सी बातों की चिंता करती है और घबराती थी, सुझाव देता हैं कि यह उसकी आदत थी ।

17. क्या कथा में ऐसा कुछ है जो दर्शाये मार्था के पास रसोई घर में रहने और भोजन तैयार करने का या यीशु के चरणों में बैठकर शिक्षा लेने को एक चुनाव *था या नहीं ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । *हाँ,, आप सही हैं । यीशु हमें दिखाते हैं कि मार्था के पास*

विकल्प था जब वह कहता है, मरियम ने वह चुना जो अच्छा है । यीशु ने उन शब्दों द्वारा, हम क्या देखते हैं कि मार्था ने चुना ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) मार्था ने रसोईघर में व्यस्त रहने को **चुना** ।

18. यीशु ने कहा 'मार्था'' तू बहुत बातों के लिए चिन्ता करती और घबराती है । मरियम ने एक उत्तम भाग को चुना है जो आवश्यक है । यहाँ यीशु मार्था के इस विशाल भोजन को बनाने के चुनाव को मरियम के चुनाव की तुलना में क्या कह रहें है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । मरियम ने उसे चुना जो आवश्यक था ।

19. क्या मार्था ने सोचा कि उसने जो करने को चुना वह आवश्यक है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) क्या भोजन करना आवश्यक है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) कृपा कर वर्णन करें कि वास्तव में यीशु इस कथा में क्या आवश्यक था और नहीं था के बारे में क्या कह रहे हैं ?

20. आवभगत में मजबूत एक संस्कृति में मरियम से क्या अपेक्षा की जायेगी ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । इस कथा में मरियम ने किस प्रकार का कठिन निर्णय लिया ? अपने चुनाव के लिए मरियम को किसके विपरीत या विपरीत जाने के लिए चुनना था ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । हाँ, अपनी संस्कृति और अपने परिवार की अपेक्षा के ।

21. हमने देखा कि मार्था ने क्या किया जब उसने स्वयं को घबराया और अपने कार्य को पूर्ण करने में अक्षम पाया । एक क्षण को सोचें । वह और क्या कर सकती थी जब वह उस भार को उठा नहीं पाई ? (उत्तरों की प्रतीक्षा करें) कई उत्तर आयेंगे । लोगों को उत्साहित करें । कि वे उन सभी संभावनाओं को विचारें, जो मार्था कर सकती थी जब उसने पाया कि वह अपने कार्य को पूर्ण करने में अक्षम थी ।

22. मार्था के पास कौन से संभावित संसाधन उपलब्ध थे ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) अक्सर जब हम इस कथा को सुनते और इसके अर्थ पर चर्चा करते हैं, सबसे अंतिम सुझाव लोग देते हैं कि कथा यीशु के पास जा सकती थी और उससे कहती, ''प्रभु, मैं भोजन की तैयारी व सेवा को पूरा नहीं कर सकती । मैं क्या करूँ ?''

23. क्या मार्था इसलिए यीशु के पास नहीं गई और मदद के लिए नहीं कहा क्योंकि वह बहुत शर्मीली थी ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । आप कैसे मार्था के आचार–व्यवहार को वर्णित करेंगे ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें)। उसके व्यवहार की तुलना इस कथा में यीशु के व्यवहार से करें ।

24. मार्था के चुनाव की तुलना मरियम के चुनाव से करें । क्या वे समान हैं या अलग हैं ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) कौन सी महिला यीशु को दे रही है, और कौन सी यीशु से प्राप्त कर रही है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) किस कार्य को यीशु सबसे अधिक आदर

करेंगे (उत्तर की प्रतीक्षा करें ।) क्या वह हमें कुछ दर्शाता है ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें ।)

हम आशा करते हैं कि श्रोताओं ने खोजा होगा कि मार्था यीशु **के** लिए कुछ रही है जबकि मरियम यीशु **से** प्राप्त कर रही है । यीशु संकेत करते है कि जो काम मार्था कर रही है, कम से कम इस समय या तरीके से , वह आवश्यक नहीं है । यह कार्यो और अनुग्रह के बारे में एक बड़ी बहस/चर्चा को प्रारंभ कर सकता है।

कैसे आपके प्रश्न आपके सिखाने की शैली को दर्शायेंगे

इसके पहले कि आप निर्धारित करें कि आप कैसे कुछ प्रश्नों को बनायेंगे कि लोगों को उन अद्भुत निरीक्षणों को खोजने में मदद हो सके जो आपने पाये हैं, हमें आवश्यकता है कि प्रश्नों को पूछने की कुछ शैलियों को देखें जिसे शिक्षक अपयोग करतें हैं ।

कथावाचकों के प्रश्नों को पूछने के तरीके द्वारा, वे स्थापित करते है कि कैसे श्रोतागण उन्हें प्रस्तुतकर्त्ताओं के रूप में ग्रहण करेंगे । कथावाचक की आवाज के स्वर, भावों, शारीरिक हावभाव और प्रश्नों के वाक्यों द्वारा, वे विभिन्न रूपों को दर्शाते हैं, जैसे कि एक कठोर शालाशिक्षक, विश्वविद्यालय का एक उदार प्राध्यापक या एक साथ में चढ़नेवाला ।

कठोर शाला शिक्षक, शैली एस टी एस के साथ ठीक नहीं, बैठती है। वह कठोरता भाग लेने वालों को महसूस कराती हैं कि, ''वहॉ एक सही उत्तर है, और अगा मैंने गलत उत्तर दिया, मुझे सबके सामने शर्मिंदा होना पड़ेगा ।'' अतः लोग पीछे हट जाते हैं और ज्यादा उत्तर नहीं देते । चुंकि पूरे एस टी एस प्रक्रिया में, हम लोगों को उत्साहित करते हैं कि ईश्वर द्वारा दी गई उनकी योग्यता का उपयोग करें और परमेश्वर के वचन से गहरी आत्मिक जानकारी को खोज, हम **नहीं** चाहते कि एक कठोर शालाशिक्षक की तरह करें !

उदार विश्वविद्यालय प्राध्यापक, भला होता है और मुस्कुराता हैं । परंतु प्राध्यापक के प्रश्नों के शब्द यह स्पष्ट करतें है कि सही उत्तर पहले से ही ज्ञात है। भाग लेने वाले इस कथावाचक को यह कहता समझते हैं, '' मैं ज्ञान के पर्वत की ऊॅचाई पर खड़ा हूॅ। क्या आप इतने चतुर हैं कि उस ऊॅचाई पर चढ़े कि दिखाये कि आपने उस जानकारी को प्राप्त कर लिया है जिसे मैं पहले से ही रखता हूॅ ?

सीखने वाले चर्चा में भाग लेंगे । लेकिन यदि आप सावधानीपूर्वक देखेंगे, आप देखेंगे कि वह छोटी संख्या जो उत्तर देते है वे भाग लेने वाले हैं जो दिमाग में तेज हैं और सही

उत्तरों को देने में अभ्यस्त हैं । ये चुने हुए कुछ कथावाचक की इस शैली को प्रेम/पसंद करेंगे । उनके लिए यह आनंददायक है कि सर्वोत्तम भीड़ का हिस्सा हों जो अन्य लोगों से अधिक जानते है।

दुर्भाग्य से, वे जो सर्वोत्तम भीड़ में हैं ने शेष भाग लेन वालों के बारे में जो समूह में हैं नहीं सोचा जिन्होंने चर्चा में भाग नहीं लिए । इन छूटे हुए ने कभी चतुराई को महसूस नहीं किया । वे स्वयं के बारे में अनिश्चित हैं । वे विश्वास नहीं करते कि वे चढ़ सकते है।

साथ में चढ़ने वाले कथावाचक कुशलतापूर्वक सभी श्रोताओं को यह महसूस करने में सहायता करते हैं कि, साथ में, वे पर्वत पर चढ़ रहें हैं, और, साथ में, वे जानकारी को खोज रहे हैं ।

यह जाने कि एक साथ चढ़ने वाले का रूप लेना एक कथावाचक के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य है जिसे वह ग्रहण कर सकता है। परंतु, यह कार्य साथ ही प्रत्येक के लिए सबसे अधिक प्रतिफल देने वाला चुनाव है। यह स्वाभाविकता से प्रत्येक भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है और इसे कम ही मौके हैं कि कथावाचक तथा भाग लेनेवालों के ह्द्रय में घमण्ड उत्पन्न हों।

एक कार्यशाला में भोजन अवकाश के दौरान, एक उपस्थित ने कथावाचकों के साथ में चढ़नेवाले बनने के महत्व को प्रमाणित किया । इस महिला ने कहा, '' मैंने वास्तव में आपकी मार्था–मरियम कथा को पसंद किया । इसने मुझे बहुत कुछ सोचने को मजबूर किया । आप जानती हैं आपके बारे में सबसे अच्छा मैंने क्या पसंद किया ?'' मुस्कुराते हुए मैंने कहा, ''क्या?''

''यह वे समय थे जब आप उत्तरों को स्वयं नहीं जानती थी और आपने हमें उन्हें आपके लिये खोजने दिया।''

''ओह!'' मैंने समझाया । '' यह अच्छा है। मैं योग्य हो सकी कि उसका नमूना दे सकूं जो हम एस टी एस में सिखा रहें हैं । वास्तव में मैंने उस कथा को संसार भर में कई बार बताया है, इसलिए जब मैंने प्रश्नों को पूछा, मैं उत्तरों को काफी जानती थी । परंतु मैं चाहती थी कि आप सभी को मौका दूँ कि खोजें, इसलिए मैं पीछे हो गई ।''

उसने सिर हिलाया ।'' ओह मैं जानती हूँ, परन्तु मैं उन सभी स्थानों के बारे में बात कर रही हूँ जहॉ आपको उत्तर नहीं मालूम थे और आपने हमें खोजने दिया । मैंने इसे पसंद किया कि आप भयभीत नहीं थी कि हम देखें कि आप को सबकुछ नहीं मालूम है।''

हुम्म ? – मैंने स्वयं के लिए विचार किया । मैंने मेरा कार्य पूरा कर लिया है। वहॉ कोई आवश्यकता नहीं है कि हठ करूँ कि मैं पहले से ही उन बातों को जानती हूँ जिसे हमने खोजा और उसे जो समूह ने खोजा । वह और अन्य भाग लेने वालों ने संपूर्ण हृद्रय से भाग लिया था । उन्होंने '' अनुमति'' तथा विचारने और खोज करने की स्वतंत्रता का ज्ञान किया । हमने यथाशब्द एक साथ पर्वत पर चढ़ गये थे ।

यह जानें कि जब कभी मैं उन कथाओं को प्रस्तुत करती हूँ जो मेरे लिए बहुत परिचित है, भाग लेने वाले अभी भी आत्मिक निरीक्षणों/अवलोकनों तथा आत्मिक प्रयुक्तियों को खोजना जारी रखते हैं जो मेरे लिए नयी हैं – वे जिन्हें अभी तक नहीं पहिचाना था । ये नयी ''खोज'' कभी–कभी ही मेरे द्वारा पूछे प्रश्न के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में आती है । ये खजाने जीवंत चर्चा के दौरान पाये जाते हैं और पवित्र आत्मा के भले तरीके से कि वह उन्हें परिज्ञान देता है जो उसे ध्यानपूर्वक सुनते हैं । एस टी एस वादस्थल न केवल व्यक्तियों को खोजने को चिंगारी देता है, यह साथ ही लोगों को एक स्थान देता है कि एक दूसरे के साथ वह बॉटे जो उन्होनें अभी–अभी समझा है।

कैसे एक साथ चढ़नेवाले बने

जिस तरीके से प्रश्नों को शब्द दिये गये हैं या तो भागीदारी को उत्साहित करेंगे या निरूत्साहित करेंगे । उदाहरण हेतु, यदि एक कथावाचक पूछता है, ''अब कितने ऊँटों को अब्रहिम लाया?'' श्रोताओं को पता है कि वहॉ एक निश्चित है। वे स्वयं में सोचने लगेंगे, मुझे अवश्य सही उत्तर बताना है। इस प्रकार के प्रश्न एक कक्षा की भावना को उत्पन्न करते है और चर्चा के अधिकांश को बंद करते है।

इसके बजाय, आप आवाज के एक स्तर का उपयोग कर सकते है जैसे आप आश्चर्य कर रहे हैं, और आप पूछते हैं, ''अतः कितने ऊँट थे जो अब्राहम के पास थे ? .... आपका शारीरिक हावभाव, चेहरे के भाव और स्वर यह स्थापित करता है कि आप स्वयं संख्या को याद करने का प्रयास कर रहे हैं । यह लोगों को उत्साहित करता है कि मदद के लिए स्वयं को स्वयंसेवक के रूप में प्रस्तुत करें । यदि कोई कहता है, ''12'' तब आप कह सकते हैं,'' आइये अब देखें..... क्या यह 12 था या कुछ अधिक ? .....'' जब कोई अन्य कहे, ''यह 14 था,'' आप कह सकते हैं ''आहा। मैं सहमत हूँ । मैं सोचता हूँ कि यह 14 था । धन्यवाद । अच्छा उत्तर था ।''

यदि आप ऐसा दर्शायेंगे मानो आपको सहायता चाहिए, लोग और अधिक खुलकर उत्तर देंगे । चाहे यह अगुवाई में होया अवलोकनों या प्रयुक्तियों में हो, लोग ऐसा महसूस करेंगे कि वे सहायता करें और पर्याप्त सुखी होंगे कि भाग ले और उनके विचारों को दें, बजाय इसके कि सिद्ध उत्तरों के साथ आने का प्रयास करें ।

आप प्रश्नों की शैली द्वारा जिनका आप उपयोग करते हैं से लोगों के लिए वातावरण निर्मित करते हैं । जब सिखाने वाले और पासवान उपदेश देते हैं, वे सामान्यतः उनके द्वारा जिन्हें वे सिखाते है विद्वान समझे जाते हैं जो सभी उत्तरों को जानते हैं । संसार के अधिकांश लोगो ने चर्चा को सीखने के एक तरीके के रूप में कभी अनुभव नहीं किया है। कथावाचक उनके लिए जो आलोचनात्मक – विचारपूर्ण–शैली के प्रश्नों के उत्तरों को देने में नये हैं हिस्सेदारी को पोषण वयं को शालाशिक्षक के रूप से कम दर्शा कर सकता है जो ''सही'' उत्तर की अपेक्षा करता है।

यहॉ तक कि जब जानकारी प्रगट हो जाये, कथावाचक आश्चर्य और प्रसन्नता के साथ प्रतिउत्तर कर सकता है। आप इस प्रकार से कह सकते हैं जैसेः ''ओह, मुझे पसंद आया। '' मैं सोचता हूॅ आपके पास उस उत्तर में कुछ है।'' या ''यह निश्चित अच्छा है।''

समयों पर लोग उन विचारों को भी बॉटेंगे जो सही प्रतीत नहीं होते या कथा के साथ नहीं बैठते । एक साथ में चढ़नेवाले के रूप में, कथावाचक कोमलता से टिप्पणी को फिर से निर्दिष्ट कर सकता है। स्पष्टता के लिए प्रश्नों द्वारा सुधार करेगा । यह फिर से निर्देश देना विचार देनेवाले को शर्मिन्दा नहीं करेंगे ।

उदाहरण हेतु, कोई एक कथन करेगा और सोचेगा कि यह प्रमाणित है, परन्तु आप न्यायपूर्वक निश्चित हैं कि यह कथा में नहीं है। आप कह सकते हैं, उह, मुझे मदद करें, वह कथा में कहॉ है ? यद्यपि आप जानते है कि वह कथन कथा में समर्थित नहीं है, आपका कोमल वचन उस व्यक्ति को अपना चेहरा बचाने की अनुमति देगा और सार्वजनिक रूप से प्रत्यक्ष सुधार से भी वह व्यक्ति स्वतंत्रता की भावना को रखेगा और निरंतर खोज के लिए उत्साहित होगा ।

यदि एक विचार बॉटा गया जिसे आप सोचते है कि सही नहीं हैं या प्रश्न के योग्य हैं निर्देशित करने का अन्य कोमल तरीका यह है कि समूह से उसके लिए पूछे आप कुछ इस प्रकार कह सकते हैं जैसे हुम्म रूचिकर हैं मैं सोचता हूॅ कि आप बाकी लोग इस पर क्या सोचते है? आप कथा में इसे कैसे देखते है? फिर से संपूर्ण समूह के साथ चर्चा की अनुमति देने द्वारा, आप स्वयं को शाला शिक्षक या विश्वविद्यालय प्राध्यापक के पद पर नहीं रखते, और परमेश्वर का वचन अंतिम अधिकारी बनता है।

स्मरण रखें, जितना अधिक आप ऐसा दर्शायेंगे कि आपको कुछ बाते नहीं मालूम है लोग उतना ही अधिक मददगार बनेंगें। वही वह रूप है जिसे आप प्रकट करने का प्रयास प्रश्नों को

पूछने और चर्चा की अगुवाई में करें। यदि आप ऐसा दर्शायेंगे कि आप सब जानते है, लोग आपको उत्तर देने में अधिक हिचकिचायेंगें।जैसा हमने कहा, एक कक्षा रूपी प्रभाव को उत्पन्न न करें क्योंकि उस वातावरण में लोग गलत उत्तर देने से धबराते है।

अपने प्रश्नों की भूमिका स्थितिपूर्ण शब्दों या वाक्यखण्डों बांधे जैसे मैं सोचता हूँ यदि.....? क्या यह हो सकता .....? क्या यक एक संभावना जैसी दिखती है.....? वे सभी प्रयोगिक, खोजने वाले प्रकार के वाक्यखण्ड कथावाचकों को साथ में खोज करने वाला वातावरण प्रदान करने में सहायता करते है।

संभवतः केवल कथा प्रक्रिया का सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण कौशल, जो सीखने में सबसे अधिक अभ्यास लेता है, वह कैसे प्रश्नों को पूछे कौशल हैं आप अज्ञानी दिखाई देने का प्रयास नहीं कर रहे है। या कहने का आपको कुछ बातें नहीं पता है जिसे वास्तव में आप जानते है। परंतु, यह प्रश्नों को पूछने का एक तरीका है जो सुझाता है कि आप एक साथ में सीखनेवाले है। वाक्यखण्डों के इस प्रकार के प्रश्नों की शैली लोगों को उनके उत्तर देने में उत्साहित करेगी।

प्रस्तुतिकरण भाग दो : आत्मिक प्रयुक्तियों की चर्चा

आत्मिक प्रयुक्तियां पूर्व में जब हमने मार्था मरियम की कथा को देखा या हमने कुछ अद्भुत आत्मिक प्रयुक्तियां को पाया था। हमने परमेश्वर के वचन से कई महत्वपूर्ण बातों को खोजा और हमने इस बारे में भी विचार किया कि कैसे परमेश्वर संभवतः हमसे चाहता है कि उन खोजों को आज हमारे जीवनों में प्रयुक्त लागू करें।

एस.टी.एस प्रक्रिया का अगला भाग हैं कि प्रश्नों को पूछें जो श्रोताओं को चर्चा तक ले जायेंगे और आत्मिक प्रयुक्तियों को प्राप्त करने तक ले जायेंगे जो आपने प्राप्त की है। यह कौशल हमें चुनौती देता हैं और प्रतिफल प्रदान करता हैं आपको परीक्षा से स्वयं को रोकना होगा कि अपने श्रोताओं को वे खजाने जो आपने खोजे हैं उन्हें बस यों ही दे दें। बजाय इसके, आपको आवश्यकता है कि प्रश्नों को बनाने की कला /कौशल का विकास करें जो श्रोताओं की मदद करेंगे कि कथा में खजानो को स्वयं के लिए खोजें।

आगे जो आ रहा है वह कुछ नमूना प्रश्न हैं, इसमें से कोई भी उपयोग किए जा सकते हैं कि मार्था–मरियम की कथा में लोगों की मदद कुछ प्रयुक्तियों को खोजने में हो सकें। जैसा पहले , जब हमने आत्मिक प्रयुक्तियों को खोजा था। कथा की जांच आरंभ से अंत तक की गई थी। ध्यान करे कि प्रत्येक समय, इसके पहले की प्रश्न पूछे जायें, कथा का एक छोटा भाग, और

एक पाया गया अवलोकन पहले पुनः कहा जाता है तब कुछ प्रश्नों को पूछा जाता है जो श्रोताओं की प्रयुक्तियों को बहुत सामान्य और दूरस्थ से अधिक विशिष्ट और व्यक्तिगत प्रयुक्तियों को ओर लाते हैं।

1. *कथा में मरियम रसोईघर को छोड़ती है और चुनती है कि वह अपना समय यीशु के चरणों में बैठ उससे सीखने में व्यतीत करें .....यह आज हमारे लिए क्या अर्थ रखता है ? क्या हम यीशु के चरणों में बैठ सकते है और सीख सकते हैं ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) हम आशा करते है कि श्रोतागण आगे लिखी प्रयुक्ति पर आयेंगे... आज, परमेश्वर के वचनों को अध्ययन करना या परमेश्वर की आराधना करना या पासबानों और शिक्षकों से सीखना यीशु से सीखने के समान है । आज हमारे लिए, यीशु के चरणों में बैठने का विचार, जो हमें सिखाया जा रहा है उसमें एक गंभीर रूचि को दर्शाता है ।

2. *हमने देखा कि मार्था ने इतना अधिक काम ले लिया था कि वह घबरा गई थी । क्या आज हमारे पास यह समस्या आ सकती है ? आप क्या सोचते हैं ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) *क्या हम कई सारी जिम्मेदारियों/दायित्वों को कभी ''हाँ'' कहते हैं ?*

3. *आज, क्या सेवकाई में लोग, या कार्य पर घर में, क्या उससे अधिक कार्य लेते हैं जितना वे कर सकते है किस प्रकार से यह हो सकता हैं उत्तर की प्रतीक्षा करें हम संभवतः किस प्रकार प्रतिक्रिया करेंगे जब सेवकाई या अन्य कार्य का कुछ जिसे हमने करने का निर्णय किया हम पर अधिक बोझ डालना प्रारंभ करने लगता है और परमेश्वर से सीखने के हमारे समय से हमें दूर ले जाता है।* (उत्तर की प्रतीक्षा करें।)

4. *क्या जीवन में हमारे पास चुनाव है ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । *क्या हम चुनाव करते हैं जो अच्छे दिखते है क्योंकि वे मसीही कार्य करने के चुनाव हैं ? हम किस प्रकार से चुनेंगे कि परमेश्वर के लिए कुछ करें, जबकि वहाँ वह हमें करने को नहीं कह रहा है या उसे कोई आवश्यकता नहीं है ! क्या आपने ऐसा घटित होता कभी देखा है या अनुभव किया है ? इसके बारे में बताये । वर्णन करें कैसे हमारा चुनाव कि परमेश्वर के लिए कुछ करें हमें हमारे उद्धारकर्ता से सीखने के समय से हमें दूर कर सकता है ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

5. *मार्था मरियम पर दोष लगाती है कि वह भोजन तैयार करने में रूक कर उसकी सहायता नहीं कर रही है । आज कौन सी प्रवृत्ति/स्वभाव है जब लोग बहुत अधिक*

कार्य ले लेते हैं ? क्या इस प्रकार के लोग अत्याधिक कार्य के दायित्व का पहचानने में तेज हैं, या वे इसके लिए दूसरों पर दोषारोपण करते हैं ?

6. *हमने देखा कि मार्था ने मूर्खता से यीशु को उसकी समस्या की चिंता न करने के प्रति आरोप लगाया । क्या कभी हम इतना आगे गये कि परमेश्वर पर उन निर्णयों के लिए आरोप लगायें जो हमने किए थे, और तब सोचें कि परमेश्वर हमारे बारे में चिंता नहीं करता ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) *कैसे अवश्य परमेश्वर महसूस करता है जब हम उससे अधिक कार्य ले लेते हैं जितना हम कर सकते हैं, और तब हम उसे आरोपित करते हैं कि चिंता नहीं करता कि लोग हमारी सहायता नही कर रहे ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें)

7. *हमने देखा कि मार्था ने यीशु को ''प्रभु'' कहा, एक शब्द जिसका अर्थ है कि उसने उसे अपने अगुवे, अपने से ऊँचे की तरह देखा । तब उसने यीशु को बताया कि उसकी समस्या का हल करने को उसे क्या करना है । क्या हमने कभी एक समस्या उत्पन्न की है और तब यीशु से प्रार्थना की यह बताते हुए कि कैसे उसे हल करना है ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । *क्या यह अर्थ रखता है कि परमेश्वर को हमारा ''प्रभु'' कहें, और तब उसे बताये कि कैसे उन समस्याओं को हल करें जिन्हें हमारे स्वयं उत्पन्न किया है ? आप क्या सोचते हैं ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

8. *यह रूचिकर है :– दोष लगाने के बारे में। कैसा परमेश्वर को संभवतः महसूस होगा जब लोग उससे अधिक को ले जितना वे कर सकते है और तब वे परमेश्वर से कहें क्या तुझे कुछ भी चिंता नहीं कि दूसरे मेरी मदद नहीं कर रहे है।* (उत्तर की प्रतीक्षा करें।)

9. *हमने देखा कि मरियम ने उत्तम भाग को चुना, फिर भी मार्था, उसकी बहिन, ने मरियम के उस निर्णय की आलोचना की । आज क्या कभी ऐसा होता है कि लोग अच्छे निर्णयों को करते है और तब वे अनादर किए जाते हैं और किसी के द्वारा कहे जाते हैं कि कुछ और काम करें । उत्तर की प्रतीक्षा करें। किस प्रकार से या स्थानों में ऐसा हो सकता हैं हो सकता हैं घर, कार्य, शाला, सेवकाई, या उनके मध्य जिनकी हम सेवकाई करते है ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें।)

कैसा महसूस होगा कि एक अच्छा निर्णय करे और हमें शर्मसार करने वाला व्यवहार किया जाये (उत्तर की प्रतीक्षा करें) *हमनें देखा कि यीशु ने किस प्रकार से उस अनादर को प्रबंध किया। हम उससे क्या सीख सकते है। जिस प्रकार से उसने उत्तर दिया ।*

10. *क्या आप सोचते हैं कि शारीरिक कार्य करना, मार्था के समान और उसी समय परमेश्वर से सीखना व आराधना करना संभव है ? वर्णन करने का प्रयास करें कि वह किसके समान होगा ।* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

11. *दूसरी ओर, क्या आप सोचते हैं कि कोई एक स्थान पर हो सकते हैं जहाँ वह व्यक्ति मरियम के समान दिखता है, बाईबल को सीखता व अध्ययन करता हुआ, और फिर भी उस व्यक्ति के विचार वास्तव में किसी कार्य परियोजना के बारे में है ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । *क्या आप कभी अपनी बाईबल पढ़ रहें हैं और आप का मन भ्रमण करना प्रारंभ कर देता है, और आप अन्य वस्तुओं के बारे में सोचना प्रारंभ कर देते हैं, संभवतः आपको कुछ कार्य करने की आवश्यकता है ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । *मार्था और मरियम की इस कथा के प्रकाश में, आप अपनी मानसिक भ्रमण को कैसे वर्णित करेंगे ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

12. *क्या हमेशा जहाँ हमारा शरीर होता है वह इंगित करता है हमें जैसे मार्था या मरियम ? हम संभवतः शारीरिक रूप से कार्य कर रहे हों, परंतु हम आराधना व परमेश्वर से बातचीत करते रहे जब हम कार्य करते हो । दूसरी ओर, हम संभवतः एक बाईबल अध्ययन में हों, या कलीसिया में या हमारे शांत स्थान में बाईबल पढ़ रहे हों, परंतु हमारे मन विचरण कर रहे हैं जैसा हम कार्यों के बारे में सोचते हैं जिन्हें हमें करने की आवश्यकता है !* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

13. *यीशु ने मार्था से कहा कि जो मरियम ने चुना है वह उससे छीना न जायेगा ।*
आज क्या लोग निर्णय करते है उनके यीशु से संबंध के आदर में जैसे कि उस पर अपने विश्वास को रखते हुए, एक गहरे विश्वास के संकल्प को खोजते हुए या संभवतः पूर्ण कालिक सेवा में जाने को चुनते हुए जिसे उनके परिवार या संस्कृति आलोचना कर सकते है। उत्तर की प्रतीक्षा करें ।किस प्रकार के चुनाव इस विरोध का कारण हो सकते है? उत्तर की प्रतीक्षा करें।
यीशु क्या कह रहे उस बारे में कि वह करेगा या नहीं करेगा जैसा चुनावों में जो हम करते हैं ? (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

14. *किसी भी धर्म के बारे में सोचे जो आपके मन में आता है। विराम दें कि लोग सोचे। उस धर्म में, क्या उसके अनुयायी देवता या देवताओं के लिए कार्य कर रहे है। प्रसन्न*

करने या प्रभावित करने, या वह धर्म उनमें से एक हैं जो उस देवता से बिना दाम के प्राप्त कर रहा हैं?

एक धर्म जो अपना प्रथम महत्व भले कामों पर रखता है के साथ तुलना करे जो यीशु ने महत्वपूर्ण बताया । उत्तर की प्रतीक्षा करें।

15. *जैसा हमने देखा, जब मार्था ने यथार्थ किया कि उसके पास जितना वह कर सकती है उससे अधिक कार्य हैं, उसने मरियम व यीशु पर दोष लगाया पर स्वयं पर नहीं । जब मार्था ने अपनी अक्षमता कि वह कार्य पूर्ण नहीं कर सकती को यथार्थ किया उसने विचारा उसे करने की आवश्यकता है, किस संसाधन को उसने अनदेखा किया ? मेरा मतलब है वहाँ कौन था जिसके पास वह सहायता के लिए जा सकती थी ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । *हाँ, यीशु । क्या हमने कभी हमारे स्वयं अधिक कार्य का सामना किया है ? हम इसे कैसे करेंगे ? यह कथा में बुद्धिमत चुनावों के बारे में क्या सिखाती है ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) ।

16. *यीशु ने मरियम को सम्मानित किया जब उसने उसकी सुनने को चुना, यहाँ तक की इसने उसे अपनी संस्कृति और उसके आसपास के लोगों की अपेक्षाओं के विपरीत जाने का प्रयोजन दिया । ये हमें क्या सिखा सकते है ?* (उत्तर की प्रतीक्षा करें) । *परमेश्वर को जानने की खोज में, या उसके साथ समय व्यतीत करने में, क्या हमें कभी आवश्यकता होगी कि हमारी संस्कृति या लोगों की हमारे प्रति अपेक्षाओं के विपरीत चुनाव करें ? कैसे ?*

आपने अभी अभी केवल कथा का उपयोग कर मार्था–मरियम बाइबल कथा के प्रस्तुतीकरण को पूर्ण किया हैं आप अपनी सेवकाई के समय की समप्ति विभिन्न तरीकों से कर सकते हैं आप प्रार्थना से समाप्त कर सकते हैं सृजनशील दृढ़ीकरण जैसे नीचे है का उपयोग करे, या कुछ सामान्य प्रश्नो को पूछे जैसे :–

आपने इस कथा में क्या सीखा ?

परमेश्वर ने आपको इस कथा में क्या दिखया ?

आपने परमेश्वर के बारे में क्या सीखा ?

आपने क्या खोजा जो आपकी अगले सप्ताह मदद कर सकेगा?

अन्य गहराई में कथा अभ्यास कि प्रश्नों को कैसे तैयार करें परिशिष्ट ब नमूना कथा द्वारा यात्रा में है।

सृजनात्मक दृढ़ीकरण

इस पूरी रीति से कथा की जांच पड़ताल द्वारा एक अप्रधान उत्पाद/ रचना यह है कि लोगों ने ठीक ठीक कथा को सीख लिया होता है । एक कथा के पूर्ण जांच पड़ताल करने के और प्रयुक्ति बनाने के पश्चात, कथावाचक निर्णय कर सकते हैं कि सृजनात्मक तरीकों को देखे जो लोगों की स्मरण शक्ति में कथा को दृढ़ीकरण करने में सहायता करें।

उदाहरण हेतु, एक पॉच दिवसीय कार्यशाला में, उपस्थितों को गहराई से 21 बाइबल कथाओं को प्रकट किया जाता हैं पश्चात लोगों को आवश्यकता होती है। दृढ़ीकरण की कि कई कथाओं को स्मरण करे जो उन्होंने सीखी हैं उनहें आवश्यकता है कि उनका पुनरावलोकन करे, और उनहें आवश्यकता है कि उनहें अपनी स्मरण शक्ति में रखने के लिए उनका अभ्यास करें।

संभवतः लोगों से कहे कि कथा का अभ्यास एक दूसरे को फिर से सुनाकर कैसै? आप लोगों से कह सकते हैं कि एक गीत या कविता बनाये जो कथा को बिल्कुल सही बतायें। कुछभी जिसे आप देखते हैं कि वह मौखिक शैली है और लोगों की सहायता कथा को अचूकता से याद रखने में करे अच्छा है।

यह सृजनात्मक दृढ़ीकरण विशेषतः उन लोगों के लिए लाभदायक हैं जो पढ़ नहीं सकते या उनकी भाषा में उनके पास बाइबल नहीं हैं और रिकार्डेड कथायें उस भाशा में उपलब्ध नहीं हैं जिसे वे समझते हैं भाग लेने वाले जो शिक्षित नहीं हैं और जो एक ऐसे भाषा समूह से संबंध रखते है जिनके पास रिकार्डेड बाइबल या बाइबल कथायें नहीं है, जितना संभव हो सकें उन्हें सहायता की आवश्यकता है।

यह रूचिकर हैं समाधान हमेशा प्रत्यक्ष हैं जब उनहें आप ढूढ़ लेते हैं इस संकट की स्थिति को देखने ने हमें अनुमति दी कि एक उच्च उत्पादक समाधान को खोजें । यदि लोग एक कार्यशाला के दौरान जिनहें रिकार्डेड बाइबल कथाओं की आवश्यकता है। अपनी मातृभाषा में कथाओं को कह रहे है वह एक सिद्ध अवसर देता है कि कार्यशाला में कुछ समय को उलग से रखे कि उन कथाओं को लोगों के लिए रिकॉडे करें।

एस टी एस में कुछ वर्षो में हमने वाक्यखण्ड हृदय जेब को गढ़ा। हमने कहा एक बार आपने एक कथा को सीख लिया, कथा आपके हृदय जेब में है।

बाद में, हमने एक समस्या को अशिक्षितों के मध्य पाया जो कई सौ कथाओं को सीख रहे थे। वे कथाओं को जानते है, परंतु क्योंकि वे उनकी कथाओं की एक सूची को नहीं लिख सकते वे याद नहीं रख सकते कि कौन सी कथाओं को जानते है।

इसने हमें हमारी हृदय जेब पुस्तकों के विकास में उघत किया। फोन के कार्ड के आकार के प्रत्येक पृष्ठों में एक मूलचित्र है जो तत्काल मन में एक विशेष कथा को लाती हैं ये प्रतीक नहीं है जिनहें याद किया जायें ये रखचित्र है जो उस कथा के बारे में कुछ अद्वितीय को दर्शाता है पृष्ठ परतदार किये गये औरएक बड़ी चाबी के गुच्छे में डाले गये हैं और कथावाचक की व्यक्तिगत हृदय जेब पुस्तक बन जाते हैं शिक्षित जो बहुत सी कथाओं को सीखते हैं वे भी इन्हें पसंद करते है।

हम परमेश्वर का धन्यवाद उत्पादनपूर्ण समाधानों को देने द्वारा दर्शाये गये अनुग्रह के लिए करते हैं।

अध्याय 6 : चर्चा की अगुवाई के लिए सामान्य संकेत

जैसा कि चर्चा आगे बढ़ती है, परमेश्वर आपके पूर्व अनुभव एवं बाईबल ज्ञान का उपयोग प्रश्नों को रचने में उपयोग कर सकता है जैसा आप सिखाते हैं । पवित्र आत्मा जानता है कि क्या चर्चा करने की आवश्यकता है और आपकी अगुवाई करेगा जैसा आप सिखाते हैं ।

संभवतः सबसे महत्वपूर्ण कौशलों में से एक हम आपको प्रदान कर सकत हैं, वह जो कथाओं के सफल चर्चाओं को अगुवाई करेगी वह ध्यानपूर्वक सुनना और प्रतिउत्तर देने की अवधारणा हैं आपको आवश्यकता है कि परमेश्वर के वचन को ध्यानपूर्वक सुने जब आप एक कााि को तैयार करते है और जैसा कि आपवह है जो कथा को सुनायेगा, आपको आवश्यकता है कि प्रयुक्तियों का उत्तर दे जो परमेश्वर आपको कथा में दिखता हैं इसी समान चर्चा के दौरान आप ध्यानपूर्वक और प्रतिउत्तर दें उसी ठीक से ध्यानपूर्वक सुने जो लोग कहते हैं और उन्हें उत्तर दें।

प्रिय वृद्ध

दिन के एक निश्चित समय पर, एक विशिष्ट गॉव के लोग विभिन्न वृद्धों के आस पास बात करने के लिए जमा होना प्ररीा करते है। कुछ उस वृद्ध के पास बैठना चुनते हैं जो उन्हें अधिक वृद्धिमानी की जानकारी बताता हैं अन्य चाहते कि उस वृद्ध के साथ हो जिसे जाना जाता है कि वह बैठकर वह सभी को ध्यानपूर्वक सुनता है जो लोगों को कहना हैं परंतु गॉव के अधिकांश चाहते थे कि अपना समय एक विशेष वृद्ध के साथ बितायें। वास्तव में यह गॉव उसे प्यार से प्रिय वृद्ध कहते थें।

यद्यपि प्रिय वृद्ध बहुत बुद्धिमानी की जानकारी को बोलता था, वह साथ ही ठीक से सुनता भी था। परंतु, इन कौशलों के भी आगे यह प्रिय जोड़ी गई अंर्तदृष्टि को भी दर्शाता था। लोगों को सोचने और खोजने का एक अवसर देने द्वारा वह जानता है कि कैसे अपनी बृद्धि उन्हे दें। यद्यपि वह उसके लोगों से अधिक महान ज्ञान को रखता है, वह उन्हें उत्साहित करता हैं जो उसके पास अपने विचारों को बॉटते और प्रस्तुत करते हैं अक्सर यह वृद्ध नहीं बोलता यद्यपि वह प्रश्नों को उत्तर देना जानता हैं यह उनहें सोचने और समस्याओं को समाधान करने को सीखने की अनुमति देता है जो उसके पास आते है।

यह प्रिय वृद्ध अपने पुत्रों को उत्साहित करता हैं – और अपनी पत्नी और पुत्रियों को भी, कि उनके विचारों को आवाज दें। उसे दूसरों को बोलने की अनुमति देने का कोई भय नहीं हैं,

क्योंकि वह जानता है कि वह महान ज्ञान को रखता हैं वह जानता है कि जितना अधिक वह साहस और दृढ़ विश्वास उन्हें देगा जिन्हें वह अगुवाई कर रहा हैं, उतना अधिक वे उसकी अगुवाई की संग्रह करेंगे।

साथ ही, उसके अनुयायी उसकी अगुवाई शैली को अनुकरण करते, और बदले में, वे दूसरों को बृद्धि खोजने में उत्साहित करतें। इस वृद्ध संताने बड़ी हो गई हैं कि बृद्धिमान और दृढ़ विश्वास है, और वे उनके पिता के रास्ते पर चलते हैं।

बाइबल पूर्व के एक समय के बारे में बताती हैं जो यीशु की पृथ्वी पर सेवकाई के प्रथम समय के बारे में है जब 5000 से अधिक लोग उसकी शिक्षा को सुनने आयें। परंतु इन लोगों को भोजन की आवश्यकता थी। यीशु ने पहले एक प्रश्न पूछा और तब फिलिप्पुस और चेलों का एक मौका दिया कि सोचे कि वे कैसे समस्या का समाधान कर सकते हैं परंतु किसी ने भी परिपक्वता नहीं दिखाई कि यीशु से एक आश्चर्यकर्म करने को कहतें। अतः यीशु ने उन्हें एक चम्त्कार कर और लड़के की भोज्य सामग्री को प्रत्येक के लिए भोजन में परिवर्तित कर उत्तर दिया।

बार–बार यीशु ने अपने शिष्यों को, और दूसरों को एक अवसर दिया कि एक ईश्वरीय दृष्टि को उपयोग करते हुए सोचे और उत्तर दें। तीन वर्षो तक यीशु ने निरंतर अपने शिष्यों को अपने शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनने और और सोचने तथा विश्वास करने, और बृद्धिमानी प्रयुक्त करने को उत्साहित करते हुए प्रशिक्षित करता रहा । यीशु उनहें दूसरों की सेवा और अगुवाई करने को तैयार कर रहा था।

आज, जब बाइबल के भाग एस टी एस शैली में चर्चा किए जाते है। जो चर्चा में भाग लेते हैं उनमें से कई अपने परिवारों और सेवकाईयों में अगुवे/ मुखिया है, अत उनके पास उनसे अधिक ज्ञानहै जिन्हें वे सिखाते या मार्गदर्शन करते हैं हम उन अगुवों की सराहना करते हैं जो प्रत्येक समय प्रश्नों के उत्तर देने में प्रथम नहीं है।

कितना आनंद हैं कि इन बुद्धिमान, दृढ़ विश्वास युक्त अगुवों को दूसरों को उत्तर देने की अनुमति देते हुए देखना। ये अगुवे लोगों को उत्साहित करने के महत्वू को देखते है कि लोग सोचे और उनके विचारों के प्रति उत्तरदायी हों। प्रिय वृद्ध के सामन और यीशु के समान ये अगुवे जानते है कि केसे दूसरों में दृढ़ विश्वास के लिए प्रेरित करें। ये अगुवे यह भी जानते है कि कब उनके गहरी बुद्धि की आवश्यकता है, और वे स्वतंत्रता से जानकारी को सही समयों पर बॉटते हैं।

ध्यान पूर्वक सुनने और प्रतिउत्तर देने की चुनौतियॉ

जैसा कि आप पहले एस टी एस में सम्मिलित कौशलों को प्राप्त करने का प्रयास कर रहे है, वहॉ बहुत कुछ याद करने के लिए हैं वे जो एस टी एस के लिए नये हैं वे एस टी एस प्रस्तुतीकरण कथा कहने में, प्रश्नों को बनाने की प्रक्रिया और दूछने के क्रम पर एकाग्रचित्व तथा केंद्रित होते है। रूचिकर रूप से ये नये प्रस्तुतकर्ता छूट जाता है। लोग आपका कार्य है कि एक बाइबल कथा को दूसरों के साथ चर्चा करें। जो लोग कहते और पूछते है उसे ठीक से ध्यानपूर्वक नहीं सुनने से, उनके योगदान का प्रतिउत्तर नहीं देने से वहॉ कोई चर्चा नहीं है।

श्रेष्ठ मानसिक द्वारों में से एक कि प्रवेश करें जो सोचने/विचार करने को उत्साहित करता है वार्तालाप/बातचीत का द्वारा है। जब आपने एक कथा में कई मूल्यवान खजानों को खोजने में समय व्यतीत कर लिया तत्पश्चात् यह आनंदायक हो सकता है। कि कथा के बारे में दूसरों से बात करें। अतः अपने प्रस्तुतीकरण के बारे में सोचने की और सबकुछ जो आपने कहने की योजना बनाई के बजाय, प्रश्नों को पूछें और उसे ध्यानपूर्वक सुने जो लोग कहते हैं। उनसे कथा के बारे में बात करें। उनके साथ एक बातचीत करें।

बातचीत के दौरान, आप अपने द्वारा तैयार प्रश्नों में से कुछ का उपयोग करेंगे कि वार्तालाप/ बातचीत को आगे बढ़ाये जैसा कि आप कथा द्वारा आगे बढ़ते है। आशा पूर्वक, आपके प्रश्न लोगों की सहायता कुछ खजानों को खोजने में सहायता करेंगे जिन्हें आपने अपनी तैयारी के समय पाया था। हममें से अधिकांश दूसरों के साथ प्रतिदिन बाते करते हैं और हम इसे –बिना एक लिखित हस्तलिपि के करते हैं। हम उन वस्तुओं के बारे में बाते करते हैं जिनमें हमारी रूचि हैं शिथिल हो और बाइबल कथा के बारे में एक वार्तालाप में शामिल हों।

यथार्थ में ध्यानपूर्वक सुनना और प्रतिउत्तर देना प्रकिया का केन्द्र हैं, जिसे हम कहते हैं, ''एस टी एस की परिभाषा ध्यानपूर्वक सुनना और प्रतिउत्तर देना है।''

कई कथाओं में से एक जिसें हम एस टी एस में अन्वेषण/ खोज करते है भजन संहिता 23 है। अधिकांश जो बाइबल जानते है चाहे थोड़ी ही, इस भाग से परिचित हैं परंतु इसमें धीमे से जाने से, और प्रश्नों को पूछने द्वारा जो सहायता करता है कि उसे गहराई से सुने जो परमेश्वर ने हमें उस भजन संहिता में दिया है, अद्भुत हो सकता है।

कुछ समय पहले, रमेश, बृद्धिष्ठ संसार में हमारे निर्देशक, ने मुझें बताया कि वह भजन संहिता 23 को एस टी एस तरीके/पद्धति से सिखा रहे थें। अब आपके बताउॅ मेने इस व्यक्ति को जो नेपाल में रहता हैं पढ़ाया था कि कैसे एस टी एस करें यह एक मजेदार विचार के समान दिखा

कि वह एक भजन संहिता को एस टी एस पद्धति से करने का प्रयास करेगा। अतः मैने पूछा क्या आप इसे मुझें सिखायेंगे? वह दिन मेरे लिए कएक ऐसा समय बन गया जिसें मैं कभी नहीं भूलने कर आशा करती हूँ।

इस वर्णन में कथा ध्यानपूर्वक सुनने ओर कथावाचक को ध्यानपूर्वक सुनने के मेरे आलस्य को देखें। और ऐसा ही, उस तीरके को भी देखे जिससे रमेश ने रोटी के टुकड़ों जैसे संकेतों को रखता गया कि मुझें खजाने के पास लाये और स्वयं को पीछे किया और मुझें खोजने दिया। वह मेरी ध्यानपूर्वक सुनता और तब एक संकेत देता कि मुझें खोज के पास लायें।

उसने संपूर्ण कथा के बारे में प्रश्नों को पूछा, परंतु एक विशेष जानकारी की डोर जिसे रमेश ने अनुकरण किया आज भी वैसी ही कथा को विकसित किया और यहॉ अभी उस एक डोर को शामिल करूंगी।

रमेश ने पूछा पहले पहल, भेड़ चरवाहे को कैसे संबोधित करती है।

मैंने वह उत्तर दिया जिसे मैंने वर्षों पूर्व सीखा था। मेरा चरवाहा। वह में दर्शाता है कि हम प्रभु यीशु को व्यक्तिगत रूप से जान सकते है।

परंतु रमेश मुझें अनुमति नहीं देगा कि इस प्रकार से आगे कूद लगाउ। एसटी एस में हम पहले उसे सावधानीपूर्वक सुनते है जो कथा कहती है और केवल उसके पश्चात हम स्वयं के लिए जानकारी की प्रयुक्ति बनाते है।

रमेश ने मुझ पर दबाव डाला कि धीरे होऊॅ और ध्यानपूर्वक वह सुंनू जो कथा कहती है और इस परिचित भाग को अधिक सावधानी के साथ देखूं। उसने मुझें कथा को ध्यान पूर्वक सुनने को कहता गया।

मैं ध्यानपूर्वक सुनने को सहमत हुई यह सोचते हुए कि मैं उसकी इस तकनीक की जांच कर सकूंगी। निष्कपटता से, मै सोच रही थी मेरा छात्र मुझें एक भाग क्या में दिखाने को सक्षम होगा जिसे मैं बहुत अच्छे से जानती हूँ, कई बार – पढ़ाया है, और लेखों में इसके बारे में लिखा भी है।

यह एक भेड़ बात कर रही है, है ना ? रमेश ने पूछा।
मैंने सहमति में सिर हिलाया।

''ठीक भेड़ कैसे चरवाहे के बारे में बात कर रही है? भेड़ चरवाहे को कैसे संबोधन कर रही है?''

मैंने पूछा, क्या तुम्हारा मतलब है कि भेड़ चरवाहे को कैसे वह पुकारती है ? ''

''वह सही है, रमेश ने प्रति उत्तर दिया। परंतु क्या नहीं देखती कि भेड़ चरवाहे को कहॉ देख रही है ?''

''उह? क्या?'' मैं इसे नहीं समझ रही थी।

''चरवाहे के संबंध में भेड़ कहॉ है? इसे देखे'' रमेश एकाग्रता से दबाव दे रहा था, जैसे वह मुझें कुछ देखेने को चाहता है जिसे मैं अभी तक नहीं खोज रही थी। (एस टी एस में, हम लोगों को दबाव देने का प्रयास नहीं करते कि वे वह देखे जा हमने एक कथा में पाया है) परंतु इस बिन्दु पर रमेश, एक ऐसा था जिसे मैने हमेशा सिखया था, तीव्रता से चाहता था कि मेरे साथ कुछ बॉटे। इस विशेष ध्यानपूर्वक सुनने और प्रतिउत्तर देने के नाटक की कथा में, चूंकि हम एक दूसरे को अच्छे से जानते है, रमेश जानता था कि आग्रहपूर्ण मुझें दबाना कि धीमी होऊॅ और कथा के बारे में सोचूं ग्रहण योग्य था।)

''उम्म, मैं सोचती हूॅ कि यदि भेड़ की अगुवाई की जा रही है, वह चरवाहे को भेड़ के सामने रखता है ?''

''हॉ, वही है,'' रमेश ने कहा ,'' और अब कथा में ''घोर अंधकार से भरी तराई'' के भाग पर जायें। भेड़ चरवाहे को कैसे संबोधन करती है ?''

''वह ?'' मैने उत्तर दिया।

'' आह! फिर से देखे '' रमेश ने आगे कहा। '' कथा कहती है और हानि से न डरूंगा क्योंकि तू मेरे साथ रहता है? भेड़ चरवाहे को क्या कहती है'' भेड़ चरवाहे को कैसे संबोधित करती है ?''

''रूको, मैं बिना समझे बोल उठी,'' यह ''तू'' है! वॉव । वहॉ एक परिवर्तन है। मैने पहले कभी भी उस को ध्यान नही दिया। अब भेड़ चरवाहे से बात कर रही हैं, नि कि चरवाहे के बारे मे! यह बहुत बहुमूल्य है।

''हॉ। और देखना जारी रखें। क्या आप देखते है कि चरवाहा कहॉ है? क्या परिवर्तित हुआ? इस पर देखें।
''किस पर देखे ?'' मैने पूछा।

''और क्या परिवर्तित हुआ उसे देखें। इस पर देखें। पहले चरवाहा भेड़ के आगे/ सामने था। अब चरवाहा कहॉ है?''

'' ठीक है, अब मैं इसे देख रही हूँ,'' मैं फट पड़ी। '' पहले चरवाहा भेड़ के सामने था, अब वह भेड़ के साथ है। ''

''हॉ ! पहले पहल वह सामने था, और अब बगल/बाजू में हैं,'' रमेश मुस्कुराया। ''परन्तु वह सब कुछ नहीं है। देखते रहें । कथा फिर से 'तू' कहती है। भेड़ कहती है ''तुने मेरे सिर पर तेल मला है।' यदि चरवाहा भेड़ के सिर पर तेल लगा रहा है, आप अब चरवाहे को कहॉ देखती हैं ?''

''मैं उसे देखती हूँ ! भेड़ के ऊपर ! चरवाहा भेड़ के ऊपर है।''

'' बढ़ते जायें,'' रमेश ने उत्साहित किया । ''कथा कहती है, निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ बनी रहेगी। भेड़ कह रही है कि और कहॉ वह चरवाहे की उपस्थिति को महसूस कर सकती है ?''
'' हॉ मैं देख रही हूँ । वह अद्भुत है ।''

अब रमेश मुस्कुरा रहा था । ''चरवाहा सामने है और बाजू में है और ऊपर है और पीछे है। वह भेड़ के सभी ओर है। ''

वहॉ से, चूंकि हम कथा के अंत में थे, हम दोनों प्रयुक्तियों में गये । हम कैसे नहीं जाते ? हम दोनों ने विभिन्न प्रयुक्तियों के बारे में बातें की उससे जिसे हमने इकट्ठे कथा में देखा था । परन्तु खोज की संपूर्ण नयी डोर, कैसे यीशु हमारा चरवाहा सामने बाजू, ऊपर और हमारे पीछे है, प्रत्यक्षीकरण था ।

कथा शेष । कुछ समय बाद कार्यालय में, कार्यालय कर्मचारी उन गलतियों के बारे में बात कर रहे थे जो हम कर रहे थे जैसा कि हमने इस सेवकाई में काम किया था, और कैसे बारंबार परमेश्वर ने हम पर करूणा दिखाई और उन्हें भुलाने में हमारी सहायता की । मैंने टिप्पणी की ''परमेश्वर वास्तव में हमारे पीछे रहता है! प्रतिदिन, जैसा कि हम हमारी चुनौतियों का सामना करते हैं, परमेश्वर हमारी मजबूत सहायता है । वह कहता हैं,'' आगे बढ़ो और चिंता न करों, मैं तुम्हें ढ़ापूंगा/ तुम्हारी ढ़ाल हूँ । मैं निश्चित करूँगा कि कोई तुम्हारे पीछे चोरी से तुम्हें चोट न पहुँचाये ।''

तब वह भजनसंहिता कथा मेरे पास वापस आयी। ''ओह मेरे ! वह भजनसंहिता 23 है। 'परमेश्वर ने हमारी पीठ को ढ़ॉपा है' आज का कहने का ''निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ/मेरे पीछे बनी रहेंगी ।''

हुम्म ? शिक्षक विद्यार्थी की ध्यानपूर्वक सुनते हैं – दोनों परिचित भाग से सुनते हैं ।

इस प्रकार का परस्पर बदलना, जहॉ स्वदेशी विश्वासी यूरोप और पश्चिम के अगुवों को सिखा/पढ़ा रहें हैं, अब अधिक बारंबार होता जा रहा है। कई देशों जैसे भारत, टोगो, मोजांबीक, नाईजीरिया और फिलीपीन्स में मिश्नरी स्वदेशी प्रशिक्षकों के पास आ रहे हैं कि एस टी एस में प्रशिक्षित हों ।

अंततः एस टी एस केवल लोग हैं – हम लोगों को ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं – जो परमेश्वर का वचन ध्यानपूर्वक सुन रहें हैं । ध्यानपूर्वक सुनना और प्रतिउत्तर देना सभी को उपलब्ध है। और परिणाम प्रदर्शित करते है कि यह केवल उच्च श्रेणी के अगुवे नहीं हैं जो परमेश्वर से सुनते हैं और तब उनका ज्ञान दूसरों को देते हैं । वास्तविकता में, वे स्वदेशीय प्रशिक्षक जो निवेदन द्वारा मिश्नरियों को प्रशिक्षण दे रहें हैं एस टी एस के 3री और 4थीं पीढ़ी के सीखने वालों हैं !

विवरण जो सफलता की ओर ले जाते हैं ।

हम आशा करते हैं कि इन विवरणों ने आपको प्रेरणा दी है कि एस टी एस के बारे में सीखना जारी रखें और इसके नये कौशलों में से कुछ प्राप्त करें । यहाँ तक की यद्यपि आप संभवतः सोचेंगे कि अपने प्रश्नों को बिना लिखे याद रखना असंभव है, यह महत्वपूर्ण है कि उन प्रश्नों को न लिखें जिन्हें आप कथा के बारे में पूछना चाहेंगे । अपने प्रश्नों को स्मरण करने के लिए,

मानसिक रूप से कथा में जायें, इसके विषय वस्तुओं काये अपने तैयार प्रश्नों को स्मरण करने दें ।

कथा आपके स्मरण का तरीका हो जाएगी; कथा आपका संक्षिप्त लेख हो जाती है !

अपने परिचय पर पुनर्विचार करें ।

अब आपने अपनी कथा में छिपे हुए कई खजानों को प्राप्त कर लिया है, आप संभवतः चाहेंगे कि परिचय में जोड़े या छोटा करें जो आपने तैयार किया है । यदि आप पाते हैं कि आपके परिचय में की जानकारी वास्तविकता में कथा में है, आप बुद्धिमान होंगे कि उन सत्यों को परिचय में से निकाल दें ।

उदाहरण हेतु, आपने संभवतः पहले अब्राम की कथा के परिचय की योजना को उत्पत्ति 12:1–9 में है बनाई, यह कहने में द्वारा, ''यह कथा एक व्यक्ति के बारे में है जो परमेश्वर द्वारा बुलाया गया कि अपने लोगों व देश को छोड़ दें व एक नये देश को प्रारंभ करें।'' यद्यपि आपने उस खंड के बारे में विचार किया जैसे आप आत्मिक खजानों की खोज कर रहे थे, तत्पश्चात् आप यथार्थ करते हैं कि वह एक निश्चित जानकारी अब्राम के बारे में कथा के अंदर है । अतः आप उस जानकारी को अपने परिचय से बाहर कर सकते हैं ।

यदि, यद्यपि, यदि आप एक कथा के बारे में कुछ अन्तर्दृष्टि पायी है उसे बेहतर रूप से समझा जा सकता है यदि आप उसके बारे में जोड़ी गयी जानकारी का एक छोटा भाग दे सकें, तब अपने परिचय में जानकारी को बताये ।

उदाहरण हेतु, मार्था/मरियम की कथा में कई खजानों में से एक मार्था के चुनाव पर आधारित है कि एक विस्तृत भोज कई मेहमानों के लिए बनाना । अन्य खजाना वह झटका है कि यीशु के प्रति आलोचना और यीशु पर अधिकार उसके अनुयायियों की उपस्थिति में ऐसा अनादर दर्शाती है । कथा प्रारंभ होती है कि यीशु एवं उसके शिष्य एक नगर में प्रवेश करते हैं । परंतु कथा में हमें केवल यह बताया गया है कि मार्था ने यीशु को अपने घर निमंत्रित किया। कथा में यह नहीं कहा गया कि शिष्य यीशु के साथ आये ।

चर्चा को स्पष्ट करने हेतु, यह बुद्धिमत्ता है कि कथा का एक परिचय कुछ इस प्रकार से दें । ''जब यीशु इस संसार में रहे उसने पुरुषों को चुना कि उसके साथ चलें, ये पुरुष, शिष्य कहलाये, हमेशा यीशु के साथ यात्रा किए, सिवाय जब हमें बताया गया है कि यीशु स्वयं कुछ समय के लिए गया या कुछ घटनाओं में जब यीशु ने दूसरों को छोड़ कुछ ही शिष्यों को थोड़े समय के लिए लिया।'' यह जानकारी श्रोताओं को यथार्थ करने में सहायता करेगी कि यीशु द्वारा भेंट करने जाने में उसके शिष्य भी सम्मिलित थे ।

कथावाचक को अवश्य कल्पना करना है कि एक या अधिक उपस्थित लोगों को उसके अलावा बाईबल का ज्ञान नहीं है जो आप उन्हें अपनी कथा में और परिचय में बताते हैं। प्रत्येक श्रोतागणों से जो आप चर्चा करना चाहते हैं उसकी सभी जानकारी देना, इसके पूर्व की आप वे प्रश्न पूछें जिसमें वह जानकारी सम्मिलित है।

यदि आपने प्रत्येक उपस्थित को कुछ कथायें सिखायी हैं, आप प्रश्नों को पूछ **सकते** हैं जो किसी भी जानकारी पर निर्मित किये हों जो उन पूर्व के कथा–समयों से साथ में प्राप्त की गई हों । अपने मन में केवल रखें कि अधिकांश कथाओं में उनके अंदर विशाल/पर्याप्त जानकारी है, अतः सामान्यतः आपको एक कथा को अच्छी रीति से सिखाने के लिए बाईबल में अन्य जगहों पर नहीं जाना है ।

कभी–कभी जोड़ी गई जानकारियों को अंदर लाना, जैसे परमेश्वर के नियम, कोढ़ियों, सब्त, खाने, या यहूदी सामरियों के प्रति क्या सोचते थे के प्रति, एक कथा में घटनाओं को गहराई दे सकते हैं ।

साथ ही, एक कथा में जब खजानों पर चर्चा करते हैं, संभवतः आप चाहेंगे कि कुछ बहुत ही स्पष्ट चिन्हों का परिचय करायें जो बाईबल के अन्य भागों में वर्णित किए गये हैं । आप श्रोताओं की सहायता करें कि इस प्रतीकात्मक अर्थ को उन्हें फिर एक दूसरी ''कथा'' सुनाने द्वारा खोजें । आप उन्हें एक नयी कथा में ले जायें या कुछ एक आयतों में जो बाइबल में अन्य भाग में हैं । इन्हें एस टी एस शैली में सुनाये । इसे करें यदि आप विश्वास करते हैं कि आपके श्रोताओं ने सचमुच उस कथा के अंतर्गत उस कथा के अन्तर्गत गहरे आत्मिक भागों को ग्रहण कर लिया है जिसे आप प्रस्तुत कर रहे हैं, या केवल तब करें जब यदि यदि पवित्र आत्मा आपको ऐसा करने की अगुवाई करें !

जोड़ी गई जानकारी जो आप कथा के बारे में देते हैं इसे अवश्य इतना पर्याप्त होना चाहिए कि श्रोतागण सरलता से प्रयुक्तियों को बना सकें । कुछ इस प्रकार से कहते हुए प्रारंभ करें, '' वहॉ एक अन्य कथा है जो इस कथा के बहुत पहले घटित हुई ।'' तब आप उन्हें एक भाग/पाठ में ले जाये जिसमें कुछ प्रतीक या चिन्ह/लाक्षणिक अर्थ हों । अधिकांश अक्सर वह दूसरी कथा वह होगी जो नये नियम में है।

उदाहरण के लिए, यदि आपने गिनती 21:4–9 में की मूसा और पीतल के सॉप की कथा को सुनाया है, और आपके समूह ने आत्मिक प्रयुक्तियों की खोज एवं प्रयुक्ति को पूर्ण कर लिया हो, आप संभवतः यह कहने की अगुवाई करेंगे कि :

'' यह एक लंबा समय होगा इसके पहले कि हम बाइबल में की सभी कथाओं को एक साथ चर्चा कर सकते । वहॉ एक कथा है जो बाइबल में काफी बाद में आती है जिसे मैं आपको सुनाना चाहता हूँ । यह हमें सहायता करेगी कि इस मूसा और पीतल के सर्प की कथा में और अधिक खोज कर सके। (यदि आपके पास समय है, आप एक छोटा परिचय देंगे और तब यूहन्ना 3:1–16 बतायेंगे ।

यदि समय सीमित है, आप एक छोटा परिचय दे सकते है जिसमें आयत 1–13 के मुख्य भाग शामिल हो, और तब ' छोटी'' कथा सुनाये जिसे यीशु ने उस धार्मिक व्यक्ति को 14–16 आयतों में बताया । स्मरण रखें, इसे एस टी एस शैली में बतायें !) '' और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सॉप को ऊॅचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊॅचे पर चढ़ाया जाये, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह अनंत जीवन पायें।''

कथा के प्रति श्रोताओं के प्रतिउत्तरों को ध्यानपूर्वक सुनें ।

उत्तर जो लोग देते हैं कि आपकी मदद करते हैं कि उनकी आवश्यकताओं और उनके व्यक्तिगत प्रश्नों को आप महसूस करें । ये अंतर्दृष्टि आपको वास्तविक प्रश्नों को निर्मित करने में मदद करेगी जैसा आप जारी रखते हैं ।
यह कहलाता है ''बंद क्षणों की शिक्षा''

अधिकांश प्रश्न लोगों ने क्या किया या परमेश्वर ने क्या किया के बारे में होने चाहिए ।
ये प्रश्न श्रोताओं को आत्मिक सत्यों को खोजने की ओर ले जायेंगे । बस चरित्रों के द्वारा बोले गये शब्दों व उनकी क्रियाओं का पुनरावलोकन करें । ''क्युँ'' प्रश्नों को पूछने में सावधान रहें जैसा कि वे कल्पनाओं व बूझने को संभवतः निमंत्रित करेंगे जिन्हें वचन द्वारा संभाला नहीं जा सकता । प्रश्नों का उपयोग करना जो पूछते हैं ''क्या'' सामान्यतः श्रेष्ठ हैं ।

अवलोकन प्रश्न पूछें ।

संभवतः कहें, ''कथा में हमें (कथा के चरित्रों को चुनें) के विश्वासों के बारे में क्या दर्शाया जाता है ?'' ''कथा हमें कैसा दर्शाती है उस व्यक्ति के मूल्यों के बारे में ?''

कहें, ''परमेश्वर के चरित्र के बारे में क्या हमें कुछ दर्शाता है ?'' या ''कथा में हमें क्या विश्वास योग्यता को दिखाता है ? बताये कथा का कौन सा भाग अनादर (या भय, या भम्र या लालच या भलाई या साहस या भरोसा, या बुद्धि) प्रदर्शित करता है ?''

यह निश्चित करें कि जो प्रश्न आप पूछें वह उस कथा के अंदर समाहित जानकारी से उत्तर दिये जा सकें जो आपने अभी सुनाई है ।

श्रोताओं की सहायता कथा में के सत्यों को प्रयुक्त करने में धीरे–धीरे/क्रमशः करें।

जैसा आप अपने चर्चा के समय में आगे बढ़ते हैं, आप संभवतः द्वारों को पायेंगे कि पूछें यदि हमें कभी इसी प्रकार की भावनायें और प्रतिक्रिया होती हैं जैसा हम कथा में के लोगों में देखते हैं (संदेह, भय, विश्वास, आशा, भम्र आदि) ।

व्यक्तिगत प्रयुक्तियों को बाँटें ।

यदि आप ईश्वर द्वारा ऐसा करने को प्रेरित हैं, आप संभवतः बाँटे कि कथा ने कैसे आप पर प्रभाव डाला या पूछे कैसे इसने उन्हें प्रभावित किया ।

अच्छे प्रश्नों के आवश्यक तत्व । आपके प्रश्नों के उत्तरों को अवश्यः

1. कथा के अंदर रखना है,
2. और कथा द्वारा प्रमाणित करने योग्य रखना है ।

कथा के बाहर की जानकारी

यदि कथा में एक बहुत महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि या प्रयुक्ति को उस सत्य को दर्शाने के लिए एक बाहर की आयत/पद की आवश्यकता है, आप उस धर्मशास्त्रीय जानकारी को कथा परिचय में सम्मिलित कर सकते है । यह भी अच्छा है, अतिरिक्त आयत को, सभी प्रमाणित करने योग्य प्रयुक्तियों को जो कथा में है और प्रस्तुत की गई हैं, के पश्चात् दिया जाये । इसे केवल कभी–कभार अवसरों पर करें, जैसा कथा के बाहर के वचन का उपयोग श्रोता को कथा को सिर्फ सुनने की बजाय कथावाचक की खोज पर निर्भर कर देता है । कथावाचक उन बाईबल जानकारी पर निर्मित प्रश्नों को पूछ सकते हैं जिन्हें वे जानते हैं कि श्रोताओं ने उन्हें पूर्व के कथा सुनने के समयों में पाई हैं ।

उत्तम/अच्छे उत्तर ।

जब लोग ग्रहण–योग्य उत्तरों को देते हैं, उन्हें उत्साहित करें । इस प्रकार से कहें, ''उत्तम उत्तर'', ''मैंने कभी वैसा नहीं सोचा था'' या ''यह समझदारी है।''

उतने अच्छे उत्तर नहीं ।

यदि श्रोताओं द्वारा दिए गये उत्तर गलत जानकारी है, आप कह सकते हैं, ''चलिए वापस चलें और देखें यदि वह कथा से मेल खाता है।'' यदि जिन निष्कर्षों पर वे पहुँचें हैं, गलत हैं, आप शायद चाहेंगे कि दोष अपने सिर ले लें और कहें, ''मैंने उस भाग को स्पष्ट नहीं किया'' या ''संभवतः मेरा प्रश्न ठीक से नहीं बोला गया।''

यदि एक प्रश्न या उत्तर एक श्रोता का हो जो विषय से पूरी तरह अलग हो, आप कह सकते हैं, ''वह एक विषय रहेगा जिसे हम अन्य समय चर्चा करेंगे,'' या ''शायद अगली कथा में हम उत्तर को पायेंगे।'' कुछ प्रश्न पुछल्ले हैं जो कहीं भी नहीं ले जाते और संपूर्ण समूह मुख्य मार्ग से हट जायेगा यदि आप उनका उत्तर देने को समय लेंगे ।

यदि समूह बड़ा है या समय कम है ।

प्रश्नों को पूछना और श्रोताओं के प्रतिउत्तरों को प्रति उत्तर देना एक सिद्धांत है जब कोई ''केवल कथा'' को उपयोग करता है । यदि उपलब्ध समय उत्तरों को देने की अनुमति नहीं देता या परिस्थितियाँ या श्रोतासमूह का आकार उत्तरों को प्राप्त नहीं करने देता, वहाँ एक विकल्प है। शिक्षक जो ''केवल कथा'' का उपयोग कर रहे हैं आलंकारिक (बोलने की कला) प्रश्न पूछ सकते हैं । लोगों को प्रश्नों के उत्तरों को सोचने के लिए कहा जाता है, परंतु वे उन्हें ऊँची आवाज में नहीं बोल सकते । बस यह निश्चित करें कि कथा वाचक के रूप में आप एक छोटा सा समय श्रोताओं को दें कि वे उनके उत्तरों को सोचें ।

अचूकता को बनाये रखना : पुनरावलोकन का महत्व

एस टी एस की चर्चा शैली में लाभों में से एक ''पुनरावलोकन'' का शक्तिशाली उपकरण है।

एस टी एस में पुनरावलोकन सबसे अधिक महत्व योग्य तब है जब बाइबल कथाओं को क्रमानुसार प्रस्तुत किया जाये । कथा के प्रारंभ के पूर्व शिक्षक एक परिचय दे इसकी बजाय शिक्षक उनसे जो कथाओं को सुन रहे हैं से कह सकता है कि पहले की सभाओं की कथा और खोजों पर एक संक्षिप्त पुनरावलोकन दें ।

क्योंकि नये लोग भी संभवतः एक शिक्षण सत्र में उपस्थित होंगे या शायद कुछ नियमित उपस्थित पूर्व की सभा में नहीं आये, सो पिछली कथा का एक पुनरावलोकन उनकी सहायता करेगा जो इसमें छूट गये थे । सीखने वालों द्वारा पुनरावलोकन की जिम्मेदारी उठाना लोगों को एक अवसर प्रदान करती है कि कथा को स्मरण शक्ति से दोहराये ।

साथ ही, सदस्यों को कहा जाये कि पूर्व में प्राप्त किए गये खजानों में से और जो उन्होनें सीखा है में से बॉटें । पुनरावलोकन लोगों को अनुमति देता है कि जानकारी को उनके मनों में दृढ़ीकृत करें और वचन को दूसरों से कहें। सभा में यह एक सिद्व स्थान है कि उस पूर्व सप्ताह के दौरान उस कथा के उनके द्वारा उपयोग के बारे में उपस्थितों की गवाहियों को सुनें ।

साथ ही, जब कक्षा सदस्यों को अवसर दिया जायें कि बॉटे जो उन्होंने एक साथ पूर्व की सभा में सीखा था, शिक्षक सक्षम है कि निश्चित करे कि पिछली कथा और इसके खजाने सही रूपज से और ठीक से समझे गये । यदि लोग जो पिछले शिक्षण में थे अनिश्चित हैं उस बारे में जो उन्होनें सीखा था या कथा को नहीं बता सकते, यह शिक्षक के लिए एक संकेत है कि प्रत्येक के लिए पुनरावलोकन करें ।

वहॉ कोई कारण नहीं है कि एक नयी कथा में आगे जाये जब तब कि पिछली कथा प्रत्येक द्वारा ठीक से समझी न गई हों ।

अध्याय 7 : अचूक प्रयुक्ति–हाथी की खोज

जैसा कथावाचक उनकी जॉच पड़तालयुक्त कौशल को बढ़ाते है, वे विवरणों को ध्यान देना आरंभ करते है जिन्हें उन्होनें संभवत उन पाठों में पहले छोड़ दिया जिन्हें वे अध्ययन कर रहे हैं । कोई बात नहीं कितना छोटा था, प्रत्येक खोज कितनी उत्तेजना लाती है। यद्यपि जैसा ये छोटे रूचिकर भाग प्राप्त किये जाते है, कथावाचकों को सावधान रहना चाहिए कि बाइबल एक एतिहासिक पुस्तक से अधिक है। उन्हें कथा के छोटे–भागों द्वारा लाये आत्मिक संदेश या संदेशों को अवश्य नहीं छोड़ना चाहिए ।

उदाहरण हेतु, लोग अक्सर दाऊद और गोलियत की कथा सुनाते हैं ।वे प्रचार या एक चर्चा की अगुवाई करते हैं कि दाऊद एक छोटा युवा लड़का था जिसने एक महान कौशल को विकसित किया था और इतना साहसी और दृढ़निश्चयी था कि एक दानव का सामना करें और उसे परास्त करें । तब एक प्रयुक्ति बनाई जाती है : ''आप सभी को दाऊद के समान होना चाहिए और विषम परिस्थितियों का सामना करने में साहसी होना चाहिए ।

अच्छा संदेश । परन्तु ,क्या इस कथा में इतना ही सब था ?

यद्यपि कथा प्रचारी गई जानकारी को रखती है, पर कथा के बड़े आत्मिक संदेशों को अपेक्षित किया गया । कथानुसार दाऊद जानता था कि उसका परमेश्वर सक्षम था कि दानव और विरोधी सेना को हराये जो झूठे देवताओं पर भरोसा कर रहें थे । साथ ही, इस्राइल की सेना और उनका राजा शाऊल, जिसे परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिये था कि दानव और झूठे देवताओं को जिन्हें शत्रु उपासना करते थे, हरायेगा, ने उनके अवसर को कि युद्ध में परमेश्वर पर भरोसा रखें गंवा दिया । देश जो झूठे देवताओं की उपासना करता था हार गया जब एक तुच्छ सा दिखाई देने वाला व्यक्ति विश्वास में चला ।

सभी कथाओं में, जैसा आप कई उचित, छोटे सत्यों को पाते हैं, आप निश्चित करें कि संपूर्ण कथा को ठीक से ध्यानपूर्वक सुनें ताकि आप अधिभूत/चढ़े हुए आत्मिक सत्यों की जकड़ को पकड़ सकें जो सचमुच कथा में है।

हाथी – को – खोजना सिद्धांत हममें से प्रत्येक को याद दिलाने में सहायता कर सकता है, कथावाचक के रूप में, कि कथा की संपूर्ण अचूकता को बनाये रखें जैसा हम कई खजानों की खोज करते हैं जो इसमें होंगे ।

पहले एक घटना.....**हाथी का खो जाना**

आपने इसके पूर्व भी संभवतः इसी प्रकार की एक बात सुनी होगी । पाँच दृष्टिहीन लोग एक हाथी के पास ले जाये गये । ''पुरुषों, आप एक हाथी के पास खड़े हैं । कृपया इसका वर्णन करें ।'' तुरन्त ही, चार पुरुषों ने उस भाग को महसूस करना प्रारंभ किया जिसे उन्होंने पहले छुआ ।

एक ने पूँछ को महसूस किया, और उसने हाथी का वर्णन यह कहते किया, यह एक छोटे पेड़ की शाखा है।''

एक दूसरे दृष्टिहीन व्यक्ति ने हाथी के कान को पकड़ा और उसने कहा, ''एक हाथी अवश्य ही एक पेड़ पर एक विशाल पत्ता है।''

तब पुरुषों में से एक अन्य ने हाथी की सूँड को महसूस किया।''यह एक लंबी नली है जो विभिन्न तरीकों से मुड़ती है।''

चौथे व्यक्ति ने हाथी के पेट के ईद–गिर्द पहुँचने का प्रयास किया । वह नहीं कर सका । अतः उसने वर्णन किया, ''एक हाथी एक बड़ी गोल–चट्टान के समान है, परंतु यह चट्टान जैसा सख्त नहीं हैं और यह हिलता है ।''

पाँचवें दृष्टिहीन व्यक्ति ने ताना मारा, ''ओह, मुझे हाथी को वर्णन करने के लिए इसे महसूस करने की आवश्यकता नहीं है । मैंने हाथी की ऊँची चिंघाड़ को कई बार सुना है । हरेक जानता है कि एक हाथी एक बड़ा संगीत वाद्ययंत्र है ।''

यद्यपि प्रत्येक पुरुष ने हाथी के कुछ भाग का सही वर्णन किया था, परंतु उनमें से किसी ने भी नहीं समझा कि संपूर्ण पशु कैसा था । उन्होंने हाथी को खो दिया । जब हम एक बाईबल कथा में खजानों की खोज करते हैं, हमें अवश्य स्मरण रखना है कि प्रत्येक कथा की एक संपूर्णता हैं । हम इस संपूर्णता को कहते हैं, ''हाथी।'' (जब एक कथा लंबी है, वहाँ अक्सर इसके कई भाग होते हैं, एक नाटक के समान जिसमें एक से अधिक अभिनय होते हैं । इन लंबी कथाओं में, प्रत्येक अभिनय या दृश्य संभवतः इसके सत्य का अपना हाथी लिए हैं ।

कई समयों पर जब हम एक परिचित कथा को पूरा पढ़ते हैं, हमारे पास संभवतः पूर्वनिर्णित विचार हो सकता है कि कथा किस बारे में हैं, इसलिए हमें इसे वास्तव में ध्यानपूर्वक सुनने में

असफल होते हैं । स्मरण करें उस दृष्टिहीन व्यक्ति का जिसने जाँच के लिए समय भी नहीं लिया (क्योंकि वह इतना निश्चित था कि हाथी एक संगीत वाद्ययंत्र है)? हम भी विचार कर सकते हैं कि हम एक बाईबल भाग के बारे में पहले से ही सारा जानते हैं और परिणाम स्वरूप हम कथा का संपूर्ण सत्य खो देते हैं ।

साथ ही, यह सरल है कि उसी गलती को करें जो दृष्टिहीन व्यक्तियों ने किया था । हम इसे, एक कथा के कुछ व्यक्तिगत भागों को पकड़े रह और बस वहीं रूक जाने को करके, करते हैं । संपूर्ण कथा पर पीछे होकर विचार करने में असफल होने द्वारा, और उस तरीके से जिसमें इसके सभी भाग एक दूसरे से मिलते हैं उसे छोड़ने द्वारा, हम संपूर्ण हाथी को खो सकते हैं ।

संपूर्ण कथा का सही तरीके से ग्रहण करने को निश्चित करने हेतु सावधानीपूर्वक सुनने व प्रार्थना की आवश्यकता है । वे व्यक्तिगत सत्य जिन्हें आप खोजते हैं मूल्य रखते हैं, परंतु वे व्यक्तिगत भाग संभवतः फिर भी संपूर्ण हाथी को ठीक से वर्णित नहीं कर सकते ।

एक बाईबल कथा में हाथी–को–खोजने का उदाहरण–

पहले मरकुस 1:40–45 पढ़ें । तब समय लें और कथा में हाथी की तलाश करें :

''एक कोढ़ी उसके पास आया, उससे विनती की, और उसके सामने घुटने टेककर
उससे कहा, यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है ।'' उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा । और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया ।

तब उसने उसे चिताकर तुरन्त विदा किया । और उससे कहा, ''देख, किसी से कुछ मत कहना, परंतु जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया हैं उसे भेंट चढ़ा कि उन पर गवाही हो।''परंतु वह बाहर जाकर इस बात का बहुत प्रचार करने और यहाँ तक फैलाने लगा कि यीशु फिर खुल्लम खुल्ला नगर में न जा सका, परंतु बाहर जंगली स्थानों में रहा; और चारों ओर से लोग उसके पास आते रहें ।

हालाँकि इस कथा में कई अद्भुत और महत्वपूर्ण खजाने हैं । परंतु क्या आप हाथी को देखते हैं ? अक्सर शिक्षक इसे छोड़ देते हैं ।

वे देखते हैं :

1. व्यक्ति का विश्वास कि यीशु चंगा कर सकता है,
2. यीशु की उसे शुद्ध करने की इच्छा ।
3. यीशु की चंगा करने की क्षमता ।
4. यीशु की तरस व कोमलता,
5. यीशु अपने प्रेम प्रदर्शित करते हैं एक कोढ़ी को छूने द्वारा
6. एक न छूने योग्य के साथ यीशु की पहिचान,

परंतु तब, वे साथ ही इनमें से कुछ अन्य ''रूचिकर'' अवलोकनों को बनाते हैंः

परंतु तब, वे बाकी की कथा में शीघ्रता करते हैं और इसे ठीक से ध्यानपूर्वक नहीं सुनते। इसके बजाय वे कुछ एक परिचित शब्दों को पकड़ लेते हैं और तब प्रयास करते हैं कि वचन से ज्ञात अन्य सत्यों को इस कथा में डाले । परिणामस्वरूप, वे हाथी को खो देते हैं ।

1. यीशु ने कहा कि किसी को चंगाई के बारे में न बताना और जाकर अपने आप को याजक को दिखाना । परंतु ये शिक्षक कहने को आगे बढ़ते हैं कि यह व्यक्ति उत्तेजना से इतना भरा था कि उसने अपनी चंगाई को सभी को बताया और गवाही दी कि यीशु ने क्या किया था । तब वे आनंद व सराहना पर एक उपदेश प्रचार करते हैं ।

2. कुछ इस प्रकार बताते हैं, ''यद्यपि चंगा हुआ व्यक्ति को नहीं चाहिए था कि लोगों को बताये क्या घटित हुआ था, परंतु आनंद के कारण वह ऐसा न कर सका पर गवाही दी।'' तब गवाही पर एक उपदेश प्रचार किया जाता है ।

3. चूंकि यह व्यक्ति अपनी चंगाई के बारे में प्रत्येक को बताने को फट पड़ा, कि यीशु को शहर से बाहर जाना पड़ा और ''वे (लोग) चारों ओर से उसके पास आते रहें।'' वे कहते हैं कि इस व्यक्ति के बताने के परिणामस्वरूप ही था कि अधिक लोग यीशु के पास चंगाई के लिए आने में सक्षम हुए । तब उपदेश प्रचार किया जाता है कि कैसे परमेश्वर की प्रभुत्व इच्छा इस चंगे हुए व्यक्ति द्वारा पूर्ण हुई ।

परंतु आइये हम एक दृष्टि डालें । क्या उपरोक्त सूचीबद्ध किए गये सभी नौ खजाने क्या कथा का एक सही ऊपरी दृश्य देते हैं, या वह उसके बारे में केवल आधा है जो कथा की वास्तविकता है ? क्या हाथी की केवल आधी खोज हुई है ?

यह महत्वपूर्ण है कि कथा में के कई खजानों पर चर्चा करें जैसे कि चंगाई और चंगा होने का कोढ़ी का विश्वास । परन्तु यदि हम कथा में से कुछ उपेक्षित करेंगे, या सिखायेंगे जो कथा में नहीं है, हम इसकी आत्मिक संपूर्णता को खो सकते हैं ।

हम इस कथा को ध्यानपूर्वक सुनते हैं, कुछ निश्चित मुख्य वाक्यखण्डों को सुनते है और तब उस बारे में बात करते हैं कि उस दिन क्या हुआ था । हम सभी यीशु के बारे में साहसी गवाही देने के विचार से प्रेम करते हैं, अतः हम इस व्यक्ति के कार्य को अच्छे रूप में देखते है। कुछ भी हो – इस व्यक्ति ने कई लोगों को कई स्थानों पर बताया कि यीशु ने क्या किया था ! साथ ही, हम अवसरों को प्रेम करते है कि परमेश्वर के प्रभुत्व के बारे में कहे, अतः हम उसे देखते हैं ।

आइये इस कथा के केवल एक भाग से धीरे–धीरे चलें यह देखने कि हम क्या खोज सकते हैं ।

यीशु ने चंगाई प्राप्त कोढ़ी से क्या करने और क्या नहीं करने को कहा ?.....

क्या वे दो निर्देश जो नये शुद्ध व्यक्ति से कहे गये सुझाये गये विकल्प थे ?...

नहीं, वास्तव में यीशु ने कठोरता से उस व्यक्ति को आज्ञा दी थी कि अपनी इस नयी शुद्ध स्थिति के बारे में किसी से भी कुछ **नहीं** कहे । उसे याजकों के पास विधियों को पूरा करने जाना था कि उसे शुद्ध घोषित करें और बलिदानों को करना था, सभी कि याजकों पर गवाही हो !

अतः क्या हम वह अनुसरण कर रहे हैं जो कथा कह रही है जब हम इसका उपयोग अनियंत्रित आनंद, गवाही की महिमा, या परमेश्वर की प्रभुता के बारे में शिक्षा देने में करते हैं ।

यदि हम कथा को ध्यानपूर्वक सुनने में असफल होते है, हम हाथी को खो देते है !

ठीक से – तैयार कथावाचक – शिक्षक कथा के संदर्भ को पहले देखते हैं । वचन जो ठीक इस कथा के पहले हैं यीशु की इच्छा के बारे में कुछ दर्शाते हैं।

मरकुस 1:38–39 उसने उनसे कहा, ''आओ; हम और कहीं आसपास की बस्तियों में जाएँ, कि मैं वहाँ भी प्रचार करुँ, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूँ।'' (39) अतः वह सारे गलील में उनके आराधनालयों में जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा ।

ध्यान दें कि परमेश्वर ने हमें 38वीं आयत में बताया कि यीशु आसपास की बस्तियों में जाना चाहता था परंतु दुर्भाग्य से चंगाई के पश्चात्, उस एक व्यक्ति की इच्छा के कारण, परमेश्वर हमें कथा में बताता है कि यीशु खुल्लम–खुल्ला नगरों में नहीं जा सका ।

यीशु क्या चाहता था कि कोढ़ी करे ? कथा में यीशु ने कठोरता से उस चंगाई प्राप्त कोढ़ी को याजकों के पास जाने के बारे में आज्ञा दी थी, ''जाकर अपने आप को याजक को दिखा.....'' अतः सबसे पहले हम देखते हैं कि यीशु के मूसा की व्यवस्था की आज्ञापालन के निर्देशों को चंगे कोढ़ी द्वारा तिरस्कृत किया गया, और साथ ही कोढ़ी व्यवस्था के निर्देशानुसार शुद्ध नहीं हुआ था।

जो बात यीशु ने कठोरता से कोढ़ी से कहा था, कि कोढ़ी को स्वयं को चंगाई की गवाही के लिए एक गवाही के रूप में दिखाना था, वह नहीं किया गया । कथा से, क्या हम कह सकते हैं कि यीशु चाहता था कि याजक चंगाई के बारे में जानें और उसे प्रमाणित करें ? अतः शुद्ध किए गये व्यक्ति के द्वारा किसे आदर दर्शाया गया ? यीशु को ? याजकों को ? पुराने नियम में परमेश्वर के नियमों को ? ... सही । किसी को भी नहीं परंतु स्वयं को !

चंगाई के पश्चात, उस एक व्यक्ति की इच्छा के कारण, परमेश्वर हमें कथा में बताता है कि यीशु नगर में खुलकर नहीं जा सका ।

चंगाई और कोढ़ी का चंगा होने का विश्वास, और कई अद्‌भुत बातें जो यीशु के बारे में हम देखते है महान सत्य हैं । परंतु यदि हम कोढ़ी की अनाज्ञाकारिता और उसका यीशु के प्रति अनादर, जिसने उसे अभी चंगा किया है, के सत्य को खो देते है, हम हाथी का दूसरा आधा भाग खो देते हैं ।

ठीक जैसे हम चंगाई पर की जानकारी को गंभीरता से लेते हैं, वैसे ही हमें शुद्ध कोढ़ी की अनाज्ञाकारिता को भी अवश्य गंभीरता से लेना है।

सावधानीपूर्वक कथा को पढ़ने द्वारा (और अपने विचारों को कथा में न डालने द्वारा), यह केन्द्रीय सत्य, यह हाथी पाया जा सकता है : यीशु चमत्कारिक रूप से और तरस से जो एक न छुए जाने वाले के लिए नया जीवन लाये, एक व्यक्ति जिसने बाद में अपनी स्वेच्छा का अनुसरण

किया और उसकी आज्ञा को पालन नहीं किया जिसने अभी उसे चंगा किया था । इस कथा में यह ही हाथी है।

कोढ़ी व्यक्ति का ध्यान चंगा करने वाले से अधिक चंगाई पर दिखता है । संपूर्ण बाइबल में, कई कथाओं में हम लोगों को इसी प्रकार की गलती करते देखते हैं । लोग ''धार्मिक'' पाप करते हैं । उनके उत्साह में वे ''ईश्वर के लिए'' बिना ध्यानपूर्वक सुने या आदर देते हुए कि परमेश्वर ने उन्हें क्या करने को कहा है काम करते हैं । क्या गवाही देना गलत है ? नहीं..... वास्तव में हमें गवाह होने को कहा गया है । क्या यीशु की उस निश्चित समय और स्थान के लिए योजना में यह गलत था ?.....सर्वथा !

बहुधा हम स्वैच्छिक धार्मिक अनाज्ञाकारिता को दोषमुक्त करने रक्षा करते हैं या इसकी चर्चा नहीं करते । परंतु बाईबल में निरंतरता से, परमेश्वर दर्शाता है कि वह आज्ञाकारिता चाहता (और मांग करता) है ।

एक अति उत्तम उदाहरण कि परमेश्वर उन्हें कैसे देखता है जो कुछ करते हैं जो सही प्रतीत होता है, यहाँ तक कि कुछ धार्मिक, 1 शमूएल में है । वहाँ हम एक व्यक्ति को एक धार्मिक कार्य करता देखते हैं, परंतु समय व कार्य की परिस्थिति अनाज्ञाकारिता में लिपटी है परमेश्वर के एक निर्देशित के प्रति । परमेश्वर अपने निर्देशित के इस तिरस्कार की तुलना पाप के सबसे निम्नतम प्रकारों से करता है ।

''शमूएल ने कहा, ''क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है ? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्त्तम है । देख, बलवा करना और भावी कहने वालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है । तूने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिए उसने तुझे राजा होने के लिए तुच्छ जाना है ।'' **(1 शमूएल 15:22–23)**

क्षमा करना या यहाँ तक की कोढ़ी को निर्दोष ठहराना जब हम इस कथा पर चर्चा की अगुवाई करते हैं, आज्ञा देते हैं संभवतः उसे जो मानव जाति का सबसे सामान्य पाप है । यद्यपि कई समयों पर यह पाप अति सूक्ष्म होता है क्योंकि हमने तेज आवाज में नहीं कहा है, ''मैं परमेश्वर के तरीके के ऊपर अपने तरीके को चुनता हूँ'', यदि हम परमेश्वर के कहे का तिरस्कार करेंगे और उस पर केन्द्रित होने का चुनाव करेंगे जिसे हम करना चाहते हैं, यह पाप है । आज्ञाकारिता का अभाव अनाज्ञाकारिता है ।

हम कथा के इस दूसरे भाग (अनाज्ञाकारिता का कार्य एवं परिणाम) को अनदेखा नहीं कर सकते । यदि हम किसी भी कारण से कोढ़ी की अनाज्ञाकारिता को दोषमुक्त करते हैं, हम परमेश्वर की इच्छा के ऊपर अपनी इच्छा करने के निर्णय के इस सामान्य पाप को उत्साहित करते हैं । विश्वासियों का आज यह बोलना सुनने में कितना दुखद है कि, ''अरे इस परिस्थिति के बारे में परमेश्वर उसके वचन में क्या कहता है मैं जानता हूँ, परंतु मेरे पास इसे अलग प्रकार से करने के अच्छे कारण हैं ।'' खिलवाड़ । हम कदाचित् ही लोगों को उनके कार्यों का विवरण देते इस प्रकार से सुनते हैं । ''मैं परमेश्वर के वचनों का उल्लंघन करने जा रहा हूँ क्योंकि मैं उससे बेहतर निर्णय करता हूँ ।''

यह भाग इसलिए चुना गया क्योंकि यह विशेष प्रकार का एक है जिसे बहुत से शिक्षक ठीक से ध्यानपूर्वक सुनने में असफल होते हैं।
हमने बताना चाहा है कि कैसे सरलता से हम एक कथा की संपूर्णता से चूक सकते हैं और ऐसे में परमेश्वर के संपूर्ण संदेश की शिक्षा को चूक जाते हैं ।

जब हम एक कथा को पढ़ाने की तैयारी करते हैं हम एक पवित्र उत्तरदायित्व को लेते हैं । यह हाथी का उदाहरण का उपयोग किया गया है कि हमें स्मरण हो कि हम सावधानीपूर्वक व संपूर्णता से सभी को ध्यानपूर्वक सुनें जो परमेश्वर कहता है । जैसा बाईबल कहती हैं, ''जिसके कान हो वह सुन ले।''

''केवल कथा'' धारणाओं को उपयोग करते हुए प्रत्येक कथा के लिए जिसे हम पढ़ाते हैं, हमें अवश्य ही संपूर्ण कथा को बहुत ही सावधानीपूर्वक सुनना है और समझने के लिए प्रार्थना करना है और प्रत्येक कथा में परमेश्वर क्या कहता है उस पर भरोसा करना है। साथ ही, हमें देखने की आवश्यकता है कि कथा के सभी अलग हिस्से कैसे हमें कथा की संपूर्णता को दर्शाते हैं ।

कोढ़ी की कथा, में परमेश्वर हमें अनाज्ञाकारिता के परिणामों को देखने देता है । यद्यपि ध्यान दें कि कई अन्य बाईबल कथाओं में, हमें लोगों के पाप के परिणामों को नहीं दिखाया गया है । हम उन कथाओं से भी परमेश्वर की आज्ञा मानने की बुद्धिमत्ता को पढ़ा सकते हैं क्योंकि हम उसकी अगुवाई पर भरोसा करते हैं, केवल इसलिए नहीं कि हम अनाज्ञाकारिता के परिणामों से डरते हैं ।

यदि हम मरकुस की कथा को उसकी संपूर्णता में सिखलाते हैं, यह लोगों की सहायता करेगी कि उस उद्धारकर्ता के प्रति अनाज्ञाकारिता के परिणामों और उदासी के बारे में सीखें जो हमारे लिए जीवन लाता है साथ ही साथ चंगाई का आनंद । यदि हम व्याख्या करे, या सभी को चूक जाये इस मरकुस की अनाज्ञाकारिता की कथा में, हम कथा में असफल हो गये और विश्वासियों को विश्वास के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा पालन करने को उत्साहित करने में असफल हो गये हैं ।

अध्याय : 8 अशिक्षित एवं मौखिक बाइबल शालायें

एक साथ शिक्षितों और अशिक्षितों के साथ कार्यशालायें

अक्सर न पढ़नेवालें एस टी एस कार्यशालाओं में उपस्थित होते है। अतः वे कथायें जिन्हें इन न पढ़नेवाले उपस्थितों को सीखेने की आवश्यकता है को अवश्य उनके लिए पढ़ी जाये, उनहें बतायी जाये या उनके लिए किसी प्रकार के श्रव्य यंत्र पर चालयी जायें।

जब कार्यशालाओं में रिकार्डेड कथाओं की आवश्यकता होती है, हम सौर उर्जा चलित श्रव्य यंत्रों का जो मेगावॉइस और अन्य द्वारा उत्पादित किये गये हे, ''परमेश्वर की कथा '' के साथ और उपस्थितों की मातृ भाषा में एक नये नियम का (यदि उपलब्ध है) उपयोग करते है। साथ ही ''परमेश्वर की कथा '' परियोजना निरंतर बाईबल कथाओं को यंत्रों में रिकॉर्ड और जोड़ती रहती है।

कार्यशालायें के पश्चात् एक यंत्र प्रत्येक गॉव के लिए दिया जाता हैं जो कार्यशाला में प्रतिनिधित्व किए गये है। प्राप्त करने वाला यंत्र का रखवाला हैं, परन्तु इसे अन्य उपस्थितों के साथ बॉटता है। यंत्र प्रत्येक को कई और कथाओं को सीखने में सक्षम करता है।

अधिकांश घटनाओं में संपूर्ण गॉव बाइबल कथाओं को ध्यानपूर्वक सुनने में आननंद करता है। बहुधा कार्यशाला उपस्थित यंत्र को बहुत मूल्यवान मानते है। (और यह इन अशिक्षितों के लिए है) कि वे उनके मूल्यवान उपहार को उनके पासवान के हाथों में सौंपते है। पासबान उनका उपयोग सेवकाई में करते है। यंत्र सेवा करते है, एक स्त्रोत के समान, क्षेत्र कें सभी अशिक्षितों के लिए कि और बाइबल कथाओं को सीखें। आश्चर्यजनक रूप से रिकॉडिंग सेवा करती हैं एक संदर्भ बिन्दु के रूप में कि कथाओं को अचूक रखें।

रूचिकर रूप से वही, एसटीएस प्रशिक्षण जैसा इस हस्तपुस्तिका में रूप रेखित किया गया है संसार भर में दिया जाता हैं शिक्षितों और अशिक्षितों को उसी कार्यशाला में। अक्सर ये न पढ़नेवालें एक कथा को सीखेन को अधिक क्षमता दर्शाते हे, और इसे ठीक से कहन में भी, उनकी अपेक्षा जो सीखने के लिए कथा को पढ़ सकते है।

कुछ के लिए आश्चर्यो के साथ, अशिक्षित सीखने वालें तीव्र क्षमता दर्शाते हैं कि बहुत सारे आत्मिक सत्योंकी कथा के अंदर निर्धारित करें। यद्यपि, प्रत्येक सीखनेवाला, शिक्षित और अशिक्षित, पहले संघर्ष करता हैं कि प्रश्नों को निर्मित करें जो दूसरों को चर्चा द्वारा खजाने तक

पहुॅचाते हैं। यह मन में रखे कि वह प्रश्नों को निर्मित करना एक प्रकृति से न प्राप्त कौशल है जो शिक्षितों व अशिक्षितों को समान रूप से उपलब्ध है।
एक अनेपक्षित प्रयुक्ति ।

ड्वानिरों, युगांडा में एक कार्यशाला में, एक वृद्ध पुरूष ने एक संदेश दिया जिसे अफ्रीका टी जी एस पी निर्देशक और मैं आशा करते हैं कि हम कभी नहीं भूलेंगें। अफ्रीका निर्देशक जिसकी जड़े गॉव है ने मुझे यह वर्णिज लेख दिया।

यहॉ के लोग निर्धन हैं और लगभग कोई भी विश्वासी इस कार्यशाला में नहीं पढ़ सकता था। यह स्थान बहुत प्राचीन है।

एक अमुक कथावाचक जिसें मैंने अवलोकित किया एक पेड़ के नीचे खड़ा हुआ और अपनी पहली एस टी एस कथा को पॉच व्यक्तियों के एक समूह को प्रस्तुत किया जिन्होंने उस अमुक कथा को अध्ययन नहीं किया था। यह बहुत ही वृद्ध व्यक्ति, संभवतः 65 वर्षीय वृद्ध ने अभी दूसरा राजा से खोई कुल्हाड़ी की कथा को सुनाया था। मैने उसे चौकसी की जैसा उसने पुरूषों को कथा के बारे चर्चा में अगुताई की।

तब एक कथावाचक के रूप में प्रयुक्तियों के द्वारा बढ़ा,उसने पूछा स्मरएण करे कैसे एलीशा का दास बहुत उदास था क्योंकि जो कुल्हाड़ी का सिर (लोहा) उसने खो दिया था वह मांगी हुई थी? उसके समूह के पुरूषों ने जानते हुए के रूप में सिर हिलाया। और हमने इस बारे में भी बात की थी कि कैसे एलीशा और परमेश्वर ने अपनी यचि को दर्शाया और उस दास की सहायता की कि अपनी मांगी हुई कुल्हाड़ी को प्राप्त करे?

आपके घर में आपके पास क्या है जो मॉगा गया है? पुरूषों ने एक दूसरे को देखा और तब अपने कंधों को उचकाया।

''कथावाचक ने आग्रह किया। आपके घर में क्या है। जिसे आपने नहीं खरीदा? फिर से ये गॉववासी, जिनके पास उनके घरों में बहुत कम था, ने वर्णन करते हुए अपने सिर हिलायें, हमारे पास हमारे घरों में ऐसा कुछ नहीं है जो हमारा नहीं है। ''

''कथावाचक थोड़ा सा परेशान हुआ, क्योंकि दूसरे पुरूष उस खोज को नहीं देख रहे थे जिसें उसने स्वयं के लिए खोजा था। इसलिए उसने जोर से कहा, आपकी पत्नियों के बारे में क्या ? क्या आपने उन्हें खरीदा है?

''हॉ हमनें उन्हें खरीदा हैं सभी का एक उत्तर था। हमने उनके लिए चार बकरियॉ चुकायी थी।''

''मैं जानता हूॅ कथावाचक ने कहा। परंतु उन बकरियों को जीवन किसने दिया, और किसने आपको क्षमता दी कि उन बकरियॉ को उन्नत करें? परमेश्वर ! अतः यह परमेश्वर है जो आपकी पत्नियों पर अधिकार रखता है न कि तुम ! उन पुरूषों ने कुछ गंभीरता से एक दूसरे को देखा और तब कथावाचक के साथ सहमत हुए।

''ठीक आप अपनी पत्नियों से कैसा व्यवहार कर रहे है– जैसे वे आपकी हैं और परमेश्वर से नहीं मांगी गई है? मैं अपनी पत्नी को मारता औरलात मारता हूॅ जैसे वह मेरी संपत्ति हं और मैं ऐसा कर सकता हूॅ जब मै चाहू परंतु वह मांगी गई हैं मेरी नहीं हैं मुझें अवश्य उसस`ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसा कि वह परमेश्वर से संबंधित हैं और मेरे बच्चे भी।

'' इस पर उसने रोना प्रारंभ किया और शर्म से मुड़ गया और परमेश्वर से पश्चाताप करने लगा। और अन्य पुरूष गंभीर हो गये जैसा पवित्र आत्मा ने उन्हें वहीं संदेश दिया था उनके चेहरों पर भी ऑसू गिरने लगे। प्रस्तुति रूक गयी जबकि पश्चाताप के एक समय ने स्थान लिया।

''जैसा यह कथा मुझसें संबंधित हो रही थी, मेरा मस्तिष्क तेजी से चक्ककर खा रहा था। क्या वह संदेश वास्तव में कथा में है ? मैं जानती हूॅ कि किसी मांगी गई वस्तु पर महत्व रखना कथा में हैं परंतु क्या यह प्रमाणिक प्रयुक्ति है? स्पष्ट रूप से यह उन पुरूषों के लिए उस दिन प्रमाणित था! और तब मैने सोचा, ओह मेरे! मैं कैसे अपने स्टॉफ से व्यवहार करती हूॅ जैसे वे मेरे है कि अवमूल्यन करूंजब वे एक गलती करते हैं, या मैं उनमें ऐसा व्यवहार करती हूॅ जैसे वे परमेश्वर से उधार लिए गये हो? साथ ही मेरे हृदय में दोषसिद्धि आयी।

क्या इस अशिक्षित वृद्ध व्यक्ति ने तर्कपूर्ण और अनुमानकारी विचारों का उपयोग यिका कि परमेश्वर के वचन को समझें तथा प्रयुक्त/ लागू करें? क्या उसने प्रश्नों का उपयोग किया था कि मदद करे गॉव के अन्य पुरूषों को कि कथा में महत्वपूर्ण सत्य को खोज सकें? क्या एक

शिक्षित सेवकाई अगुवा, जो वचन जानता है, एक अन्य संस्कृति से अशिक्षित द्वारा आत्मिक प्रयुक्ति पढ़ाया जासकता है? हॉ, हॉ और हॉ।

मौखिक बाइबल शालायें।

मौखिक बाइबल शालायें (ओबीएस) उस रूचि से आयी जो गहराई से बाइबल अध्ययन की कार्यशालाओं में दिखाई गई। स्थानीय पासबानों और अगुवों ने समुदाय में कथाओं को सीखने के लिए अधिक अवसरों के लिए कहा, जिसने शालाओं के लिए इस स्वरूप को आगे लाया।

वे जो एक ओ.बी.एस में सम्मिलित होने का रूचिप्रद हैं एक प्रार्थना पत्र जमा करते हैं, या स्थानीय मंडलियों के पासबान लोगों का नामांकन करते है कि वे विद्यार्धियों का भाग बनें। बारह लोग चुने जाते है, अधिकांश वे जो एक कार्यशाला में उपस्थित हो चुके है। तब चुने गये विद्यार्थी एक एस टी एस प्रशिक्षक द्वारा एक विशेष प्रशिक्षण को एक अतिरिक्त सप्ताह में प्राप्त करते हैं वह प्रशिक्षक ओबीएस निरीक्षक के पात्र में बदल जाता है।

अधिकांश शालाओ में एक वर्षीय स्वरूप होता है। उस वर्ष में पाठ्यक्रम पर विद्यार्थी एक समय पर दो सप्ताहों के लिए मिलते है और तब दो सप्ताहों के लिए घर जाते हैं । कुछ नियमित अदल बदल करते है। निरीक्षक प्रत्येक दो सप्ताहों के अंत पर तीन दिनों के लिए शाला भ्रमण करता हैं विद्यार्थी उनका भोजन स्थानीय रूप से खरीदते है या साथ लाते है। स्थानीय पासबान और मसीही विद्यार्थियों को जैसे आवश्यकता हो मकान देते है।

विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम एसटीएस सीखना और उपयोग करना है कि 210 बाइबल कथाओं को चर्चा करें जो संपूर्ण बाइबल से ली गई हैं यदि, शाला सत्र के अंत पर, कोई भी सभी कथाओं को नहीं जानता है, वह व्यक्ति स्नातक होने के लिए तब तक प्रतीक्षा करता है। जब तक सभी कथायें सीख ली गई हों। एस टी एस कार्यशालाओं की अगुवाई पर कौशल प्राप्त करना और बाहर प्रचार करने को वे अभ्यासिकय/व्यवहार कार्य कहते हैं, भी प्रशिक्षण का भाग है।

एक धर्माध्यक्ष/ बिशप ने एक अद्वितीय ओबीएस का आयोजन किया। उसके कलीसियाओं से लोग जो फूलों के खेतों में काम करते हैं नियमित दोपहर भोजन पर मिलते है।उसने उन्हें चार अलग स्थानों पर रखा जहॉ वे सप्ताह में पॉच कथाओं को सीखते और चर्चा करते है। अन्य काम करने वाले कथाओं को सुनना चाहते थे,अतः वे उनके साथ ध्यानपूर्वक सुनने को शामिल हुए। पहले चार महीनों के भीतर,कई लोग बचाये गये कि 16 नयी कलीसियायें रोपित की गई थी।

'' कुछ अन्य'' कार्य से ओबीएस प्रतिदिन कार्य पश्चात् मिलता है। ये दोनों शाला नमूनें में 210 कथाओं हैं'' उनके लक्ष्य के रूप में।

भारत में,कुछ ओबीएस घरों में प्रत्येक संध्याकिए आतें है।तीन या चार परिवार एक शाला बनते हैं।फिलीपीन्स में एक नवीन प्रर्वतनकारी अगुवा एक साप्ताहिक रेडियों कार्यक्रम करतें ळें वह स्टूडियो में एक छोटी जीवंत दर्शक समूह को एसटीएस शैली में एक बाइबल कथा सुनाते हैं। लोग फोन करते हैं या लिखित उत्तरों को उसके प्रश्नों के लिए भेजते हैं। संदेशो में से कुछ उन क्षेत्रों सेक भी आये थे जो आंतकवादियों द्वारा कब्जाा किए गये थे।

उसने तब निर्णय किया कि एक कार्यशाला की अगुवाई रेडियों पर करे। रेडियों कार्यशाला की सफलता तब प्रमाणित हुई जब इस अगुवे–कथावाचक ने ओबीएस के बारे में बात करनी प्रारंभ की । बुलानेवालों ने जो रेडियों कार्यशाला को पूर्ण किए थे ने फोन किया और पूछा ''हम क्यों नही एक शाला को हमारे द्वीप में कर सकते है?

उसने निवेदन से ''चलित'' ओबीएस प्रारंभ हुए । तीन स्थानों पर,7,13 और 17 के समूह उनके अपने स्थानों पर इकट्ठे हुए और कथाओं को खीखा । शाला विद्यार्थीगणसप्ताह में तीन बार एसटीएस प्रशिक्षकों को फोन करते है कि उनकी कथा सुनायें और कथाओं में उनकी खोजों के बारे में बातचीत करें।

इन विभिन्न स्वरूपों की स्थापना के पहले दो वर्षो के भीतर,संस्था जो एसटीएस मौखिक बाइबल शालाओं सत्र में है–कुल नौ देशों में एक से साइ हो गयी।

ओबीएस के लगभग 40 प्रतिशल विद्यार्थी शिक्षित है और उनके पास बाइबल शालाओं से डिप्लोमा है। उनमें से अधिकांश से अधिकांश पासबान या सुसमाचारक के रूप में सेवा करते है।
ओबीएस में विद्यार्थियों के लिए पूर्णता दर है–95प्रतिशत

एक मौखिक बाइबल शाला का प्रभाव–झटका,आश्चर्य तब श्रद्धायुक्त भय

उस झटके की कल्पना करें जब हमारे अफ्रीका दिर्नेशक ने इस आश्वयक प्रश्न के साथ फोन किया।''स्टॉफ जिसने ले विक्टोरिया पर कार्यशाला को आंरभ किया था उसने एक नई समस्या का सामना अभी किया है। इस क्षेत्र के लोग बहुपत्नीवान हैं। पंरतु केवल वही नही आयोजक और कार्यशाला में पासबानों और अगुवो मे से अधिकांश भी बहुपत्नीवान है । हमें क्या करना चाहिए?क्या हमें कुछ विशेष कथाओं को चुनना चाहिए कि इस समस्या को मार्ग दिखलाये?

इस प्रारंभिक झटके के पश्चात मैंने परमेश्वरा की ओर देखा कि कौन सी कथायें उपयोग करें । बहुत शीघ्र उसने मुझे उसका स्मरण कराया जो हम हमेशा कहते हैं ''तुम्हें आवश्यकता नही है विशेष कथाओं को चुनें कि लोगो को पाठ सिखाये जिन्हे आप चाहते हैं कि वे सीखे । पवित्र आत्मा नियमित कार्यशाला कथाओं का उपयोग करेगा कि संदेशो को दे जो उसके पास प्रत्येक के लिए है,जो कथा सुन रहे हैं।

''क्या आप निश्चित हैं?'' हमोर निर्देशक ने पूछा''। स्मरण हो यह स्थान कितना दूर है? प्रशिक्षक जिसने मुझे फोन किया वह एक पेड़ की शाखा पर प्रतीक्षा कर रहा है। वहॉ केवल एक स्थान है उस द्वीप के अंत पर जहॉ वे मोबाइल का सिगनल प्राप्त कर सकते हैं– कया यह आपका अंतिम उत्तर है''?

मैंने उसे निश्चय दिलाया कि यह वह उत्तर था जिसे मैंन सोचा कि परमेश्वर चाहेगा । यद्यपि यह हमोर लिए स्पष्ट था कि कि बहुपत्नी विवाह प्रथा इन लोगों के मसीही जीवनों का हिस्सा नहीं होना चाहिए,मैं चाहता था कि प्रभु इसक मार्ग दिखलाये अपने समय में । अतः प्रशिक्षक पेड़ से उतर गया, और हम सभी ने प्रार्थना की ।

कार्यशाला के पश्चात् दल घर वापस गया और हमें यह वर्णित लेख भेजा।

''प्रशिक्षण के तीसरे दिन,समूहों में से एक,एक कथा को तैयार कर रहा था एक मजबूत चर्चा में आ गया, वह इस बारे में था– आपने सही अनुमान लगाया –बहुपत्नी विवाह प्रथा। अद्भूत रीति से किसी भी प्रशिक्षक ने उस विषय को आगे नहीं लाया था कुछ भी हल नही निकाला गया परंतु पवित्र आत्मा ने उनके हृदयों में एक बीज बोया।

''ये विश्वासी और इनके पासबानों ने हमे घेरा और कहा किसी मसीही शिक्षकों द्वारा हमारे द्वीप में पहला भ्रमण/ आगमान है और आपने हमारे लिए बाइबल लाये और इसे इस रूप में लाये कि हम इसे समझ सकें उन्होंने हमसे याचना की कि उनके द्वीप पर एक मौखिक बाइबल शाला का स्थापन करें । हमने कहा ''हॉ''।

दो सप्ताह बाद शाला प्रारंभ हुई

तीन महीने के शाला में,हमने हमारे निर्देशक से एक आश्चर्य करने वाले वर्णित लेख को पया । (तब तक,बारह विद्यार्थीयो ने 60 कथाओं को सीख व चर्चा कर लिया होगा) हमारे निर्देशक ने

सूचना दी ''यद्यपि हम नही जानते कौन सी कथाओं का परमेश्वर ने अपयोग किया कि एक परिवर्तन करे, इस क्षेत्र के पासबानों निर्णय किया कि उनके पत्नि प्रथा गलत है। उन्होंने प्रतिज्ञाकी कि बई पत्नीयों को लेने को रोकेंगे। साथ ही वे सहमत हुए कि पवित्रशास्त्र के आदर में पासबान जिनके एक से अधिक पत्नियॉ है को अवश्य पद छोड़ना है''

तब से ,ये मूल्यवान विश्वासी उनके संकल्प में सत्यता से स्थिर है''।

उनके एक–वर्षीय शाला की समाप्ति पश्चात! और बारह विद्यार्थी जब स्नातक हुए,वे एक और ओबीएस की स्थापना करने गये।

साथ ही, व्यक्ति जिसने मूलरूप से प्रशिक्षकों को उस पहली कार्यशाला की अगुवाई करने को नियंत्रित किया था एक ओबीएस स्नातक अपाधि वितरक समारोह पर उसने यह विलक्षण गवाही दीः

मैने तीन वर्षो प्रयास किया अफ्रीका एसटीएस निर्देशक को प्रभावित करूं हमें हमारे अनाथालय के लिए धन की आवश्यकता थी और मैं सोच रहा था कि उनके पश्चिमी संपर्को से व निश्चित मेरी सहायता करेंगे।

हम गत वर्ष मिले,परंतु उन्होनें कई धन नी दिया इसके बजाय उनके दल ने मुझे और मेरे साथी विश्वासियों को लोक विक्टोरिया द्वीप पर पढ़ाया कि कैसे परमेश्वर के वचनों से सीखें।

अब मैं सूचना देते प्रसन्न हूॅ कि जैसा पिछले सप्ताह में सभी 70 अनाथों को सहायता है । और यह हमारा रूपांतरित समुदाय है जो हमारे निज अनाथों को सहायता करता हैं।

हमने संपूर्ण समुदाय में स्वाभिवक सुधार को श्रद्धायुक्त भय के साथ देखा। जैसा लोगों ने परमेश्वर के वचन को समझने के साथ ध्यानपूर्वक सुना उन्होने पश्चाताप के साथ और गहरी पैठी परंपरा को बदल कर उत्तर दिया। उन्होंने असहायों के लिए प्रेंम को प्रदर्शित किया और यहॉ तक कि उनके स्वयं के धन का उपयोग प्रेमपूर्ण था। एक सच्चा ''वचन पर कार्य करने वाला'' वर्णित यिा गया है याकूल 1:27 में,''हमारे परमेश्वर ओर पिता के निकट शुद्ध ओर निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों ओर विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें । ''यह पद इन दीप वासियों के नैतिक परिवर्तन और उनके अनाथों के प्रति कार्य को सिद्धता से वर्णित करती हे।

स्नातक प्रबंधित करते हैं

जैसा धन अनुमति देता है,प्रत्येक ओबीएस स्नातक एक सौर यंत्र के उपहार को प्राप्त करता है। स्नातक होने के पश्चात् अधिकांश पासबानों ,शिक्षकों और सुसमाचार प्रचारकों के रूप में कार्य जारही रखते है। सेवकाई के इन क्षेत्रों के साथ,उनमें से लगभग 25 प्रतिशत चुनते है कि नये मोखिक बाइबल शालाओं में निरीक्षकों के रूप में सेवा करें और एसटीएस प्रशिक्षकों के रूप में सेवा करें। प्रशिक्षक अवैतनिक स्वयंसेवक के रूप मे सेवा करते है। जब बुलाये जाते हैं या आवश्यकता होती,टीजीएसपी प्रशिक्षकों और निरीक्षकों के लिए भोजन एवं यात्रा हेतु सस्ता यात्रा भत्ता देती हे। कई समयों पर एक छोटा मानदेय भी उन्हें दिया जाता है जो आवश्यकतामंद हैं।

क्षेत्रीय युक्तिकरण

एक राष्ट्रीय निर्देशक ने एक निमंत्रण प्राप्त किया कि उसके पूरे देश में शालाओं में सेवकाई करे। शाला सेवकाई में पहले से ही सम्मिलित होने के साथ–साथ,इस देश में ओबीएस का निरीक्षण कर रहा था। उस निमंत्रण ने हमें आगे किया कि क्षेत्रीय अधिकार युक्तिकरण को विकसित करें,जो एक योजना है कि सिद्धिपूर्वक और प्रभावपूर्वक धन समय व स्टॉफ का अपयोग किया जाये।

प्रत्येक क्षेत्र के लिए यह रणनीति,सेवकाई, कार्यशलाओं और एक ओबीएस को जोड़ना है। एक क्षेत्र औसतन 25 विभिन्न गॉवों को सम्मिलित करता है। इसे पूरा करने के लिए तीन प्रशिक्का नौ महीने के सत्र में तीन विभिन्न समयों पर एक क्षेत्र में जाते है। इन तीन प्रश्क्षिणों पश्चात् एक प्रश्क्षिक निरंतरता से क्षेत्र के नये स्थापित ओबीएस को जाता रहता है। प्रशिक्षण ओबीएस को उत्साहित और निरीक्षण करने के लिए अगले ग्यारह महीने तक माह में एक बार जाता हैं।

अधिकायुक्तिकरण सम्मिलित करता है '' परमेश्वर की कथा'' की उपहार प्रतियॉ,बाइबल विषय व प्रशिक्षण वाले सौर यंत्र, और अन्य संसाधन। क्योकि प्रत्येक यात्रा कई उद्देश्यों को सेवा करती है,प्रशिक्षक के यात्रा और भोजन का मूल्य बहुत कम है। एक क्षेत्र में प्रभावित लोगों की संख्या अक्सर 2,500 के ऊपर है। जब प्रभावित लोंगों की संख्या अक्सर 2,500के ऊपर है। जब भ्रमण पूर्ण हो जाते है तत्पश्चात् स्थानीय अगुवे प्रशिक्षित और सुसज्जित होंगे–अधिकारयुक्त हो तब प्रारंभ करेंगे कि बाइबल को एक समझे जाने और प्रयुक्ति योग्य तरीके से उपयोग करते हुए अगुवाई ओर सेवकाई करें।

अध्याय 9 : साही के कॉटों को निकालना : प्रतिमान सोच में बदलाव

साही के कॉटों को निकालना : मौखिक रणनीतियों को अपनाने का संघर्ष

साही स्वयं की रक्षा इसकी पीठ की रीढ़ या ''काँटों'' को उन जानवरों में गड़ाने के द्वारा करती है जो इसे डराते हैं । इसके नुकीले काँटें सरलता से अंदर चले जाते हैं परंतु काँटे पर एक छोटा घुमाव होने के कारण, उन्हें बाहर निकालना पीड़ादायी है ।

''काँटों को बाहर निकालना'' हम आरोपण करते हैं इस अध्याय के शीर्षक में वह प्रचार और शिक्षा के समय से जाँचे गये तरीकों का दूर करना नहीं है । काँटें हैं विश्वास किः

1. कोई बिना नोट्स के प्रभावीरूप से पढ़ा नहीं सकता ।
2. अवश्य एक पाठ के बाहर की जानकारी का उपयोग करना है ।
3. परंपरागत तकनीकों में से कुछ के उपयोग के बिना प्रचार नहीं कर सकता ।
4. अशिक्षित अनुमानकारी बाइबल अध्ययन नहीं कर सकते ।

यह हमारे अनुभव को निरंतर करता है कि अधिकांश लोग, मौखिक सीखनेवालों से हटकर ''केवल कथा'' के सभी किरायेदारों से कुछ समय के लिए संघर्ष करते हैं ।

उनके लिए जो गंभीरता ''केवल कथा'' को सीखने का प्रयास कर रहे हैं, यह विचार कि किसी को अवश्य प्रत्येक अवधारणा का 100 प्रतिशत गले लगाना है, जैसे नोट्स नहीं लेना, उतना ही कठिन है जैसा कि साही के एक गड़े हुए काँटे को निकालना ! हम निकालते हैं । सीखने वाले चिल्लाते हैं, ''आउच''। तब काँटा निकल जाता है ।

काँटा निकल जाने के पश्चात्, सीखने वाले आश्चर्य और आनंद दर्शाते हैं जैसा कि वे देखते हैं कि उन्होंने एक नये कौशल को प्राप्त किया है जो कार्य करता है ।

परंपरागत प्रस्तुतीकरण की तुलना एस टी एस शैली से

कथा से शिक्षण के प्रचलित तरीके । जब प्रचार और शिक्षा के प्रचलित तरीकों का उपयोग किया जाता है, सामान्यतः एक पाठ या कथा पढ़ी जाती है, और तब आयत–दर–आयत व्याख्या की जाती है। कई समयों पर पाठो को पजढ़ा भी नहीं जाता है : वक्ता सीधे आयत–दर–आयत शिक्षण पर जाता है। तब पढ़ी गई आयतों को एक मंच के रूप में संदर्भित किया जाता है। जिस पर शिक्षा दी जायेगी । जोड़े गये वचनों को भी कुछ सत्यों पर विशेष बल देने के लिए लाया जाता है।

कई बार बाइबल से बाहर की जानकारी भी प्रस्तुत की जाती है, और तब संभवतः यूनानी या इब्रानी शब्दों के अर्थो को वक्ता के बिंदुओं की सहायता करने का जिक्र किया जाता है। कभी–कभार थेड़ी हॅसी या एक कहानी को संभवतः संदेश में लाया जाता है कि लोगों को बॉधे/व्यस्त रखा जा सके ।

यदि श्रोताओं के लिए प्रयुक्तियॉ की गई हैं, ये प्रयुक्तियॉ सामान्यतः संदेश में बुनी हुई होती हैं जैसा यह दिया जाता है या उन्हें अंत में जोड़ा जाता है। ध्यान करें कि प्रयुक्तियॉ शिक्षक द्वारा बनाई गई होती है। प्रयुक्तियों को श्रोताओं को इस रूप में बताकर दिया जाता है कि उन्हें क्या करना या नहीं करना चाहिए । यह प्रस्तुतीकरण की परंपरागत शैली निश्चित गलत नहीं है। यद्यपि, प्रस्तुतीकरण के ये तरीके पाठ का पढ़ाने के अकेले तरीके नहीं हैं ।

एस टी एस शैली इसके विपरीत जब एक व्यक्ति एस टी एस का उपयोग करते हुए पढ़ाता है, श्रोतागण बाइबल से आत्मिक जानकारी को खोजने में सहायता प्राप्त करते है। पासबान, जिनके हृद्रय देखने को प्रतीक्षित हैं कि उनकी मंडलियॉ बाइबल अध्ययन में क्रियाशील भाग लें, यह देखने को प्रेम करेंगे कि लोगों के चेहरों पर आनंद है जब वे परमेश्वर के वचन में कुछ नये को स्वयं के लिए खोज कर लेते है !

एक उच्च शिक्षित पासबान, और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों तक पहुँचने वाले संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अगुवे, ने एक ''केवल कथा'' कार्यशाला को किया । यह सिद्ध लेखक, अब ''केवल कथा'' को उनकी सेवकाई में बुनते हैं । उसने लिखा,

''इस (केवल कथा) के तरीके व एक अधिक शिक्षित तरीके के मध्य जो फर्क है वह यह है कि पहले वाले में, हम बाईबिल को एक पुस्तक के समान कम ही व्यवहार करते हैं कि छिपे हुए को खोले और सूक्ष्म परीक्षा करें, और ऐतिहासिक यथार्थता के ढ़ाँचें में जी गयी घटनाओं के एक लेखबद्ध के रूप में अधिक करते हैं । इस ढ़ाँचें में, हम घटनाओं को प्रत्यक्ष देखना प्रारंभ करते हैं, समानांतर यथार्थों के गुप्त प्रभावों के साथ (जैसा कि सम्मिलित लोगों के भाव, आत्मिक संपर्क, इत्यादि।) कि रास्ते के साथ खोजे जायें ।''

जैसा हम सारे संसार में ''केवल कथा'' को परिचित कराते हैं, हम इस बारंबार प्रतिउत्तर को ध्यान देते हैं : अधिकांश भागों के लिए, कम शिक्षित लोग ''केवल कथा'' कौशलों को उच्च शिक्षितों से अधिक शीघ्रता से प्राप्त करते हैं ।

जब लोगों ने एक निश्चित पद्धति से अध्ययन किया, और इसका उपयोग सफलता के कुछ अंश के साथ किया हो, एक नयी पद्धति को सीखना जो विरोध में दिखती है एक बड़ी चुनौती है।

महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, बाईबल पाठशाला और सेमीनरी के स्नातक अधिकाँशतः ''केवल कथा'' के सभी भागों को ग्रहण करने में संघर्ष करते हैं । यद्यपि उच्च शिक्षा प्राप्त मसीहियों में से अधिकांश जो ''केवल कथा'' कार्यशालाओं में उपस्थित होते हैं, केवल कथा को हृदय से मानसिक स्वीकृति देते हैं, जब वे वचनों को सीखने का प्रयास करते हैं और केवल कथा शैली प्रस्तुत करते हैं, वे सामान्यतः इसकी प्रक्रिया के केवल एक भाग का उपयोग करते हैं ।

वे जो उच्च शिक्षा और सफलतापूर्वक पढ़ाने की एक वसीयत के साथ हैं सरलता से केवल कथा को उनके तैयारी व प्रस्तुतीकरण में नहीं मिलाते है ।

कठिनाईयों के क्षेत्रों में सम्मिलित है :

1. समानांतर पाठों का विस्तार पूर्वक तुलना करना को छोड़ना,
2. बिना नोट्स/संक्षिप्त लेखों के सीखना,
3. बिना नोट्स/संक्षिप्त लेखों के पढ़ाना,
4. एक प्रस्तुति को केवल एक पाठ में सीमित करना,
5. किसी बाहर की जानकारी को अंदर न लाना,
6. चर्चा के द्वारा सत्यों तक पहुँचना जैसा भाषण/उपदेश के विरूद्ध है,
7. एक कथा को बिना पढ़े (या कम पढ़ने के साथ) प्रस्तुत करना और
8. कथा पर भरोसा करना कि अकेले खड़े हो ।

ध्यान के लिए महत्वपूर्ण : हम स्पष्ट रूप से उन परिचित तकनीकों से किसी के गलत होने का विचार नहीं करते या छोड़ने की आवश्यकता है । परंतु, वहाँ संसार में लोगों के उच्च प्रतिशत में एक उठती हुई जागरूकता है जिन्हें आवश्यकता है कि वे मौखिक रणनीतियों द्वारा पहुँचे जाये। अतः, हम मसीही पासबानों एवं शिक्षाविदों की रुचि की प्रशंसा करते हैं जो वे उनके वचन प्रस्तुति के भंडार को बढ़ाने में दर्शा रहे हैं कि ''केवल कथा'' की मौखिक रणनीति को सम्मिलित कर रहे हैं ।

आगे की दोनों (एक थाईलैंड और एक नाईजीरिया से) विवरण ऊपर की सूची के कठिनाईयों के क्षेत्रों में से कई उत्तरों को प्रदर्शित करते हैं, साधारण में, वे मौखिक रणनीतियों को सम्मिलित करने के महत्व को दिखाते हैं ।

थाईलैंड में एक युवा कार्यकर्ता ने अवलोकित किया :

मैं इसका अभ्यस्त हूँ पाठ के उददेश्यों को तैयार करने में और मेरे पाठों को एक स्पष्ट उददेश्य से प्रारंभ करने में । और मैं हमेशा निश्चित करता हूँ कि उस उददेश्य/प्रयोजन को

संपूर्ण पाठ में दृढ़ीकृत करूँ और यहॉ तक कि इसे निष्कर्ष पर भी जोड़ता हूँ यह निश्चित करने को कि मेरे श्रोता इसे न भूलें । फिर भी, एक पाठ का पढ़ाने के शीघ्र पश्चात्, मेरे श्रोता इसे याद रखते दिखाई नहीं देते ।

एस टी एस के साथ वहॉ हमेशा एक स्पष्ट प्रयोजन है जो मेरे आदर्श प्रयोजनों के समान्तर दौड़ता हैं, परंतु जो बड़ी भिन्नता है वह यह है कि मैं मेरे श्रोताओं को पाता हूँ कि वे सक्षम है कि मेरे प्रयोजन को स्वयं के लिए खोजना इसे उनके हृद्रयों और मनों पर छाप देता है और परिणामस्वरूप उनके पास उसकी लंबी स्मृति है जिसे मैं पढ़ाना चाहता था ।

कुछ बहुत अंतरात्मा की आवाज को मानने वाले मसीही अगुवों ने केवल एक समय में पढ़ाने की सीमा के बारे में विचार प्रकट किए । वे विशेष रूपज से सावधान है एक कथा पाठ का उपयोग दूसरे वचनों से अलग उपयोग करने के बारे में । उदाहरण हेतु, हमने एक बार पूछा, '' क्या श्रोताओं को दिखाया जायेगा कैसे प्रत्येक बाइबल कथायें परमेश्वर के छुटकारे की महान योजना का एक भाग हैं औश्र यीशु के क्रूस पर किये कार्य की ओर इंगित करती हैं ? (देखें लूका 24:27 और प्रेरितों के काम 8 :35) जब (सुसमाचार) वचन की कथा के बड़े चित्र से अलग किये जाते, बाइबल कथायेंब स ऐसे पाठ रह जाते हैं जो नैतिक व्यवहार की शिक्षा देती हैं ।

हम इस विचारपूर्ण चिंता का प्रतिउत्तर बहुत से तरीकों से देंगे । क्रूस के शत्रु हमेशा यीशु को छोटा करने का प्रयास, मनुष्य मात्र की अति असहाय स्थिति और परमेश्वर के छुटकारे की योजना का तिरस्कार करेंगे । उन धोखों से हम तीव्रता से सचेत है ।

हम इस एक–कथा–में–रहने के प्रश्न का उत्तर पवित्रात्मा के कार्य और क्षमता में पाते हैं ! वह अपने संदेश को एक कथा से कहेगा बिना कथावाचक–शिक्षक द्वारा विषय के या लोगों को एक बिंदु के प्रचार करने के पहले चुने जाने के । यह बार–बार घटित होता है जैसा हम चर्चा का उपयोग करते हैं कि एक कथा के सभी कुछ को गहराई और गंभीरता से खोलते हैं ।

जब वचन को देने भाषण–शैली का उपयोग किया जाता है, यह स्वरूप शिक्षक को अनुमति नहीं देता कि जॉचे कौन तैयार है सुनने को कि कैसे उद्धार पाये, अतः आवश्यकता से, निमंत्रण प्रत्येक को जाता है । परंतु एस टी एस चर्चा शैली शिक्षण कथावाचक को सक्षम करता है कि लोागें से बात करे । एक समूह ''वार्तालाप'' जो आत्मिक वस्तुओं के बारे में है स्थान लेता है।

वार्तालाप के दौरान, जब कभी वहॉ ईश्वर के बारे में जानने में रूचि है, या कैसे यीशु को जाने में, कथावाचक विशेष आवश्यकता पर प्रतिउत्तर दे सकते हैं । कथावाचक एक प्रत्यक्ष सुसमाचार प्रस्तुति दे सकता है और उन वचनों को भी जो परमेश्वर के उद्धार की योजना को प्रकट करेंगे जब अगुवाई हो ऐसा करने की तब । कैसे पवित्र आत्मा वचन के द्वारा लोगों से बोलता है और लोगों को उद्धार की ओर लाता है इस अगले वर्णन में प्रदर्शित है।

कोई नहीं पर परमेश्वर उस कथा को चुनेगा

पूर्वी और उत्तरी नाईजीरिया में पाँच ''केवल कथा'' कार्यशालायें की गई थी । तीन महीने बाद, शिक्षक नाईजीरिया वापस आये कि देखें, यदि उन्होंने इसे प्राप्त किया है। चूंकि प्रशिक्षण के दौरान जितना भी पढ़ाया गया था वह चार भाषाओं में अनुवादित किया गया था, इसलिए वह निश्चित नहीं थे ।

''न केवल उन्होंने इसे प्राप्त किया,'' उन्होंने सूचित किया, ''उन्होंने इसको अभ्यास किया और उन्होंने इसका उपयोग किया ।''

एक सुसमाचार प्रचारक ने केवल कथा निर्देशक को बताया कि उसने नौ मुस्लिम पुरुषों को प्रभु तक पहुँचाया । सुसमाचार प्रचारक ने बाँटा कि वह क्या था कि ये पुरूष प्रभु में आये । उसने सूचित किया कि नये विश्वासियों ने कहा था, ''हम कथाओं में के लोगों को जानते हैं परंतु कुरान हमें पूर्ण कथा को नहीं बताती और.....कोई भी हमारे साथ कभी इसे चर्चा नहीं करता ।''

जब पूछा गया कि कौन सी कथा सुनाई गई जिसने उसे छू लिया, सुसमाचार प्रचारक ने कहा, ''यह मूसा तथा चट्टान की थी । आप जानते हैं, निर्गमन 17 में।''

''केवल कथा'' का एक वरिष्ठ शिक्षक होने के नाते, वृतान्त ने मुझे अचंभित किया । मैंने पूछा, ''परंतु उस कथा में क्या था कि वे प्रभु में आ गये ?''

''केवल कथा'' शिक्षक ने संबंधित किया, ''सुसमाचार प्रचारक ने मुझे बताया जो नये विश्वासियों ने कहा था, ''जब हमने कथा को सुना और इसके बारे में बात की, हमने देखा कि मूसा एक विश्वासयोग अगुवा था, परंतु लोग मूसा के प्रति अनादरपूर्ण थे । हम आश्चर्यचकित थे कि मूसा परमेश्वर के पास गया और पूछा कि लोगों के साथ क्या करें। मूसा ने लोगों को चिंता की ! हमारे अगुवे हमारी चिंता नहीं करते । और तब परमेश्वर ने लोगों को दण्ड नहीं दिया । उसने उन्हें जल दिया । उसने दया दिखाई । हम उस ईश्वर को जानना चाहते हैं ।''

मैंने मन में सोचा । क्या मैंने सुसमाचार प्रचार के लिये मूसा की उस कथा को चुना है ? क्या वह कथा मेरी सूची में मुस्लिमों के लिए एक अच्छी कथा के रूप में रही है ?

न ध्यान देते हुए, कि वह कथा मेरी सूची में रही या न रही, यह पवित्र आत्मा की सूची में थी ! हम ''केवल कथा'' के उपयोग में इसे बार–बार देखते हैं। जब परमेश्वर का वचन पूर्णता से दिया जाता है, जैसा उसने इसे लिखा है, और जब इसके खजाने श्रोताओं द्वारा प्राप्त किये जाते हैं, अलौकिक शक्ति स्वतंत्र होती है! यही ''केवल कथा'' है ।

हम उन्हें उत्साहित करते हैं जो निर्गमन 17 की उस कथा का उपयोग करते हैं कि समझी जाये जबकि इसके ठीक पश्चात अन्य कथा कही जाये । श्रोतागणों ने चर्चा कर ली होगी उस तरीके पर जिससे परमेश्वर ने जीवनदायी जल को एक चट्टान से दिया । अतः उनकी ऑखे परमेश्वर के भय में चौड़ी हो जाती हैं जब वे अगली कथा को जिसे 1 कुरंथियों 10 : 1–6 में पाया जाता है। वे उस भाग के महत्व को ग्रहण करते है जो चट्टान और जल की पूर्व घटना का वर्णन करता है । '' और सबने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ साथ चलती थी,ओर वह चट्टान मसी था। लोग उस नयी कथा में प्रतीकात्मकता को पहचान लेते है वे याशु के चित्र को देखते है ।

उद्धार के विषय पर बात करे। तो दो कथायें एक के बाद डूसरी रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट रूप से परमेश्वर की योजना को दर्शती है। परंतु वह द्वितीय कथा थी उस प्रतीकात्मकता के साथ जिसने उन मुस्लिम पुरूषों से बात की?नही ऐसा नहीं था। क्या आपने ध्यान दिया नाईजीरिया से वर्णन में मूसा की कथा में क्या था जिसने उन नौ लोगो को खीचा कि पूछे कैसे वे परमेश्वर को जान सकते है?हॉ,यह परमेश्वर की दया का स्पष्ट प्रमाण है और वे पुरूष उस दया के परमेंश्वर को जानना चाहते थे अतः यद्यपि,प्रचारक जिसने अभी मूसा की कथा बताई थी,प्रसन्नता से उन व्यक्तियों को विश्वास का मार्ग वर्णन किया उसने उन्हें बताया कैसे वे परमेश्वर को उसके पुत्र यीशु ख्रीस्त द्वारा । जान सकते है।

पत्रीयों के बारे में क्या होगा ?

कई जो परमेश्वर के पूरे वचन को प्रेम करते हैं, और जो जानते है कि परमेश्वर की पूरी सभा प्रासंगिक है यह प्रश्न करते हैं : ''पत्रीयों के बारे में क्या होगा ?'' हम उनके प्रतिउत्तरों को पेश करते हैं ।

एक यह है कि लंबे समय से बाईबल की कथाओं को चीर–फाड़, अलग अलग और उपयोग किया गया एक कूदने के तख्तों की तरह कि विषय आधारित उपदेशों को समझाये । दुःखद रूप से ये कथायें, बाईबल का 75 प्रतिशत, को अखंड रूप से सुने जाने की आवश्यकता है, जैसा वे लिखी गई हैं । कथाओं को उनकी पूर्णता में उपयोग करने द्वारा, बाईबल का वह 75 प्रतिशत संसार के उन 80 प्रतिशत के लिए खुल जाता है जो नहीं कर सकते या वचन देने के अधिक सामान्य रूप से उपयोग किए जाने वाली शैलियों के द्वारा सीखना पसंद नहीं करते हैं । उपयोग के प्रथम वर्ष में, वे मौखिक सीखने वाले जो 40 देशों में ''केवल कथा'' से परिचित कराये गये इसका आनंद कर रहे हैं कि अंततः वे बाईबल को समझने में सक्षम हो गये हैं ।

हम उत्साहित हैं कि मसीही शिक्षक पासबान ओर मिश्नरीस बाइबल संगत और शक्तिशाली तरीके कि पढ़ाया ओर प्रचार किया जाये को खेजबीन कर रहे है। एस टी एस का प्रभावीपन सिद्धांतो से आगे जाता है वे जो साहसिक कार्य करते हैं और कथाओ को उनकी संपूर्णता में प्रस्तूत करने को प्रयास करते हैं और उन्हें गहराई में चर्चा करते हैं, इस मौखिक अनुमानकारी तरीके में, प्रमाणित किये जाने योग्य,सकारात्मक परिणामों को देख रहे हैं।

बाइबल कथाओं के शिक्षण की ''केवल कथा'' शैली के ह्दय से प्रतिउत्तर प्रमाणित हुए उन कई स्थानें में जब इसका उपयोग इसके प्रथम पॉच वर्षे में हुआ। संपूर्ण विश्व में जाने केपश्चात् 90 देशों में इसका उपयोग किया जा रहा है या इसे परिचित किया गया है।

ये नये नियुक्त मौखिक सीखने वाले, जिनमें से कई अशिक्षित हैं, दूसरों के साथ कथाओं को उत्तेजना से बाँटने के द्वारा उनके ज्ञान का प्रदर्शन कर रहे हैं । जारी रहने वाला उपयोग और आत्मिक फलों की संपत्ति एक गवाही है । परमेश्वर के वचन सामर्थ के प्रति जब इसे इसके मूल ''पार्सल'' में बाँधा जाता है, जो कथा है ।

परंतु फिर भी..... पत्रीयों के बारे में क्या होगा ?

एसटीएस के आधारभूत सिद्धॉत बाइबल के किसी भी भाग पर लागू प्रयुक्त किए जा सकते है।

हम पढ़ाते हैं कि पत्रीयों में से कुछ भागों को, ''केवल कथा'' प्रारुप में प्रस्तुत किया जा सकता है । कार्यशालाओं में हम अक्सर पत्रीयों या भजन संहिता से एक कथा को प्रस्तुति एवं प्रदर्शन हेतु सम्मिलित करते हैं । बाईबल के ये भाग विषय में एक कथा से कम उपलब्ध हैं, परंतु हम दिखाते हैं कि पत्रीयों, कविताओं और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में के कई भाग स्वयं में एक कथा हैं, और जैसे वे हैं वैसे ही ''केवल कथा'' के उपयोग से प्रस्तुत किए जा सकते है ।

यदि आप भजन संहिता 1 के पॉच आयतों के अध्याय से परिचित हैं,अपनी ऑखों को बंद करें और बुद्धिमान सलाकहकार के प्रश्नों का अपयोग करें कि देखें भजन संहिता 1 में दो प्रकार के पुरूष क्या कर रहें है। उनके चुनावों केा वे क्या चुनाव कर सकते ओर उनके चुनावों को वे क्या चुनाव कर सकते ओर उनके चुनावों के परिणामों और प्रभावों को ध्यानपूर्वक देखें । ध्यान दें कैसे परमेश्वर उनके जीवनों में परस्पर काग्र कर रहा है और आप परमेश्वर के चरित्र के बारे में क्या देखते हैं।

पुनः अपनी ऑखों को एक ओर परिचित भाग को समझने के लिए बंद करें। अपने मन में भजन सहिता 23 की भेड़ वाचक के मधुर और व्यक्तिगत तरीके को देखे जिसमें वह अपने चरवाहे का वर्णन कर रहा है। (आप उससे अधिक सुन सकते हैं जितना हमने पहल रमेश ओर भजनसंहिता 23 की कथा में बताया था।) उस कथा को ध्यानपूर्वक ठीक से सुने । संपूर्ण कथा को जब आप देख लें उसके बाद केवल तभी वापस जायें और जो आपने कथा में अवलोकित किया उससे प्रयक्ति प्रश्नों को पूछें । हमारे ऊपर भेड़ लोगो के रूप में आज क्या लागू हो सकता है और चरवाहे, यीशू के ऊपर क्या लागू हो सकता है? यशायह 1:10–20 रोगियों 1:14–25 ओर याकूब 1:22–27 में कथा पंक्ति को देखने का प्रयास करें । स्वीकीरोक्तिपूर्ण थे भाग एक मानक कथा को स्मरण करने से अधिक चुनौतीपूर्ण है,जिसमे संवादहैं और लोग जीवन के एक कालखंड का अनुभव कर रहे है। धीमे जाये ध्यान दें चरित्र क्या कह रहे हैं और कर रहें हैं। और प्रभाव वहॉ है?

स्पष्टतः से इन भागों में,परमेश्वर अपने चरित्र को विभिन्न रूपों / तरीकों से प्रकट करता है। एसटीएस सिद्धॉतों का उपयोग करें। आत्मिक अवलोकनों की अपनी खोज को सिर्फ जो कथा में देखा गया हैं तक सीमित करने का प्रयास करें । जब यह पूर्ण हो तत्पश्चात् ''कथा'' के प्रारंभ मे वापस जायें और समझे कैसे ते सभी अवलोकन जो आपने प्राप्त किये हैं हम पर आज प्रयुक्त होते है।

संपूर्ण बाइबल में हम तीन प्रकार के भागों को पाते हैः

- कथा भाग
- अर्धकथा भाग
- कथाहीन भाग

कथा भाग निश्चित ही तीनों प्रकारों में से स्मरण करने में सबसे सरल है।

कथा भागों को मन की ऑखों से देखा जा सकता है। कथायें घटनायें है जिन्होने भौतिक संसार में स्थान लिया । वे पारस्परिक है और चरित्रों कार्यो तथा संवाद रखती हैं। परिणाम के रूप में

कथाओं को चरित्रों के साथि अनुभव किया जा सकता है वे देखी –ओर सुनी – और महसूसकी जा सकती है।

अर्धकथा भाग सीखने मे ंकुछ अधिक चुनोतीपूर्ण हैं। यद्यपि वे एक प्रत्यक्ष काथा से कत हे उनमें भी दृश्य भाग होत है अतः हम जो ''देखते'' है उसे स्मरण रख कते है इसके साथ ही वह जाक हम सुनते है। अर्धकथा भाग पारस्परिकात को कम रखते है और एकालाप /स्वगत भाघण/स्वंय से बात करने या विषय में वर्णनात्मक के समान होते हैं। अधिकतरी भविष्यद्धक्ताओं की पुस्तको के अंतर्गत यह अर्धकथा श्रेणी अनुकूल होती । अर्धकथाओं के उदाहरण होगे भजनसंहिता 1,रोगियों 11 ओर याकूब की पुत्री।

स्मरण करने के लिए सबसे अधिक कठिन भाग कथाहीन भाग है क्योकि वे तीनों में सेसबसे कम दृश्य होते हैं। वे निर्देशात्मक एकालाप की ओर झुके जैसे होते है, अवसर स्वाभाव में विषय संबंधी होते हैं। पत्रियों के कई खण्ड को कथाहीन भाग समझा जा सकता है।

यद्यपि पत्रियॉ समाहित करती हैं,अधिकांश भाग के लिए, कथाहीन भागों को , वे फिर भी एसटीएस तकनीकों के अधिकतर अपयोग से प्रस्तुत व सिखायी जा सकती हैं ठीक रीति से कही गई कथायें श्रोताओं को जकड़ती है ं पत्रियॉ अनुरागी पत्र हैं,जो एक अनुरागी परमेंश्वर की ओर से अनुरागी लोगेां द्वारा लिखी गई। प्रस्तूति के दौरान शिक्षकों को यह अनुराग अवश्य पहचानना है ओर दूसरों के लिए उन शब्दों को उसी अनुराग से पढ़ना या कहना हे।

सेवकाई में, ंसमरण मे कठिन कथाहीन भागों को प्रबंध करने का तरीका है कि उन्हें तक आवज मे पढ़ा जोय ओर तब उन्हें पढ़ाने के लिए एसटीएस सिद्धॉत का उपयोग करें।

संभवतःयह संकट की स्थिति कि कैसे कथाहीन भागों को एक मौखिक तरीके से पढ़ाये को केवल कुछ आयतों को ही एक समय में लेने द्वारा हल किया जा सकता है । केवल कुछ एक ही आयतो को एक समय में पढ़ाना अक्सर मानक वर्णनात्मक प्रचार में किया जाता है। ये कुछ आयतें यदि भावनाओं के साथ कही जाये ओर पश्चात् क्रमानुसार चर्चा की जायें श्रोताओं द्वारा स्मरण की की जा सकती है। चुनोती यह हे कि स्वयं को उन आयतो मे सीमित रखें और, संभवतः बाइबल जानकारी के एक छोटे परिचय में जो उस भाग को संदर्भ में रखेगा।

क्या यह हो सकता है? क्या आपके पास बोलने को इतना पर्याप्त है इस बारे में बिना बाइबल के कई अन्य भागों में जाये बिना(या बाइबल के बाहर के स्त्रोतों के बिना) कि पाठ पर ''पर प्रकाश डाले''?

हॉ यह हो सकता है और हम इसे कार्यशालाओं में प्रदर्शित करते हैं।

एक बहुत छोटे भाग से हम परमेश्वर के वचनों की बहुतायत को प्रदशित करते है। पहल हमि एक छोटा परचिय कहते है कि श्रोताओं को संदर्भ ओर पूर्व बाइबल संगत जानकारी दे जिसकी आवश्यकता कथा को विकसित और चर्चा के लिए है ं हम कहते है ''यीशु अपने अंतिम शब्दों को अपने शिष्यों से यरूशेलेम मे कह रहा था, वह शहर जो प्रारंभिक कलीसिया का मुख्लाय बनेगा ये शिष्य यीशु के साथ तीन वर्षो तक यात्रा कई जगहों पर किए जिसमें यहूदियों का बड़ा हिस्सा ओर पडोसी सामरिया का क्षेत्र भी शामिल ळे जहॉ तिरस्कृत लोग रहते थे।

तब हम अपनी कथा कहते है जो प्रेरितों के काम 1:8 में पाई जाती है। हॉ,हम एक आयत –लंबी कथा को एसटीएस मेंबताते है । इस कारण की कितना वहॉ पाया व चर्चा किया जा सकता है,हम केवल उस आयत का आखरी आधे हिस्से को लेते है यह कथा आसानीसे 30 मिनिटों को भर सकती है।लोग जो वचन में परिचित है ओर वे जो बाइबल के लिए नयें है सभी ह्दयसे चर्चा में भाग लेते है अद्भुत खोजबीन ओर यहॉ तक कि अश्रुपूण्र प्रयुक्तियॉ बनाई जाती हैं। जो ओर अधिक है ,लोग अधिकारपूर्णता ओर भागों की समझ के साथ जाते हैं ताकि वे कर सकें ओर करते है। कथा को दूसरों के साथ बॉटना।

पासबानों ओर मसीही शिक्षकों को अवश्य गंभरता से इस संभावना पर विचार करना चाहिए मसीही जगत में सबसे अधिक सामान्यतः उयोग किये जाने वाली प्रस्तुति की भाषण ओर प्रचार शेली संभवतः बाइबल सत्यों को पहॅूचाने कासबसे प्रभावशाली तरीका नही हो सकता जिन्हें वे चाहते हे कि लोग सीखें ओर उन पर कार्य करें। कम से कम,बाइबल संप्रेषकों को विचार करना चाहिए कि कुछ पारस्परिक,पहुॅचाने के श्रोता–खोज तरीकों को मसीही शिक्षण में सम्मिलित करें।

कुछ जो ''कथा'' को बुद्धिमानीसे उपयोग करते हें वे पत्रियों से भागोंको परिचय करा रहे हैं वे प्रेरितों के काम पुस्तक द्वारा पढ़ा रहे है। ये पसबान और शिक्षक प्रेरितों के काम की कथाओं द्वारा पारस्परिकता से पढ़ा रहें वे पत्रिों को अंदर लाते है जो मिश्नरी यात्राओं को जो प्रेरितों के काम की कथाओं द्वारा पारस्परिकता से पढ़ा रहे हे पत्रियों को अंदर लाते है जो मिश्नरी यात्राओं के जो प्रेरितों के काम में है से जुड़ती हैं। सामान्य सिद्धॉत जो एसटीएस को प्रभावशाली बनाते है, प्रश्नों को पूछना और पारस्परिक चर्चा का उपयोग करना कि आत्मिक अवलोकनों तथा आत्मिक प्रयुक्तियों को खोजें भी ठीक कार्य करती है जब पत्रियों पर लागू किए जाते हैं जैसा वह पढ़ायी जाती हैं।

अक्सर कर,ये उच्य शिक्षित प्रस्तूतकर्ता हे जो पाबानों और शिक्षकों प्रशिक्षित करतें हैं। यदि ये उच्य शिक्षित शिक्षक वचन की मौखिक प्रस्तुति के गतिमानों से परिचित नहीं है वे उन लोगों को कैसे पढ़ायेंगे जो मौखिक रूप से सीखनेवालों और जो पढ़ा नहीं सकते उनकी सेवकाई करना चाहते हैं?क्या न पढ़ने वाले अधिकार रखते हैं कि कथाहीन भागों को समझे ?यदि ऐसा है,क्या वे जो उच्च शिक्षित और वे जो संभवतः उच्च बुद्धिमान है,उनके बुद्धि का उपयोग करेंगे कि पता करें कैसे उन्हें प्रशिक्षित करें जो कम प्रशिक्षित और बुद्धिमान हैं?

दो विचार मन में आते हैः प्रथम , अतिआवश्यक आवश्यकता ओर बाइबल संगत आज्ञा कि ''परमेश्वर का वचन अपने ह्दय में रखे''ओर द्वितीय,स्मरण करना और याद करने पर एक वस्तुनिष्ठ दृष्टि डालना परमेश्वर के अनुग्रह से, कई विश्वासी बाइबल स्मरण कार्यक्रमों में सम्मिलित रहे है। ये कार्यक्रम शब्द –दर शब्द स्मरण आयत के संदर्भ के साथ पर बल देते हैं। हममें से वे जिन्होने कई वचनों को स्मरण किया है विशेष कर युवावस्था में,जब हमारे पास शीघ्र चलने वाले मन थे,उस प्रणाली के लिए हमेश धन्यवादित रहेंगे। हम बहुतायत से लाभांवित है।

परंतु वचन स्मरण करने की चुनौतियॉये है इस प्रकार से कुछ ही लोग आयतों की वास्तविक मात्राको प्राप्त करते हे ओर इन आयतों को लंबे समय तक स्मरण रखने में लगातार अनुशासनकी आवश्यकता चाहिए । यद्यपिआप एक कथा को इसे याद कर के सीख सकते हैं जैसा आपने इस पुस्तिकाकी रूप रेखा को देखा है ओर यदि आप इसे कुछ बार दोहराते /बताते है, आप पायेगे कि आपको इसके पश्चात् पुनरावलोकन की आवश्यकता बहुत रहती है, क्योंकि यह आपके स्वयं के शब्दों में रही है, यह दोहराने को स्ताभाविक व सरल है।

एक 37 घंटो की एसटीएस कार्यशाला मे उपस्थित जन क्रम से कम 21 कथाओं को सुनते और क्रियाशीलता से चर्चा करते हैं । अनेक बार कही गई, यह अचूकता से की जा सकतली है ओर जीवन भर के लिए याद रखी जा सकती है। ये 21 कार्यशाला कथायें 148 आयतों को रखती हैं।

अदभुत 148 आयतों को सीखना ओर रखना किसी एकके ''ह्दय जेब '' में ओर सक्षम होना कि उन्हें ''समय ओर असमय'' बोलना एक व्यक्ति को अधिकांश मसीहियों से उनकी बाइबल बोलना की क्षमता से कही आगे रखता है।

स्मरण व याद करना

विभिन्न भाषाओं में लिखे गये बाईबल के पृष्ठों की तुलना करें । क्या वे समान दिखते हैं ? क्या शब्द कुछ समानता दिखाते हैं ? नहीं । वास्तविकता में, वे संभवतः अलग प्रकार के अक्षरों का उपयोग उनके शब्दों को प्रस्तुत करने में करते हैं । वे संपूर्ण रुप से अलग दिखते हैं, और बोले

गये शब्द पूर्णतः अलग से ध्वनित होते हैं, परंतु क्या उनमें कुछ सामान्य है । प्रत्येक बाईबल के बारे में क्या समान होना चाहिए ? हाँ । आप सही हैं । यह वे सामान्य विचार हैं जो समान हैं, परम शुद्ध शब्द नहीं । संदेश नहीं बदलता, यहाँ तक कि यद्यपि शब्द पूर्णरुप से अलग हों ।

केवल कथा में हम प्रत्येक को चेतावनी देते हैं कि अत्यंत सावधान रहें कि कथा के यथार्थ विषय में लापरवाही से शब्दों, स्वर विभक्ति या क्रियाओं के चुनाव द्वारा न तो कुछ जोड़े, निकाले या अदल–बदल करें । हम लोगों को उत्साहित करते हैं कि बाईबल कथाओं को एक वार्तालाप के रुप में बतायें । परंतु, अत्यंत महत्व इस पर है कि सामान्य विचार या जानकारी को नहीं बदलना है, चाहे वह जानकारी में कितनी ही छोटी या महत्वहीन दिखाई देती हो ।

जैसा बताया गया, हम वचन को संस्कृतियों से ऊपर देखते हैं । ''केवल कथा'' का उपयोग करने वाले कथावाचक पायेंगे कि, व्याख्या के साथ, जैसी आवश्यकता हो, परिचयों में, बाईबल कथाओं को सभी विषयवस्तु सारे संसार में श्रोताओं द्वारा समझी जा सकती है ।

क्या अशिक्षित बाइबल अध्ययन अनुमानजन्यता से कर सकता है?

कई बार लोग ऐसा अनुमानित करते हैं कि वसे जो शिक्षित है आलोचनात्मक करने में भी कुशल हैं। और विपरीत रूप में,अनुमान यह है कि वे जो शिक्षित नही है (या वे जो मौखिक संप्रेषण पृष्ठ भूमि से आते है) नही है ओर कभी भी तर्कपूर्ण या अनुमानकारी विचारक नही हो सकते ।

निश्चित इन पूर्वपक्षों की चर्चा को निरंतर रहने की आवश्यता है। संभवतः आलोचनात्क विचार करने और तर्कसंगत अनुमानकारी और वियोजक विचार शक्ति की परिभाषायें और सीखने में उनके कार्य को आवश्यकता है कि ओर अधिक स्पष्टता से परिभाषित तथा समझा जाये विशेषतः जैसा वे मौखिक सीखने वालों से संबंधित हैं।

एक बाइबलसंगत दृष्टि से क्या हम निष्कर्ष कर सकते है कि आलोचनात्मक विचार करने की क्षमता केवल शिक्षितों को ही दान की गई हे या, यहॉ तक कि अधिक संकीर्ण रूप से केवल उन पर जो शिक्षित है और जिनकी सांस्कृतिक जड़े शिक्षित हैं?

वह निष्कर्ष विश्वसनीयता को खो देता है जब हम विचार करते हैं कि सभी लोग परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गये है (उत्पत्ति 1:26–27) और,जैसा कि, सभी लोग विचार शक्ति और ज्ञान शक्ति संपन्न है और, पतन के पश्चात् नैतिक विचार शक्ति और ज्ञान शक्ति संपन्न है और

पतन के पश्चात् नैतिक विचार शक्ति को भी रखते हे यहॉ तक कि जब वे उस विचार को नकारते है तब भी (रोमियों 1:19–13)

यह रूचिकर है मरकुस 12:24 में ध्यान दें जब उच्य शिक्षित सदूकी यीशू के पास एक प्रश्न लेकर पहुॅचे जो उस फंसाने के लिए रूपित था उसने उन्हें उत्तर दिया एक प्रश्न के साथ ''क्या तुम इस कारण से भूल में नही पड़े हो कि तुम तो पवित्र शास्त्र ही को जानते हो ओर न परमेश्वर की सामर्थ को ।

हम जानते हैं कि धार्मिक सद्की पवित्र शास्त्र के वचनों को ''जानते'' थे अतः यीशू यहॉ सद्कियों को यह कहते दिख रहे हैं कि सद्की वचनों के आत्मिक अर्थ को परखने में समर्थ नही थें। क्योकि ये धार्मिक अगुवों को आत्मिक परख नही थी उन्होंने अति आवश्यक जानकारी को चूक गयें ,अतः उनकी आलोचनात्मक विचार शक्ति और वियोजक कौशल अनके पास सत्य केा पहॅचाने में असफल हूए।

जैसा पहले जिक्र किया गया ,हम पवित्र शास्त्र को संस्कृतियों से ऊपर देखते है । कथावाचक जे एसटीसएस उपयोग कर रहे हैं पाते है कि जब तक वे किसी भी आवश्यक वर्णनों को परिचयों में प्रदान करते हैं, बाइबल कथाओं में बहुगुण खोजने संपूर्ण संसार में श्रोताओं द्वारा खोजे जा सकते है बिना उनकी शिक्षा या पढ़ने की क्षमता पर सावधान हुए।

जैसा हमने प्रेरितो के काम 4:13 में याद दिलाया कम से कम कुछ शिष्यों को जिन्हें यीशु ने चुना उनके शिक्षा पृष्ठ भूमि के बारे में 1 ऐसा दिखता है कि पतरस और यूहन्ना ने सदूकियों और अन्य धार्मिक अगुवों को उनकी यीशु के बारे में मजबूत प्रचार द्वारा क्रोधित किया । अतः उन धार्मिक अगुवों ने दोनों को गिरफ्तार किया ओर पतरस,पवित्रात्मा द्वारा अगुवाई प्राप्त,ने एक तर्कसंगत ओर क्रमबद्ध वक्तव्य धार्मिक अगुवों वे यीशु के बारे में दिया,एक वक्तव्य जिसने उनके उच्च शिक्षित पकड़वाने वालों को एक किनारे कर दिया।

सभा पर लोग पतरस के वक्तव्य से प्रभावित हुए :
जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ ओर साधारण मनुष्य है ,तो अचंभा किया, फिर उन को पहचाना कि ये यीशु के साथ रहें है। (प्रेरितों के काम 4:13)

क्या ऐसा आज होता है ? क्या यीशु ने न सीखे हुए चेले पवित्र शास्त्र को ठीक से ध्यानपूर्वक सुनते है ओर तब तर्कपूर्णता से बहुत से बहरे सत्यों को खेजते और दूसरों को पढ़ाते हैं?

कार्यक्षेत्र से प्राप्त वर्णन संभवतः इस प्रश्न के उत्तर में सहायता करेंगे

परमेश्वर का वचन हृदय के अंदर के भागों से बात करता है। कई बार पश्चिमी एसटीएस प्रशिक्षकों को अवसर मिले कि एसटीएस को ग्रामीण स्थापना मे उपयोग करें या उपयोग होता देखें । हममें से कुछ पश्चिमी लोग केन्या के एकलाकला गॉव का गये । पूर्व में, अफ्रीकन एसटीएस प्रशिक्षकों ने एकलाकला में कथाओं को उपयोग कर सेवकाई की थी और वहॉ विश्वासियोंग को एसटीएस प्रशिक्षण प्रारंभ किया था।

हमारे मार्गदर्शक ने वर्णित किया ''जब हम यहॉ पहले आये , 'कलीसिया' गा रही थी, ताली बजा रही थी, प्रचार कर रही थी और संभवतः पवित्र शास्त्र की एक आयत यह था विश्वासी बाइबल के बारे मे बहुत कम जानते थे। अब ये पासबान उद्धारो और बढ़ती को देख रहे है ''

जो हमने देखा उसमें हमारे साथ शामिल हों।

आप सीमेंट ईट,टीन की दत वाले एक गॉव के गिरजाघरमें एकलाकला में प्रवेश करते है। आप देखे कि यह कंबा जाति के लगभग 60 लोगो से भरा है। उनमें से जो गिरजाघर की बेंचो पर हैं वे 15 पासबान,11विभिन्न कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए,कार्यक्रम के प्रांरभ होने की प्रतीक्षा करते हुए।

आप ध्यान करते हैं महिलाओं के रंगबिरंगी पोशाकों और टोप और पुरूष उनके सबसे अच्छे कोट ओर टाई पहने हुए। जैसा आप अपनी दृष्टि जमाते हैं आप पाते हैं कि अधिकतर कोट कई नाप के और बड़े हैं और ढ़ीले हैं इन दुबले लोगो पर। तब आप ध्यान देते हैं कमीजों की मुड़ी बॉहों ओर पतलूनों को दुबले लोग पहने हैं । आप सोचते है कौन जानता है कि कितने विभिन्न लोगो ने इन्ही ''रविवारीय वस्त्रो'' का उपयोग किया है।

आपको बताया गया कि शिक्षण को अवश्य 4 बजे संध्या तक समाप्त होना चाहिए ताकि लोग वापस जाने में नदी को पार कर सकें इसके पूर्व के दरियाई घोड़े बाहर आयें। साथ ही आप पाते है कि अधिकांश जो गिरजाघर में है उन्हें अपने घरों तक पहूॅचने में चार घंटे पैदल यात्रा का सामना करना है –उनके घर गोल मिट्टी के झोपड़े।

जब वहॉ,एक अफ्रीकी तैयारी कर रहा है कि उत्पत्ति 35:1–5 कहें और एक चर्चा की अगुवाई करे। यह प्रस्तूति स्वाहिली में की जायेगी और कंबा में अनुवादित की जायेगी । जब आप एक पीछे की बेंच पर बैठ जाते है उसके पश्चात्, आपका अफ्रीकी अनुवादक आपको अंग्रेजी में बताने लगता है कि क्या हो रहा है।

''लोगों ने चर्चा की कैसे याकूब परमेश्वर द्वारा सुरक्षित किया गया लंबे समय तक और कि अब परमेश्वर याकूब और उसके परिवार को बुला रहा है कि वापस बेतेल को जाये,वह स्थान जहॉ याकूब परमेश्वर से मिला था।

'' अब वे बात कर रहे हैं कि कैसे याकूब एक अच्छा आत्मिक अगुवा है जो अपने परिवार को स्वंयश को शुद्ध करने को कह रहा है ओर उनकी मुर्तियो छोड़ने को कह रहा है। उन्होंने याकूब को कहा ''परमेश्वर का आज्ञाकारी ''।

''कथावाचक'' ने लोगो से पूछा ''क्या आप याकूब को देखते है जैसा अभी इस कथा में कि वह अच्छा अगुवा बन रहा है या वह लंबे समय के लिए एक ईश्वरीय अगुवा रहा ?'' और तब उसने पूछा, ''क्या आप सोचते है कि जो याकूब ने मूर्तियो के साथ किया आपको कुछ दर्शाता है।''

लोग एक दूसरे से बाद विवाद करते से दिखाई दिए।

कुछ मिनिटों पश्चात् आपका अनुवादक आपसे फुसफसाता है, ''अब वे कथा मे और देख रहे है । उन्होने कहा '' याकूब ने अपने परिवार से सभी मूर्तिओं को इकट्ठा किया और तब उन मूर्तिपूजा की वस्तुओ को शकेम में सिंदुर वृक्ष के नीचे छिपा दिया । उसने स्थान को चिन्हित किया । अब वे याकूब के लालच के बारे में बात कर रहे है। '' उसने पूर्ति के लिए परमेश्वर पर भरोसा नही किया।

''वह एक समझौता करने वाला है क्योंकि उसने अपने परिवार को मूर्तियॉ रखने दिया '' वे कह रहे हैं। एक व्यक्ति ने तभी कहा ''तंत्र मंत्र की वस्तुओं में से कुछ कानों के कुण्डल थे, अत': याकूब को अवश्य ही पहले से ही उसके घर में मूर्तियों के रखे होने का पता था''।

आपका अनुवादक फुसफुसाता है '' महिला कह रह है 'हम अब मसीही है परंतु हमारे भी हमारे मंत्र और पवित्र वस्तुऍ छिपायी हूई है। हमं अवश्य उन्हें अब नही छिपाना चाहिए । हमे उन्हें अवश्य नष्ट करना है''।

तब कुछ मिनिटों पश्चात् एक बड़ा पुरूष खड़ा होता है और ऊॅची आवाज में भनभनाता है,जिसके प्रति बाकी पुरूष सहमति में उत्तर देते है।

इस समय तक आप जानने के लिए मर रहे होते है कि क्या कहा गया अतः आप शीघ्रता से अपने अनुवादक के ऊपर झुक जाते है ओर फुर्ती से पूछते है ''वह क्या कह रहा है''?

अनुवादक उस व्यक्ति की पूरी बात सुनने की प्रतीक्षा करता है और फिर वापस फुसफुसाता है ''इस व्यक्ति ने अभी कहा मै परिवार को शासित करता हूॅ। वे जैसा मैं कहता हूॅ करते हैं । परंतु मैं याकूब के समान हूॅ। मैने उनकी आत्मिक अगुवाई नही की । मुझे अवश्य बदलना है।

उस दिन ,उस बाइबल कथा में,संपूर्ण कलीसिया ने याकूब के पांखड को खोजा । पुरूष और महिला दोनो जो खड़े हुए और बोले थे,ने अपने पापों को पहचाना जैसा कि उन्होंने याकूब को पापों पर देखा।

साथ ही उस दिन,हम परमेश्वर की कथाओं की अलौकिक शाक्ति के साक्षी है। ये अधिकांश न पढ़े हुए मौखिक संप्रेषण कर्त्ताओ ने गहरे सत्य को पाया और ऐसे प्रकार की व्यक्तिगत प्रयुक्तियों को बनाया जो संभवतः मिश्नरीयों को वर्षो जागते, प्रार्थना करते और खोजते कि साक्षी बनें।

कभी भी अंत्यत देर नहीं ,कभी भी अत्यंत खोये नहीं ।

नेपाल के नवलपारसी जिले में एक तंत्रचिकित्सक रहता था जो,अपने पूरे 66 वर्षो में,कभी पढ़ना नही सीखा –परंतु वह कई सौ लोगों को नियंत्रित किया, लोग जो उसे ईश्वरीय भय ओर डर से देखते थे।

उसके 60 वर्ष के प्रारंभ में इस व्यक्ति ने यीशु के गारे में सुना था, परंतु उसने सोचा कि उसे यीशु की आवश्यकता नही है। निश्चित, उसने लोगों के बारे मे वर्णन सुना था जिन्होंने यीशु मिला । परंतु आत्मायें इस तंत्रचिकित्सक की सहायताकिया करती थी अतः उसे यीशु की सहायता की आवश्यकता क्युं होगी?

एक दिन उसका पोता बहुत बीमार हो गया,इतना कि मृत्यु के नजदीक । तंत्रचिकित्सक ने मंत्रों को उचारण किया ओर आत्मओं से मांगी लड़के को चंगा करें, पर लड़का अभी भी मर रहा था। अततः निराशा मे यह बूढ़ा व्यक्ति यीशु के अनुयायियों केपास गया ओर उनसे कहा कि उसके

पोते के लिए करें । उन्होंने प्रार्थना की और रोग ने लड़के को छोड़ दिया। परंतु बूढ़ा व्यक्ति यीशु का अनुयायी नही बना ओर अपने जीवन को तंत्रचिकित्सा के रूप में जारी रखा।

तीन महीने बाद इस व्यक्ति की पत्नी ,जो एक विश्वासिनी थी, एक एसटीएसी कार्यशाला मे उपस्थित रही थी। उस संध्या वह घर वापस आयी ओर अपने पति को एक कथा सुनाई जिसे उसने अभी सीखा था।

नामान की कथा 2 राजा 5 से नेपालियों द्वारा पढ़ाई गई थी ओर उपस्थितों द्वारा किए गए थें। उन्होंने सीखा कि नामान अरामी सेना का सेनापति था और उसे कोढ़ था, और तब यद्यपि अराम इस्राइल का शत्रु था, जब नामान ने सुना कि वह इस्राइल में भविष्यद्वक्ता द्वारा चंगा हो सकता है,उसने एक बड़े कारवॉ को इकट्ठा किया ओर उस चंगाई की खोज में इस्राइल को यात्रा की ।

परंतु , जब नामान एलीशा भविष्यद्वक्ता के घर गया, एलीशा नामान की अपेक्षाओं से नही मिला । वास्तव में भविष्यद्वक्ता नामान से मिलने बाहर भी नहीं आया। और उसकी बजाय जब एक सेवक आया और भविष्यद्वक्ता के निर्देशों को दिया कि जाकर एक स्थानीय नदी में चंगा होने के लिए सात बार डुबकी लगाये,नामान ने उत्तर दिया '' क्या दमिशक की अबाना और पर्पर नदियॉ इस्राइल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं ? क्या मैं उनमें स्नान कर शुद्ध नही हो सकता हूँ ? इसलिए वह जलजलाहट से भरा हुआ लौटकर चला गया।

यह केवल इसके पश्चात् जब नामान के सेवकों ने उससे याचना की ,कि जाये और इस दीन कार्य को करे और नदी में डुबकी लगाये कि चंगाई के लिए प्रयास करे जिसे नामान ने स्वीकार किया ं वह नदी को गया,,डुबकी लगाई उसे कहा गया था–ओर तुरंत चंगा हो गया।

जब इस तंत्रचिकित्सक ने इस कथा को सुना,उसने अपनी पत्नी से कहा '' मै नामान हूँ। मेरा घमण्ड मुझे यीशु का अनुयायी होने से रोक रहा है।''

अगले दिन तंत्रचिकित्सक अपनी पत्नी के साथ कार्यशाला को गया । वहॉ उसने एक प्रशिक्षक को बताया,''मै यीशु का अनुयायी होना चाहता हूँ। वह सलाह दिया गया, और फिर असने उद्धार के लिए प्रार्थना की । इसके पश्चात् इस न पढ़े हुए वृद्धि व्यक्ति,जिसने अपने जीवन का अधिकांश जादू टोने में व्यतीत किया था, पूछा यदि वह उनसे जो वहॉ इकट्ठा थे को बता सके जो अभी घटित हुआ था। यह उसका वक्तव्य था।

''नामान एक अहंकारी पुरूष था और उस अहंकार के कारण अपनी चंगाई को लगभग खो दिया था। मैं,भी ,एक अहंकारी वक्ति हूॅ। मैं वर्षो से जानता था कि मुझे यीशु का अनुसरण करना चाहिए,परन्तु मैं स्वीकार नही करना चाहत था कि मुझे उसकी आवश्यकता है। लोग मुझे देखते हैं । मैं अपने पद को नही खोना चाहता था,यहॉ तक कि पब परमेश्वर ने मेरे पोते को चंगा किया तक भी । मेरा अहंकार ने लगभग मेरे उद्धार को बड़े कष्ट से दिया परंन्तु अब मैं अब यीशु का एक अनुयायी हूॅ।''

निश्चित रूप से,जब कोई शिक्षित या नही बाइबल में आत्मिक जानकारी को पाता है,सबसे पहले पवित्र आत्मा को उसका श्रेय प्राप्त हो । परंन्तु हम यह भी देखते हैं कि जब पूर्व तंत्रचिकित्सक ने एक बाइबल कथा को ध्यानपूर्वक सुना तब,उसने अनुमानकारी विचार करने के कौशालों का प्रतिबिंब देखा। उस खोज की गहराई ने शिक्षा को नीचे किया।

रूचिकर रूप से उन सेवकाईं श्रेत्रों के वर्णनों में,वे लोग जिन्होंने सेवकाई की थी ओर कार्यशालाओं की अगुवाई की थी 2री,3री ओर 4थी पीढ़ी के ,स्वदेशीय एस टी एस प्रशिक्षक थ। सभी मौखिक संप्रेषण संस्कृतियों से आये थे और अधिकांश मुल रूप से गॉवों से थे।

टीकाओं के उपयोग के बारे में क्या?

टीकाये उन्हें जो पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते है बुद्धि की संपत्ति प्रदान करती है युगों से मसीही लाभांवित हुए है, न केवल बस उन बोले गये परिज्ञानों से जिन्हें ईश्वरीय पुरूषों व महिलाओं ने बॉटा,परंतु उनसे भी जो लिखित परिज्ञान / निरीक्षणों को वे छोड़ गये ।किसी रूप में,एक टीकाकार के नजरिये को जॉचना लगभग ऐसा है जैसे किसी को ध्यानपूर्वक सुनना जो एक मत स्वयं वहॉ उपस्थित हो दे रहा है। परंतु हमारे द्वारा जानकारी को ग्रहण करने में एक सूक्ष्म भिन्न्ता है। हमारी प्रवृत्ति है कि अपेक्षा करें कि प्रकाशित शिक्षा विशेषतः अचूक हो । समय अध्ययनऔर सामान्यतः कुछ प्रकार की देखरेख प्रकाशित कार्य में जाती है। यद्यपि इसमें कोई बात नही कि स्त्रोत चाहे ये लोगो के मत हो या लिखित जानकारी दोनो अवश्य ही पवित्र शास्त्र से प्रमाणित किये गये हो।

प्रभु ने हमें दिखाया है कि कैसे उसे प्रमाणित करे जो हमें पढ़ाया गया हैः

भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलूस और सीलास को बिरीया में भेज दिया और वे वहॉ पहुॅचकर यहूदियों के आराधनालय में गए । ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे

और उन्होने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूँढते रहे कि ये बाते योंहि है कि नही । (पेरितों के काम 17:10:—11)

बिरीया शहर के ये लोग प्रशंसा पाये उसकी प्रमाणिकता को मापने के लिए जिसे उन्हें पवित्र शास्त्र से पढ़ाया गया था। बिरीया वासियों ने पवित्र शास्त्र को उनके अंतिम अधिकारी के जैसे रखा। रूचिकर ! मै सोचती हूँ किसकी शिक्षाओं को प्रमाणिकता के लिए मापा गया था?आप सही है पौलूस प्रेरित की।

अतः आज,उस उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हमें अवश्य बाइबल का अपयोग करना चाहिए की जानकारी को मापें जो हमें प्रस्तुत की गई चाहे वह किसी भी रूप में आये व्यक्ति द्वारा स्वंय, टीकाओं में या अन्य शिक्षण सामग्री से ।

ऐसे लोगो को जब कथा द्वारा सेवकाई करे जिनके पास रिकार्डेड या लिखित पवित्र शास्त्र है अपनी चर्चा के अंत में निश्चित हो कि अपने श्रोताओ को अपनी कथा का पवित्र शास्त्र संदर्भ प्रदान करें। यह आपके श्रोताओं को अनुमति देगा कि जो आपने पढ़ाया और उनके साथ चर्चा की उसकी अचूकता को स्थिर करें।

अफ्रीका में एक बड़ी सभा में ,प्रत्येक कथा की प्रभावशीलता और एक टी एस मौखिक तरीके को प्रशंसा कर रहा था। एक उत्सुक (और थोड़ा सा अवसरवादी) युवा ने जो बाइबल कथाओं को सीख रहा था ने एक रूचिकर प्रश्न पॅछा। उसने साहिसिकता से कहा ''क्या आप हमें टीकाये भेज सकती हैं? पहले तो पीछे हट गई परंतु तब उत्र दिया ''हमें संपर्क करें जब आपने सभी 210 कथाओं को सीख लिया हो जिन्हें हमने सूचीगत किया है। इस प्रकार से आप तैयार रहेंगेकि टीकाओं में की जानकारियों की प्रमाणिकता को नाप सकें।

कुछ क्षेत्रों में,टीकाकारों के मतों को पवित्र शास्त्र के साधारण अर्थ से भी ऊचा किया गया हे। कई समय लोग वचानो की उनकी समझ को टीककारों से लेते है। कई समय लोग वचनों की उनकी समझ को टीकाकारों से लेते है क्योंकि उनके पास स्वयं द्वारा अध्ययन की प्रेरणा की कमी है। इसके बदले की खुद खोजे और बाइबल से सीखे ये लोग बस सम्मिलित कर लेते है,सत्य की तरह शिक्षितों के नजरिये और प्रकाशित धर्मविज्ञानीयों के नजरियों को हम सभी को उस विचारधारा के खिलाफ स्वयं को सुरक्षित रखना है जो है यद्यपि बाइबल सामान्य व्यक्ति के लिए है पर यह जो अत्यंत गहरे और धनी सत्यों को रखती है केवल शिक्षित धर्मविज्ञानीयों द्वारा ही समझने जा सकते हैं या तो वे जो हमारी कलीसियाओं में प्रचार करते है या वे जो उनकी खोज को दूसरो लिए लिखते हैं। परमेश्वर की सब लोंगों के लिए इच्छा है कि उसके

सत्य को प्राप्त करें,केवल कुछ एक श्रेष्ठ लोग नही जो औपचारिक शिक्षा के साथ आशीषित किए है।

एक प्रकार से, एक बाइबल कथा के समूह चर्चा में भाग लेना उन मूल्यवान जानकारियों का आनंद उठाने के समान है जिन्हें लेखक टीकाओं में प्रदान करतें हैं । चर्चा के दौरान जब कभी कोई कथा के बारे में एक नजरिया प्रस्तुत करता है जो प्रमाणित हो या नही हो सकता है,हम पुछने को स्वंतत्र महसूस करते है अब कहॉ उत्साहित करते है कि टीकाओं में जानकारी को इसी प्रशन को पूछने द्वारा प्रमाणित करे ।

वास्तव में जब कोई भी एक सुझाव एक भाग के अर्थ के रूप में देता है वे एक टीकाकार के रूप में सेवा के प्रभाव में है । इसलिएइससे कोई मतलब नही कि कौन नजरिया प्रस्तूत कर रहा है चाहे व वचन में अभी प्रारंभ हुआ व्यक्ति हो या उच्च शिक्षित धर्मविज्ञानी हो जो कई वर्षो के अध्ययन के फल को बॉट रहा हो, निश्चित हों कि जो बॉटा गया है वह स्पष्ट रूप से उस बाइबल कथा में देखा गया हों।

अध्याय 10 : ''केवल–कथा'' कथावाचकों का श्रेणीकरण

अभ्यासकर्ता–

सभी कार्यशालाओं के दौरान, उपस्थित प्रशिक्षण एवं व्यक्तिगत शिक्षा पाते हैं । हमारा उत्तरदायित्व और आनंद है कि उस जानकारी को उनके हाथों में सौंपे कि कैसे ''केवल कथा'' को करें । सीखने वालों को तब ''केवल कथा'' के विचारों को अभ्यास करने तथा उनके कौशलों को अच्छा सुर देने की आवश्यकता है ।

एक व्यक्ति जो एक ''केवल कथा'' कार्यशाला में अभ्यासकर्ता मार्ग को उपस्थित होता है वह एक अभ्यासकर्ता है । उस व्याख्या में, अधिकांश उपस्थित पर्याप्त रूप से ''केवल कथा'' के विचारों को उपयोग करने में सक्षम हो जाते हैं कि उनके प्रभाव के दायरे में जाये और प्रभावी रूप से बाईबल कथाओं को सुना सकें तथा चर्चा के द्वारा सत्यों को प्रदान कर सकें । यहॉ तक कि हम विभिन्न सामग्री प्रस्तूत करते है जिन्हें अभ्यासकर्ता एक टी एस तरीकों को बढ़त में दूसरो को देने में उपयोग कर सकते हैं ।

जब अभ्याकर्त्ता तैयार हैं कि क्रियाशील कथावाचक बनें, अभ्यासकर्ता अभी भी **तैयार नहीं** हैं, कि एक ''केवल कथा'' कार्यशाला की अगुवाई कर सकें या औपचारिक रूप से दूसरों को ''केवल कथा'' के नाम में प्रशिक्षण दें ।

कई समयों पर हम से उन लोंगों द्वारा पूछा गया जो सेवकाईयों की अगुवाई करते हैं यदि एक अच्छि योजना है कि एस टी एस की शिक्षा को उनके अन्य शिक्षण सामग्री के साथ जोड़े । हम उस विचार के सिद्धांत को प्रशंसा करने के द्वारा उत्तर देते है। अभ्यासकर्ता दर्शन को बॉट सकते हैं। वे सरलता से लोंगो को एस टी एस के बारे में बता और उत्साहित कर सकते है। वे उसे जो वे अभी जानते है उसे उद्देश्यित जानकारी जिसे हम उन्हें दर्शन को देने के लिए दे सकते है के साथ जोड़ सकते हैं। हमें इसे होता देख प्रसन्नता होगी।

हमारी चेतावानी यह है। एस टी एस को ढंग से पढ़ाने के लिए,आवश्यकता है कि :

- एस टी एस प्रक्रिया के प्रत्येक भाग की स्थिर जानकारी हो ।
- सक्षम हो कि स्पष्ट एस टी एस नमूना को प्रदर्शित करें।
- उद्देश्य तथा उपयोग का सभी जाने जिसे एस टी एस परिभाषित रिता है।

  कुछ अभ्यासकर्त्ता चाहेंगे कि पुर्णतः प्रशिक्षित और प्रशिक्षक के रूप में प्रमाणित होने से आगे भागें क्योंकि वे इस सरल रखना चाहते हैं और शीघ्रता से उन्हें जानकारी देना चाहते है जिन्हें इसकी आवश्यकता है।

कुछ समयों पर, उत्साहित,अच्छे अभिप्राय के साथ अभ्यासकर्त्ताओं का अनाधिकृत एस टी एस प्रशिक्षणों को स्थापन और अगुवाई करते हमने देखा है। परंत,क्योंकि वे जो उस प्रशिक्षण को कर रहे थे पुर्ण रूप से एस टी एस प्रशिक्षकों के रूप नही प्रशिक्षित थे,वे अभी भी सक्षम नही थे कि एक पुर्ण स्वरूप की गई एस टी एस प्रशिक्षण को प्रदान कर सकें उनके द्वारा जिन्हें उन्होंने प्रशिक्षित किया परिणाम छोटा था।परंतु जो ओर अधिक खराब था वह था कि जो स प्रशिक्षण में एक प्रभावी पुनरोत्पादन शिक्षा के नमूने और कथाओं की चर्चा करने को सीखने की अपेक्षा से आये ने एक पूर्ण या संतुष्ट अनुभव को प्राप्त नही किया।

वे उपस्थित आधे तैयार होकर गये,और जो खराब था,वे गलती से विचार किए कि उन्होने अभी पूर्ण एस टी एस अनुभव प्राप्त किया है। पूर्व में, कमजोर अनावरण के परिणामस्वरूप वे शायद हही एक पुर्णतः अधिकृत एस टी एस कार्यशाला में उपस्थित होने को रूचिप्रद है,क्योंकि वे सोचते है कि उन्होंने पहले ही एस टी एस को चख लिया है और इसने उनके लिए ठीक कार्य नही किया उदासता से हमने कभी अवसर प्राप्त नही कि उन्हें कोशलों का पूर्ण रूप सिखायें।

''सरलता'' सरल नही है एक नजर में नाम ''केवल /सरल कथा''लोगों को अगुवाई कर सकता है कि सोचे एस टी एस ''सरल'' है और इसमें केवल एक कथा को कहना सम्मिलित है । यदि यही सब है जे हम एक कार्यशाला में करते है, हम सरलता से प्रशिक्षण को एक दिन में पुर्ण कर सकते परंतू वास्तव में जो एस टी एस बॉटता है, सम्मिलित करता है कई दाहरणों की पद्धत्तियों को शिक्षण और मिशन रणनीति में।

इसके साथ –साथ,वहॉ जोड़े गये उदाहरणों की पद्धत्तियों का बदलना है व्यक्तिगत स्तर पर ओर सेवकाई प्रकृति दोनों में कि लोग कैसे सीखते है और कैसे अधिकतम प्रभावशीलता से बाइबल संगत जानकारियों को दूसरों तक संप्रेषित करें।

विचार करते हुए कि वे जो कार्यशालाओं की अगुवाई करतें हैं ने अपने बड़े समय और अभ्यास को निवेश किया है कि सक्षम हो की अभ्यासकर्त्ताओं में इस प्रकार का उत्साह उत्पन्न करें हम उन अभ्यासकर्त्ताओं से जो चाहते है कि प्रभावशीलता से पढ़ाये कि उसी समान प्रकार का निवेश करें।

बिना सही प्रशिक्षण के कि एस टी एस में दूसरों को कैसे प्रशिक्षित करें,कथा वाचक को ं की अगली पीढ़ी अनुरूप प्रशिक्षण से कम के साथ समाप्त करेंगी। जब वे लोग सेवकासई में

कथाओं के अपयोग से संघर्ष करेंगे निराशा उन्हें कारण देगी कि गलती से निर्णय करें कि कथा कहना काम नही करती और इसक पूरी तरह से छोड़ देंगे।

प्रारंभिक 37 घंटे का प्रशिक्षण है कि कैसे एस टी एस करे,और अपयोग करें और कैसे मार्ग पर शुरूआत करें कि दूसरों को प्रशिक्षण दें। वह प्रशिक्षण यह सम्मिलितनहह करता कि कैसे एक एस टी एस कार्यशाला की अगुवाई करें,कैसे निदानको सिखाये न ही स टी एस प्रक्रिया और तरीकों में कई उदाहरण बदलाव के लिए उद्देश्य तथा क्षमा योग्यता को सिखाता है।

क्या इसका अर्थ है कि अभ्यासकर्त्ता शिष्य गुणन में और दूसरों की मदद एस टी एस कौशलों को सीखने और उपयोंग करने में सम्मिलित नही हो सकते? बिल्लकुल नहीं वास्तव में हम इस प्रकार के एस टी एस को दूसरों के हाथ में देने को एक शिष्यताकारी स्थापना में उत्साहित करते है। शिष्यता में जानकारी को देंखे, अध्याय 11 उपयोग के स्थान एस टी एस सीखने और फैलाने के तरीके।

यदि आप अपने समूह को प्रशिक्षित देखना चाहते हैं,कृपया हमें संपर्क करें । हम प्रसन्न होंगे की आपके साथ कार्य करें। और, यदि आपकी इच्छा होगी,हमें प्रेम होगा कि एक योजना को बनाये कि आपको पूर्ण प्रशिक्षक की स्थिति पर लाये। हमारी विशेषता है अगुवाई को दूसरों के हाथ में एक पुर्ण तरीके से देने में । लोग प्रमाणित प्रशिक्षक बन सकते है जितनी शीघ्रता से वे कार्यशाला के विषय को जानेंगे,एस टी एस प्रशिक्षण के प्रत्येक अंगो के उद्देश्य और कारण को जानेंगे,निदानपूर्ण सिखाने में उनकी क्षमता को दिखायेंगे और एक वरिष्ठ प्रशिक्षक को एस टी एस मार्गदर्शनों का उपयोग करते हुए एक कार्यशाला की अगुवाई करने की उनकी क्षमता को प्रदर्शित करेंगे।

प्रशिक्षक : सहायक, समयानुरूप(थोड़े समय के लिए), प्रमाणिक एवं वरिष्ठ शिक्षक

इन प्रशिक्षक श्रेणीकरण में से किसी के भी अनुरूप होने के लिए हम चाहते हैं कि स्टॉक को विश्वास के आवश्यकों में एक मन और हृदय का होना चाहिए।हम कहते हैं कि अपेक्षित प्रशिक्षक टीजीएसपी एसटीएस के सैद्धॉतिक कथन से सहमत हों जो नीचे है (हमारी बेवसाइट पर भी है)।

सैद्धॉतिक कथन :–

हम इन सत्यों पर दृढ़ है:

- संपूर्ण सत्यो और नये नियम के ईश्वरीय प्रेरणा पर,एक मात्र पुस्तक परमेंश्वर की प्रेरणा द्वारा।
- त्रिएकता का सिद्धॉत
- मनुष्य का पतन,उसकी घटना–फल नैतिक कलुबता और नये जन्म के लिए उसकी आवश्यकता।
- यीशु मसीह की ईश्वरीयता और मनुष्यता उसका कुंवारी से जन्म मृत्यु,शारीरिक पुनरूत्थान,स्वर्गारोहण,भविष्य में पृथ्वी पर शारीरिक वापसी।
- न्याय का सिद्धॉत केवल विश्वास से केवल से ग्रीस्त में।
- देह के पुनरूत्थान धर्मो ओर अधर्मी दोनों के ।
- बचाये हुओं के अनंत जीवन और हुओं के लिए अनंत दंड।

सहायक प्रशिक्षक : एक कार्यशाला में उपस्थित होने के पश्चात्, अधिकांश अभ्यासकर्ता एक ''केवल कथा'' कार्यशाला में एक ''सहायक शिक्षक'' के रूप में सहायता करने के योग्य हो जाते हैं ।

समयानरूप प्रशिक्षक : एक कार्यशाला में कम से कम तीन दिन सहायता करने के पश्चात्, सहायक शिक्षक जो तैयारी व प्रस्तुतीकरण को सही रूप से व्याख्या करने में सक्षम होने की आवश्यकता की इच्छा करते हैं। उन्हें अवश्य ही दयालुता,बुद्धिमत्ता एवं कोमलता से दूसरों को ''केवल कथा'' सिखाने की एक योग्यता/क्षमता को दिखाना चाहिए । एक प्रमाणिक शिक्षक उन्हें जो योग्य होते हैं को स्वीकृत कर सकता है और यह पदवी दे सकता है ।

प्रमाणिक प्रशिक्षक : एक या अधिक कार्यशालाओं में सहायता करने के पश्चात् समयानुरूप शिक्षक प्रमाणिक शिक्षक पद के लिए प्रार्थी हो सकते हैं । प्रार्थियों को आवश्यकता होगी कि एक ''केवल कथा'' और ''केवल कथा'' विचारों के सभी भागों में विशिष्ठ कौशल श्रेणियों को एक वरिष्ठ शिक्षक को प्रदर्शित करने में सक्षम हों ।

प्रमाणिक शिक्षक सभी अगुवाई के कार्यों द्वारा अधिकारिक ''केवल कथा'' कार्यशालाओं को चला सकते हैं वे सिर्फ दूसरों को प्रमाणिक शिक्षक का अनुमोदन नहीं कर सकते ।

वरिष्ठ प्रशिक्षक : जब प्रमाणिक शिक्षक एक वरिष्ठ शिक्षक के साथ पढ़ाते हैं, शिक्षण में कुशलता दर्शाते हुए, नये कथावाचकों का मूल्याकंन व उत्साहित करते हुए, और जब वे एक कार्यशाला को आयोजित तथा अगुवाई करने में सक्षम हों, प्रशिक्षु ''वरिष्ठ शिक्षक'' पद के लिए प्रार्थी हो सकते हैं । वरिष्ठ शिक्षक न केवल ''केवल कथा'' कार्यशालाओं की अगुवाई कर सकते हैं, वे ही केवल लोग हैं जो योग्यता प्राप्त समयानुरूप शिक्षकों को प्रमाणिक शिक्षकों के रूप में अनुमोदित कर सकते हैं । साथ ही साथ, तिमोथी कलीसिया रोपण प्रशिक्षण शिक्षक वरिष्ठ शिक्षकों के कुण्ड से आते हैं ।

अध्याय 11 : उपयोग के स्थान–एस टी एस सीखने ओर फैलाने के तरीके

अपनी वर्तमान सेवकाई में ''केवल कथा'' को चिपकाये/लगाये ।

चाहे आप बच्चों, तरूणों, युवा वयस्कों या किसी भी आयु के वयस्कों के साथ कार्य कर रहे हैं, ''केवल कथा'' रुचि को उत्साहित करेगा और आपको लोगों को परमेश्वर के वचन के अध्ययन में सम्मिलित करेगा ।

जो भी समय आपके पास उपलब्ध है, आप कथा प्रस्तुति की लंबाई को अवलोकनों एवं प्रयुक्तियों की संख्या से काट–छाँट कर सकते हैं । यदि आपके पास सीमित समय है, 30 मिनटों से भी कम का, आप भाग एक के क्रम 2 को छोड़कर कुछ समय बचा सकते हैं एक स्वयंसेवक से कथा पुनः न सुने । आप कथा को सुनायें । तब आप कथा द्वारा समूह की अगुवाई उन्हें एक दूसरे से सुनाने को कहकर कर सकते हैं । ''केवल कथा'' प्रारूप फिर भी कार्य करेगा ।

वार्तालाप योग्य एस टी एस ।

जब एक ''केवल कथा'' कथा को सुनाने को दिया समय या अवसर अत्यंत ही छोटा है आप कुछ रचनात्मक कार्य कर सकते हैं । एक कथा को मात्र एक मिनट से थोड़ा ऊपर तक कह कर सुना सकते है और कुछ चुने हुए अवलोकनों व प्रयुक्तियों को 5 से 10 मिनिटों में किया जा सकता है । कथा को सुनाये और सीधे कुछ एक चुने हुए अवलोकनों और उनकी प्रयुक्तियों पर जायें ।

इसके पूर्व कि आप प्रत्येक प्रश्न करें, कथा के उस भाग को विस्तृत रूप से दुहराये जिसमें वह खजाना है जो आप चाहते हैं कि लोग खोजें । उदाहरण हेतु,यदि आपने बताया है मरकुस 1:40–45,आप अपने प्रश्न की भूमिका यह कहते बॉधेगे, यदि उदाहरणार्थ, आप एक कोढ़ी की कथा सुना रहें हैं, आप कहेंगे ''स्मरण करें कि यीशु कैसे तरस से भर गया जब कोढ़ी घुटने टेककर यीशु से विनती किया और कहा, ''यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है ।''' यह कुंजी है । एक प्रश्न करें जिसमें पर्याप्त विवरण सम्मिलित हो कि लोगों को कथा का स्मरण हो जो उन्होंने अभी सुनी है, ताकि वे आपके प्रश्न का उत्तर ठीक दे सकें ।

पासबानों द्वारा नवीन परिवर्तन : परंपरागत एवं रूढ़िवादी सम्प्रदायों एवं कलीसियाओं के पासबान धर्मोपदेश आसन/पुलपिट से ''केवल कथा'' का उपयोग करने में हिचकते हैं । कई कलीसियाओं में एक पासबान द्वारा उपदेश के दौरान प्रश्न पूछना बहुत ही अलग है । इसके

साथ, कुछ दायरों में पढ़ने की बजाय कथा सुनाया एक बड़ी उछाल है । पासबान जो विभिन्न विश्व क्षेत्रों में हैं और ''केवल कथा'' कार्यशालाओं को किये हैं, और इस धारणा को पसंद किये हैं ने इन समाधानों को ढूँढ़ा है ।

1. विभिन्न पासबानों ने हमें अनौपचारिक युवा सभाओं में एस टी एस के उपयोग करने के बारे में बताया है। युवाओं की ओर से बहुत सकारात्मक उत्तर थे । अभिभावक पासबानों के पास आये और कहा, ''आप हमें इस प्रकार से क्यूँ नहीं शिक्षा देते ?''

2. अन्य पासबानों ने पुलपिट से ''केवल कथा'' शैली का अनुसरण किया, पंरतु रुढ़िवादी औपचारिक ढंग से हटकर इसे जीवित रुचिकर शैली में पढ़े ।
   इसके पश्चात, वे आत्मिक अवलोकन ओर प्रयुक्ति प्रश्नों को पूछते हैं। कुछ सुनने योग्य उत्तरों को उत्साहित करते हैं अन्य अलंकारिक प्रश्नों को पूछते है, जो लोगों को समय देता है कि प्रश्न को प्रक्रिया करें और उनके मनों में एक उत्तर के बारे में नीचे । यह अत्यावश्यक है अव पसबानों को यह अवश्य निश्चित करना है कि लोगों को समय दें जिसे उन्हें आवश्यकता हे कि वे क्या उत्तर देंगे के बारे में सोचें।

3. कुछ ने इसे ऐसा प्रदर्शित किया, ''एक तरीका कि जो हमसे दूर हैं और पढ़ नहीं सकते उन तक पहुँचा जा रहा है।'' ''दूसरों'' को बाईबल प्रस्तुत करने के इस तरीके के प्रति सकारात्मक प्रति उत्तरों ने द्वार खोला कि ''केवल कथा'' के एक प्रचलित रूप का उपयोग उनकी कलीसियाओं में करें ।

4. कुछ पासबानों ने ''केवल कथा'' का परिचय उनके संडे स्कूल कार्यक्रम के अगुवों से कराया ।

5. अन्य ने इसका उपयोग नये विश्वासियों की कक्षाओं के लिए एक विकल्प में किया ।

पूरी सजीव केवल कथा, बिना उत्तरों के साथ :

1. यदि एक समूह बहुत बड़ा है, या उत्तर देने में सक्षम नहीं हैं, आपको अपनी ''केवल कथा'' शैली में काट–छाँट करना होगा । यह किया जा सकता है । सभी भागों में परंतु कथा को फिर से सुनाने को कहने को एक व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है उस ''न'' के प्रतिउत्तर के लोगों से जिन्हें आप शिक्षा दे रहे हैं ।

2. ''केवल कथा'' कथाओं को रेडियो या टी.वी. पर भी प्रस्तुत किया जा सकता है । पुनः दुहराव को छोड़ दिया जाता है, परंतु बाकी रहता है । कुंजी, विशेषतः रेडियो पर, प्रत्येक प्रश्न के बाद के खाली पाँच सेकेंडो को किसी प्रकार की बात से भरना है । उदाहरणार्थ, एक प्रश्न पूछें तब कहें, ''तो आप क्या सोचते हैं ? क्या आपके पास कोई विचार है कि आगे क्या हुआ ? आप क्या कहेंगे ? आपका उत्तर है.....?''

यह एक बकबक है जो वास्तव में श्रोताओं को उन्हें आपकी सुनने को बनाये रखने से भटकाती नहीं हैं, परंतु यह हवाई मार्गों को भरती है ताकि लोग इसलिए स्टेशन नहीं बदलेंगे क्योंकि उन्हें रेडियो पर कुछ सुनाई नहीं दे रहा है । उदाहारण के लिए अर्थहीन ध्वनिया हो सकती ''हुम्मममम'' ''आहहहहह?'' उह–उह–उह–उह'' ''उम्मममममममम''।

वहॉ एसटीएस वेबसाइटपर मार्था–मरियम का एक रेडियों नमूना है जो उस अर्थहीन बकवाद की शैली को संयुक्त करता है।

3. यदि आप एसटीएस पर कुशल हैं और आपके पास एक तरीका है कि एक रेडियों स्टुडियों में माइक्रोफोन के पास 3 या 4 लोगों को रख सकें । आप एक मनोहारी रेडियो कार्यक्रम बना सकते हैं। पहला एस टी एस कथावाचक हम जानते हें जिसने इस स्वरूप का उपयोग किया वह कथावाचक फिलीपीन्स में था। कुछ महीनों के साप्ताहिक प्रसारण पश्चात वह रेडियो स्टेशन 1,400 भाग लेने वालों के पत्र प्राप्त कर रहा था प्रत्येक कार्यक्रम के लिए फोनों को प्राप्त कर रहा था अन्य रेडियों स्वरूपों को भी सफलतापूर्वक उपयोग किया जा रहा हैं।

अभिनय , खेल और शक्तिशाली।

अभिनय प्रस्तुत करने व देखने में मजा है और वे कथाओं को ओर अधिक वास्तविक बना सकते हैं। उनको उपयोग करें एक अन्य तरीके के रूप में कि कथा को पहली बार कहना हो।

सहायकों से कथा के चरित्रों के भागों को मौन रखकर निभाने को कहें परंतु हमेशा कथावाचक शब्दों को बोलता है जैसा वे कथा पर अभिनय करते हैं। चूकिं श्रोतागण अभी भी केवल एक कथावाचक को संपूर्ण कथा प्रस्तूत करते सुनते है,वे सक्षम होंगे कि वापस आपको कथा फिर से सुनाये । इसी प्रकार ,श्रोता जो एक कि घर जायें और उस कथा को परिवार के सदस्यों और अन्य को जिन्होने इसे नहीं सुना था सुना सकें।

हम सहायकों को उत्साहित नही करते कि वास्तव में चरित्रों के शब्दों को बोले। यदि आप विभिन्न सहायकों को पंक्तियों को बोलने देंगे,यह एक नाटक बन जाता है। यद्यपि कथा की नाटक द्वारा प्रस्तूत करना मनोरंजक है और जो उपस्थित है उन्हें प्रकाश देगा,कथा दुबारा कहे जाने की इसकी क्षमता को खो देती है ।

साथ ही ,कई लोगो द्वारा पंक्तियों को बोलना एक कथा की अचूक प्रस्तूति को कठिन बनाता है , चूंकि कई लोगो को दनके द्वारा बोलने बाले भागों को सीखने और याद करना है। प्रस्तूति दौरान जब पंक्तियॉ भूल जाते है,एक गंभीर बाइबल कथा शीघ्रता से एक हॅसी में बदल जाती है, बहुत ही सावधान रहें कि कथा का गंभीर संदेश मतिहीन न बनें।

परमेश्वर की कथा परियोजना प्रस्तावित करती है एस टी एस सीखने और फैलाने के तरीके – साथ ही साथ कई गुना संसाधन।

1. **''केवल कथा हस्तपुस्तिका** : यह केवल कथा हस्तपुस्तिका, श्रव्य या लिखित में, प्रक्रिया का विवरण देती है ।

2. **''केवल कथा'' दर्शन की ढ़लाईः/को सौंपना** : जैसे शिक्षक उपलब्ध होते हैं, हम प्रस्तुतीकरण देते हैं । जो लंबाई में एक दिन या उससे कम होते हैं । हम ''केवल–कथा'' को प्रदर्शित करते हैं, विचार की व्याख्या करते हैं और प्रभावी परिणामों को बॉटते हैं । यदि यह दर्शन को देने का कार्य 4 घंटों या अधिक की प्रस्तुति होती है, हम कुछ हाथ के कार्यों का अनुभव भी देते हैं ।

3. **केवल–कथा तीन दिवसीय कार्यशाला :** यह नमूना प्रदर्शन, केवल–कथा की व्याख्या को देता है और उपस्थितों द्वारा केवल–कथा में हाथ के कार्यों में भाग लेने देता है । अधिकांश उपस्थित इन तीन दिवसीय प्रशिक्षण द्वारा अच्छे अभ्यासकर्ता बन जाते हैं।

4. **केवल–कथा एक विराम कार्यशाला :** हम इन दो भागों के एक दूसरे के ऊपर होने वाली कार्यशालाओं को प्रकट करते हैं क्योंकि ये योग्यता प्राप्त केवल कथा शिक्षकों को उत्पन्न करते हैं । जो उसके पश्चात् बदले में दूसरों को प्रशिक्षित करते हैं । यह कार्यशाला एक आदर्श चुनाव है जब शिक्षकों के एक दल को प्रशिक्षण देने की बड़ी दूर से आने की आवश्यकता है, या जब उपस्थित कई दूरस्थ स्थानों से इकठ्ठा होते हैं । 14 घंटों में, एक छोटा समूह शिक्षा प्राप्त करता है । जिसमें प्रत्येक तीन उपस्थितों के

लिए एक शिक्षक होता है । इस 14 घंटों की गहन शिक्षा एवं अभ्यास के पश्चात् ये अब योग्य–अभ्यासकर्ता सहायक शिक्षकों की भूमिका में कदम रखते हैं। वे उपस्थितों के एक बड़े समूह के प्रशिक्षण में सहायता करते हैं जो शिक्षा के एक अतिरिक्त 19 घंटों के लिए आते हैं । यह कार्यशाला प्रत्येक पाँच उपस्थितों के लिए एक सहायक शिक्षक के अनुपात की साथ की जाती है । कुल 33 घंटों के पश्चात्, इन सहायक शिक्षकों में से अधिकांश समयानुरूप शिक्षक बन जाते हैं, जो, आगे के अभ्यास तथा अगुवाई अनुभव के साथ, प्रमाणिक शिक्षक बन सकते हैं ।

5. **केवल–कथा कलीसिया गुणक कार्यशाला :** क्रमानुसार सप्ताहांतों (शुक्रवार रात्रि एवं शनिवार या शनिवार एवं रविवार कि 14 घंटे पूरे हों) का उपयोग करें । चार सप्ताहांतों में एक औसत आकार की कलीसिया के सभी सदस्य निपुण केवल कथा अभ्यासकर्ता बन सकते हैं ।

5–7 सप्ताहों में, एक बड़ी कलीसिया में (50,000 सदस्यों तक) प्रत्येक को प्रशिक्षित किया जा सकता है । साथ ही, प्रशिक्षित लोगों का एक हिस्सा योग्य हो सकेगा कि ''केवल कथा'' के शिक्षकों के रूप में प्रमाणित किए जा सकें । आश्चर्यजनक रूप से, इन गुणक कार्यशालाओं में, अधिकांश भाग लेने वाले लोगों को केवल आवश्यकता होगी कि सप्ताहांतों के प्रशिक्षणों में एक या दो बार उपस्थित हों कि इस पूरी कलीसिया का आच्छादन लोगों को प्राप्त कर लें ! (इस पर सामग्री उपलब्ध है)

6. **केवल–कथा गृह/घरेलू कार्यशाला :** एक प्रमाणित ''केवल कथा'' शिक्षक तीन विश्वासियों को एक कार्यशाला में आमंत्रित करता है जो एक घर में होती है । दो से ढ़ाई घंटों के सत्र, सप्ताह में एक बार, छह सप्ताहों के लिए इस कार्यशाला को संपन्न करता है । सत्र संध्याओं, दोपहर बाद या सप्ताहांतों में किए जा सकते हैं ।

कार्यशाला की यह शैली उन्हें भाग लेने की अनुमति देती हैं जो रोजगार या पारिवारिक दायित्वों के कारण लंबे समय तक दूर नहीं रह सकते हैं कि
एक–दिवसीय या अधिक लंबे समय की कार्यशाला में उपस्थित हो सकें । साथ ही, घर,शर्मीले लोगों के लिए एक सुखदायक बिना भय के सीखने के पर्यावरण को देता है। हम आवश्यक मार्गदर्शनों, कुछ सामग्री तथा प्रशिक्षण की समय–सारणी प्रदान करते हैं ।

छह सत्रों के पश्चात्, यह एक शिक्षक उन तीन लोगों को प्रशिक्षित कर देगा जो उपयोगी ''केवल कथा'' अभ्यासकर्ता होंगे । ये तीन नये अभ्यासकर्ताओं को तब

उत्साहित किया जाता है कि एक द्वितीय 6–सप्ताहों की घरेलू कार्यशाला में उपस्थित होवें । उन्हें प्रत्येक को तीन नये लोगों को आमंत्रित करना है ।

जैसा कि हम अपने पाँच–दिवसीय एवं कलीसिया गुणक कार्यशालाओं में करते हैं, धीरे–धीरे/क्रमशः शिक्षक नये प्रशिक्षित अभ्यासकर्ताओं को अगुवाई में मार्गदर्शन करता है। द्वितीय 6–सप्ताहों के प्रशिक्षण सत्र के समाप्त होने तक, मूल तीन ने, प्रत्येक ने तीन अन्य लोगों को प्रशिक्षित करने में सहायता की है । साथ ही, उन्होंने उनके ''केवल कथा'' कौशल में जोड़ा है और सहायक प्रशिक्षक के रुप में अनुभव पाया है ।

उपस्थित निरंतर दूसरों को प्रशिक्षण दे सकते हैं, या परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने साप्ताहिक रूप से इकट्ठे होने का निर्णय कर सकते हैं, अब एक घरेलू बाईबल अध्ययन या संगति समूह के रूप में ।

यदि ये बारह प्रत्येक तीन को आमंत्रित करने की प्रक्रिया को निरंतर करना चाहते हैं और उन्हें प्रशिक्षण देना चाहते हैं, तब अकेले छह–सप्ताहों के सत्र के पश्चात्, समूह 36 (मूल शिक्षक को जोड़कर) तक बढ़ जायेगा । अधिकांश घर लोगों की इस संख्या को ग्रहण कर सकते हैं । बहुत सारे ''केवल–कथा'' हाथों में उपयोग के साथ प्रशिक्षण छोटे समूहों में किए गये हैं । अतः चार–चार लोगों के ये समूह अन्य कमरों में फैल सकते हैं या कभी बाहर मिल सकते हैं ।

''केवल कथा'' में नये प्रशिक्षित लोग उनकी संख्या को और शिक्षकों को बनाकर निरंतर बढ़ा सकते हैं । वे घरेलू समूह प्रारंभ कर सकते हैं, वे संभवतः उनके बाईबल कथावाचन/शिक्षण कौशलों को सुसमाचार प्रचार के लिए उपयोग कर सकते हैं, या संभवतः साधारणतः प्रभु के करीब आने में बढ़ सकते हैं । हम इन सभी दिशाओं को अद्भुत रूप में देखते हैं । क्योंकि केवल–कथा कौशल लोगों को सुसज्जित करते हैं कि बहुत प्रभावी ढंग से पवित्र शास्त्र को सीखें, और बाँटें, उनके जीवनों को, और उनके जीवनों को जिन्हें वे कथा सुनाते व सिखाते हैं, परमेश्वर की महिमा के लिए प्रभावी होंगे।

यदि प्रशिक्षितों की एक बहुसंख्या दूसरों को प्रशिक्षण देने जाती हैं, दो वर्षों में वह प्रथम घरेलू कार्यशाला जो एक शिक्षक द्वारा अगुवाई की गई 6,000 से ऊपर लोगों पर प्रभाव डाल सकती है ! यह एक स्वाभाविक, करने योग्य आदर्श है शिष्यता एवं विश्वसनीयता मंत्रणा का । चूंकि ''केवल कथा'' विचार परमश्वेर के वचन ध्यानपूर्वक सुनने के आसपास केन्द्रित रहता है, और व्यक्तिगत प्रयुक्ति को बनाने के, हम देख सकते हैं कि क्यूँ प्रभाव एवं गुणन बहुत बड़ा है ।

7. **शिष्यता–गुणनक्रिया** : लोग एसटीएस कार्यशालाओं मे से एक कथा अभ्यासकर्त्ता के रूप में जाते है ं सुसज्जित कि उनके कौशलों नये कौशलों को एक पर एक या समूहों में उपयोग किया जाये । विभिन्न साधन एवं पाठ्यपुस्तकों की सूची ,जैसे अभ्यास कर्त्ता मार्ग दर्शिका दिखाती है कि कैसे कौशलों को बनाना जारी रखें जब कथाओं के साथ सेवकाई कर रहे है। सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह जानकारी मार्गदर्शन देती है कि एस टी एस कैसे करें की छोटी मात्रा को हजारो के हाथ सौंपे जिन्हे आप पढ़ाते है –जब सेवकाई कर रहे हैं।

(वेबसाइट पर उच्च संबंध (टॉपलिंकस) ''प्रशिक्षण जानकारी''(ट्रेनिंग इंफो) और ''संसाधन'' (रिसोर्सेस) उपलब्ध विभिन्न चुनावों को पहुॅचाते है।)

8. छोटी पुस्तक : तीन तहों मे मुडी हुई जिसमें वर्णन गवाहियॉ और एसटीएस तथा परमेश्वर की कथा को बॉटने के तरीके हैं। अन्य छोटी पुस्तकों के लिए कहें जो विशेष शीर्षकों और स्थानों पर एसटीएस को उपयोग करने पर है।

9. अभ्यासकर्त्ता श्रव्य प्रशिक्षण । गहराई में एस टी एस बाइबल कथा तैयारी अनुभव,पारस्परिक समूह चर्चा के लिए बनाया गया है। समूह 2 से 6 घंटे चर्चा करने और खोजने मे व्ययतीत करते हैं एम पी 3,सी.डी.और सौर ऊर्जा प्लेयर्स पर उपलब्ध विभिन्न भाषाओं में।

10. बाइबल की पारस्परिक खोज : अलंकारिक व समूह प्रश्नों के साथ बाइबल कथायें । शालाओ कक्षाओं ओर गृह समूहों के लिए अपयोगी। विश्वासी ओर खोजी हृदय से भाग लेते है। औसत समय 60 से 90 मिनिट,डीवीडी और श्रव्य विभभिन्न भाषाओं में।

11. **सिम्पलीदस्टोरी.ओर्ग (SimplyTheStory.org)** प्रस्तूत करती है एसटीएस के बारे में जानकारी लिखित,श्रव्य एवं दृश्य रूप में । देखे विवरण,एसटीएस इसके प्रारंभ बारबार पूछे जाने वाले प्रश्न क्षमा योग्यतायें उतारेजा सकने योग्य संसाधन,संसार भर में उपयोग की गवाहियॉ आनेवाले प्रशिक्षण मौखिक बाइबल शालायें,नमूना कथायें, ओर भी अधिक । 3 मिनिट के वीडियो,क्या ओर क्यू का उपयोग, कलीसियों में करें कि अल्प कालीन मिशन यात्राओं के लिए एस टी एस प्रशिक्षण का दर्शन दूसरों को दें संसाधन ओर लेख निरंतरता से एस टी एस वेबसाइट पर जोड़े जाते है।

12. **जीवंत अभ्यास व सलाहें देना** : प्रत्यक्ष स्काइप कथा अभ्यास सत्रों तथा एसटीएस विस्तार कक्षाओं द्वारा मंत्रणा में सम्मिलित होने का विचार करें।

13. **श्रव्य हस्पुस्तिका** : रिकार्डेड सीडी एसटीएस हस्पुस्तिका की उपलब्ध है। एसटीएस प्रशिक्षण पर डीवीडी के लिए देंखे ।

14. **ट्विटर** : एसटीएस का अनुकरण करें (http:/www.twitter.com/simply the story)

15. **आतिथ्य करना** : यदि आप जानना चाहते हैं कि एक कार्यशाला करने में क्या लगेगा, कृपया अपने नजदीकी राष्ट्रीय निर्देशक से संपर्क करें जो इस हस्तपुस्तिका के अंत में सूचीगत हैं। एसटीएस वेबसाइट पर जायें और ''होस्टिंग'' (hosting) को खोजे कि सभी मार्गदर्शनों को प्राप्त करे सकें।

परिशिष्ट अ : शिक्षण पुनरावलोकन फार्म

कथावाचक.....शिक्षक.....दिनांक.....

केवल कथा प्रक्रियाओं का विवरण केवल–कथा लेखपत्र में हैं । शिक्षण पुनरावलोकन के लिए अपनी कथा प्रस्तुति को प्रारंभ करने के पूर्व, यह स्मरण रखें : कोई बात नहीं कि आपकी कार्यशाला के साथी, कितने भी शिक्षित हों, आपको अपनी कथा को ऐसे प्रस्तुत करना है जैसे सुनने वाले श्रोतागण मौखिक व्यवहार करने वाले हैं और वे केवल उस कथा के विषय वस्तु को जानते हैं जिसे आप प्रस्तुत कर रहें है (एवं अन्य कथाओं के विषय वस्तु जिसे उन्हें वर्तमान प्रशिक्षण के दौरान बताया गया है ।)

एक स्मरणार्थ के रूप में, कथावाचक.....

1) परिचय में अतिरिक्त–बाईबल संबंधित जानकारी का उपयोग नहीं करेंगे ।
2) केवल यदि आवश्यकता है तो एक छोटी कथा–पूर्व भूमिका देंगे ।
3) बाईबल कथा की अचूकता को बनाये रहेंगे, किसी जानकारी को न जोड़ने व छोड़ने द्वारा ।
4) एक बाइबल कथा में रहेंगे, समानांतर पाठों से जानकारी को नहीं मिलायेंगे ।
5) उन श्रोताओं को विचार करने योग्य, उत्साहित करने वाले उत्तर देंगे जो स्वयं सेवक के रूप में उत्तर देते हैं एवं जो प्रश्नों के उत्तरों को देते हैं ।
6) उत्तर देने वालों के विशेष प्रश्नों के उत्तर देने में स्वेच्छानुरूप लचीलेपन को दिखायेगें ।
7) एक रुचिकर अगुवाई देंगे जो कथा द्वारा शीघ्रता से चलेगी जिसमें श्रोताओं को सम्मिलित करने की विभिन्न शैलियों को उपयोग करेंगे ।
8) कथा में प्रश्नों की एक शैली द्वारा अवलोकनों तक अगुवाई करेंगे जिसके प्रति एक मौखिक सीखने वाला उत्तर दे सकता है ।
9) उन प्रश्नों को पूछने द्वारा आत्मिक प्रयुक्तियों को बाँटेगा जिसके प्रति एक मौखिक सीखने वाला उत्तर दे सकता है ।
10) प्रचार नहीं !
11) कथा को एक पसंदीदा व्यक्तिगत विषय को पढ़ाने में एक कूदने के तख्ते के जैसे उपयोग न करें । इसके बजाय..... वे पवित्र शास्त्र द्वारा सत्य को बताने में परमेश्वर के कौशल पर भरोसा करें, और वे कथा को इसके संदेश को कहने देंगे।
12) केवल कथा प्रस्तुति के 5 अलग भागों को परिभाषित तथा प्रदर्शित करने में योग्य हों ।

उपरोक्त मुख्य श्रेणियों में दरें केवल यह समझ को प्रतिबिंबित करती है कि कथावाचक ने केवल कथा के 5 भागों को प्रदर्शित किया है । ऊपर कोई भी श्रेणी जो छोड़ दी गई हो या स्पष्टतः से प्रस्तुत नहीं की गई एक ''अ.व.न.'' दर को रखेगी (अभी वहाँ नहीं) । अथवा यह होगी एक (प्राप्त किया) के लिए ''प्रा.कि.'' ।

प्रशिक्षक श्रेणी–तालिका कथावाचक का नाम	दिनांक	कथा शीर्षक	संदर्भ	1. कथा	2.दुहराना	3. द्वारा अगुवाई	4. अवलोकन	5. प्रयुक्तियाँ

परिपूर्ण संस्तुति/सिफारिशें	

कुछ शिक्षण श्रेणियों हेतु टिप्पणियाँ प्रशंसा के साथ शिक्षक द्वारा भरी जा सकती है जब कुछ अलौकिक रूप से अच्छा किया गया । कुछ टिप्पणियाँ कुछ क्षेत्रों के बारे में सुझाव हो सकते हैं जिनमें अधिक अभ्यास की आवश्यकता हो । कई शीर्षकों के सामने कुछ भी नहीं लिखा होगा यदि वह भाग ठीक हुआ है । जाँच सूची शिक्षक को स्मरण रखने में सहायता करती है कि पश्चात् क्या कहा जायें अतः संपूर्ण केवल–कथा प्रस्तुति का बहाव एक बार में ही बिना रूकावट के किया जा सकता है । यदि ये सहायता करेगा, कथाओं को पुनः प्रारंभ किया जा सकता है जब एक घबराया हुआ कथावाचक चूक जाता है ।

कथा प्रस्तुतीकरण का शिक्षण पुनरावलोकन 3 समयों के लिए

	कथा, टिप्पणियाँ
1. परिचय	
2. अचूकता	
3. सुनने की रूचि	
4. कथा में रहना	
5. कथा अनुभव	
6. कार्य	
	स्वयंसेवक, टिप्पणियाँ
1. तत्पर स्वयंसेवक	
2. उत्साहवर्द्धन	
3. स्वयंसेवक का सुधार	
	अगुवाई द्वारा, टिप्पणियाँ
1. तत्परता से पूर्ण	
2. भिन्न शैलियाँ (3)	
3. भागीदारी	
4. अचूकता	
	2 प्रकार के आत्मिक खजानों के लिए शिक्षण पुनरावलोकन **आत्मिक अवलोकन, टिप्पणियाँ**
1. कुंजी शब्दों का प्रयोग	2 प्रकार के आत्मिक खजानों के लिए शिक्षण पुनरावलोकन

2. मौखिक शैली प्रश्न	
3. कुंजीरूप में भाव–भंगिमायें	
4. सप्रमाण अवलोकन	
5. चौतरफा चर्चा	
6. समूह पारस्पारिक संबंध–कार्य	
7. अच्छे पारस्परिक बदलाव	
8. दृढ़ वचन/प्रमाणीकरण	
9. कथा में उत्तर	
10. खजानों तक अगुवाई	
11. ठीक से सुना	
12. अब कथा को पढ़ाने दें	
	आत्मिक प्रयुक्तियाँ, टिप्पणियाँ
1.मौखिक शैली प्रश्न	
2. कुंजी रूप में भाव भंगिमायें	
3. सप्रमाण प्रयुक्तियाँ	
4. चौतरफा चर्चा	
5. समूह पारस्परिक संबंध कार्य	
6. अच्छे परस्परिक बदलाव	
7. प्रमाणीकरण	
8. कथा में प्रयुक्तियाँ हैं	
9. प्रयुक्तियाँ तक पहुँचाये या बताये	
10. प्राप्त करने योग्य उत्तर	
11. प्रचार करना टाला गया	

समूह का परिपूर्ण संचालन

1. समस्या प्रबंध	
2. कथा के बाहर के किन्हीं प्रश्नों का उत्तर	
3. समूह विवरण ।	

परिशिष्ट ब : नमूना कथा द्वारा यात्रा

कैसे प्रश्नों को तैयार करें

जक्कई, लूका 19:1–10

जैसा इस अध्याय का शीर्षक इशारा करता है,अब हम जा रहे हैं को यात्रा करें एक अन्य नमूना कथा द्वारा । हमने जक्कई की कथा को चुना है। इस कथा को चुना गया,आंशिक रूप में क्योंकि जक्कई को अक्सर देखाजाता है बच्चों के लिए एक सरल कथा के रूप में देखा जाता है यह है –परंतु यह गहरी भी है।

इस कथा को अक्सर इस प्रकार कहा जाता है ''एक नाटा व्यक्ति जिसका नाम जक्कई या यीशु को देखना चाहता था, अतः तह एक पेड़ पर चढ़ गया ताकि वह भीड़ के ऊपर से देख सके। कथा में की भीड़ इस व्यक्ति को पसंद नही करती थी क्योंकि वह एक चुंगी लेने वाला था,परंतु यीशु को पसंद नही करती थी क्योंकि वह एक चुगी लेने वाला था, परंतु यीशु इस नाटे व्यक्ति को ध्यान देते है ओर इस व्यक्ति के घर भोजन के लिए आते हैं। जक्कई प्रसन्न है और अपनी संपत्ति का आधा कंगाल लोगो को दे देता है,और हमें जक्कई के समान होना चाहिए।''

यद्यपि वह जानकारी जो अभी बताई गई इस कथा के अंदर है–वहॉ बहुत,बहुत अधिक है कि पाया जाये । जैसा हम कथा में एसटीएस शैली से जाते है,कथा के राहरे में से कई अनावृत होंगे।

जैसा हम जक्कई की कथा को छान बीन करते हैं ,हम एसटीएस की प्रक्रिया को बताने में एक अलग शैली का उपयोग करेंगे,ओर हम एसटीएस केवल एक भाग पर एकाग्र होंगे–प्रश्नों को बनाने में।

वहॉ प्रश्नों के लिखित स्वरूप होंगे जो प्रतिनिधित्व करता है जो सामान्यतः आपके विचारों में किया जाता है । चूकि हम आपके साथ प्रत्यक्ष रूप से नही हैं,कि तैयारी के बारे में बात करें,हमने मानसिक प्रक्रिया को आपको देने के लिए दूसरा सबसे श्रेष्ठ तरीके को चुना –हमने इसे लिखा।

बाइबल कथा की यह तैयारी एक विशेष प्रगति है खजानों को ढूंढने की और उन खजानों से प्रश्नों को बनाने की । जब आप इसे अपने मन में करते हैं कथा आपका संक्षिप्त लेख हो जाती हैं। कथा एक कपड़ा टांगने की रस्सी के समान है।जैसे आप अपने मन में कपड़े टॉगने की रस्सी के पास पास धीरे चलते हैं आप अपने खजानों और प्रश्नों का आपकी रस्सी पर टांगते जाते हैं।

वास्तव में कुछ लोगों के लिए यह वह अध्याय है जहॉ उन्होंने कैसे प्रश्नों को बनाये के बारे में शुद्धता हासिल की है।

पहली बार,जब आप जक्कई की कथा स्वयं से छान बीन करते हैं, आप शायद उतने खजानों को नहीं पायेंगे जितना हम यहां पस्तूत करतें हैं। ध्यान दें कि हमने इस कथा को संसार भर में कई स्थानों में पढाया है, उन समयें के दौरान,हमने इस कथा से इस दुसरों के साथ चर्चा करने द्वारा बहुत सीखा है। यह जानकारी जो हमने अधिक समय में संचित की है,हमें सक्षम करती है कि उन खजानों में से बहुत सा अब आपके साथ बॉटे। वास्तविकता में,आप कई दूसरों से जानकारी बटोंगे, जो एस टी एस में समूह अंशदान से होता है।

जैसा आप कथाओं को निरन्तर तैयार और प्रस्तूत एस टी एस शैली में करते हैं, आप भी अधिक और अधिक खजानों को अनावृत (खोजे) करेंगे। परमेश्वर का वचन उस प्रकार है। आप इसके सत्यों की सामग्री को कभी नहीं थका पायेंगे।

यह अध्याय बनाया गया है जैसा आगे हैः जब आप जक्काई की कथा को पढ़ और सीख लेंगे तब,हम आपको दिखायेंगे कथा में के आत्मिक खजानों को कैसे खोंजे ओर तब प्रश्नों को बनाये कि दूसरों को उन खजानों तक पहुॅचाने में मदद हो।
आप संभवतः नहीं देखेंगे,या सहमत नहीं होंगे आत्मिक अवलोकनों में से कुछ के साथ हो हम सुझाते हैं । असामान्य नही है इसे एक समस्या न समझा जाये जब आप दूसरों को पढ़ाने में एसटीएस शैली का अपयोंग करते हैं,आप उसी को बॉटेगे जिस आप व्यक्तिगत, स्पष्टता से कथा में देखते हैं।

कुछ विचार जो हम प्रस्तूत करते हैं संभवतः केवल यह होगा–चर्चा के लिए विचार जैसा विचार समूह में चर्चा किए जाते है बहुधा परमेश्वर दूसरों के द्वारा बोलता है ,और उस पवित्र शस्त्र भाग के अंदर एक नई समझ प्रकाश में आती है।

हम जानते है की प्रश्नों को विकसित करना कि दूसरों को खोज करने में अगुवाई करें एसटीएस के सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण भागों में से एक है। हम आशा करते है कि यहॉ जो दुहराव है वह आपको मदद करेगा कि आप इस नये कौशल के साथ अधिक सुखी बन जायें।

जब आप वास्तव में इस कथा को पढ़ाते है,समय की कभी या अन्य कारणों के कारण आप शायद केवल इनमें से कुछ ही खजानों को एक समय में प्रस्तुत कर सकते हैं।

आइये अब प्रारंभ करें :

इस अभ्यास के लिए संस्तुति (सिफारिश) की जाती है, कि आप पहले इस दस आयतों की कथा को ''केवल कथा'' शैली में सीखें । (कथा का पाठ नीचे पाया जा सकता है)

ठीक वैसे जैसा ''केवल कथा'' हस्तपुस्तिका वर्णित करती है कैसे एक कथा को सीखें :

1. इस दस पदों की कथा को एक बार पूरा पढ़े, **तेज आवाज में** ।
2. जैसा आप इसे पढ़ते हैं, **इसे अपने प्राकृतिक बोलचाल के शब्दों में बोले**। उदाहरणार्थ, ''कर वसूल करने वाला'', की बजाय ''चुंगी लेने वाला'' कह सकते हैं ।
3. अपने मन की आँखों में देखें कि कथा में क्या घटित हो रहा है ।
4. अपने पढ़ने को पूर्ण करने के तुरन्त बाद, **अपनी आँखों को बंद करें** और दुहराये जितना आप स्मरण कर सकते हैं कथा में । आप सही कथा को स्मरण करने का प्रयास कर रहे हैं, कथा में । आप सही कथा को स्मरण करने का प्रयास कर रहें हैं, न की सही शब्दों ।
5. तब वापस जायें और इसे फिर से एक बार **तेज आवाज** में पढ़ें । आप को पता चलेगा उन भागों को जो आपने छोड़ दिये थे ।
6. अपनी आँखों को बंद करें और कथा को **तेज आवाज** में पुनः दुहराये ।

अक्सर इस प्रकार से कथा को लगभग चार बार पढ़ने व दुहराने के पश्चात्, आप ध्यान करेंगे कि आप संपूर्ण कथा को सुनाने में सक्षम है ! यदि चार से छह बार करने के पश्चात् भी, आप अभी भी कथा के विषयों को स्मरण करने में संघर्ष कर रहें हैं, तो वहाँ एक मजबूत संभावना है कि आपने ''केवल कथा'' नुस्खे को बदला है । इसलिए हम सिफारिश करते हैं कि आप उपरोक्त 1–6 का पुनरावलोकन करें और इस जक्कई की कथा को सीखने का प्रयास पुनः करें, ''केवल कथा'' शैली में । इस बार आप लिखित कथा का एक अंश भी न छोड़े जब आप कथा को दुहराते हैं, और स्मरण रखें–तेज आवाज में पढ़े और दुहराये – तेज आवाज में !

वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था । वहाँ जक्कई नामक एक मनुष्य था जो चुंगी लेने वालों का सरदार था और धनी था ।वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है । परंतु भीड़ के कारण देख न सकता था, क्योंकि वह नाटा था । तब उसको देखने के लिए वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि यीशु मार्ग से जाने वाला था । जब यीशु उस जगह पहुँचा, तो ऊपर दृष्टि करके उससे कहा, ''हे जक्कई, झट उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य हैं ।''वह तुरन्त उतरकर आनंद से उसे अपने घर ले गया । यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है ।''जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, ''हे प्रभु देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूँ ।'' तब यीशु ने उससे

कहा, आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिए कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है । क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है ।'' **लूका 19:1–10**

कृपा कर सावधानीपूर्वक ध्यान दें :

अपनी कथा को तैयार करने के बाद, आप संभवतः पायें कि आप सक्षम नहीं है कि उन सभी विचारों की प्रमाणिकता को प्रमाणित करें जिन्हें आपने अपनी कथा की तैयारी पाया है । जब पढ़ाने का समय आता है,उन अप्रमाणित विचारों को दूसरों को पढ़ाने में उपयोग न किया जायें उन विचारों को एक ओर रख दें संभवतःकि अन्यसमय उपयोग किये जायें जब आप एक अलग कथा को तैयार करते हैं आप पायेंगे कि कई समयों पर जैसा आप अपनी कथा प्रस्तूत कर रहे हैं और प्रश्नों को पूछ रहे हैं परमेश्वर आपसे कुछ जोड़े गये सत्यों दूसरों के उत्तरों द्वारा बोलेगा। उस समय पर आपके पूर्व विचार संभवतः सत्य के रूप में प्रमाणित होंगे।

और आगें पढ़ने के पहले हम सुझाव देते हैं कि आप कुछ समय जक्कई की कथा द्वारा विचार में व्यतीत करें कि देखे क्या आत्मिक खजाने आप अनाकृत / खोज कर सकते हैं। यह अभ्यास आपकों एक अवसर देगा कि अपने कौश्लों का अभ्यास अपको एक अवसर देगा कि अपने कोशलों काक अभ्यास करें और तब ,आपके मन में ताजी कथा के साथ, आप अपने अवलोकनों की तुलना हमारे अवलोकनों से कर सकते है।

आप शायद कुछ खजानों को पा सकते है। जिस हमने जिक्र नही यिका हैं। इसी तरह से हमने कुछ पाये होंगे जो आपने ध्यान नही दिए हो अपने खजानों की खोज का आंनद लें।

आत्मिक अवलोकन जिन्हें हम ध्यान करते हैं.....

1. लोग जो यीशु में रुचि दिखाई देते हैं वे जक्कई को यीशु के पास आने में अवरोध कर रहें है ।
2. यह व्यक्ति जक्कई कद में छोटा हैं, परंतु पद में बड़ा है । वह एक धनी व्यक्ति है और प्रधान चुंगी लेने वाला है, परंतु वह यीशु को देखने के लिए उत्सुक है, कि जब सरल तरीके से काम न बना, वह उद्देश्यपूर्ण उसके तरीके से दूसरे तरीके को चुनता है ।
3. इस संभावना कि लोग इस महत्वपूर्ण व्यक्ति को उसके सड़क पर जनता के समक्ष दौड़ने और पेड़ पर चढ़ने के कार्य का उपहास करेंगे, जक्कई को उन कार्यों को करने से नहीं रोकते हैं ।
4. हम देखते हैं कि यीशु उसके आसपास की भीड़ की धक्का मुक्की के बीच रास्ते से चल रहा है । यद्यपि सभी लोग यीशु के विपरीत धक्का दे रहे हैं, वह सभी को पूर्णतः किनारे कर देता है, और

ध्यान देने का चुनाव करता है केवल एक व्यक्ति पर जो उसके पास तक भी नहीं था, और यह व्यक्ति एक पेड़ पर है ।

5. यीशु जक्कई को नाम लेकर बुलाते हैं, जो उसके उस व्यक्ति में व्यक्तिगत रुचि को दर्शाता है ।

6. यीशु स्वयं को जक्कई के घर नियंत्रित करते हैं, जो कि अधिकांश संस्कृतियों में दुःसाहस का प्रकार है । यह यीशु के ज्ञान व भरोसे को दर्शाता है कि क्या ''अवश्य'' होगा ।

7. जब एक व्यक्ति ऊपर देखता है, विशेषकर एक अगुवा जिसका लोग अनुसरण कर रहें हैं, लोग भी साथ में अपनी आँखें ऊपर को देखने को करेंगे कि अगुवा किसे देख रहा है । अतः यह केवल यीशु जक्कई को नहीं देख रहा है, सब लोग जक्कई को देख रहें हैं । जक्कई ''खोजे जाने'' पर घबराहट या शर्मिन्दगी को नहीं दर्शाता है । वास्तव में वह आनंद दर्शाता है ।

8. जक्कई यीशु के बुलावे के प्रति उचित रूप से उत्तर देने में हिचकिचाता नहीं है। वह शीघ्रता करता है ।

9. भीड़ जक्कई के विरोध में बोलती है, स्वयं के मध्य कुड़कुड़ाने के द्वारा यीशु के बारे में कि कैसे ''वह एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है।''

''जा उतरा'' संकेत कर सकता है कि यीशु बस अभी जा रहा है या वह चला गया है । ठीक–ठीक रुप से कब जक्कई व यीशु ने जाना कि लोग यीशु के जक्कई के घर जाने की आलोचना कर रहें हैं स्पष्ट नहीं है । परंतु कथा में बाद में, यीशु जक्कई के समक्ष भीड़ को जो बोलते हैं उसके द्वारा, हम देखते हैं कि दोनों जक्कई और यीशु उनकी आलोचना के बारे में जानते थे । परंतु जक्कई ने भीड़ की आलोचना से स्वयं को प्रभावित नहीं होने दिया और अभी भी यीशु उसके घर में है ।

10. भीड़ की आलोचना कहने के द्वारा कि यीशु, एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है,'' मैं देखता हूँ कि भीड़ सोच रही है कि वे पापी **नहीं** हैं।

11. भीड़ ऐसा दर्शा रही है, मानों वे यीशु के ''अनुयायी'' हैं । वे साथ में चले, यीशु के विपरीत दबाव देकर । यद्यपि उनका कुडकुड़ाना सूचति करता है कि वे इस बारे में देखभाल करते हैं कि यीशु किसके साथ खाता है, यह इसके समान प्रतीत होता है कि वे इशारा कर रहे हैं कि उनके घरों में से एक सही चुनाव होगा । वास्तव में, भीड़ यीशु के द्वारा भेंट को जाने के घरों के उसके चुनाव में उसके साथ असहमत होने द्वारा यीशु के प्रति पूर्ण अनादर को दर्शा रही है ।

12. इस निर्णय करने वाली भीड़ के अपने ही विश्वास हैं, परंतु ऐसे दिखाई नहीं देती कि यीशु के मुँह पर प्रश्न करने को साहसी हो । इसके बजाय वे स्वयं ही आपस में यीशु के प्रति अपनी आलोचना को कुड़कुड़ाते हैं ।

13. जक्कई, एक धनी व्यक्ति, अपने हृदय को प्रदर्शित करता है जब वह अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देने की बात कहता है ।

14. जक्कई घोषणा करता है कि यदि उसने किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है, तो वह चाहता है कि उसे चौगुना फेर दे । जक्कई नहीं कहता ''यदि'' वह कानून द्वारा दोषी पाया जायें तो उसे चार गुना फेर देना है । जक्कई यह करने का संकल्प अपनी स्वतंत्र इच्छा से करता है ।

कोई संभवतः सुझाव देगा कि जक्कई पहले से ही कंगालों को अपना धन दे रहा है, परंतु भीड़ का विचार हमें अलग प्रकार दर्शाता है । यदि वह ऐसा चुंगी लेने वाला था जिसने अपना आधा धन कंगालों को दे दिया, संभवतः वह पहले भी ऐसा गुप्त रुप से कर रहा होगा । परंतु चौगुना फेर देना उन्हें जो संभवतः अन्यायपूर्ण ढंग से लिया गया जक्कई को भीड़ की नज़रों में एक धार्मिक व्यक्ति की श्रेणी में रखता है । जो हम कथा से जानते हैं वह यह है कि, उपकथा के किसी बिन्दु पर, जक्कई अंगीकार/स्वीकार करता है कि वह एक पापी था और वस्तुओं को ठीक करना चाहता है । यीशु ने कहा था कि परिवर्तन उसी दिन हुआ । हम यह भी देखते है कि जक्कई ने अद्‌भुत दयालुता दिखाई ।

15. पहले यह समझा जा सकता है कि जक्कई संभवतः अपने तरीके से यीशु द्वारा ग्रहण किए जाने को खरीदने का प्रयास कर रहा है, ईश्वर तक अपने मार्ग को खरीदने का एक प्रकार । परंतु हम जानते है कि जक्कई उस दिन यीशु पर विश्वास लाता है क्योंकि यीशु उससे कहते हैं, ''आज इस घर में उद्धार आया है।'' कथा में जक्कई ही अकेला व्यक्ति है जो स्वीकार करता है कि वह पापी है और कथा में केवल वही अकेला है जो उद्धार प्राप्त करता है ।

16. कथा में, यीशु जक्कई से सीधे कहते हैं, ''आज इस घर में उद्धार आया है।'' तब यीशु बोलना जारी रखते हैं और कहते हैं, ''कि इसलिए कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है।'' इससे हम यह देखते हैं कि जक्कई के अलावा भी अन्य वहाँ उपस्थित थे । साथ ही, जो यीशु कहते हैं उसके द्वारा हम देखते हैं कि वह उसे परिवर्तित कर रहा है जिससे वह बोल रहा है और यीशु जक्कई को इन लोगों से बचा रहा है ।

17. यीशु का कथन कि उसके आने का उद्‌देश्य है कि ''खोये हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है,'' एक सारांश कथन है जो साथ ही जक्कई के प्रति आदर है और भीड़ के प्रति एक आलोचना जैसा ध्वनित होता है ।

18. कथा में पहले यह अवश्य है कि जक्कई यीशु को ढूँढ़ रहा है । तब कथा के भागों के द्वारा यह एक कथा बनती है कि यीशु जक्कई को ढूँढ़ रहे हैं !

अवलोकन प्रश्नों को रचना :

अब अभ्यास हेतु, हम दिखायेंगे कि इन सूचीबद्ध प्रत्येक अवलोकनों तक दूसरों की अगुवाई करने के लिए कैसे प्रश्नों की रचना करें । आप देखेंगे कि कई समयों पर हम एक अवलोकन के प्रति श्रोताओं का ध्यान खींचने के लिए संभवतः कई प्रश्नों का उपयोग कर सकते हैं ।

चूंकि प्रत्येक प्रश्न श्रोताओं को आत्मिक अवलोकनों तक पहुँचाने हेतु रचा गया है, एक सहायता के रूप में हम अवलोकनों को पुनः सूचीबद्ध करते हैं ''आ.अ.'' आत्मिक अवलोकन के रूप में । तब प्रश्न या प्रश्नों को जो हमें उस अवलोकन तक पहुँचायेंगे उन्हें ''आ.अ.प्र.'' ''आत्मिक अवलोकन प्रश्न'' के रूप में लिखा गया है ।

1. **आ.अ. –**

लोग जो यीशु रुचि रखते दिखाई देते हैं वे जक्कई को यीशु के पास आने में अवरोध कर रहें हैं ।

आ.अ.प्र.–

– इस कथा में हमने देखा कि जक्कई यीशु को देखना चाहता था, परंतु वह यीशु के समीप नहीं आ सका । इस सत्य के अलावा कि जक्कई नाटा था, हम कथा में देखते है कि लोग जक्कई के रास्ते में आ गये । लोग क्या कर रहे थे कि जिसने जक्कई का अवरोध किया ?

– तो क्या आप कह रहे हैं कि लोग यीशु के समीप होना चाहते थे ? जिसने एक खोजी को यीशु को देखने से रोका ।

– आप इसके बारे में क्या सोचते हैं ?

2. **आ.अ. –**

यह व्यक्ति जक्कई कद में छोटा था, परंतु पद में बड़ा था । वह धनी व्यक्ति है और प्रधान चुंगी लेने वाला है, वह यीशु को देखने के लिए इतना उत्सुक था कि जब सरल तरीके ने काम नहीं किया, उसने अपने तरीके से हटकर उद्देश्यपूर्ण चुनाव किया ।

आ.अ.प्र. –

– जक्कई का समाज में सामाजिक, व्यापारिक तथा आर्थिक पद का वर्णन करें ।

– इसलिए, जक्कई अपनी संपत्ति के कुछ भाग को उपयोग करता है और कुछ बदमाशों को किराये पर लेता है कि भीड़ के बीच एक रास्ता बनाये, सही हैं ? नहीं ?

– ठीक है तब मुझे पूछने दें । जब यह महत्वपूर्ण व्यक्ति एक सामान्य या सरल तरीके से यीशु को देखने में सक्षम न हो पाया, जक्कई कितनी अति तक जाता है ?

3. **आ.अ. –**

संभावना कि लोग इस महत्वपूर्ण व्यक्ति को उसके सड़क पर जनता के समक्ष दौड़ने और पेड़ पर चढ़ने के कार्य का उपहास करेंगे, जक्कई को उन कार्यों को करने से नहीं रोक सके ।

आ.अ.प्र.–

– क्या हम कथा में देखते हैं कि उस क्षेत्र के लोग जक्कई के प्रति क्या विचारते रखते थे ?

– जक्कई एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है और वह जानता है कि लोग उसे एक अयोग्य व्यक्ति समझते हैं । यीशु को देखने के लिए जनता में सड़क पर दौड़ने और एक पेड़ पर चढने द्वारा वह क्या व्यक्तिगत संकट को लेता है ?

4. आ.अ.–

हम देखते हैं कि यीशु उसके आसपास की भीड़ की धक्का–मुक्की के बीच रास्ते से चल रहा है । यद्यपि सभी लोग यीशु के विपरीत धक्का दे रहे हैं, वह सभी को किनारे कर देता है, और ध्यान देने का चुनाव करता है केवल एक व्यक्ति पर जो उसके समीप भी नहीं था, और यह व्यक्ति एक पेड़ पर है ।

आ.अ.प्र –

– जब यीशु एक भीड़ से भरे रास्ते पर चल रहा था, भीड़ में से कौन से लोगों को वह प्रति उत्तर दे रहा है ?

– यीशु का व्यवहार हमें संभवतः क्या दर्शाता है ?

5. आ.अ.–

यीशु जक्कई को नाम लेकर बुलाते हैं, जो उसके इस व्यक्ति में व्यक्तिगत रूचि को दर्शाता है ।

आ.अ.प्र.–

यीशु ने जो जक्कई से कहा क्या उसमें कुछ भी ऐसा है जो उसके प्रति व्यक्तिगत रूचि को दर्शाता है ?

6. आ.अ –

यीशु ने स्वयं को जक्कई के घर निमंत्रित किया, जो अधिकांश संस्कृतियों में दुःसाहस का एक प्रकार है । यह यीशु के ज्ञान व भरोसे को दर्शाता है कि क्या ''अवश्य'' होगा ।

आ.अ.प्र –

– वार्तालाप में कौन आगे हैं और यह निमंत्रण कैसे एक असामान्य प्रकार का है ?

7. आ.अ.–

जब एक व्यक्ति ऊपर देखता है, विशेषकर एक अगुवा जिसका लोग अनुसरण कर रहें है, लोग भी साथ में अपनी नजरें ऊपर देखने को उठायेंगे कि अगुवा किसे देख रहा है, इसलिए केवल यीशु ही जक्कई को नहीं देख रहे हैं, परंतु सब लोग जक्कई को देख रहे हैं ।

आ.अ.प्र.–

– क्या आप कभी लोगों के एक समूह में रहे हैं औरउनमें से एक ऊपर देखता है और किसी वस्तु पर टकटकी लगाता है ?

– तब समूह के बाकी लोग क्या करते हैं ?

– कथा से क्या हम जानते हैं कि यदि यीशु के अलावा किसी अन्य ने जक्कई को

पेड़ पर देखा था ? कैसे ?

– तो यह व्यक्ति जक्कई एक बहुत शर्मिन्दगी की स्थिति में पकड़ा गया और प्रत्येक ने उसे **देखा**! कैसे संभवतः एक धनी और ताकतवर व्यक्ति महसूस करेगा उस क्षण में कि एक मूढ़ प्रकार के स्थान पर पाया जायें, जैसे एक पेड़ के ऊपर ?

– क्या जक्कई ने छिपने का प्रयास किया या बहाने बनाये ?

– क्या हम कथा से जान सकते हैं कि जक्कई ने कैसा महसूस किया ?

8. आ.अ.–

जक्कई यीशु के बुलावे के प्रति उचित रूप से उत्तर देने में हिचकिचाता नहीं है। वह शीघ्रता करता है ।

आ.अ.प्र.–

– जक्कई ने कैसे उत्तर दिया ? वास्तविकता में कैसे ?

9. आ.अ.–

भीड़ जक्कई के विरोध में बोलती है, स्वयं के मध्य कुड़कुड़ाने द्वारा यीशु के बारे में कि कैसे ''वह एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है।'' ''जा उतरा'' संकेत कर सकता है कि यीशु बस अभी जा रहा है या वह चला गया है । ठीक–ठीक रूप से जक्कई व यीशु ने कब जाना कि लोग यीशु के जक्कई के घर जाने की आलोचना कर रहे हैं, स्पष्ट नहीं है । परंतु कथा में बाद में, यीशु जक्कई के समक्ष जो भीड़ को बोलते हैं, उसके द्वारा, हम देखते हैं कि जक्कई व यीशु दोनों को ही उनकी आलोचना के बारे में पता नहीं था । परंतु जक्कई ने स्वयं को भीड़ की आलोचना से प्रभावित नहीं होने दिया और अभी भी यीशु उसके घर में है ।

आ.अ.प्र.–

– हम जानते हैं कि भीड़ स्वयं को जक्कई से बड़ा महसूस कर रही थी जैसा कि वे कुड़कुड़ा रहे थे । क्या जक्कई भीड़ के द्वारा प्रभावित हुआ था ?

– उसने उनकी आलोचना के प्रति क्या प्रतिक्रिया की ?

10. आ.अ.–

भीड़ द्वारा आलोचना कहने के द्वारा कि यीशु, ''एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है,'' मैं देखता हूँ कि भीड़ का विचार है कि वे पापी **नहीं** हैं ।

आ.अ.प्र.–

– भीड़ जक्कई के बारे क्या सोचती थी.....आत्मिक रुप से ?

– वे स्वयं के बारे क्या सोचते थे – आत्मिक रुप से ?

11. आ.अ.–

भीड़ ऐसा दर्शा रही है मानों वे यीशु के ''अनुयायी'' हैं । वे साथ में चले, यीशु के विपरीत दबाव देकर । यद्यपि उनका कुड़कुड़ाना दर्शाता है कि वे इस बारे में देखरेख करते हैं कि यीशु किसके साथ खाता है, यह इस समान प्रतीत होता है कि वे इशारा कर रहे हैं कि उनके घरों में से एक सही

चुनाव होगा । वास्तव में भीड़ यीशु के द्वारा भेंट को जाने के घरों में उसके चुनाव में उसके साथ असहमत होने के द्वारा यीशु के प्रति पूर्ण अनादर को दर्शा रही है ।

आ.अ.प्र.–

– कथा के प्रारंभ में क्या है जो हमें भीड़ के लिए विचार देता है कि वह यीशु के ''अनुयायी'' हैं ?

– वे साथ में चले यीशु के विपरीत दबाव देकर । उनकी शारीरिक क्रियाओं तथा उनकी प्रत्यक्ष रुचि जिनमें यीशु ने अपने व्यक्तिगत समय को व्यतीत किया, वे क्या संकेत दे रहे थे ?

– वास्तविकता में, वे यीशु को कैसा आदर दर्शा रहे थे ?

12. आ.अ.–

इस निर्णय करने वाली भीड़ के अपने ही विश्वास हैं, परंतु ऐसा नहीं दिखती कि यीशु के मुँह पर प्रश्न करने में साहसी हो । भीड़ को यीशु की सामर्थ के बारे में कुछ भी सोच नहीं हैं, ऐसा व्यवहार करती है जैसे वह उनकी शिकायतों को नहीं सुन पायेगा यदि वे आपस में ही धीरे से बातें करेंगे ।

आ.अ.प्र.–

– क्या आपको स्मरण है कि भीड़ शंकास्पद हो गई इसलिए उन्होंने यीशु से पूछा यह कैसे हो सकता है कि वह सभी को छोड़ दे जो उसके साथ रहना चाहते थे और एक पापी के घर चला जायें ? नहीं ? उन्होंने नहीं किया । उन्होंने क्या किया ?

– सो उनके व्यवहार ने क्या प्रदर्शित किया, उन्होंने यीशु को सच में आदर किया या नहीं ?

13. आ.अ.–

जक्कई, एक धनी व्यक्ति, अपने हृदय को प्रदर्शित करता है जब वह अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देने की बात कहता है ।

आ.अ.प्र.–

– जक्कई दयालुता का क्या संकल्प लेता है ?

– यह हमें उसके मूल्यों के बारे में क्या दर्शाता है ?

14. आ.अ.–

साथ ही, जक्कई घोषणा करता है कि यदि उसने किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है, तो वह चाहता है कि उसे चौगुना फेर दे । जक्कई नहीं कहता, यदि वह कानून द्वारा दोषी पाया जायें तो वह चार गुना फेर देगा । जक्कई यह करने का संकल्प अपनी स्वतंत्र इच्छा से करता है । कोई संभवतः सुझा सकता है कि जक्कई पहले ही से कंगालों को अपना धन दे रहा है, परंतु भीड़ का विचार हमें अलग प्रकार दर्शाता है ।

यदि वह एक चुंगी लेने वाला था जिसने अपना आधा धन कंगालों को दे दिया, संभवतः वह पहले भी गुप्त रूप से ऐसा कर रहा होगा । परंतु चौगुना फेर देना उन्हें जिनसे संभवतः अन्यायपूर्ण ढंग से लिया गया, जक्कई को भीड़ की नज़रों में एक धार्मिक व्यक्ति की श्रेणी में रखता है।

जो हम कथा से जानते हैं वह यह है कि, उपकथा के किसी बिन्दु पर जक्कई स्वीकार करता है, कि वह एक पापी था और वस्तुओं को ठीक करना चाहता है । यीशु ने कहा था कि परिवर्तन उसी दिन हुआ । हम यह भी देखते हैं कि जक्कई अदभुत उदारता दिखाता है ।

आ.अ.प्र.–

– क्या कथा में कुछ है जो संकेत करता है कि जक्कई कानून द्वारा एक चोर के रुप में पाया गया था कि वह कानून द्वारा अपराधी या दोषी पाया गया इसलिए वह समस्या से बाहर होने के लिए देने का प्रयास कर रहा है ?

– क्या हम कथा से सिद्ध कर सकते हैं कि यीशु से मिलने के पहले ही से जक्कई धन को वापस दे रहा था या क्या आप सोचते हैं कि उसने संभवतः यीशु से भेंट पर ऐसा करने का निर्णय किया ?

– क्या हम भीड़ के जक्कई के प्रति विचार द्वारा कह सकते हैं कि वह एक अविश्वसनीय ईमानदार चुंगी लेने वाला रहा था और पहले ही अपने धन का आधा भाग कंगालों को बाँट रहा था ?

– जक्कई के लिए इस कठिनाई का वर्णन करें कि वह उनके पास वापस जाये जिनको उसने गलत तरीके से आरोपित किया था, और उनसे धन लिया था, और धन को वापस करें ?

– हम इस कथा से कैसे देख सकते हैं कि यीशु के साथ सामना होने ने जक्कई के जीवन को बदल दिया ?

15. आ.अ. –

पहले यह समझा जा सकता है कि जक्कई संभवतः यीशु द्वारा उसे ग्रहण करने को खरीदने का एक प्रकार । ईश्वर तक पहुँचने के अपने मार्ग को खरीदने का एक प्रकार । परंतु हम, जानते हैं कि जक्कई उस दिन यीशु पर विश्वास लाता है क्योंकि यीशु उससे कहते हैं, ''आज इस घर में उद्धार आया है।'' कथा में जक्कई ही एकलौता व्यक्ति है जो स्वीकार करता है कि वह एक पापी है और कथा में केवल वही है जो उद्धार प्राप्त करता है ।

आ.अ.प्र.

– कथा में कितने लोग यीशु में रुचि दर्शाते प्रतीत होते हैं ?

– क्या कथा में कुछ है जो हमें दर्शाता है कि उस दिन जक्कई के जीवन में वास्तव में एक आत्मिक परिवर्तन हुआ ?

– कथा में किसने एक पापी होना स्वीकारा ?

– कथा में, कौन स्वयं को पापी के रुप में नहीं देखते हैं ?

– कथा में उन सभी में, किसने उद्धार पाया ?

– उस एक में जिसने उद्धार पाया आप क्या फर्क देखते हैं ?

16. आ.अ.–

कथा में, यीशु ने अभी जक्कई से कहा था, ''आज इस घर में उद्धार आया है।'' तब यीशु बोलना जारी रखते हैं और कहते हैं, ''इसलिए कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है।'' इससे हम यह देखते हैं कि जक्कई के अलावा भी अन्य वहाँ उपस्थित थे। साथ ही, जो यीशु कहते हैं उसके द्वारा, हम देखते हैं कि, वह उसे परिवर्तित कर रहा है जिससे वह बोल रहा है और यीशु जक्कई को लोगों से बचा रहा है!

आ.अ.प्र.–

– इस कथा में, जैसा जक्कई यीशु पर विश्वास का अंगीकार कर रहा है, ऐसा प्रतीत होता है कि यह वार्तालाप केवल उन दोनों के मध्य ही था। परंतु जब यीशु कहते हैं, ''इसलिए कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है,'' क्या आप दूसरों की उपस्थिति का संकेत देखते हैं ?

– वहाँ कौन हैं ?

– उन लोगों के प्रति यीशु के वचन के विषय में आप क्या देखते हैं ?

– आप क्या सोचते हैं यीशु इन लोगों को स्वयं के बारे में और जक्कई के बारे में देखने के लिए पाने का प्रयास कर रहे थे ?

17. आ.अ.–

यीशु का कथन कि उसके आने का उद्देश्य है कि, ''खोयें हुओं ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है'', एक सारांश कथन है जो साथ ही जक्कई के प्रति आदर है और भीड़ के प्रति एक आलोचना जैसा ध्वनित होता है ।

आ.अ.प्र.–

– यीशु ने इस कथा को यह कहकर समाप्त किया कि उसके आने का उद्देश्य था कि,''खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।'' आप यीशु के सारांश कथन में क्या देखते हैं ?

– क्या आप सोचते हैं कि यीशु भीड़ को चाहता है कि स्वयं के बारे में देखें ?

– अपने विचारों की व्याख्या करें ।

18. आ.अ.–

कथा में पहले ये अवश्य हैं कि जक्कई यीशु को ढूँढ़ रहा है । तब कथा के भागों द्वारा यह कथा बनती है कि यीशु जक्कई को ढूँढ़ रहे हैं !

आ.अ.प्र. –

– इस कथा में यथासंभव क्या आप कह सकते हैं कि जक्कई यीशु को ढूँढ़ रहा है।

– क्या संभवतः हमें इसे दर्शा सकता है ?

– परंतु जैसा हम फिर से कथा को देखते हैं, क्या आप कह सकते है कि यीशु जक्कई को ढूँढ़ रहे हैं ?

– आप इसे कथा में कहाँ देखते हैं ?

– सो कौन सा है ? क्या जक्कई यीशु को ढूँढ़ रहा है या यीशु जक्कई को ढूँढ़ रहे हैं ।

– क्या दोनों सही हैं ? आप क्या सोचते हैं ?

आत्मिक प्रयुक्तियां हम देखते हैं :

अग्रलिखित आत्मिक प्रयुक्तियों की एक सूची है । **प्रत्येक उपरोक्त आत्मिक अवलोकनों पर आधारित है ।** प्रक्रिया का अनुसरण में सरलता के लिए, जो आत्मिक अवलोकनों को सम्मिलित किया गया है, पुनः ''आ.अ.'' के रूप में दर्शाया गया है, एवं तुरन्त प्रत्येक ''आ.अ.'' के पश्चात् आत्मिक प्रयुक्तियाँ ''आ.प्रयु.'' के रूप में सूचीगत है ।

1. **आ.अ.–** लोग जो यीशु में रुचि दिखाई देते हैं वे जक्कई को यीशु के पास आने में अवरोध कर रहें हैं ।

   आ.प्रयु.– हम जो यीशु के अनुयायी होने का दावा करते हैं कई समयों पर यीशु के समीप(या धार्मिक होने) पर आने पर इतने केन्द्रित हो सकते हैं कि हम असावधानीपूर्वक या अज्ञानता से लोगों को दूर रखते है जो यीशु को ढूँढ़ रहे हैं।

2. **आ.अ.–** यह व्यक्ति जक्कई कद में छोटा है, परंतु पद में बड़ा है । एक धनी व्यक्ति एवं प्रधान चुंगी लेने वाले के रूप में, वह यीशु को देखने को इतना उत्सुक है कि जब सरलता से समीप जाने ने कार्य नहीं किया, वह उद्देश्यपूर्णता से अपने मार्ग से हटकर जाने का चुनाव करता है ।

   आ.प्रयु.– जब हम यीशु को ढूँढ़ना चाहते हैं, हमें अवश्य हमारे गर्व को किनारे रखने को तैयार होना चाहिए और वह करना चाहिए जिसकी आवश्यकता यीशु को ढूँढ़ने और उसका अनुसरण करने में है ।

3. **आ.अ.–** यह संभावना कि लोग इस महत्वपूर्ण व्यक्ति का उसके जनता के बीच दौड़ने और पेड़ पर चढ़ने के कार्य का उपहास करेंगे, जक्कई को उन कार्यों को करने से नहीं रोकते है ।

   आ.प्रयु.– हमें अवश्य ही गर्व, या भय कि लोग हमारे बारे में क्या कहेंगे को कभी भी यीशु को जानने से दूर नहीं देना है। यहाँ तक कि यदि हमें दूसरों द्वारा देखा जायें एक मूर्ख की तरह या हमारे पद से नीचे देखा जायें, हमें इसे किसी भी प्रकार करना अवश्य है।

4. **आ.अ.–**

   हम देखते हैं कि यीशु उसके आसपास की भीड़ की धक्का–मुक्की के बीच रास्ते से चल रहा है । यद्यपि सभी लोग यीशु के विपरीत धक्का दे रहे हैं । वह सभी को किनारे कर देता है, और ध्यान

देने का चुनाव करता है केवल एक व्यक्ति पर जो उसके समीप भी नहीं था, और यह व्यक्ति एक पेड़ पर है !

आ.प्रयु.–

उस दिन कई लोग परमेश्वर की कृपा के लिए इच्छित थे । वे यीशु में रूचि लेते प्रतीत होते थे, परंतु यीशु ने उन्हें नकारा और केवल एक व्यक्ति को चुना । कई लोग संसार में ऐसा दर्शाते हैं कि वे परमेश्वर में रुचि रखते हैं, परंतु उनमें से कई सच्चे नहीं हैं। यीशु ने उस एक को पुकारा जो सच्चा था । परमेश्वर हमारे हृदयों को जानता है, और जानता है कि यदि हम सच में उसे ढूँढ़ रहे हैं ।

5. **आ.अ.–**

यीशु जक्कई को नाम लेकर बुलाते हैं, जो उसके इस व्यक्ति में व्यक्तिगत रूचि को दर्शाता है ।

आ.प्रयु.–

हम यहाँ एक व्यक्तिगत परमेश्वर को देखते हैं। वह जो जानता है कि हम कहाँ है और हमें हमारे नाम से जानता है। यदि हम समझते है कि परमेश्वर उन पर दयावान है जो उसे ढूँढ़ते हैं, हम उसे चाहेंगे कि वह हमें नाम से जाने..... यह सुखदायक है। जक्कई यीशु को देखने के लिए उसे ढूँढ़ रहा था अतः जब यीशु ने उसे नाम लेकर पुकारा, जक्कई ने पहिचाना वह कौन था जो उसे पुकार रहा था।

6. **आ.अ.–**

यीशु ने स्वयं को जक्कई के घर निमंत्रित किया, जो अधिकांश संस्कृतियों में दुःसाहस का एक प्रकार हे । यह यीशु के ज्ञान व भरोसे को दर्शाता है कि क्या ''अवश्य'' होगा ।

आ.प्रयु. –

यह अद्‌भुत एवं उत्साहित करने वाला है कि यीशु उनके साथ रहना चाहता है जो उसे ढूँढ़ते हैं ।

7. **आ.अ.–**

जब एक व्यक्ति ऊपर देखता है विशेषकर एक अगुवा जिसका लोग अनुसरण कर रहें हैं, लोग भी साथ में अपनी नजरें ऊपर देखने को उठायेंगे कि अगुवा किसे देख रहा है, इसलिए केवल यीशु ही जक्कई को नहीं देख रहें हैं, परंतु सब लोग जक्कई को देख रहे हैं! जक्कई ''खोजे जाने'' पर घबराहट या शार्मिन्दगी को नहीं दर्शाता है । वास्तव में, वह आनंद दर्शाता है ।

आ.प्रयु.–

जब हम अविश्वासियों और परमेश्वर के भक्तिहीन अनुयायियों द्वारा देखे जाते हैं एवं यद्‌यपि मूर्ख या परमेश्वर को जानने की चाहत में बुद्धिमान न लगें, हमें अवश्य उन्हें हमें प्रभावित करने नहीं देना चाहिए । जब हम जानते हैं कि परमेश्वर हममें व्यक्तिगत रूचि रखता हैं, हम आनंद के साथ प्रतिक्रिया करनी चाहिए ।

8. **आ.अ.–**

जक्कई यीशु के बुलावे के प्रति उचित रूप से उत्तर देने में हिचकिचाता नहीं हैं। वह शीघ्रता करता है ।

आ.प्रयु.–

यदि किसी भी समय पर हम जाने कि परमेश्वर हमें कार्य करने को बुला रहा है, हमें अवश्य प्रति उत्तर देना है, एवं उसके निर्देशों के अनुसार उत्तर देना है । देरी से आज्ञापालन करना अनाज्ञाकारिता के समान हो सकती है ।

9. **आ.अ.–**

भीड़ जक्कई के विरोध में बोलती हैं, स्वयं के मध्य कुड़कुड़ाने द्वारा यीशु के बारे में कि कैसे ''वह एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है।'' ''जा उतरा'' संकेत कर सकता है कि यीशु बस अभी जा रहा है या वह चला गया है । ठीक–ठीक रुप से जक्कई व यीशु ने कब जाना कि लोग यीशु के जक्कई के घर जाने की आलोचना कर रहें हैं, स्पष्ट नहीं है । परंतु कथा में बाद में, यीशु जक्कई के समक्ष जो भीड़ को बोलते हैं, उसके द्वारा, हम देखते हैं कि जक्कई व यीशु दोनों को ही उनकी आलोचना के बारे में पता नहीं था । परंतु जक्कई ने स्वयं को भीड़ की आलोचना से प्रभावित नहीं होने दिया और अभी भी यीशु उसके घर में हैं ।

आ.प्रयु.–

हम प्रारंभ बहुत अच्छा कर सकते हैं, परंतु समय बीतने पर, यदि हम अपने आसपास के लोगों द्वारा आलोचना ग्रहण करते हैं, यहाँ तक कि एक धार्मिक भीड़ से तो भी हमें कार्य में अवश्य लगे रहना है।

10. **आ.अ.–**

भीड़ द्वारा आलोचना कहने के द्वारा कि यीशु ''एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है,'' मैं देखता हूँ कि भीड़ का विचार है कि वे पापी **नहीं** हैं ।

आ.प्रयु.–

उनके स्वयं के मुँह से, गर्वित लोग स्वयं की निंदा करते हैं । हमें उन धमंडी लोगों के जैसा नहीं होना चाहिए जो स्वीकार नहीं करेंगे कि उन्होंने पाप किया है ।

11. **आ.अ.–**

भीड़ ऐसा दर्शा रही है मानों वे यीशु के ''अनुयायी'' हैं । वे साथ चले, यीशु के विपरीत दबाव देकर । यद्यपि उनका कुड़कुड़ाना दर्शाता है कि वे इस बारे में देखरेख करते हैं कि यीशु किसके साथ खाता है, यह इस समान प्रतीत होता है कि वे इशारा कर रहें हैं कि उनके घरों में से एक सही चुनाव होगा । वास्तव में, भीड़ यीशु के द्वारा भेंट को जाने के घरों में उसके चुनाव में उसके साथ असहमत होने के द्वारा यीशु के प्रति पूर्ण अनादर को दर्शा रही है ।

आ.प्रयु.–

सभी जो यीशु के अनुयायी होने का दावा करते हैं, उनमें से सभी वास्तव में उसे नहीं जानते न ही वे वास्तव में उसका या उसके निर्णयों का आदर करते हैं । धार्मिक लोगों में से सभी व्यक्ति परमेश्वर के वचनों के प्रति आदर नहीं दर्शाते, केवल कुछ ही दर्शाते हैं ।

12. आ.अ.–

इस निर्णय करने वाली भीड़ के अपने ही विश्वास हैं, परंतु ऐसी नहीं दिखती कि यीशु के मुँह पर प्रश्न करने में साहसी हो । भीड़ को यीशु की सामर्थ के बारे में कुछ भी सोच नहीं है, ऐसा व्यवहार करती है जैसे वह उनकी शिकायतों को नहीं सुन पायेगा यदि वे आपस में ही धीरे से बात करेंगे ।

आ.प्रयु.–

भीड़ के क्रिया–कलाप आज के लोगों के समान हैं, जो सोचते हैं कि परमेश्वर उसे सुन नहीं सकता जो वे एक दूसरे से कानाफूसी करते हैं या नहीं देख सकता जो वे अंधेरे और गुप्त स्थानों में करते हैं।

13. आ.अ.–

जक्कई, एक धनी व्यक्ति, अपने हृदय को प्रदर्शित करता है जब वह अपनी आधी सपंत्ति कंगालों को देने की बात कहता है ।

आ.प्रयु.–

परमेश्वर के साथ एक सच्ची मुठभेड़ (सामना) किसी एक के विश्व दर्शन और मूल्यों में एक बदलाव/परिवर्तन को उत्पन्न करता है ।

14. आ.अ.–

साथ ही, जक्कई घोषणा करता है कि यदि उसने किसी को कुछ भी अन्याय करके ले लिया है, तो वह चाहता है कि उसे चौगुना फेर दे । जक्कई नहीं कहता ''यदि'' वह कानून द्वारा दोषी पाया जाये तो उसे चार गुना फेर देना है । जक्कई यह करने का संकल्प अपनी स्वतंत्र इच्छा से करता है । कोई संभवतः सुझा सकता है कि जक्कई पहले ही से कंगालों को अपना धन दे रहा है, परंतु भीड़ का विचार हमें अलग प्रकार दर्शाता है ।

यदि वह एक चुंगी लेने वाला था जिसने अपना आधा धन कंगालों को दे दिया, संभवतः वह पहले भी गुप्त रूप से ऐसा कर रहा होगा । परंतु चौगुना फेर देना उन्हें जिनसे संभवतः अन्यायपूर्ण ढंग से लिया गया, जक्कई को भीड़ की नज़रों में एक धार्मिक व्यक्ति की श्रेणी में रखता है ।

जो हम कथा से जानते हैं कि वह यह है कि, उपकथा के किसी बिन्दु पर, जक्कई स्वीकार करता है कि वह एक पापी था और सब बातों को ठीक करना चाहता है । यीशु ने कहा था कि परिवर्तन उसी दिन हुआ । हम यह भी देखते हैं कि जक्कई अद्‌भुत उदारता दिखाता है ।

आ.प्रयु.–

जक्कई एक धनी व्यक्ति था, एक प्रधान चुंगी लेने वाला जिसके लालचपूर्ण रास्ते बदल गये और वह ईमानदार और उदार बन गया । इस प्रधान चुंगी लेने वाले ने स्वयं को यहाँ तक नम्र किया यह कहने के द्वारा कि वह उनसे स्वीकार करेगा जिनके साथ उसने गलत किया कि उसने उनसे झूठ कहा और यह कि वह उसका चौगुना फेर देगा जो धन उसने अन्याय से लिया । जब हम यीशु में विश्वास लाते हैं, और अपने पापों का अंगीकार करते हैं, हमें दीनता दिखानी चाहिए और एक चाहत कि वापस जाये और उदारता से पूर्व की गलतियों को सही करें/सुधारें ।

15. आ.अ.–

पहले यह समझा जा सकता है कि जक्कई संभवतः यीशु द्वारा उसे ग्रहण करने को खरीदने का प्रयास कर रहा है, ईश्वर तक पहुँचने के अपने मार्ग को खरीदने का एक प्रकार । परंतु हम जानते है। कि जक्कई उस दिन यीशु पर विश्वास लाता हैं क्योंकि यीशु उससे कहते हैं, ''आज इस घर में उद्धार आया है ।'' कथा में जक्कई ही एकमात्र व्यक्ति है जो स्वीकार करता है कि वह एक पापी है और कथा में केवल वही है जो उद्धार प्राप्त करता है ।

आ.प्रयु.–

उद्धार उनके पास नहीं आ सकता जो पहले पापी होने को स्वीकार नहीं करते हैं।

16. आ.अ.–

कथा में, यीशु ने जक्कई से सीधे कहा था, ''आज इस घर में उद्धार आया है ।'' तब यीशु बोलना रखते हैं और कहते हैं, ''इसलिए कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है।'' इससे हम यह देखते हैं कि जक्कई के अलावा भी अन्य वहाँ उपस्थित थे। साथ ही, जो यीशु कहते हैं उसके द्वारा, हम देखते हैं कि, वह उसे परिवर्तित कर रहा है जिससे वह बोल रहा है और यीशु जक्कई को लोगों से बचा रहा है!

आ.प्रयु.–

हम देखते हैं यीशु जक्कई के साथ कार्य कर रहा है और जक्कई यीशु में विश्वास ला रहा है । परंतु उस पूरे समय वहाँ उपस्थित आलोचक भीड़ सब देख रही थी ।यीशु अभी भी इस स्व–धार्मिक भीड़ तक पहुँच रहा है, प्रयत्नशील है कि वे पाये कि स्वयं को एक आवश्यकतामंद के रूप में देखें और अपने मनों को खोलें कि देखें की जक्कई परमेश्वर द्वारा ध्यान देने के योग्य है ।

17. आ.अ.–

यीशु का कथन कि उसके आने का उद्देश्य है कि ''खोये हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है,'' एक सारांश कथन है जो साथ ही जक्कई के प्रति आदर है और भीड़ के प्रति एक आलोचना जैसा ध्वनित होता है ।

आ.प्रयु.–

यदि हम परमेश्वर द्वारा स्वीकृति चाहते हैं, हमें हमारे खोए होने व पापी होने को स्वीकार करने की आवश्यकता है और परमेश्वर को हमें बचाने की अनुमति देने की आवश्यकता है ।

18. **आ.अ.–**कथा में पहले से अवश्य है कि जक्कई यीशु को ढूँढ़ रहा है । तब कथा के भागों द्वारा यह कथा बनती है कि यीशु जक्कई को ढूँढ़ रहे हैं ।

आ.प्रयु.–

हमने कथा में देखा कि जक्कई ने यीशु को ढूँढ़ा, परंतु यीशु ने भी जक्कई को ढूँढ़ा । दोनों सत्य हैं । हमारे लिए, हमें अवश्य परमेश्वर को ढूँढ़ना है, परंतु जानें कि उसी समान समय वह हमें ढूँढ़ रहा है !

आत्मिक प्रयुक्ति प्रश्नों को रचना :

अब अंत में, आगे बढ़े और प्रश्नों को आगे देखें जो हमने बनाये हैं जो हमें आत्मिक प्रयुक्तियों तक पहुँचायेंगे । आत्मिक अवलोकनों तथा आत्मिक प्रयुक्तियों को पुनः सूचीबद्ध किया गया है ताकि आप पूर्ण अनुक्रम को देख सकें । ध्यान दें विशेषकर आत्मिक प्रयुक्तियों पर जिन पर प्रश्न आधारित हैं । वे आत्मिक प्रयुक्ति प्रश्नों को ''आ.प्रयु.प्र.'' संक्षेप के बाद लिखा गया है ।

1. **आ.अ.**– लोग जो यीशु में रूचि दिखाई देते हैं वे जक्कई को यीशु के पास आने में अवरोध कर रहें हैं ।

आ.प्रयु.–हम जो यीशु के अनुयायी होने का दावा करते हैं कई समयों पर यीशु के समीप (या धार्मिक होने) पर आने पर इतने केन्द्रित हो सकते हैं कि हम असावधानीपूर्वक या अज्ञानता से लोगों को दूर रखते है। जो यीशु को ढूँढ़ रहे हैं।

आ.प्रयु.प्र.–

– क्या यह आज उन लोगों के लिए संभव है जो धार्मिक कार्य करते हैं कि परमेश्वर के एक गंभीर खोजी के रास्ते में खड़े हो जायें ?

– किस प्रकार से यह हो सकता है ।

2. **आ.अ.**– यह व्यक्ति जक्कई कद में छोटा है, परंतु पद में बड़ा है । एक धनी व्यक्ति एवं प्रधान चुंगी लेने वाले के रूप में, वह यीशु को देखने को इतना उत्सुक है कि जब सरलता से समीप जाने ने कार्य नहीं किया, वह उद्देश्यपूर्णता से अपने मार्ग से हटकर जाने का चुनाव करता है ।

आ.प्रयु.–जब हम यीशु को ढूँढ़ना चाहते हैं, हमें अवश्य हमारे गर्व को किनारे रखने को तैयार होना चाहिए और वह करना चाहिए जिसकी आवश्यकता यीशु को ढूँढ़ने और उसका अनुसरण करने में है ।

आ.प्रयु.प्र.–

– जक्कई के समान, क्या आज वहाँ संभवतः समय हैं कि लोगों को यीशु के समीप आने के लिए गर्व को एक तरफ रखना चाहिए ?

– संभवतः वह समय कब हो सकता है ?

– क्या कोई भी एक समय आपके साथ बाँट सकता है जब आप या कोई जिसे आप जानते हैं यह अनुभव करता है ?

3. **आ.अ.–**

यह संभावना कि लोग इस महत्वपूर्ण व्यक्ति का उसके जनता के बीच दौड़ने और पेड़ पर चढ़ने के कार्य का उपहास करेंगे, जक्कई को उन कार्यों को करने से नहीं रोकते है ।

आ.प्रयु.–

हमें अवश्य ही गर्व, या भय कि लोग हमारे बारे में क्या कहेंगे को कभी भी यीशु को जानने से दूर नहीं देना है । यहाँ तक कि यदि हमें दूसरों द्वारा देखा जायें एक मूर्ख की तरह या हमारे पद से नीचे देखा जायें, हमें इसे किसी भी प्रकार करना अवश्य है ।

आ.प्रयु.प्र.–

– वहाँ संभवतः आज भी समय होंगे जब लोग उनका उपहास करते हैं जो परमेश्वर को ढूँढ़ रहे हैं ?

– उपहासित होना कैसा महसूस होता हैं ?

– क्या आप या कोई जिसे आप व्यक्तिगत रुप से जानते हैं, कभी परमेश्वर के अनुसरण करने के लिए तिरस्कृत/उपहासित किए गए हैं, या कभी परमेश्वर के बारे में और अधिक जानने के लिए आपको कुछ नीचा काम करना पड़ा है ?

– क्या उपहास को टालना प्रलोभी होगा यदि हम करें ?

– जक्कई की इस कथा में कौन सा उदाहरण संभवतः हमारी सहायता सही निर्णय करने में कर सकता है ?

4. **आ.अ.–** हम देखते हैं कि यीशु उसके आसपास की भीड़ की धक्का–मुक्की के बीच रास्ते से चल रहा है । यद्यपि सभी लोग यीशु के विपरीत धक्का दे रहे हैं। वह सभी को किनारे कर देता है, और ध्यान देने का चुनाव करता है केवल एक व्यक्ति पर जो उसके समीप भी नहीं था, और यह व्यक्ति एक पेड़ पर है !

आ.प्रयु.– उस दिन कई लोग परमेश्वर की कृपा के लिए इच्छित थे । वे यीशु में रूचि लेते प्रतीत होते थे, परंतु यीशु ने उन्हें नकारा और केवल एक व्यक्ति को चुना । कई लोग संसार में ऐसा दर्शाते हैं कि वे परमेश्वर मे रुचि रखते हैं, परंतु उनमें से कई सच्चे नहीं हैं । यीशु ने उस एक का पुकारा जो सच्चा था । परमेश्वर हमारे हृदयों को जानता है, और जानता है यदि हम सच में उसे ढूँढ़ रहे हैं ।

आ.प्रयु.प्र.–

– संसार में कितने प्रतिशत लोग आप सोचते हैं कि किसी धर्म का हिस्सा हैं ?

– क्या आप कभी धार्मिक लोगों से मिले है। जो ईश्वर के सच्चे अनुयायी नहीं है ?

– इसे मन में रखकर और उन पर विचार करते हुए जिन्हें हमने इस कथा में देखा है, आइये इस पर देखें । संसार में द्यार्मिक लोगों में से, क्या आप सोचते हैं कि वहाँ कुछ हैं जो बस अपने धर्म का अनुसरण करते हैं और कुछ ईश्वर के सच्चे खोजी हैं ?

– इस कथा में क्या घटित हुआ जिससे सच्चे खोजी को पहिचाना गया ?

5. आ.अ–

यीशु जक्कई को नाम लेकर बुलाते हैं, जो उसके इस व्यक्ति में व्यक्तिगत रूचि को दर्शाता है ।

आ.प्रयु.–

हम यहाँ एक व्यक्तिगत परमेश्वर को देखते हैं । वह जो जानता है कि हम कहाँ है और हमें हमारे नाम से जानता है । यदि हम समझते हैं कि परमेश्वर उन पर दयावान है जो उसे ढूँढ़ते हैं, हम उसे चाहेंगे कि वह हमें नाम से जाने..... यह सुखदायक है । जक्कई यीशु को देखने के लिए उसे ढूँढ़ रहा था अतः जब यीशु ने उसे नाम लेकर पुकारा, जक्कई ने पहिचाना वह कौन था जो उसे पुकार रहा था ।

आ.प्रयु.प्र.–

– जिस तरीके से यीशु ने जक्कई से कहा उसके द्वारा क्या कुछ आपके लिए आशा लाता है ?

– क्या आप व्याख्या करेंगे क्यूँ ?

– कौन सा श्रेष्ठ दिखता है, एक परमेश्वर का होना जो व्यक्तिगत न हो या एक परमेश्वर जो आपको जानता है ?

– एक परमेश्वर जो आपको जानता है के बारे में क्या अच्छा और बुरा है ?

– क्या परमेश्वर ने कभी आपसे व्यक्तिगत रूप से बात की है ?

6. आ.अ.–

यीशु ने स्वयं को जक्कई के घर निमंत्रित किया, जो अधिकांश संस्कृतियों में दुःसाहस का एक प्रकार है । यह यीशु के ज्ञान व भरोसे को दर्शाता है कि क्या ''अवश्य'' होगा ।

आ.प्रयु.–

यह अद्भुत एवं उत्साहित करने वाला है कि यीशु उनके साथ रहना चाहता है जो उसे ढूँढ़ते हैं ।

आ.प्रयु.प्र.–

– जक्कई के घर में निमंत्रण के बारे में क्या आश्चर्यजनक था ?

– क्या जो यीशु ने कहा उसमें कुछ था जो दर्शाता है कि यीशु का भेंट को जाना निश्चित ही होगा ?

– यीशु का जक्कई के घर में स्वयं को निमंत्रित करने के बारे में कथा में क्या है जो हमें आज संभवतः ईश्वर को खोजने में उत्साहित करेगा ?

7. आ.अ.–

जब एक व्यक्ति ऊपर देखता है विशेषकर एक अगुवा जिसका लोग अनुसरण कर रहें हैं, लोग भी साथ में अपनी नजरें ऊपर देखने को उठायेंगे कि अगुवा किसे देख रहा है, इसलिए केवल यीशु ही जक्कई को नहीं देख रहें हैं, परंतु सब लोग जक्कई को देख रहे हैं ! जक्कई ''खोजे जाने'' पर घबराहट या शार्मिंदगी को नहीं दर्शाता है । वास्तव में, वह आनंद दर्शाता है ।

आ.प्रयु.–

जब हम अविश्वासियों और परमेश्वर के भक्तिहीन अनुयायियों द्वारा देखे जाते हैं एवं यद्यपि मूर्ख या परमेश्वर को जानने की चाहत में बुद्धिमान न लगें, हमें अवश्य उन्हें हमें प्रभावित करने नहीं देना चाहिए । जब हम जानते हैं कि परमेश्वर हममें व्यक्तिगत रुचि रखता हैं, हम आनंद के साथ प्रतिक्रिया करनी चाहिए ।

आ.प्रयु.प्र.–

– ईश्वर को जानने की एक खोज में, क्या कभी ऐसा हो सकता है कि लोगों को अन्य उन सभी बाकी लोगों से अलग प्रकार का होना पड़ता है जो उनके परिवार या सामाजिक समूह या संस्कृति के हैं ?
– क्या आपने कभी ऐसा देखा है ?
– आप जक्कई के व्यवहार में तथा उसके चुनावों के परिणामों में क्या देखते हैं जो
हमें आज उत्साहित कर सकता है यदि हमें किसी से या हमारे लिए किसी महत्वपूर्ण से अलग प्रकार से होने की आवश्यकता हो ?
– जो आपने देखा कैसे वह हमें आज चुनने में उत्साहित करता है ?

8. आ.अ.–

जक्कई यीशु के बुलावे के प्रति उचित रूप से उत्तर देने में हिचकिचाता
नहीं हैं। वह शीघ्रता करता है ।

आ.प्रयु.–

यदि किसी भी समय पर हम जाने कि परमेश्वर हमें कार्य करने को बुला रहा है, हमें अवश्य प्रति उत्तर देना है, एवं उसके निर्देशों के अनुसार उत्तर देना है।

आ.प्रयु.प्र.–

– क्या आज परमेश्वर लोगों को बुलाता है ?
– यदि ऐसा है, किस रुप से संभवतः वह बुलाहट आयेगी ?

– यदि किसी समय पर हम जाने कि परमेश्वर हमें कार्य करने को बुला रहा है, यह कथा कैसे हमें सहायता कर सकती है ?

– शीघ्रता से उत्तर देने के अलावा, परमेश्वर के निर्देश हमारे लिए संभवतः क्या अर्थ रखते हैं ? ''देरी से आज्ञापालन'' को आप क्या कहेंगे ?

9. आ.अ.–

भीड़ जक्कई के विरोध में बोलती हैं, स्वयं के मध्य कुड़कुड़ाने द्वारा यीशु के बारे में कि कैसे ''वह एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है।'' ''जा उतरा'' संकेत कर सकता है कि यीशु बस अभी जा रहा है या वह चला गया है । ठीक–ठीक रुप से जक्कई व यीशु ने कब जाना कि लोग यीशु के जक्कई के घर जाने की आलोचना कर रहें हैं, स्पष्ट नहीं है । परंतु कथा में बाद में, यीशु जक्कई के समक्ष जो भीड़ को बोलते हैं, उसके द्वारा, हम देखते हैं कि जक्कई व यीशु दोनों को ही उनकी आलोचना के बारे में पता नहीं था ।

परंतु जक्कई ने स्वयं को भीड़ की आलोचना से प्रभावित नहीं होने दिया और अभी भी यीशु उसके घर में हैं ।

आ.प्रयु. –

हम प्रारंभ बहुत अच्छा कर सकते हैं, परंतु समय बीतने पर, यदि हम अपने आसपास के लोगों द्वारा आलोचना ग्रहण करते हैं, यहाँ तक कि एक धार्मिक भीड़ से **तो भी** हमें कार्य में अवश्य लगे रहना है ।

आ.प्रयु.प्र.–

– भीड़ यीशु के बारे में खुले रूप से बकवाद कर रही थी और जक्कई की आलोचना की ।

– क्या आप कभी उन दूसरों द्वारा देखे गये जो आपसे श्रेष्ठ स्वयं को समझते हैं और उन्होंने खुले रूप से आपके नामों को लिया ?

– वह किसके समान महसूस होता है ?

– इस कथा से हम उस बारे में क्या बटोर सकते हैं कि कैसे तिरस्कार को प्रति उत्तर दें ?

10. आ.अ.–

भीड़ द्वारा आलोचना कहने के द्वारा कि यीशु, ''एक पापी मनुष्य के यहाँ जा उतरा है,'' मैं देखता हूँ कि भीड़ का विचार है कि वे पापी **नहीं** हैं ।

आ.प्रयु.–

उनके स्वयं के मुँह से, गर्वित लोग स्वयं की निंदा करते हैं। हमें उन घमंडी लोगों के जैसा नहीं होना चाहिए जो स्वीकार नहीं करेंगे कि उन्होंने पाप किया है।

आ.प्रयु.प्र.–

– आपकी ईश्वर की खोज में, क्या आपकी कभी वार्तालाप धार्मिक लोगों से हुई है जो सोचते थे कि वे सिद्ध थे, पापी नहीं ?

– स्वधार्मिकता को आप कैसे वर्णित करेंगे ?

– क्या आप सोचते है कि यह स्व–धार्मिकता कुछ है जिसे परमेश्वर के एक सच्चे अनुयायी को होना है या होना चाहिए ?

11. आ.अ.–

भीड़ ऐसा दर्शा रही है मानों वे यीशु के ''अनुयायी'' हैं । वे साथ चले, यीशु के विपरीत दबाव देकर । यद्यपि उनका कुड़कुड़ाना दर्शाता है कि वे इस बारे में देखरेख करते हैं कि यीशु किसके साथ खाता है, यह इस समान प्रतीत होता है कि वे इशारा कर रहें हैं कि उनके घरों में से एक सही चुनाव होगा । वास्तव में, भीड़ यीशु के द्वारा भेंट को जाने के घरों में उसके चुनाव में उसके साथ असहमत होने के द्वारा यीशु के प्रति पूर्ण अनादर को दर्शा रही है ।

आ.प्रयु.–

सभी जो यीशु के अनुयायी होने का दावा करते हैं, उनमें से सभी वास्तव में उसे नहीं जानते न ही वे वास्तव में उसका या उसके निर्णयों का आदर करते हैं। धार्मिक लोगों में से सभी व्यक्ति परमेश्वर के वचनों के प्रति आदर नहीं दर्शाते, केवल कुछ ही दर्शाते हैं ।

आ.प्रयु.प्र.–

– भीड़ के व्यवहार या वार्तालाप में यीशु के लिए किस प्रकार का आदर दर्शाया गया है ?

– आज, क्या लोग कभी ऐसा करते हैं कि वे परमेश्वर के अनुयायी हैं, परंतु वास्तव में वे परमेश्वर से अधिक स्वयं के प्रति आदर रखते हैं ?

– संभवतः वह किसके समान दिखेगा ?

12. आ.अ.–

इस निर्णय करने वाली भीड़ के अपने ही विश्वास हैं, परंतु ऐसी नहीं दिखती कि यीशु के मुँह पर प्रश्न करने में साहसी हो । भीड़ को यीशु की सामर्थ के बारे में कुछ भी सोच नहीं है, ऐसा व्यवहार करती है जैसे वह उनकी शिकायतों को नहीं सुन पायेगा यदि वे आपस में ही धीरे से बात करेंगे ।

आ.प्रयु.–

भीड़ के क्रिया–कलाप आज के लोगों के समान हैं, जो सोचते हैं कि परमेश्वर उसे सुन नहीं सकता जो वे एक दूसरे से कानाफूसी करते हैं या नहीं देख सकता जो वे अंधेरे और गुप्त स्थानों में करते हैं।

आ.प्रयु.प्र.–

– क्या लोग कभी गुप्त से बातों को करते हैं या अंधेरे में कार्यों को करते हैं, यह सोचते हुए कि कोई भी नहीं जानता कि वे क्या कर रहे हैं ?

– कथा में हमें क्या बताता है कि परमेश्वर सभी कुछ जो हम करते हैं और कहते हैं जानता है ?

– वह ज्ञान का हम पर कैसा प्रभाव होना चाहिए ?

13. आ.अ.–

जक्कई, एक धनी व्यक्ति, अपने हृदय को प्रदर्शित करता है जब वह अपनी आधी सपंत्ति कंगालों को देने की बात कहता है ।

आ.प्रयु.–

परमेश्वर के साथ एक सच्ची मुठभेड़ (सामना) किसी एक के विश्व दर्शन और मूल्यों में एक बदलाव/परिवर्तन को उत्पन्न करता है ।

आ.प्रयु.प्र –

– कैसे परमेश्वर से एक सच्चा सामना संभवतः हमारे सांसारिक दर्शन एवं मूल्यों को प्रभावित कर सकता है ?

– कुछ उदाहरण दें ।

14. आ.अ.–

साथ ही, जक्कई घोषणा करता है कि यदि उसने किसी को कुछ भी अन्याय करके ले लिया है, तो वह चाहता है कि उसे चौगुना फेर दे । जक्कई नहीं कहता ''यदि'' वह कानून द्वारा दोषी पाया जाये तो उसे चार गुना फेर देना है । जक्कई यह करने का संकल्प अपनी स्वतंत्र इच्छा से करता है । कोई संभवतः सुझा सकता है कि जक्कई पहले ही से कंगालों को अपना धन दे रहा है, परंतु भीड़ का विचार हमें अलग प्रकार दर्शाता है । यदि वह एक चुंगी लेने वाला था जिसने अपना आधा धन कंगालों को दे दिया, संभवतः वह पहले भी गुप्त रूप से ऐसा कर रहा होगा । परंतु चौगुना फेर देना उन्हें जिनसे संभवतः अन्यायपूर्ण ढंग से लिया गया, जक्कई को भीड़ की नज़रों में एक धार्मिक व्यक्ति की श्रेणी में रखता है । जो हम कथा से जानते हैं कि वह यह है कि, उपकथा के किसी बिन्दु पर, जक्कई स्वीकार करता है कि वह एक पापी था और सब बातों को ठीक करना चाहता है । यीशु ने कहा था कि परिवर्तन उसी दिन हुआ । हम यह भी देखते कि जक्कई अद्‌भुत उदारता दिखाता है ।

आ.प्रयु.–

जक्कई एक धनी व्यक्ति था, एक प्रधान चुंगी लेने वाला । जिसके लालचपूर्ण रास्ते बदल गये और वह ईमानदार और उदार बन गया । इस प्रधान चुंगी लेने वाले ने स्वयं को यहाँ तक नम्र किया यह कहने के द्वारा कि वह उनसे स्वीकार करेगा जिनके साथ उसने गलत किया कि उसने उनसे झूठ कहा और यह कि वह उसका चौगुना फेर देगा जो धन उसने अन्याय से लिया । जब हम यीशु में विश्वास लाते हैं, और अपने पापों का अंगीकार करते हैं, हमें दीनता दिखानी चाहिए और एक चाहत कि वापस जाये और उदारता से पूर्व की गलतियों को सही करें/सुधारें ।

आ.प्रयु.प्र.–

– क्या आपने ऐसे लोगों को कभी देखा है जिनके जीवन मूल रूप से बदल गये जब उन्होंने अपने विश्वास को यीशु पर लायें ?

– यदि ऐसा है, किस विशेष रूप में उनका व्यवहार बदल गया जब उन्होंने अपना विश्वास यीशु पर लाये ?

– हमारे अंदर कौन सी भावना और ढंग होना चाहिए जो हमें आगे करें कि हम उनके पास वापस जाये जिनके साथ हमने गलत किया और हर्जाना दें ?

– क्या आपने कभी किसी को देखा है जो यीशु का एक अनुयायी बन गया और वापस गया और लोगों के विरोध में किये गये पूर्व पापों के लिए समाधान किया ?

– क्या हुआ ?

15. आ.अ.–

पहले यह समझा जा सकता है कि जक्कई संभवतः यीशु द्वारा उसे ग्रहण करने को खरीदने का प्रयास कर रहा है, ईश्वर तक पहुॅचने के अपने मार्ग को खरीदने का एक प्रकार । परंतु हम जानते है। कि जक्कई उस दिन यीशु पर विश्वास लाता हैं क्योंकि यीशु उससे कहते हैं, आज इस घर में उद्धार आया है ।'' कथा में जक्कई ही एकमात्र व्यक्ति है जो स्वीकार करता है कि वह एक पापी है और कथा में केवल वही है जो उद्धार प्राप्त करता है ।

आ.प्रयु.–

उद्धार उनके पास नहीं आ सकता जो पहले पापी होने को स्वीकार नहीं करते।

आ.प्रयु.प्र.–

– क्या लोग कभी प्रयास करते हैं कि अच्छे काम करें या धन दें कि परमेश्वर को प्रभावित करें या कि परमेश्वर की कृपा के उनके रास्ते को खरीदें ?

– क्या आप सोचते हैं कि इस कथा में जक्कई यीशु द्वारा ग्रहण करने के अपने रास्ते को खरीद रहा है ?

– क्या वहाँ कोई रास्ता है कि जानें कि जक्कई के पास एक सच्चा हृदय परिवर्तन था या वह यीशु की कृपा को खरीदने का प्रयास कर रहा था ?

– वह क्या था जो यीशु ने जक्कई के बारे में कहा था जो दर्शाता है कि जक्कई विश्वास ले आया है ?

– इस कथा में और किसे कहा गया कि विश्वास लायें ?

– इस कथा पर आधारित, आपके पास कौन से विचार उनके बीच फर्क के बारे में हैं जिनके पास यीशु के पास आने का रास्ता है और विश्वास में आये और जिनके पास यीशु के पास आने का रास्ता है, परंतु विश्वास में नहीं आये ?

16. **आ.अ.–**

कथा में, यीशु ने अभी जक्कई से कहा था, ''आज इस घर में उद्धार आया है ।'' तब यीशु बोलना रखते हैं और कहते हैं, ''इसलिए कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है ।'' इससे हम यह देखते हैं कि जक्कई के अलावा भी अन्य वहाँ उपस्थित थे । साथ ही, जो यीशु कहते हैं उसके द्वारा, हम देखते हैं कि, वह उसे परिवर्तित कर रहा है जिससे वह बोल रहा है और यीशु जक्कई को लोगों से बचा रहा है !

आ.प्रयु.–

हम देखते हैं यीशु जक्कई के साथ कार्य कर रहा है और जक्कई यीशु में विश्वास ला रहा है । परंतु उस पूरे समय वहाँ उपस्थित आलोचक भीड़ सब देख रही थी । यीशु अभी भी इस स्वधार्मिक भीड़ तक पहुँच रहा है, प्रयत्नशील है कि वे पायें कि स्वयं का एक आवश्यकतामंद के रूप में देखें और अपने मनों को खोलें कि देखें कि जक्कई परमेश्वर द्वारा ध्यान देने के योग्य है ।

आ.प्रयु.प्र.–

– यहाँ एक व्यक्ति है जिसे कोई नहीं चाहता कि विश्वास में आये । और तब यीशु अप्रिय व्यक्ति को स्व–धार्मिक भीड़ से बचाते हैं । आज क्या यह कभी होता है
कि लोगों की जीवनशैली या व्यवसाय के कारण दूसरे उन्हें नीचा देखते हैं ?

– किस प्रकार के लोगों को दूसरों द्वारा पापी के रूप में देखा जा सकता है ? विशेषकर उनके द्वारा जो स्वधार्मिक हैं ?

– क्या आपने कभी इस प्रकार से होता देखा है ?

– यदि आपने ऐसा देखा है, क्या स्वधार्मिक लोग **''पापी''** की आत्मिक सहायता की खोज को देखना चाह रहे थे, कि यीशु से मिले कि बोलें ?

– यीशु ने भीड़ को नहीं त्यागा । यह आपके लिए क्या अर्थ रखता है ?

17. **आ.अ.–**

यीशु का कथन कि उसके आने का उद्देश्य है कि ''खोये हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है,'' एक सारांश कथन है जो साथ ही जक्कई के प्रति आदर है और भीड़ के प्रति एक आलोचना जैसा ध्वनित होता है ।

आ.प्रयु.–

यदि हम परमेश्वर द्वारा स्वीकृति चाहते हैं, हमें हमारे खोए होने व पापी होने को स्वीकार करने की आवश्यकता है और परमेश्वर को हमें बचाने की अनुमति देने की आवश्यकता है ।

आ.प्रयु.प्र.–

– यीशु के अंतिम छोटे भाषण में कथा की समाप्ति पर हमें क्या दर्शाया गया है कि आज परमेश्वर हमसे क्या चाहता हैं ?

– संसार में कितने लोग उस लक्ष्य तक पहुँचने में सक्षम है ?

– क्या हमारे खोए हुए होना या पापमय होने को स्वीकार करना एक कठिन या सरल वस्तु है ?

– हमने कथा से क्या सीखा जो हमें दर्शाता है क्यूँ कुछ लोगों ने सुना और यीशु में विश्वास नहीं लायें?

– यह कथा आप से क्या कहती है ?

18. आ.अ–

कथा में पहले से अवश्य है कि जक्कई यीशु को ढूँढ़ रहा है । तब कथा के भागों द्वारा यह कथा बनती है कि यीशु जक्कई को ढूँढ़ रहे हैं ।

आ.प्रयु.–

हमने कथा में देखा कि जक्कई ने यीशु को ढूँढ़ा, परंतु यीशु ने भी जक्कई को ढूँढ़ा । दोनों सत्य हैं । हमारे लिए, हमें अवश्य परमेश्वर को ढूँढ़ना है, परंतु जानें कि उसी समान समय वह हमें ढूँढ़ रहा है !

आ.प्रयु.प्र.–

– क्या यह सत्य है कि लोगों को परमेश्वर को ढूँढ़ने की आवश्यकता है ?

– क्या आप कथा में इस बारे में कुछ देखते हैं कि परमेश्वर लोगों को ढूँढ़ रहा है ?

– सो कौन सा है ? क्या परमेश्वर लोगों को ढूँढ़ता है या लोग परमेश्वर को ढूँढ़ते हैं ?

– क्या यह एक विरोधाभास है ?

– आप इसकी व्याख्या कैसे करेंगे ?

परिशिष्ट स : उपयोगकर्ता प्रभाव विवरण – सलाहें तथा गुणन

''मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ परंतु विगत् 5 वर्षों से परमेश्वर की सेवा एक पास्टर और सुसमाचार प्रचारक के रूप में कर रहा हूँ मैं प्रभु के पास सन् 1993 में आया और मैं परमेश्वर की सेवा करना चाहता था और किसी भी बाइबल कॉलेज में बाइबल का ज्ञान पाना चाहता था, परंतु शैक्षिक बाइबल महाविद्यालयों ने मुझे बाइबल प्रशिक्षण के लिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ और साथ ही मैं इस योग्य नहीं था कि परमेश्वर के संदेश को पुलपिट से समझ सकूँ क्योंकि यह पढ़े–लिखों की शैली थी ।

''मैं मेरे परिवार के सदस्यों और मित्रों के साथ सुसमाचार बाँटने में संघर्ष कर रहा था, उस परिस्थिति में हमारे प्रभु ने हमारे जीवन व सेवकाई में टीजीएसपी को लाया मैं उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ । मैंने एसटीएस तरीके से 155 कहानियों को सीखा है और अब मैं यह कहते प्रसन्न हूँ कि मैं पढ़े–लिखों व अनपढ़ों दोनों को सुसमाचार बाँट सकता हूँ ।

वाय. बाबू– सुसमाचार प्रचारक/पास्टर
एम.एम.बी.सी.–कर्नाटक –भारत

––'––

किसी भी संस्कृति से एक समूह की कल्पना करें,अधिकांश किसी भी आयु के,विश्वासी और अविश्वासी,क्रियाशीलता से लगे हुए खोज करते और परमेश्वर के वचन में प्राप्त खजानों को अनावृत करते हुए। अब आपको पास एक चित्र है उसका जो सामान्यतः एक '' केवल कथा'' अध्ययन समूह में होता है।''हमने एसटीएस को सेवा क्षेत्र में प्रौढ़ घरेलू बाइबल अध्ययनों में, और हमारे बच्चों तथा युवा सेवकाई में लागू किया है । एसटीएयस की धारणायें मेरे संदेशों को प्रभावित करती हैं ।''

पास्टर क्रिस जॉनसन – कैलवरी चैपल– यू.एस.ए.

''केवल कथा'' सार्वभौमिक कलीसिया को ईश्वर द्वारा प्रदान तकनीक है कि हमारे समय और युग में महान आदेश को पूरा किया जाये। यद्यपि हम परमेशवर के वचन को खोलने के एक तरीके (वर्णनात्मक प्रचार) के साथ रहे हैं,कई शताब्दियों तक, हमने निश्चित ही इसकी सीमाओं को देखा है।

''अब इस पुस्तक द्वारा एसटीएस सीखने के बाद,मैं कहने का साहस करता हूँ कि यहाँ शिष्य बनाने का एक अन्य बेहतर तरीका है।''एसटीएस ने मेरे विश्वदर्शन को बदल दिया और मेरी आँखों को वचनों के प्रति एक बड़े तरीके से खोल दिया है ।'' यद्यपि दक्षिण सूडानके मेरे देश में एसटीएस की शक्ति को देखता हूँ जहाँ निरक्षरता बहुत उच्च है, मैं इसके प्रभाव को शिक्षित लोगों जैसे मैं स्वयं पर भी देखता हूँ।

''मैं उच्चता से इस संसाधन की संसार भर में सभी मसीही अगुतों से सिफारिश करता हूँ । मैं प्रार्थना करता हूँ कि टीजीएसपी अपने प्रयत्नों को दुगना करेगी कि इस प्रशिक्षण को दूर और चारों ओर ले जाये। यह पुस्तिका आपका श्रेष्ठ प्रारंभिक बिंदु है जैसा आप प्रमाणित प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण जारी रखने की खोज करते हैं।

रेव्ह. डेनियल छगाई गाक–एंग्लिकन चर्च ऑफ सूडान–अफ्रीका

सलाहें तथा गुणन

ये पहली तीन गवाहियाँ उन व्यक्तियों से आई हैं जो टीजीएसपी कार्यकारी अधिकारी समूह द्वारा गहराई से विश्वासनीय सलाहों को पाये हैं – जो दूसरों को प्रशिक्षण दे रहे हैं । क्या यह परमेश्वर का तरीका नहीं है ?

––'––

इंबु में एक बिशप खड़े हुए और मुझसे यह कहा । ''कलीसिया कष्ट में हैं क्योंकि हमारे पास कलीसिया पिताओं की कमी है जो बाइबल सम्मत हैं.....कृपा कर उनसे कहें जिन्होंने आपको प्रशिक्षित किया है, आपको धन्यवाद ब्रेमुएल को अधिकृत करने हेतु कि बिशपों के पिता हो.....''

ब्रेमूएल मूसया–सी ई ओ स्ट्रेट पाथ रिसोर्सेस, केन्या

––

एसटीएस तरीके ने हमें पहले की उपेक्षा अधिक आत्मिक अगुवों को प्रशिक्षित करने में सहायता की है एवं गुणन आत्मिक अगुवों को उत्पन्न करने में और कलीसिया में उन्हें रखने में एवं सेवाक्षेत्र में उन्हें भोजन में स्थान ले रहा है । उसका वचन पढ़े लिखे व अनपढ़ दोनों के लिए, युवा और बुजुर्गों दोनों के लिए है । यह एक संपूर्ण आत्मिक भोजन है । कि त्रिएक परमेश्वर से हमारी संगति हो ।

डॉ. मार्क मुनीयप्पा– ऑल इंडिया काउंसिल/टीजीएसपी–इंडिया

आप सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता को व्यक्त करने को मैं किन शब्दों का प्रयोग करूँ ? मैं प्रभु का और इस यंत्र केवल कथा के प्रति बहुत धन्यवादित हूँ । मेरे 20 वर्षों की सेवकाई के समय में, यह सबसे अधिक उपयोगी है मेरा सामना हुआ है । एसटीएस ने निश्चित रूप से परमेश्वर के वचन में गहराई में और विस्तार में ले जाने में सहायता की है परंतु साथ ही इसमें मेरे संस्थागत जीवन में कई प्रयुक्तियाँ भी है इसमें से जो पाठ मैंने सीखा है वह यह है कि कोई भी निर्णय लेने के पूर्व विकल्पों के लिए देखे और इसने मेरे दिल को दूर देखने वाला बनाया है कि हमारे कार्य का प्रभाव देखे ।

रमेश सपकोटा– सीईओ किंगडम इनवेस्टमेंटस् नेपाल
आर्गनॉइजेशन फाइटिंग अगेंस्ट हूमन ट्रैफिकिंग

सबसे पहले मैं सारी महिमा हमारे सर्वशक्तिमान प्रभु यीशु मसीह को और हृदय से धन्यवाद मेरे प्रार्थना सहभागी बड़े भाई रमेश को देना चाहता हूँ ।

जब मैं उनसे मिला मैं मसीह में नया था और मेरी सेवकाई ठीक एक नवजात बच्चे जैसे थी । मुझे एक आत्मिक माँ की आवश्यकता थी जो निरन्तर मेरा पोषण करे । रमेश ने मुझे एसटीएस प्रशिक्षण दिया । यह प्रारंभ था । उस समय हम बहुत थोड़े से लोग मसीह में थे और एक संगति थी जो बहुत कमजोर थी । उसने मेरी कलीसिया में एसटीएस को लगातार किया ।

अब थोड़े ही समय में एसटीएस प्रशिक्षण द्वारा परमेश्वर अब थोड़े कलीसियाओं को रोपित करने में उपयोग किया और इस वर्ष हमने दो नयी कलीसियाओं का रोपण करने की योजना बनाई है ।

मैंने एसटीएस पद्धति का उपयोग कलीसिया गुणन में किया और इस कारण से आश्चर्यजनक रीति से मैंने एसटीएस प्रशिक्षण में भाग लेने का निमंत्रण प्राप्त किया, केवल मैंने ही नहीं परंतु मेरे पुत्री कलीसिया अगुवे ने भी मौका पाया, वह एसटीएस पद्धति का उपयोग मुझसे बेहतर कर रहे हैं ।

भाई रमेश आपको धन्यवाद, मैं तो केवल तितली का खोल था परंतु आप मुझे पूरी तितली होने में तैयार कर रहे हैं !

प्रभु के सेवक को धन्यवाद जिन्होंने एसटीएस के लिए मेहनत किए हैं कि उसका नाम महिमा पाये और मुझे और मेरी सेवकाई को आशीषित करें ।

पास्टर कृष्णा पी.धीमीरे– असिस्टेंट जनरल सेक्रेटरी
नेशनल चर्चेस फैलोशिप ऑफ नेपाल

''मैं मिशन्स का विद्यार्थी और धर्मशास्त्री हूँ साथ ही फुलर थियोलॉजिकल सेमीनरी से पी.एच.डी. हूँ और कई वर्षों तक उच्च शिक्षित लोगों के मध्य कार्य किया हैं परंतु मैं पूर्ण रूप से अवगत हो गया हूँ कि आधुनिक पश्चिमी शिक्षा तंत्र ने मुझे ''बायें–मस्तिष्क'' (विश्लेषण–संबंधी, औपचारिक कथनों, भाषण) शिक्षा देने के प्रकारों में सीमित रखा था ।

''केवल कथा की सक्रियता द्वारा, जिसे डोरोथी द्वारा स्थापित किया गया है और जो बढ़ता हुआ आंदोलन है जिसकी वे अगुवाई करती हैं, मैं पुनः उस वास्तविकता को सचेत हुआ कि श्रेष्ठ शिक्षक यीशु ने हमेशा कहानियों का उपयोग करते हुए सिखाया, यहाँ तक कि आपने समय के उच्च शिक्षित तोराह विद्वानों के साथ भी । कहानी वाचक का एक अभ्यासकर्ता बनने द्वारा एसटीएस ने यहूदी लोगों के प्रति मेरी सेवकाई को रूपांतरित कर दिया है ।

''मुझे सत्यता से बदलने की आवश्यकता थी कि फिर से सीखूं और पहने हुए मानसिक चक्रमार्ग से उभरूँ, और वचन को जीवन में लाऊँ और प्रभाव के साथ बाँटू ।

''एसटीएस सहायता कर रहा है कि कहानी सुनाने के सुधार को आधुनिकता पश्चात् पश्चिम से मैत्री कराये साथ ही साथ जो पश्चिमी देश नही है उनमें मौखिक सीखने वालों के मध्य कलीसिया की बढ़ती में सहायता करें । प्रत्येक व्यवसायिक शिक्षक कहानी की ताकत और बाइबल कहानी सुनाने द्वारा अपनी बुलाहट में गंभीर बढ़ोत्तरी को पायेगा । मैं एसटीएस की सिफारिश एक ऐसे मार्ग के रूप में करता हूँ जिससे उस लक्ष्य को पहुँचा जायेगा ''

बिल बीजोरेकर, पी.एच.डी.प्रोफेसर ऑफ जूडियो–क्रिश्चयन स्टडीज्
विलियम कैरी इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए.

जबकि मसीही संसार का अधिकांश सामाजिक न्याय के अवसरों के विभिन्न प्रकारों का पीछा कर रहा है, एक संसार सच्ची धार्मिकता की भूख और प्यास के साथ शेष है । वह भूख और प्यास केवल परमेश्वर के वचन यीशु ख्रीस्त से ही संतुष्ट हो सकती है !

''केवल कथा की गहरी शिष्यता पहुँच यीशु के आश्चर्य और अचंभों को तेजस्वितः के साथ लाती है ।

''हम एसटीएस का उपयोग अपने नाती–पोतों के लिए करते हैं, एक भक्ति मार्गदर्शक के रूप में । हमारे कलीसियाओं के सभी पासबान एसटीएस में प्रशिक्षित हैं और अब इसका उपयोग छोटे समूह में युवाओं को सिखाने को करते है । हमारे मिशन के पासबान और समिति अब अफ्रीका एसटीएस कार्यक्रमों एवं मौखिक बाइबल शालाओं के विकास की ओर प्रतिबद्ध हैं एवं धन को पुनः निर्दिष्ट कर रहें हैं ।

''अनुमानजन्य बाईबल अध्ययन, सुसमाचार प्रचार एवं शिष्यता के इन तरीकों को लेने अवसर निरंतर है कि बढ़ें । हाल ही में हमें एक अमरीकी आंतरिक शहर में बुलाया गया था जहाँ निराशा प्रचुर मात्रा में थी उन झूठे बचाने वालों और सुसमाचारों के कारण जो कि कल्याणकारी राज्य और अन्य मानव केन्द्रित पन्थ स्थिर करते हैं । सच्चा सुसमाचार ही केवल एक आशा है ं हमारे प्रभु की शिक्षा का मार्ग, की बुद्धि एसटीएस के साथ हमारे पास अब एक गट्ठर है जिसे हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उसका उपयोग एक टूटी संस्कृति को पूर्वस्थिति तथा पाप से मुक्ति लाने को करेगा ।''

मार्क सैंड्स् चर्च बिल्डर फाउंडेशन–अध्यक्ष, ग्लोबल

एक अगुवे की खोज

प्रतिबंधित देश में न पहुँचे हुए लोगों के मध्य मिश्नरी

जब मैंने प्रथम बार मौखिक बाइबल शिक्षा के बारे में सुना, मैं पूर्ण रीति से रूचिपूर्ण नहीं था । मैंने विचारा कि हम वचनों में जड़युक्त एक मजबूत कलीसिया को बच्चों को बाइबल कहानियाँ सुनाकर नहीं बना सकते हैं । परंतु तब जब मैं यू.एस.ए. में मिशन की कांफ्रेंस में था, मैं एक जोड़े के साथ रूका जो मौखिक बाइबल कौशल को सारे संसार में सिखाते हैं । मैंने उन्हें सभी प्रकार के प्रश्नों से चर्चा की, और यहाँ तक कि उनके साथ यात्रा भी की ताकि मैं एक प्रशिक्षण सत्र का वीडियो बना सकूँ जो वे उस सप्ताहांत दे रहे थे !

मेरे पास एक मजबूत वचनबद्धता है कि कलीसिया, साथ ही साथ व्यक्तिगत विश्वासी, को परमेश्वर के वचन में बने रहना है । कोई केवल मात्र वचन की सच्चाई से परिचित नहीं हो सकता, उसे परमेश्वर के वचन को अनुमानजन्यता से अनुवाद करना है और सत्य के वचन को सही से भाग करना है । इससे कम कुछ भी विश्वासियों को भिन्न धार्मिक रीतियों को एक में मिलाने वाले के लिए खोलेगा और समस्याओं का संपूर्ण मेजबान बना देगा ।

अनुमानजन्य अध्ययन और प्रति उत्तरकारक टीका के प्रति मेरी संपूर्ण वचनबद्धता विगत् वर्षों में केवल बढ़ी है । यह मौखिक बाइबल शिक्षा के विचार के साथ घटी नहीं है, यह केवल बढ़ी है ।

मौखिक शैली में अनुमानजन्यता, टीकाकारी अध्ययन को करने की संभावनाओं के साथ मेरा टकराव हुआ था । क्या यह संभव हो सकता है ? एवं, यह आवश्यक क्यों होगा ?

पहले, यह आवश्यक क्यों है ? मेरे मौखिक बाइबल शिक्षा की अनिवार्यता को बताने से बेहतर कार्य वे सभी लोग जो मौखिक बाइबल कौशलों को सिखाते हैं उनकी सीडी और उनकी गवाहियों के वीडियो अंश प्रदान कर, कर रहे हैं ।

17 वर्षों से हमारा दल क्षेत्र में कार्य कर रहा है । हमने सुसमाचार प्रचार का एक बहुत मौखिक तरीका लिया है– हम किसी भी साहित्य का उपयोग बिल्कुल नहीं करते हैं – हमारे दल के सदस्य सीखते हैं, स्मरण करते हैं और एक मौखिक सुसमाचार प्रस्तुति देते हैं । परिणाम के रूप में, हमने असाधारण परिणामों को देखा है, बहुत बहुत लोगों ने अपने विश्वास को खीस्त पर लाये हैं ।

जब हमने अनुगामी कार्य किया, यद्यपि हमने तुरन्त एक बहुत ही शैक्षिक तरीके में बदल दिया । हमने विश्वासियों को एक बाइबल प्रदान की, और उनसे भेंट की, कि पढ़ें अध्ययन करें और सीखें कि कैसे वचनों का अनुमानजन्यता से अध्ययन करें । इस अनुगामी तरीके से, हम अपने सिरों को एक दीवार पर मार रहे थे । नये विश्वासी दुर्बल हो गए । वे उनके विश्वास में नहीं बढ़ रहे थे, ठंडे हो गये थे और पीछे फिसल रहे थे ।

एक गाँव में हमने प्रवेश किया, लगभग 20 लोगों ने ख्रीस्त के लिए सच्ची वचनबद्धता की । हमने वचनों को पढ़ने पर विशेष जोर दिया, उन्हें यह दिखाते हुए कि कैसे वे स्वयं के लिए अनुमानजन्यता से पढ़ सकते हैं, साथ ही साथ व्यक्तिगत समय को उनके साथ व्यतीत किया, हमारे जीवनों को उनसे बाँटते हुए ।

आज, उनमें से कोई भी नहीं है जिसे आप कह सकें कि ''ख्रीस्त के पीछे चल रहे हैं । उनमें से कई चाहते थे, परंतु इस सभी समय के पश्चात् ऐसे लगता है कि उन्होंने परमेश्वर के वचन को कभी नहीं लिया । वचन उनमें नहीं बैठा । मैं नहीं सोचता कि पढ़ना और अध्ययन करना उन्होंने किया ।

और अधिक क्या... उन्होंने वचनों को लेकर और उसे दूसरों के साथ कभी नहीं बाँटा । हम कैसे इस संसार में न पहुँचे हुए लोगों तक कभी पहुँच पायेंगे यदि वे जिन्हें हम सेवकाई करते हैं दूसरों को सेवकाई न करें ?

बाइबल को मौखिक पढ़ाने में, मैं विश्वास करता हूँ, आधारभूत लाभ हैं । प्रथम, कई लोग बाईबल के सत्यों को ऐसे तरीके से ग्रहण करते हैं जिसे वे नहीं कर सकते जब हम प्रयत्न करते हैं कि वे इसे पढ़ें ।

दूसरा, लोगों को बहुत अधिकता से इन सत्यों को दूसरों के साथ बाँटना है –यह है कि अंतिम पुनः उत्पादन योग्य सेवकाई'' ।

संसार के प्रतिबंधित क्षेत्रों के लिए एक और लाभ यह है कि लोगों को अधिकारियों के साथ कष्ट में नहीं पड़ते । मैं और आगे कह सकता हूँ परंतु फिर से इस तरीके की रणनीति प्रकृति के दर्शाने के लिए सीडी और वीडियो अंश इकट्ठे रखे हुए हैं ।

दूसरा प्रश्न मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण है, क्या यह संभव है कि वचन को अनुमानकजन्यता और विवरणात्मक ढंग से मौखिक शैली में पढ़ाया जा सके ?''

बहुत सी संस्थाओं के पास कुछ प्रकार के विभाग हैं, जो मौखिक बाइबल सीखने को नियुक्त करते हैं व पढ़ाते हैं । उनमें से अधिकांश इंटरनेशनल ओरेलिटी नेटवर्क (आईओएन) के सदस्य हैं । और कुछ एक संस्थायें हैं जो विशिष्ट रूप से मौखिक बाइबल पढ़ाने में विशेषज्ञ हैं । मैंने बहुतों को देखा, उनकी सामग्री पाई, उनके वीडियो देखें, इत्यादि ।

मैं एक के ग्रह कार्यालय में गया और उनसे पूछा, सभी संस्थाओं में से कौन सी संस्था यह पढ़ाने में सबसे श्रेष्ठ है बाइबल को मौखिक रूप से कैसे पढ़ाया जाये ? और उन्होंने कहा, संस्था एसटीएस या केवल कथा । मैंने उनकी बेवसाइट देखी, उनकी सामग्री पाई, और देख सकता था कि वहाँ पर वास्तव में एक अंतर था ।

जो चीज मुझे उनकी अत्याधिक पसंद आई वह थी कि वे वास्तव में अनुमानजन्यता को मौखिक रूप में पढ़ाते हैं । वे टीकाकारी, मौखिक, बाइबल अध्ययन के उतना करीब हैं जितना आप प्राप्त कर सकते हैं । मैं जानता था कि मैंने वह पा लिया है जिसे मैं ढूँढ़ रहा था । स्काइप द्वारा, मैंने उनसे बातचीत करने लगा ।

नवंबर में पहले हमारे पास केवल–कथा से दो सिखाने वाले आये और उन्होंने पाँच दिनों के एक प्रशिक्षण सत्र में अगुवाई की । पहले के दो दिन प्रशिक्षण देने वालों (लोग जिन्हें हमने अपने दल से चुना था)

के लिए थे और तब अगले तीन दिन वे जो अभी प्रशिक्षित हुए थे ने हमारे दल के शेष लोगों को एसटीएस सिखाने वालों की सहायता से प्रशिक्षित किया । इसने मिशन में हमें एक आश्चर्यजनक गति दी है जैसा कि अब हमने इस पद्धति को हमारे मिशन कार्य में समाविष्ट करने प्रारंभ किया हैं ।

हमने इसे तुरन्त उपयोग करना प्रारंभ किया और मैं सचमुच में इसके विवरण कि कैसे ये चल रहा है से प्रसन्न हूँ । इसका अर्थ यह नहीं है कि हमने लिखित वचन का अनुमानकारी, टीकाकारी अध्ययनों को रोक दिया है । हा ! इससे दूर : यह अभी भी निर्णायक है !

परंतु जो हम मौखिक कर रहे हैं ।

1) लिखित वचनों को हमारे अध्ययनों में ठीक से बैठ रही है, यह उन्हें हटाती नहीं है, 2) कई लोगों तक पहुँच रही है जो पढ़ते नहीं या पढ़ नहीं सकते हैं,

3) कुछ ऐसी है जो पद या नामावली के लोग ठीक से कर सकते हैं (हम जनसामान्य को गतिमान कर रहे हैं),

4) सक्षम है कि अधिक सरलता से अन्य के साथ बांटी जा सके उनसे परे जिन्हें हम प्रत्यक्ष सेवकाई करते हैं, यह फैलती है,

5) यह शायद सबसे सुरक्षित तरीका है कि वचन एक प्रतिबंधित देश में फलवान हो सकता है,

6) यह किसी भी बाहरी धन या यंत्र या अन्य संसाधनों पर निर्भर नहीं है ! यह सबसे अधिक पुनः उत्पादन योग्य मिशन की रणनीति के आसपास है !

फिर से, जैसा मैंने कहा था, मैंने बहुत सी इस प्रकार के विभिन्न संस्थाओं में देखा जो इसके विपरीत थी, परंतु उनमें से कई वास्तव में बाइबल को मौखिक रूप में नहीं बता रही थी । वास्तव में बाइबल को मौखिक रूप से नहीं बता रही थी । ''केवल कथा'' वास्तव में विशेष जोर देती है बाईबल को अचूकता से बताने में – वचन के एक खंड को लेना और इस प्रकार से क्रियापद बनाना जो विस्तृत व्याख्या से अलग नहीं है – ताकि जो आप बाँट रहे हैं वह वास्तव में वचन है, मौखिक वचन, उसी प्रकार जैसे हम लिखित वचनों को पढ़ते हैं ।

परमेश्वर का लिखित वचन नियम हैं, यह स्त्रोत है । हमें इसे अवश्य ही सिखाना चाहिए और कैसे अचूकता से इसे अनुवाद करें ! परंतु लिखित वचन से हमें मौखिक वचन प्राप्त होता है । जब है बाइबल को मौखिक पढ़ाते हैं, हमें बाइबल को खोलना है कि दर्शाये कि यह बाइबल से है, लिखित वचन से है । अतः हम लोगों को दिखाते हैं कि वचन स्त्रोत हैं ।

प्रारंभिक कलीसिया में, व्यक्ति वचनों से पढ़ते थे और लोग सुनते थे । जब पौलूस ने अपने पत्रों को भेजा था, उसने कहा कि इसे जोर से पढ़ा जाये । मेरा टकराव एक प्रश्न से हुआ जो सीडी में से एक में था

जिसे मैंने उठाया : ''प्रथम शताब्दी में कितने प्रतिशत लोग पढ़ या लिख सकते थे–एक समय जब ''3000 उनकी संख्या में जोड़े गये'' एक ही दिन में ? उत्तर, मुझे बताया गया, लगभग 5 प्रतिशत ।

बाइबल संबंधी अचूकता एक कारण है मैंने ''केवल–कथा'' को पसंद किया । परंतु दूसरा है कि वे साथ ही लोगों को यह भी सिखाते हैं कि कैसे अनुमान द्वारा सीखे । कहानी दिये जाने के बाद, वे लोगों से अनुमानकारी प्रश्नों को उस बारे में पूछते हैं जिसे उन्होंने अभी सुना है । वे लोगों को लेते हैं कि अवलोकनों को क्रियापद बनाये, वे प्रश्न करते हैं कि उन्हें अचूक अनुवाद बनाने में सहायता करें, और वे उन्हें प्राप्त करते हैं कि वे स्वयं के लिए देखें कि यह उनके स्वयं के जीवन में कैसे प्रयुक्त होते हैं ।

यह सचमुच में एक भंयकर हथियार है, ठीक से विकसित, और कुशलतापूर्वक सिखाया हुआ ।

परमेश्वर की कथा :सृष्टि से अनंतकाल तक

हमने '' केवल–कथा'' को एसटीएस के ''अभिभावक /माता पिता'' परमेश्वर की कथा के संसार भर में शक्तिशाली प्रभाव के परिणाम के रूप में विकसित किया । यह 80मिनिटों कह बाइबल के चित्रों की लंबी पक्ति पुराने व नये नियम की मुख्य कथाओं को अंतर्गत करती है ओर यह श्रव्य और दृश्य रूप दोनों में उपलब्ध है । 2011 तक,परमेश्वर की कथा 300 से ऊपर संसार की भाषाओं में रची गई है।

परमेश्वर की कथा का एक पंसदीदा उपयोग है सौर ऊर्चा चलित श्रव्य–यंत्र।

सूडान में एक युवा अपने सहपाठी से क्रोधित था। इसलिए उसने शाला में एक चाकू लाया इस अभिप्राय से कि दूसरे लड़के को मारे। कक्षा शिक्षक ने अभी ही एक सौर यंत्र जिसमें परमेश्वर की कथा उनके स्थानीय मातृ भाषा में थी प्राप्त किया था। उस प्राणहर दिन, शिक्षक ने कथा के लिए कैन और हाबिल की कथा को चलाया।

जब उस क्रोधित लड़के न उस बाइबल कथा को सुना, कुछ घटित हुआ । उसने अपना चाकू निकाला – और शिक्षक को दे दिया, अपनी योजना को अंगीकार करते हुए! परमेश्वर ने उसके हृद्रय को स्पर्श किया था। उस दिन लड़के ने परमेश्वर से अपने सारे पापों के लिए क्षमा मांगी और यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया।

परमेश्वर का वचन बोलता है। हम उन सभी को उत्साहित करते है। जो ''केवल – कथा'' का उपयोग करते हैं, कि उनके क्षेत्र में लोगों द्वारा बोले जाने वालीं भाषाओं मे ंपरमेश्वर की कथा का भी उपयोग करें।

लोग ''परमेश्वर की कथा'' का उपयोग सौर यंत्रों, सीडी और एमपी3 पर करते है। कई सौ मोलिक कलाओं का पुनः अभिनीतीकरण बाइबल कथाओं को जीवंत करते है। कई लाखों जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर की कथा को दूरदर्शन पर देखा है, ने विश्वास में प्रतिउत्तर दिया कि यीशु के अनुयायी बनेगें। हजारों सेवकाईयॉ और संप्रदाय ''परमेश्वर की कथा'' उपयोग करते है।

''परमेश्वर की कथा '' का एक कथावाचक स्वरूप श्रोताओं को सामर्थ देता है कि बाइबल विषयों को दूसरों को पुनः सुनाये। सबसे महत्वपूर्ण, वे जो मौखिक संस्कृतियों में है। विश्वास में प्रतिउत्तर देते है जब वे ''संपूर्ण कथा '' को सुनते हैं सृष्टि के साथ प्रांरभ, मनुष्य का पतन और परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि एक उद्धारकर्त्ता आयेगा, सुसमाचार की सच्ची समझ के लिए एक आधार रखा गया है। हम ''परमेश्वर की कभा '' के प्रभाव और सामर्थ को सुसमाचार प्रचार एवं शिष्यता दोनों में देखते है।

''परमेश्वर की कथा '' जो सौर यंत्रों में है का उपयोग ''परमेश्वर की कथा '' पलटे जा सकने वाले नक्शेां (जिसमें वीडियों से 150 चित्रों की चौखटे है।) के साथ उपयोग करना, ग्रामीण सुसमाचार प्रचारकों को चलित चलचित्र (सिनेमागृह) कक्ष में परिवर्तित कर लेता है! जोड़े गये उपरकण जैसे चर्चा मार्गदर्शन पुस्तक स्वरूप में लेख और रेडियों लेख उपयोगकत्ताओं की ''परमेश्वर की कथा '' की कृिया में रखने के तरीकों के एक बड़े फैलाव को प्रदान करता है।

विश्व संपर्क

Africa: EAfrica@Gods-Story.org

Ethiopia: Ethiopia@SimplyTheStory.org

West Africa “French & English”: STSWestAfrica@SimplyTheStory.org

West Africa “French”:

GSWAfrica@Gods-Story.org

Europe: BT@SimplyTheStory.org

India: IndiaDirector@Gods-Story.org

Nepal: Nepal@SimplyTheStory.org

South East Asia: Thailand@SimplyTheStory.org

“Spanish”: LatinAmerica@SimplyTheStory.org

Oceania: Oceania@SimplyTheStory.org

Philippines: eb@SimplyTheStory.org

USA: info@SimplyTheStory.org